मोपासाँ की श्रेष्ठ कहानियाँ

Maupassant ki shrashth kahaniyan

It is a good book to read.

लेखक :

डी० मोपासाँ

De Maupassant

प्रभात प्रकाशन

Prabhat Prakashan.

प्रकाशक :
प्रभात प्रकाशन,
मथुरा.

अनुवादक :
सूरजनारायण अग्रवाल

प्रथम संस्करण
नवम्बर '५५ ई०

मूल्य :
तीन रुपया

मुद्रक :
साधन प्रेस, मथुरा.

Representative:-
Short Stories of G. D.
Maupass.

मोपासाँ की श्रेष्ठ कहानियाँ

10

Dear Readers of Box!

Read This Book
It is such a BOOK
that one is moved
to tears; So
tragic it is

मोपासाँ की कहानियाँ

१. प्रेम
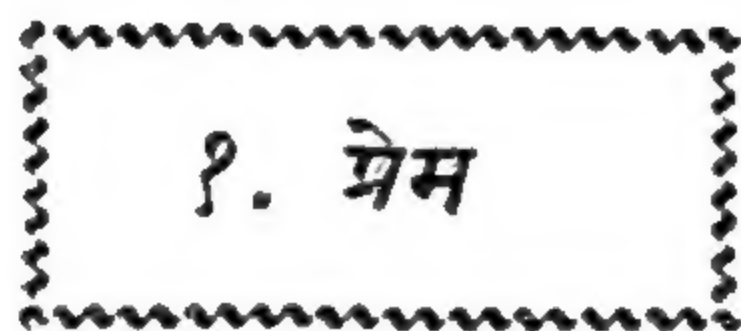
एक शिकारी की डायरी के तीन पृष्ठ।

मैं अभी २ एक समाचार पत्र की सामान्य विषयक टिप्पणियों में वासना का एक नाटक पढ़ कर चुका हूँ। उसको मार कर वह स्वयं भी मर गया, इसका अर्थ है कि वह उससे प्रेम भी करता रहा होगा। मेरे लिए प्रेमी अथवा प्रेमिका का महत्व नहीं—महत्व है तो प्रेम का, और यह रुचिप्रद इस लिये नहीं कि यह मुझे द्रवीभूत अथवा आश्चर्यचकित करता है, या मुझे सहानुभूति अथवा विचार करने को बाध्य करता है वरम् इसलिये है कि यह मेरे अतीत यौवन का चित्र मस्तिष्क में चित्रित कर देता है जब कि ईसाइयों की भाँति जिन्हें आरम्भ में स्वर्ग के अन्दर क्रास के दर्शन हुए, मुझे भी एक दिन शिकार खेलते २ प्रेम के दर्शन हुए।

मेरे अन्दर जन्म से ही रूढ़िवादी व्यक्तियों की प्रवृत्तियाँ तथा धारणायें हैं और मैं एक सभ्य मनुष्य की विचारधारा तथा तर्कों का भी हामी हूँ। शिकार का तो मुझे शौक है किन्तु घायल पशु पर दृष्टि पड़ते ही या अपने हाथ या किसी पक्षी के पंखों पर खून के धब्बों को देखते ही मेरे हृदय में हलचल सी मच उठती है जिसके कारण मैं कभी २ तो शिकार खेलना लगभग बन्द सा भी कर देता हूँ।

उस वर्ष शरद् ऋतु के समाप्त होते समय जाड़ा एकाएक बड़ी जोर से पड़ने लग गया था और मेरे पास मेरे चचाजात भाई, कार्ल डी० रोविले ने भोर होते ही उसके साथ दलदलों में जाकर बतखों का शिकार खेलने का निमन्त्रण भेजा।

मेरे चचाजात भाई साहब चालीस वर्ष के हँसमुख नौजवान थे। उनके बाल लाल, दाढ़ी बढ़ी हुई, स्वभाव हैवानों का सा होता हुआ भी सर्वप्रिय था। उनके मुख पर प्रसन्नता की लहर हर समय व्याप्त रहती और भगवान् ने उन्हें गैलिकों की सी बुद्धि भी प्रदान की थी, जिससे वह हर व्यक्ति को अपने विचारों से सहमत कर लेते। वह गाँव में रहा करते थे। उनका मकान जिसमें वह रहते थे, आधा किला था और आधा खेतिहर मकान। जिस घाटी में वह मकान था उस घाटी में एक नदी बहती थी। घाटी की दोनों ओर की पहाड़ियाँ घने जङ्गलों से आच्छादित थीं। पुराने शाही ढङ्ग के वृक्ष अभी तक वहाँ पाये जाते और वह स्थान परदार पक्षियों के शिकार खेलने के लिए फ्रांस के सर्वाधिक प्रसिद्ध स्थानों में से था। उकाबों का शिकार तो कभी २ होता, और भिन्न २ पक्षियों के झुण्ड जो कि घनी बस्तियों में बहुत कम दिखलाई देते हैं, अपने भिन्न २ रङ्गों से शाह-बलूत के पेड़ों की शोभा बढ़ाते थे। मानो उस असली जङ्गल के किसी छोटे से कोने को जानते या पहिचानते थे कि वहाँ उनको रात बसेरा मिल जाता था।

उस घाटी में कितने ही दलदल थे जो कि नालियों द्वारा सींचे जाते तथा जिनकी सीमायें कंटीली झाड़ियों ने निर्धारित कर रखी थीं। वह नदी जो वहाँ तक तो अपने किनारों से परिबाधित चलती चली जाती, आगे जाकर एक पूरे चौड़े दलदल में फैल जाती थी। मैंने शिकार खेलने योग्य उस दल-दल से अच्छा स्थान अब तक कहीं नहीं देखा। वह मेरे भाई साहब की खास जगह थी और उन्होंने अपने लिये सुरक्षित कर रखा था। सिवार चारों तरफ उगी हुई थी फिर भी उसको काट २ कर भद्दे और पतले रास्ते बना लिये गये थे और उन रास्तों में से नाव को डाँडों से खेकर ले जाया

जाता था। उस शान्त एवं निश्चल जल पर जब डाड़ों का प्रहार होता तब बड़ी २ मछलियाँ चौंक कर घास फूस में नीचे छिप जातीं और काले, नुकीले सिर वाली चिड़ियाँ झट से गोता लगा जातीं।

समुद्र बहुत चौड़ा तथा बहुत कर्मशील होता है, उस पर मेरा किसी भी भाँति बस नहीं चल सकता, नदियाँ बहुत सुन्दर होती हैं और सदा अबाध गति से चलती चली जाती हैं और दल-दल जहाँ समस्त जलचरों की उपस्थिति का भय बना ही रहता है; किन्तु यह सब होते हुए भी मैं समुद्र और जल का बेहद शौकीन हूँ।

संसार की सृष्टि में दल-दल की अपनी अलग सृष्टि होती है। यह सृष्टि बिल्कुल भिन्न होती है—इसमें अपनी ही सानी का जीवन, अलग ही प्रकार के निवासी, यात्री, आवाजें, शोर और इन सबसे ऊपर अलग ही रहस्य होता है। दलदल से अधिक प्रभाव, हलचल और समय-समय पर भय उत्पन्न कर देने वाला और कुछ भी नहीं होता—जल से आविष्ट इन निचले मैदानों में भय क्यों बना रहता है? क्या घासों से टकरा कर जो आवाज उत्पन्न होती है, उसके कारण? बेंतों के आपस में टकराने से विचित्र सी चमक उत्पन्न होने के कारण? रात्रि की निस्तब्ध नीरवता के कारण? शान्त कोहरा जो उसकी सतह पर कफ़न की तरह पड़ा रहता है, उसके कारण? या बड़ी कठिनाई से सुनाई दे सकने वाले छपाके का स्वर जो कि बहुत ही कम और बहुत ही धीमा होते हुए भी—कभी २ बिजली की कड़कों या तोपों की गड़गड़ाहटों से भी भयानक होता है, उसके कारण? इनमें से कौन सी ऐसी बातें हैं जो कि इन दलदलों को उन भयानक कल्पित देशों की तुलना में ला पटकती हैं, जिनमें एक अज्ञेय एवं भयानक रहस्य होता है?

नहीं, इसमें कोई अन्य ही बात है—कोई दूसरा ही रहस्य है, शायद वह सृष्टि का ही अपना रहस्य है! क्यों, क्या यह बात नहीं कि निश्चित एवं गन्दे जल में, इस गीली भूमि की बेहद सील में, सूर्य की आतप के नीचे सबसे पहिले जीवों में प्राण का संचार हुआ और उसी के कारण आज यह रूप दिखलाई देता है?

मैं अपने चचाजात भाई के यहाँ शाम को पहुँचा। उस समय बर्फ इतनी अधिक कड़ी जम रही थी कि वह पत्थरों के भी टुकड़े कर सकती थी।

उस विशाल कमरे में जहाँ दीवालों, चौखटों, छत्तों सब ही पर मसालों से भरे हुए पक्षियों को, जिनके पंख फैलाये हुए थे अथवा जिन्हें डालों पर बैठा रखा था कीलों से ठोंक २ कर सजा रखा था। उन मृत पक्षियों में बाज, बगुला, उल्लू, नाइटजार, बजर्ड इत्यादिक थे। मेरे भाई साहब ने, जो कि सीलाकिन की जाकेट पहिनने के कारण स्वयं ही किसी ठण्डे प्रदेश के विचित्र से जानवर की भाँति लग रहे थे, मुझे उसी कमरे में भोजन करते समय बतलाया कि उन्होंने उसी रात्रि के लिये क्या-क्या तैयारियाँ कर रखी थीं।

हम लोगों को सुबह ३.॥ बजे चलना था जिससे कि हम मचान तक साढ़े चार बजे तक पहुँच जाँय। वहाँ बर्फ के ढेरों से एक झोपड़ी बनवाई गई थी ताकि सुबह होने से पहिले चलने वाली ठण्डी हवा से बचाव हो सके। हवा इतनी ठण्डी होती है कि हमें लगता है कि मानों वह हमारे गोस्त को आरे की तरह चीरे दे रही है, चाकू के फने की तरह काटे दे रही है, जहरीले डङ्क की तरह शरीर में चुभो चली जा रही है और चीमटे की तरह गोस्त को उमेंठे दे रही है और आग की तरह हमें जलाये दे रही है।

मेरे भाई साहब ने अपने हाथ मलते हुए कहा—"मैंने ऐसा कोहरा कभी नहीं देखा, शाम के ६ बजे से ही शून्य से भी बारह डिग्री नीचा है।"

भोजन करने के तुरन्त पश्चात् ही मैं बिस्तर पर जाकर पड़ गया और अंगीठी में जलती हुई तेज आग की रोशनी के पास जाकर सो गया।

उन्होंने तीन बजे मुझे जगा दिया। अपनी पारी पर मैंने भेड़ की खाल पहिन ली और मैंने देखा कि मेरे भाई एक भालू (रीछ) की खाल ओढ़े हुए थे। दो-दो कप खौलती हुई काफी पीने के बाद हमने ब्रांडी के गिलास के गिलास चढ़ाये और एक गेमकीपर तथा अपने कुत्ते प्लोन्जून और पीरट्ट को लेकर हम लोग रवाना हो दिये।

बाहर निकलते ही मुझे लगा कि ठण्ड मेरी हड्डियों में घुसती चली जा रही है। यह रात्रि उन रात्रियों में से एक थी जिस रात्रि को लगता है कि पृथ्वी ठण्ड के कारण मृत पड़ी है। निश्चल वायु अड़ जाती है और जिसका स्पर्श होते ही उसका अनुभव होने लगता है, इसके कारण इतना कष्ट होता है; कोई हवा का झोंका उसे नहीं हिला सकता, यह स्थिर और निश्चल होती है; यह आपको काटने को दौड़ती है, आपके शरीर में अन्दर घुस जाती है, आपको सुखा देती है और पेड़, पौधों, कीड़ों को नष्ट कर देती है। छोटी २ चिड़ियाँ स्वयं वृक्षों की शाखाओं से नीचे कड़ी भूमि पर गिर पड़ती हैं और ठण्ड से सिकुड़ २ कर मर जाती हैं।

चन्द्र जो अपनी यात्रा को समाप्त करने वाला था और एक ओर झुका पड़ रहा था, मार्ग में ही फीका पड़ गया, वह इतना दुर्बल लग रहा था कि वह ढल ही नहीं पा रहा था और मौसम की गम्भीरता से स्तब्ध हो सामने डटे रहने को बाध्य हो गया था। वह अपने अन्तिम समय में संसार को ठण्डा एवं दुःख भरा प्रकाश दे रहा था। वह प्रकाश वैसा ही था जैसा क्षीण एवं मन्दा प्रकाश वह हर माह दिया करता है।

अपनी बन्दूकों को अपनी बाहों में दबाये, जेबों में हाथ डाले, पीठ झुकाये मैं और कार्ल दोनों ही साथ-साथ चल दिये। हमारे जूते जिन पर इसलिए ऊन लिपेटा हुआ था कि कहीं जमी हुई नदी पर हम लोग फिसल न पड़ें कोई आवाज नहीं कर रहे थे और मैंने अपने कुत्तों को देखा उसके सांस लेने के कारण उनकी नाकों से सफेद भाप निकल रही थी।

शीघ्र ही हम लोग दल-दल के एक सिरे पर पहुँचे, और सूखी घास में एक पतली सी पगडण्डी पर जो कि जङ्गल के निचले भाग को जाती थी, चल दिये।

लम्बी-लम्बी घास की पत्तियों से हमारी कोहनियाँ स्पर्श होते ही एक विचित्र सा स्वर होता उस स्वर को सुन कर मैं भयभीत हो गया। मैं ऐसी भावनाओं से जो कि दलदल में मुझे स्वाभाविक ही होता है, पहिले कभी इतना भयभीत नहीं हुआ। यह दलदल मृतक पड़ा था— ठण्ड से

मृतप्राय था--हम लोग उन सूखी घास पत्तियों की उस आबादी के बीच में से जा रहे थे।

एक पगडण्डी के मोड़ पर से अचानक मुझे बर्फ की बनी हुई झोपड़ी जो हम लोगों के आश्रम के लिये बनाई गई थी, दिखलाई दी। मैं अन्दर चला गया, क्योंकि उन पक्षियों के जागने में अभी एक घण्टे की देर थी, और जाकर अपने शरीर को गर्मी पहुँचाने के लिये कम्बल में छिप गया। फिर, पीठ के बल लेट कर मैं उस बिगड़ी हुई आकृति वाले चन्द्र की ओर देखने लगा। किन्तु उस जमे हुए दलदल के कुहरे, इन दीवालों की शीत, और आसमान की ठंड ने मुझे इतनी बुरी तरह जकड़ लिया था कि मुझे जुखाम हो गया। मेरे चचाजात भाई साहब अस्थिर हो उठे।

"खैर, यदि हम आज अधिक शिकार नहीं खेल न पावें तो कोई बात नहीं, किन्तु मैं यह नहीं चाहता कि तुम्हें ठण्ड लग जाय; हम लोग अभी आग जलाये लेते हैं।" वह बोले और उन्होंने गेमकीपर से घास-फूस काट कर लाने को कहा।

हम लोगों ने अपनी झोपड़ी के बीच में ढेर कर लिया। उस झोपड़ी की छत के बीच में धुआँ निकलने के लिये एक सूराख था। और जब लाल २ लपटें उन बर्फ के टुकड़ों से टकराने लगीं तब वे टुकड़े धीरे-धीरे नामालूम ढङ्ग से गलने लगे—उन्हें देख ऐसा लगता था मानो कि वे पसीने से तर हो गये हों। कार्ल बाहर ही खड़ा था उसने मुझे बुलाया। "यहाँ आओ—यह देखो।" मैं झोपड़ी से बाहर निकला और आश्चर्य चकित हो गया। हमारी झोपड़ी के बीच में आग जलने के कारण वे एक बहुत बृहद् शुण्डाकार हीरे की भाँति लग रही थी। मालूम पड़ता था कि उस जमे हुए दलदल में वह हीरा एकाएक लाकर रख दिया गया हो। उस झोपड़ी में हमें दो सनकी जीव दिखलाई दिये। ये हमारे दोनों कुत्ते थे जो कि आग के पास ताप रहे थे।

हमारे सिरों के ऊपर एक अद्भुत सा शोर जो आगे निकल गया था

और उड़ते हुए पक्षियों का सा लगता था सुनाई दिया और हमारी झोपड़ी से निकलने वाले प्रकाश में वे जंगली पक्षी दिखलाई दिये।

जीवन के प्रथम कोलाहल, जिसे कि कोई देख नहीं पाता है जो कि निश्चल वायु में जाड़े में दिन के आकाश में पहिली रेखा उदय होने से पूर्व ही बहुत ही जल्दी बहुत दूर निकल जाता है, से अधिक और कोई वस्तु किसी को अनस्थिर नहीं कर सकती। मुझे लगता है कि प्रभात के इस क्षण में उन पक्षियों के उड़ते समय पङ्खों से निकलने वाली ध्वनि आत्मा की संसार से निकलने वाली आह होती है!

"आग बुझा दो, दिन निकलने लगा है।" कार्ल ने कहा।

वास्तव में आकाश पीला पड़ने लगा था और बतखों के झुण्डों ने लम्बी २ पंक्तियाँ बनाई तेजी से उड़े और आकाश में विलीन होने लगे। रात्रि मे एक प्रकाश की धारा सी प्रवाहित हो उठी; कार्ल ने बन्दूक छोड़ दी थी, और दोनों कुत्ते आगे दौड़े। और तब, लगभग प्रत्येक मिनट पर, कभी वह कभी मैं घासों पर उन झुण्डों की छाया पड़ते ही बन्दूक चलाते रहे। पीरट और प्लोञ्जून की सांसों की धौंकनी चल निकली थी किन्तु वे प्रसन्न दिखलाई दे रहे थे और रक्त से लथपथ हमारे छर्रों से आहत चिड़ियों को, जिनके नेत्र अभी तक कभी २ हम लोगों की ओर हो जाते, लाला कर इकट्ठा कर रहे थे।

सूर्य निकल आया। वह दिन प्रकाशमय था, आकाश नीला था और हम लोग चलने का विचार कर रहे थे कि दो पक्षी अपनी लम्बी गर्दन तथा पङ्खों को फैलाए हुए हमारे ऊपर से शीघ्र ही निकल गए। मैंने बन्दूक चलाई और उनमें से एक मेरे पैरों के पास आकर गिर पड़ा। यह कलहंसिनी थी उसकी छाती रुपहली थी और तब मुझे नीलाकाश में अपने ऊपर ही एक आवाज पक्षी की चिचियाहट-सुनाई दी। यह छोटा किन्तु बार २ दोहराया गया चीत्कार हृदय विदारक था; और पक्षी जो बच गया था नीलाकाश में, हमारे सिर पर, अपने मृत साथी की ओर देख २ कर, जिसको मैंने अपने हाथ में ले रखा था, चक्कर काटने लगा।

कार्ल अपने घुटनों के बल बैठा हुआ, अपने कंधे पर अपनी बन्दूक रखे हुए उत्सुकता से यह देख रहा था कि वह पक्षी उसके निशाने का शिकार बने। वह बोला "हंसिनी को तुमने मार डाला और हंस उड़कर जायगा नहीं।

वास्तव में वह उड़कर गया भी नहीं; वह हमारे सिरों के ऊपर ही चक्कर काटता और चीत्कार करता रहा। मुझे इस अकेली निराश विनय से जो कि उस मृत पक्षी के लिये की गई थी अधिक कभी किसी कराहट से ऐसी व्यथा नहीं हुई।

कभी २ वह बन्दूक से जो उसकी गतिविधियों पर नियन्त्रण रख रही थी, भयभीत हो उड़ भी जाता और ऐसा लगता कि मानो वह अकेला ही उड़ता भी रहेगा किन्तु उसने ऐसा करने का विचार त्याग दिया और वह अपने साथी के लेने के लिये लौट आया।

"उसे धरती पर रख दो और वह धीरे २ मेरे निशाने के अन्दर आ जायेगा।" कार्ल ने मुझसे कहा। और सचमुच वह अपने साथी, जिसे मैंने मार डाला था, के प्रति आकर्षण, अपने पशुवत प्रेम, और भय से निरापद हो वहाँ हमारे पास आ गया।

कार्ल ने गोली छोड़ दी, और मानों कि किसी ने उसकी सशंयरूपी डोरी को जिसके कारण वह अभी तक भ्रम में पड़ा हुआ था, काट दिया हो। मैंने देखा कि कोई काली २ वस्तु नीचे उतरने लगी और मैंने घासों में किसी चीज के गिरने की ध्वनि सुनी और पीरट उसे मेरे पास ले आया।

वे दोनों ही मर चुके थे, मैंने उन्हें उसी थैले में रख दिया और उसी सायंकाल मैं पैरिस लौट आया।

THE UNWED MOTHER
Illegitimacy
(Illegal Birth

साइमन का पिता

अभी दोपहर हुई थी। स्कूल का द्वार खुला और जल्दी से बाहर निकलने के लिये हल्ला मचाते हुए एक दूसरे पर गिरते पड़ते बच्चे बाहर निकल पड़े। किन्तु नित्यप्रति की भाँति अलग २ घर जाकर भोजन करने की बजाय वे कुछ कदम आगे जाकर रुके और छोटी २ टुकड़ियों में बँट कर आपस में कुछ सलाह करने लगे।

बात यह थी कि उस दिन सुबह ला ब्लाचोटे का लड़का साइमन पहिली बार स्कूल आया था।

उन सब बच्चों ने अपने २ घरों में ला ब्लाचोटे के विषय में सुन रखा था; और यद्यपि पुरुषों में उसका आदर बहुत था, किन्तु माताएँ उसके साथ कुछ घृणास्पद-सा व्यवहार करती थीं जिसके कारण को बिना समझे ही बच्चों के ऊपर भी व्यवहार की छाप पड़ चुकी थी।

जहाँ तक साइमन से सम्बन्ध था वे लोग उसे नहीं जानते थे क्योंकि वह कभी बाहर नहीं गया था और न उन लोगों के साथ कभी गाँव की सड़कों अथवा नदी के तटों पर ही खेला था। इसलिये वे उसे थोड़ा-सा प्यार भी करते थे; और आज सुबह तो किसी आश्चर्य मिश्रित आनन्द से वे लोग छोटी २ टुकड़ियों में बँट कर एक चौदह या पन्द्रह वर्ष के लड़के द्वारा कहे गये वाक्य को दुहरा रहे थे। प्रतीत होता था कि वह लड़का उसकी सब बातों को भली भाँति जानता था। कैसी चतुराई से आँख मारकर उसने कहा था "तुम साइमन को जानते हो—उसका कोई पिता नहीं है।

ला ब्लाचोटे का लड़का भी अपनी पारी पर स्कूल के द्वार से निकलता हुआ दिखलाई दिया।

वह सात या आठ वर्ष का साफ सुथरा, कुछ पीला सा, दीन एवं कायर स्वभाव का लड़का था।

वह अपनी माँ के पास घर की ओर जा रहा था कि उसे उसके स्कूल के साथियों की अनेकों टुकड़ियों ने कुछ फुसफुसाते और उसको शरारत-भरी हृदय-हीन बच्चों की सी दृष्टि से देखते हुए, जिनमें कि कोई गन्दी योजना चमक रही थी चारों ओर से घेर लिया और यहाँ तक कि वे उसके बिल्कुल समीप आ गये।

वहाँ उनके बीच वह आश्चर्यचकित और परेशान सा हो खड़ा हो गया, उसकी समझ में ही नहीं आया कि वे उसका क्या करना चाहते थे। किन्तु जो लड़का यह खबर निकाल कर लाया था अपनी सफलता पर फूला न समाता हुआ बोला—"तुम्हारा क्या नाम है, जी ?"

"साइमन।" उसने उत्तर दिया।

"साइमन क्या ?" दूसरे ने उसे छेड़ा।

बच्चे ने घबड़ाकर दुहराया "साइमन।"

लड़का उस पर चिल्ला पड़ा "तुम्हारा नाम साइमन के बाद भी कुछ होना चाहिये था। सच में तो साइमन कोई नाम ही नहीं है।"

और उसने अपने आँसू रोकते हुए तीसरी बार फिर कहा—"मेरा नाम साइमन है।"

बच्चे उस पर हँसने लगे। लड़के ने विजयोन्माद से अपना स्वर ऊँचा किया "तुम लोगों को अब तो मालुम हो गया होगा कि इसका कोई पिता नहीं है।"

एक गहरी निस्तब्धता छा गई। बच्चे इस असाधारण, असम्भव विकराल वस्तु से, एक बिना पिता का पुत्र—अवाक् रह गये; उन्होंने उसकी ओर एक अस्वाभाविक, अप्राकृतिक जीव की तरह देखा; और साथ ही साथ उनमें भी अपनी माताओं की भाँति ला ब्लाचोटे के लिये अनिवर्चनीय दया उठने लगी। और साइमन—वह गिरने से बचने के लिये एक पेड़ का सहारा लेकर खड़ा हो गया। वह इस भाँति खड़ा था मानो वह क्रोध पर संयम न कर पा रहा हो और उस क्रोध के कारण उसकी अवस्था लकवा मारे व्यक्ति की सी हो गई। वह अपनी सफ़ाई देना चाहता था किन्तु उसके मस्तिष्क में कोई उत्तर ही नहीं आया—वह इस भीषण अभियोग को, कि

उसका पिता नहीं था, अस्वीकार करने में असमर्थ था। अन्त में बेचैन हो वह चिल्ला कर बोला—"हाँ, मेरे एक है।"

"कहाँ है?" लड़के ने पूछा।

साइमन चुप हो गया; उसे मालुम नहीं था। बच्चे एकदम उत्तेजित हो चिल्लाने लगे। इन देहाती बच्चों को, जो कि जानवरों की सी प्रवृत्ति के थे, खेतों में रहने वाली चिड़ियों की सी उत्कण्ठा अनुभव हुई। वे चिड़ियाँ (Fowl) अपनी ही जात की चिड़ियों को उनके घायल हो जाने पर मार डालने को उतारू हो जाती हैं। एकाएक साइमन की दृष्टि अपने पड़ोस में रहने वाली विधवा के पुत्र के ऊपर पड़ी जिसे उसने हमेशा अपनी ही भाँति उसकी माँ के साथ अकेला देखा था।

"और तुम्हारे भी नहीं है; तुम्हारे भी पिता नहीं हैं।" वह बोला।

"हाँ, मेरे पिता हैं।" उस दूसरे ने कहा।

"कहाँ हैं?" साइमन ने फिर से कहा।

"उनकी मृत्यु हो गई—अब वह कब्र में हैं।" विधवा के लड़के ने अभिमान से कहा।

सभी उन बच्चों में अनुमोदन की फुसफुस हुई—मानो उनके साथी के मृत पिता की बात जो अब कब्र में था, दूसरे साथी को जिसका कि कोई पिता था ही नहीं, ठेस पहुँचने के लिये पर्य्याप्त थी। और वे सब बदमाश, जिनके पिता अधिकतर दूषित कार्यों में व्यस्त रहते, शराबी थे, चोर थे, और अपनी पत्नियों के साथ दुर्व्यवहार करते थे एक दूसरे को धक्का दे देकर साइमन के और भी पास आये मानो वे सब अधिकृत (जायज) पुत्र अपने दबाव से उसे जो कानून से परे था, पीस ही डालेंगे।

साइमन के पास ही खड़े लड़के ने उसे जीभ बिराई और उससे चिल्लाकर बोला "कोई पिता नहीं! कोई पिता नहीं!"

साइमन ने अपने दोनों हाथों से बाल पकड़ कर उसे झकझोर डाला और अपनी लातों की मार से उसकी टाँगों को तोड़ने लगा; उस लड़के ने उसी बीच बड़ी जोर से साइमन का गाल काट खाया। उन दोनों के बीच घमासान युद्ध आरम्भ हो गया। साइमन पिटा, उसकी कमीज फट गई, और उन छोटे

आवारे हंसते हुए बदमाशों के बीच में वह जमीन पर गिर पड़ा। गिरते ही वह उठा और अपनी छोटी कमीज को जो धूल धूसरित हो गई थी अपने हाथों से झाड़ने लगा कि किसी ने उससे चिल्लाकर कहा "जाओ, अपने पिता से कह देना।"

तब उसे हृदय में बड़ी निराशा हुई। वे उससे अधिक सामर्थ्यशाली थे, उन्होंने उसे पीटा था और उसके पास उन्हें उत्तर में कहने को कुछ था नहीं क्योंकि वह जानता था कि उसका कोई पिता नहीं था। गर्व के कारण वह अपने अश्रुओं से जो उसके कण्ठ को अवरुद्ध किये हुए थे, कुछ क्षण तक संघर्ष करता रहा। उसकी सांस तेज हो गई--हिचकियाँ आने लगीं, फिर बड़े वेग से वह निशब्द रोने लगा--सिसकियों के कारण उसका सारा शरीर हिलने लगा। तब उसके शत्रुओं में, जंगली मनुष्यों के उत्सव की भांति, आनन्द का सागर उमड़ पड़ा और हाथ में हाथ डालकर उसके पास ही वृत्त बनाकर नाचने लगे। नाचते २ वे गाते जाते थे "कोई पिता नहीं! कोई पिता नहीं!"

किन्तु एकाएक साइमन की हिचकियाँ बन्द हो गईं। क्रोध से वह अभिभूत हो गया। उसके पावों के पास ही नीचे पत्थर के टुकड़े पड़े हुए थे, वह उन्हें उठा २ कर अपनी पूरी शक्ति से अपने सताने वालों के ऊपर फेंकने लगा। दो तीन के चोटें आईं और वह चिल्लाते हुए भाग खड़े हुए। वह उस समय इतना भयानक लग रहा था कि अन्य बालक उससे भयभीत हो गए। एक क्रोध से उभरे हुए व्यक्ति की उपस्थिति में एक भीड़ की भांति वे कायर वहाँ से भाग खड़े हुए। अकेले रहने पर बिना पिता का वह छोटा सा जीव खेतों की ओर भाग दिया, क्योंकि उसे कुछ स्मरण हो आया जिसने उसकी आत्मा में एक महान निश्चय संचरित कर दिया। उसने नदी में डूब मरने का निश्चय कर लिया।

वास्तव में, उसे स्मरण हुआ कि एक बेचारा गरीब, जो रुपये न होने के कारण अपनी जीविका निर्वाह के लिये भीख मांगता था नदी में डूब मरा था। लोगों ने उसे जब पानी के बाहर निकाला तब साइमन भी वहीं था; और उस व्यक्ति पर जो बहुत ही दुःखी और भद्दी की शकल का लग रहा था, उसके पीले गालों, उसकी लम्बी दाढ़ी, और उसकी शान्तिपूर्ण खुली

आँखों पर दृष्टि पड़ते ही साइमन को बहुत दुःख हुआ। पास खड़े हुए लोगों ने कहा :—

"यह तो मर गया।"

फिर कोई दूसरा बोला "अब यह बहुत प्रसन्न है।"

जैसे उस बेचारे के पास धन नहीं था वैसे ही साइमन के पिता नहीं था और उसने भी डूब मरने की बात सोच ली।

सरिता के किनारे पहुँचकर वह उसका प्रवाह देखने लगा। कुछ मछलियाँ उस स्वच्छ धारा में ऊपर दिखलाई दे रही थीं; कभी २ वे उछाल लगातीं और सतह पर दिखलाई देने वाली मक्खियों को पकड़ लेतीं। मछलियों का यह खाना उसे बहुत पसन्द आया, उन्हें देखते रहने के कारण उसने रोना बन्द कर दिया। किन्तु बीच २ में आंधी के प्रचण्ड वेगों की भांति जो पेड़ों को उखाड़े डालते हैं फिर शान्त हो जाते हैं उसके हृदय में बड़ी चुभन लेकर यह विचार उठ आता :

"मेरे पिता नहीं हैं इसलिये मैं डूब मरूँगा।"

उस दिन ठण्ड कम थी, मौसम सुहावना था। सुखद सूर्य किरणों ने घास को तप्त कर दिया था, जल दर्पण की भांति चमक रहा था; औ साइमन ने थोड़े से समय रोने से पहिले उत्पन्न होने वाली प्रसन्नता का अनुभव किया। दोपहर की धूप में वहीं घास पर सो जाने की उसकी इच्छा भी हुई।

उसके पैरों के पास नीचे एक छोटा हरा मेंढक उछला। उसने उसे पकड़ना चाहा। वह बच निकला। उसने उसका पीछा किया और वह तीन बार अपने प्रयत्नों में विफल रहा। अन्त में उसने उसकी पिछली टांगें पकड़ ही लीं और उसके छूटकर भाग निकलने के प्रयत्नों को देखकर वह हँसने लगा। वह मेंढक अपनी दोनों टांगों पर सिमटा और फिर एकाएक बड़े तेज झटके से उन्हें दो डन्डों की तरह सीधी कर दिया।

उसकी आंखें अपने सुनहले गोले में घूर २ कर देख रही थीं, और अपने सामने वाले धड़ को वह हाथों की तरह प्रयोग कर बार २ पटक रहा था। उसे देखकर उसे एक लकड़ी के खिलौने का, जो कील से टुका रहता

है और उसमें बंधा हुआ एक छोटा सा सिपाही उसी की भांति कभी नीचे कभी ऊपर आता जाता है, स्मरण हो आया। तब उसे अपने घर और अपनी मां का विचार आया और वह दुःखी हो फिर रोने लग गया। उसके ओठ कांपे और घुटनों के बल बैठकर उसने सोने से पूर्व की जाने वाली प्रार्थनाएं दोहराई; किन्तु तेज और लम्बी २ हिलकियों के कारण वह इतना तल्लीन हो गया कि उन्हें पूरी नहीं कर सका। वह और कुछ न सोच पाया, उसे अपने आस पास की किसी वस्तु का होश नहीं रहा और बड़े जोर से आँसू बहाने लगा।

एकाएक उसके कन्धे पर किसी ने अपना भारी हाथ रखा और मोटी रूखी आवाज से पूछा :—

"मेरे अच्छे मित्र, तुम इतने दुःखी क्यों हो रहे हो?"

साइमन ने मुड़कर देखा। एक लम्बा तगड़ा, दाढ़ी और घुंघराले बाल वाला श्रमिक उसकी ओर सहानभूति पूर्ण नेत्रों से देख रहा था। उसने अश्रुपूर्ण नेत्रों और रुंधे हुए स्वर से कहा—

"लड़कों ने मुझे मारा है क्योंकि मेरे, मेरे पिता नहीं है, कोई पिता नहीं है।"

"क्या?" उस व्यक्ति ने हँसते हुए कहा—"अरे पिता तो हर किसी का कोई न कोई होता ही है।"

बच्चे ने दुःखी होकर दुख-भरे स्वर में कहा—

"किन्तु मेरे...मेरे ..मेरे पिता कोई नहीं है।"

श्रमिक गम्भीर हो उठा। उसने ला ब्लाचोटे के लड़के को पहिचान लिया। यद्यपि वह उसके पड़ोस में अभी थोड़े ही दिनों से आया था किन्तु फिर भी उसके इतिहास का उसे धूमिल सा ज्ञान था।

"खैर, धीरज रखो मेरे बच्चे, और मेरे साथ अपनी माँ के पास घर चलो। वहाँ तुम्हारे पिता का पता लग जायगा।"

और वे घर चल दिये—बड़ा छोटे का हाथ पकड़े हुए था। वह व्यक्ति प्रसन्न हो मुस्कराया, क्योंकि उसे उस ब्लाचोटे के पास जाने में जो कि लोगों की दृष्टि में गांव की लड़कियों में सबसे अधिक सुन्दर थी, कोई

तकलीफ नहीं महसूस हुई और, शायद अपने अन्तरतम में उसने सोचा था कि एक लड़की जो एक बार गलती कर चुकी थी फिर दोबारा बड़ी आसानी से गलती कर सकती थी।

वह एक बहुत स्वच्छ सफेद तथा छोटे मकान के सम्मुख पहुँचे।

"वह रहा।" लड़का चिल्लाया। वह बोला "माँ!"

एक स्त्री निकली, श्रमिक के मुख पर से मुस्कान गायब हो गई क्योंकि उसने एकदम अनुभव कर लिया कि अब उस पतली लम्बी पीली लड़की को मूर्ख बनाना असम्भव था, जो कि अपने मकान के द्वार की जिसे कि दूसरा व्यक्ति पहिले ही धोका दे चुका था, उस व्यक्ति के धोके से बचाने और रक्षा करने के लिये अपने द्वार पर खड़ी थी।

उसने अपनी टोपी हाथ में ली और बोला—

"देखिये श्रीमतीजी, मैं आपके बच्चे को वापिस ले आया हूँ। वह नदी किनारे खो गया था।"

किन्तु साइमन अपनी माँ की गर्दन में बांहें डाल कर फिर से रोने लगा और बोला :

"नहीं माँ, मैं डूब मरूँगा—क्योंकि दूसरे लड़कों ने मुझे इसलिये... इसलिये मारा था कि मेरे पिता नहीं हैं..."

उस नवयुवती के गालों पर अतिशय लालिमा दौड़ गई, और व्यथित हो शीघ्रता से उसने अपने बच्चे को छाती से चिपटा लिया। उसके नेत्रों से अश्रुधारा बह निकली। वह व्यक्ति भी बहुत दयार्द्र हुआ वहीं खड़ा था। वह नहीं जानता था कि क्या कहकर लौटा जाय। एकाएक साइमन दौड़ कर उसके पास आया और बोला :

"क्या तुम मेरे पिता बनोगे?"

एक गम्भीर चुप्पी छा गई। लज्जा से मूक हो ला ब्लाचोटे अपने हाथों को अपने हृदय पर रख कर दीवाल के सहारे झुक गई। बच्चे ने कोई उत्तर न मिलने पर कहा :

"यदि तुम्हारी इच्छा नहीं है तो मैं अभी लौट कर चला जाऊँगा और डूब मरूँगा।"

श्रमिक ने बात को दिल्लगी समझ हँस कर कहा :

"क्यों, हाँ, मेरी इच्छा है।"

"तब तुम्हारा क्या नाम है—मुझे अपना नाम बतला दो जिससे कि उनके पूछने पर मैं उनको बतला सकूँ ?" बच्चे ने कहा ।

"फिलिप !" उस व्यक्ति ने उत्तर दिया ।

साइमन उस नाम को भली भाँति अपने मस्तिष्क में बैठा लेना चाहता था । अतः वह क्षण भर चुप रहा; तब उसने अपने हाथ फैलाते हुए पूर्ण सन्तुष्ट हो कहा :

"तब फिलिप, तुम मेरे पिता हो !"

श्रमिक ने उसे गोद में उठाया और उसके दोनों गालों को चूमकर वह जल्दी से चल दिया ।

दूसरे दिन जब बच्चा स्कूल पहुँचा तब उसका स्वागत घृणित हँसी से किया गया, और स्कूल के बन्द होने पर जब लड़के फिर से कल की घटना को दोहराने वाले थे साइमन ने उन लोगों से इस भाँति कहा कि मानो वह पत्थर फेंक रहा हो मेरे—"पिता का नाम फिलिप है।"

चारों ओर से हँसी की फुहारी छूट पड़ी ।

"कौन फिलिप ? फिलिप के क्या अर्थ ? दुनियाँ में फिलिप किसे कहते हैं ? यह अपना फिलिप कहाँ से उठा लाये ?"

साइमन ने कोई उत्तर नहीं दिया; और अडिग विश्वास में उसने अपने नेत्रों में उन सबका विरोध किया— वह उनके सामने से भाग जाने से बेहतर तो मरना पसन्द करता । स्कूल के मास्टर ने उसे बचा दिया और वह अपनी माँ के पास घर लौट दिया ।

तीन महीनों तक वह लम्बा श्रमिक, फिलिप, बहुधा ला ब्लाचोटे के मकान के सामने होकर निकलता रहा और कभी २ जब वह खिड़की के पास बैठी हुई सींती-पिरोती रहती तब साहस संचित कर उससे बोल भी लेता वह उससे हमेशा ही सभ्यता एवं गम्भीरता से उत्तर देती और न तो कभी उससे परिहास करती और न उसे घर में ही घुसने देती ।

इसकी चिन्ता किये बिना ही, वह अन्य व्यक्तियों की ही भाँति

सोचता कि जब भी वह उससे बातें करती थी तब ही वह पहिले से अधिक लाल हो जाती थी।

किन्तु सम्मान की चादर पर एक धब्बा पड़ने के बाद वह धब्बा इतना चमकता रहता है कि उसे साफ करना कठिन हो जाता है। उस लजीली ला ब्लाचोटे के इतने सम्हल कर चलने पर भी आस पड़ोस में किम्बदन्तियाँ प्रचलित होने लगीं।

जहाँ तक साइमन की बात थी—वह अपने नये पिता का बहुत शौकीन था; और लगभग नित्यप्रति ही शाम को जब कि दिन का सब काम समाप्त हो जाता तब उसके साथ घूमने जाता। वह बराबर स्कूल जाता और बड़ी शान से उन बच्चों में खेलता किन्तु उन्हें वह कभी उत्तर नहीं देता था।

एक दिन, उस लड़के ने जिसने उस पर पहले आक्रमण किया था, किसी तरह कहा :

"तुमने झूठ कहा था। तुम्हारा फिलिप नाम का कोई भी पिता नहीं है।"

"तुम ऐसा कैसे कह सकते हो ?" साइमन ने बहुत परेशान होकर पूछा।

उस लड़के ने अपने हाथ मले और बोला :

"क्योंकि तुम्हारा कोई पिता होता तो वह तुम्हारी माँ का पति होता।"

साइमन इस तर्क की सचाई से अप्रतिभ हो गया किन्तु फिर भी बोला :

"इससे क्या होता है, वह मेरा पिता तो है ही।"

"हाँ, हो सकता है, किन्तु इससे वह पूरा पिता नहीं हो सकता है।" लड़के ने मुँह बनाकर उससे चिल्ला कर कहा।

ला ब्लाचोटे के लड़के ने अपना सिर झुकाया और पुरानी लोहजन की भट्टी की ओर, जहाँ फिलिप काम करता था, विचारमग्न हो चल दिया।

भट्टी पेड़ों के बीच अवस्थित थी। वहाँ बहुत अन्धकार था, जलती हुई भट्टी से निकलने वाली लपटें ही वहाँ काम करने वाले पाँचो लोहारों के ऊपर, जो अपनी निहाइयों पर हथौड़े से काम करते थे, प्रकाश डालती थीं। उन लपटों से घिरे खड़े होकर वे दैत्यों की भाँति, उस लाल २ गर्म लोहे पर जिसको वे ढालते होते, अपने नेत्र गड़ा कर, काम करते थे। उनके धीमे-धीमे उठने वाले विचार उनके हथौड़े के गिरने उठने के साथ २ ही प्रकट एवं लुप्त होते रहते।

साइमन को घुसते वहाँ किसी ने न देखा था—उसने जाकर अपने मित्र की बाँह पकड़ ली। फिलिप ने पीछे मुड़ कर देखा; तत्क्षण ही काम बन्द हो गया और सब लोग उधर ही बहुत ध्यान से देखने लगे। तब उस अनभ्यस्त निस्तब्धता में साइमन की बांसुरी सी आवाज निकली :

"फिलिप, ला मिचेयडे पर एक लड़के ने कहा कि तुम पूर्ण रूप से मेरे पिता नहीं हो।"

"और ऐसा क्यों ?" लोहार ने पूछा।

बच्चे ने भोलेपन से उत्तर दिया :

"क्योंकि तुम मेरी माँ के पति नहीं हो।"

कोई हँसा नहीं। फिलिप अपने बड़े २ हाथों के ऊपर जिनमें कि उसने निहाई की बिल्कुल सीध में हथौड़े की मूठ पकड़ रखी थी, अपना मस्तक झुकाये खड़ा रहा। वह विचारों में खो गया। उसके चारों साथी उसे देख रहे थे, और इन दैत्यों के बीच एक छोटे से कण की भाँति साइमन उत्सुकता से प्रतीक्षा करने लगा। एकाएक उन लोहारों में से एक ने सबकी सहानुभूति को शब्दों में व्यक्त करते हुए फिलिप से कहा—

"ला ब्लाचोटे अच्छी और ईमानदार लड़की है और इस दुर्भाग्य में भी बहादुर और मेहनती है, और वह एक ईमानदार व्यक्ति को योग्य पत्नी साबित होगी।"

"यह बात सही है।" अन्य तीनों ने उसका अनुमोदन किया।

लोहार कहता रहा :

"क्या यह लड़की की गलती है, क्या वह पतित हो गई ? उससे तो

शादी का वायदा किया गया था, और मैं ऐसी दो-चार लड़कियों को बतला सकता हूँ जिन्होंने भी उसके ही समान पाप किया था किन्तु आज उनका बहुत आदर होता है।

"यह सही बात है।" अन्य तीनों ने एक साथ कहा।

वह कहता रहा :

"बेचारी को अपने लड़के को पढ़ाने के लिये अकेले ही कितना परिश्रम करना पड़ा और भगवान् ही जानता है—तब से वह कितनी रोई है और तब ही से गिरजाघर को छोड़ वह कहीं भी नहीं जाती।"

"यह भी सही बात है।" अन्यों ने कहा।

तब धौंकनी के अलावा, जो आग फिर से तेज करने के लिये चलाई गई थी, और कोई शब्द सुनाई नहीं दिया। शीघ्रता से फिलिप साइमन की तरफ झुका :

"जाओ और अपनी माँ से कह दो कि मैं उससे बातें करने आऊँगा।"

तब उसने बच्चे को अपने कन्धों से परे हटा दिया। वह अपने काम में लग गया और फिर से एक साथ एक स्वर में पाँचो हथौड़ों की निहाइयों पर चोटें पड़ने लगीं। इसी तरह रात्रि होने तक समुद्र यात्रियों की भाँति प्रसन्न, शक्तिवान् एवं तगड़े लोहारों ने सारे लोहों को गला डाला। किन्तु जिस तरह त्यौहारों पर गिरिजा का बड़ा घन्टा अन्य छोटी-छोटी घन्टियों की आवाजों से ऊपर गूँजता रहता है उसी तरह फिलिप का हथौड़ा दूसरों के हथौड़े के स्वरों को दाबता हुआ कर्णभेदी स्वर में हर दूसरे सैकण्ड पर गूँजता रहा—उड़ती हुई चिनगारियों में, अग्नि पर अपने नेत्र जमाये हुए वह अपना कार्य पूरी गति एवं शक्ति से करता रहा।

जब उसने ला ब्लाचोटे के मकान के दरवाजे को खटखटाया तब आकाश में तारे निकल आये थे। वह इतवार को पहिनने वाला ब्लाउज और नई कमीज पहिने हुए था—उसकी दाढ़ी बनी हुई थी। नवयुवती द्वार पर आई और क्षुब्ध स्वर में बोली :

"मि० फिलिप, इस तरह रात में आना ठीक नहीं है।"

वह उत्तर देना चाहता था किन्तु विभ्रम में पड़ कर हड़बड़ा कर चुप हो खड़ा रहा।

वह फिर बोली :

"और आप यह तो भली भाँति जानते ही होंगे कि मेरे बारे में और किम्वदन्तियाँ प्रचलित हो जाने से काम नहीं चलेगा।"

तब वह एकाएक बोल पड़ा :

"लेकिन यदि आप मेरी पत्नी बनना स्वीकार कर लेती हैं तब मेरे लिए उससे क्या अन्तर पड़ेगा।"

उसको कोई उत्तर नहीं मिला, किन्तु उसे विश्वास हो गया कि उसे कमरे के अन्दर छाया में किसी के गिरने का शब्द सुनाई दिया। वह बहुत ही शीघ्रता से अन्दर प्रविष्ट हुआ; और साइमन ने, जो बिस्तर पर लेट चुका था, एक आलिंगन की तथा अपनी माँ की बहुत धीमी आवाज को पहिचान लिया। तब एकाएक उसने देखा कि उसे उसके मित्र ने अपनी भीम सी बाहों में उठा लिया है और वह बोला :

"तुम अपने स्कूल के मित्रों से कहना कि फिलिप रेमी लोहार तुम्हारा पिता है और जो भी कोई तुमको छेड़ेगा वह उसी के कान खींचेगा।"

सुबह जब स्कूल में सब विद्यार्थी आ चुके थे और पाठ पढ़ाये ही जाने वाले थे कि बच्चा साइमन उठा और अपने पीले कम्पित होठों से स्पष्ट स्वर में बोला—

"मेरा पिता फिलिप रेमी लोहार है, और उसने मुझे वचन दिया है कि जो भी मुझे तङ्ग करेगा उसके वह कान मलेगा।"

अब कोई भी नहीं हँसा, क्योंकि फिलिप रेमी लोहार बहुत प्रसिद्ध व्यक्ति था और संसार में कोई भी उसका सा पिता पाकर गर्व कर सकता था।

गुलाब

दो युवतियों की आकृति ऐसी है मानो वे पुष्पों की शय्या में चिपकी हों। एक बहुत ही विशाल टोकरी की भाँति फूलों से लदी बग्घी में वे अकेली दोनों हैं। उनके सामने वाली सीट पर अच्छे वनफसे के फूलों की दो टोकरियाँ रखी हुई हैं, और रीछ की खाल पर जो उनके घुटनों पर पड़ी है गुलाब के फूलों, लिली—फ्लावरों, मारगरेटों, गुलदाऊदी और नारङ्गी के फूलों के गुच्छे के गुच्छे रेशमी डोरियों से बँधे हुए ढेरों पड़े हैं—लगता है कि वे फूल उन कोमलांगियों के कन्धों, बाहों, और तनिक-सी चोलियों को छोड़कर सारे अङ्गों को कुचले दे रहे हों। एक की चोली नीली है तो दूसरी की हलकी गुलाबी।

कोचवान का कोड़ा एनीमोनस पुष्पों से लदा है, घोड़े का सिर दीवाल पर लगाये जाने वाले पुष्पों से सुसज्जित है, पहियों की आरे पर खुशबूदार फूलों से युक्त लतायें लगी हुई हैं, और लालटेनों के स्थान पर दो बड़े-बड़े शानदार फूल लगाये गये हैं जो इस चलते फिरते फूलों के विचित्र जानवर की आँखों की भाँति लग रहे हैं। यह बग्घी एन्टाइब्ज स्ट्रीट पर तेजी से चली जा रही है। इस गाड़ी के आगे, पीछे और साथ में कितनी ही अनेक सुसज्जित गाड़ियाँ, जिनमें वनफसे के फूलों से आवरित अनेकानेक युवतियाँ हैं, चली जा रही हैं क्योंकि आज केन्स में फूलोत्सव है।

वे सब बोलेवार्ड फोन्सेर, जहाँ युद्ध होता है, पहुँचीं। उस समस्त विशाल राह में सुसज्जित गाड़ियों की दोहरी कतार असीमित रिबन की भाँति आ जा रही थीं। वे एक दूसरे पर फूल फेंकते थे। पुष्प वायु में गेंद के समान जाते, सुन्दर मुखमण्डलों पर टकराते, मडराते और धूल में जा गिरते, जहाँ से उठा २ कर बच्चों की सैन्य उन्हें एकत्रित करती जाती।

एक घनी शोरगुल वाली किन्तु क्रमबद्ध भीड़ दोनों ओर के फुटपाथों पर खड़ी २ उत्सव देख रही थी। घोड़े पर सवार पुलिसमैन आश्चर्यजनक पशुता से उन लोगों को लातों से पीछे धक्का देते हुए जाते ताकि वे दुष्ट उन अमीरों एवं धनिकों से कहीं छू न जाँय।

अब, गाड़ियों में जो लोग सवार थे वे एक दूसरे को पहिचान लेते, एक दूसरे को आवाज़ देते, और एक दूसरों पर फूलों से प्रहार करते। लाल २ परिधानों से ईस्यों की तरह सज्जित, सुन्दर नवयुवतियों से भरा हुआ एक रथ समस्त समुदाय के नेत्रों को आकर्षित किये हुए है। एक व्यक्ति जिसकी आकृति चौथे हेनरी के चित्र से मिलती जुलती है प्रसन्नता से आत्मसात् हो इलास्टिक में बंधे एक बड़े फूल को बार २ फेंकता है। चोट लगने के भय से स्त्रियां अपने सिर नीचे कर अपनी आँखें ढक लेती हैं, किन्तु वह आगे फेंका हुआ शानदार पुष्प ज़रा सा टेढ़ा हो अपने स्वामी के पास लौटकर आ जाता है, जोकि उसे तत्क्षण ही दूसरी नवागंतुका की ओर फेंक देता है।

वे दोनों नवयुवतियाँ अपने दोनों हाथों से अपने अस्त्रागार को खाली कर चुकीं और उन्हें फूलों की एक टोकरी दे दी गई; एक घन्टे की क्रीड़ा के पश्चात् जब उन्हें थोड़ी सी थकावट महसूस हुई तब उन्होंने अपने कोचवान को समुद्र की ओर जाने वाली सड़क जुआन गल्फ की ओर चलने की आज्ञा दी।

सूर्य एस्ट्रोल के पीछे छिप गया। शान्त समुद्र क्षितिज तक जहाँ आकर वह आकाश से मिल गया था, नीला और स्वच्छ फैला हुआ दिखलाई दे रहा था। और जहाजों का बेड़ा जो खाड़ी के बीच में लंगर डाले हुए था बड़े २ विशाल दिखलाई पड़ने वाले जानवरों, जिनकी पीठ पर कुब्ब हो, और जो थैलों की पर्तों में लिपटे हों, और जिनके सिरों पर मस्तूल रूपी पंख लगे हों, और नेत्र जो रात्रि आते ही चमकने लगते हों, के झुन्डों के समान लगता था।

नवयुवतियों ने फर की पोशाक में टांगें फैलाईं और उसकी ओर थकित सी दृष्टि डाली। अन्त में उनमें से एक बोली।

"कितनी सुहावनी संध्या है यह ! हर एक वस्तु अच्छी लगती है। क्यों ठीक है ना मारगोट ?"

दूसरी ने उत्तर दिया : "हाँ, बहुत अच्छी है। किन्तु हमेशा एक चीज की कमी रहती है।"

"वह क्या है ? और रही मेरी बात सो मैं पूर्ण प्रसन्न हूँ। मुझे किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं।"

"हाँ ? शायद, तुम्हारा विचार है...। हमारे शरीर के चारो ओर कुछ भी हो किन्तु हमें मन के लिये कुछ और भी चाहिये।"

"थोड़ा सा प्रेम।" दूसरी ने किंचित मुस्कुरा कर कहा।

वे दोनों चुप हो गईं। अपने सामने देखती हुई उनमें से एक जिसका नाम मार्गरेट था बोली : "मुझे उसके बिना जीवन टिकता भी नहीं दिखलाई देता। मैं चाहती हूँ मुझे कोई प्रेम करे चाहे वह कुत्ता ही क्यों न हो। सिमोने, तुम कुछ भी कहो, किन्तु हम सबकी यही अवस्था है।"

"नहीं प्रिये नहीं। मैं साधारण मनुष्य द्वारा प्रेम किये जाने से तो यह पसन्द करूंगी कि मुझे कोई प्रेम ही न करे। उदाहरण के लिये क्या तुम्हारा विचार है कि मैं किसी ऐसे व्यक्ति से प्रेम करना पसन्द करूंगी जैसे···जैसे···"

उसने अपने नेत्र पड़ोस वाले गांव की ओर घुमाते हुए ऐसे व्यक्ति को देखना चाहा जो उससे प्रेम कर सके। सारे स्थानों पर घूमकर उसकी दृष्टि कोचवान की पीठ पर चमकते हुए दो बटनों पर जा पड़ी, और वह हंसती हुई बोली "अपने कोचवान से ;"

मेडम मार्गरेट उत्तर देते समय बड़ी मुशकिल से हंस पाई।

"मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूँ कि अपने घरेलू व्यक्तियों द्वारा प्रेम किये जाना बहुत आनन्दप्रद होता है। मेरे साथ ऐसी घटना दो या तीन बार बीत चुकी है। वे इस विचित्रता से अपने नेत्रों से देखते हैं कि हंसी के मारे दम निकलने लगता है। यह तो स्वाभाविक है कि जिसको जितना प्रेम किया जाता है वह उतनी ही गम्भीर होती चली जाती है अन्यथा यदि कोई देख ले तो वह अपने आप को किसी तनिक सी ही बात पर बड़ी हास्या-

स्पद स्थिति में ला पटकती है ।"

मेडम सिमोने ने सुना, उसकी दृष्टि ठीक सामने की ओर लगी रही, तब वह बोली :

"नहीं, मेरे व्यक्तिगत सेवक द्वारा मेरे चरणों पर अपना हृदय न्यौछावर करने से मुझे सन्तोष नहीं होगा। किन्तु तुम मुझे यह बतलाओ कि तुमने यह कैसे समझा कि वह तुमसे प्रेम करता था ।"

"जैसे अन्य व्यक्तियों को देखकर पहिचान लेती हूँ वैसे ही मैं उसे भी पहिचान गई। ये लोग कतई मूर्ख हो जाते हैं ।"

"किन्तु मुझे अन्य लोग इतने मूर्ख नहीं लगते जितने ये लोग प्रेम में पड़कर हो जाते हैं ।"

"प्रिये, ये लोग परले सिरे के मूर्ख होते हैं, बातें कर नहीं पाते, उत्तर दे नहीं पाते और कुछ समझ भी नहीं पाते हैं ।"

"और तुम ? तुम पर घरेलू नौकर से प्रेम किये जाने का क्या प्रभाव पड़ा ? क्या तुम्हारी चापलूसी की गई—या द्रवित हो गई !"

"द्रवित ? नहीं। चापलूसी ? हाँ, थोड़ी सी। मनुष्य, वह कोई भी क्यों न हो, के प्रेम प्राप्त होने पर तो हर स्त्री की चापलूसी होती ही होती है ।"

"ओह ! अब, मारगोट !"

"हाँ, मेरी प्रिये। रुको ! मैं तुम्हें एक घटना जो मेरे साथ घटी थी सुनाऊंगी। तुम्हें मालुम पड़ेगा कि ऐसी घटनाओं में हमारे अन्दर कितनी विचित्र बातें पैदा होती हैं ।"

"आज से चार वर्ष पूर्व वसन्त ऋतु में मेरे पास नौकरानी नहीं रही। मैंने एक के बाद एक करके पांच या छः की परीक्षा ली। सब अयोग्य निकलीं। और तब एक नौकरानी के लिए हताश हो मैंने एक समाचार पत्र में एक नवयुवती का, जिसे सीना पिरोना, कसीदा काढ़ना और बाल सँवारना आता था, विज्ञापन पढ़ा। वह युवती एक नौकरी की तलाश में थी और बहुत अच्छे प्रमाण पत्र दिखला सकती थी। वह अङ्गरेजी भी बोल सकती थी ।

"मैंने उस पते पर पत्र डाला और दूसरे दिन वह स्त्री मेरे पास स्वयं आ उपस्थित हुई। वह कुछ लम्बी, पतली, कुछ पीली-सी डरपोक-सी स्त्री थी। उसके नेत्र सुन्दर थे, रङ्ग आकर्षक था और उसने मुझे शीघ्र ही सन्तुष्ट कर दिया। मैंने उससे परिचय-पत्र माँगे; उसने मुझे एक अङ्गरेजी में लिखा हुआ दिया क्योंकि, उसने बतलाया कि, वह लेडी रीजबेल के यहाँ से, जहाँ वह दस वर्षों से रह रही थी, आई थी।

"प्रमाण पत्र में लिखा हुआ था कि वह लड़की अपनी इच्छा से फ्रांस लौट रही थी, और उसे इस लम्बे सेवाकाल में सिवाय उसकी फ्रांसीसी नाप-लसी के और कोई शिकायत नहीं थी।

"अंग्रेजों के इस मुहावरे पर मैं यत्किंचित मुस्कराई और मैंने उसी समय उसे नौकरी पर रख लिया। वह मेरे यहाँ उसी दिन आ गई; उसने अपना नाम गुलाब (Rose) बतलाया।

"एक महीना समाप्त होते ही मैं उसकी आराधक बन गई। वह एक खजाना थी, अद्भुत वस्तु थी।"

"मेरे बालों को बहुत ही सुन्दर ढङ्ग से काढ़ सकती थी; वह टोपी के फीते को उस काम के करने वालों से भी अच्छा टाँक सकती थी और वह फ्राकें भी बना लेती थी। उससे पहिले मेरी कभी इतने अच्छे ढङ्ग से सेवा नहीं की गई थी।"

आश्चर्यजनक मृदुता से वह अपने हाथों को बहुत जल्दी कपड़े पहिना देती थी। उसकी उँगलियों ने मेरी त्वचा का कभी स्पर्श नहीं किया। और मुझे नौकरानी के हाथ के स्पर्श से अधिक बुरा और कुछ नहीं महसूस होता है। शीघ्र ही मैं बहुत आलसी हो गई, उसके हाथ से, पैर से लगाकर सिर तक कपड़े पहिनना चोली से लेकर दस्ताने पहिनना, मुझे बहुत ही आनन्ददायक लगता—यह पतली डरपोक लड़की हमेशा ही लज्जा से किंचित मात्र आरक्त हो जाती किन्तु कहती कुछ नहीं थी। नहाने के बाद जब मैं अपने दीवान रूम में जाकर थोड़ी देर लेटती तब वह मेरे शरीर को मलती तथा दाबती; और सचमुच मैं दयनीय परिस्थितियों में उसे नौकरानी की बजाय सखी की दृष्टि से देखती थी।

"एक दिन सुबह एक व्यक्ति ने कुछ अद्‌भुत रहस्य सा प्रदर्शित करते हुए मुझसे कहा कि वह मुझसे बातें करना चाहता था। मुझे आश्चर्य हुआ किन्तु मैंने उसे अन्दर आने की आज्ञा दे दी। वह एक पुराना सिपाही था और एक बार मेरे पति का अर्दली भी रह चुका था।

"जो कुछ वह कहना चाहता था उस पर पहिले तो वह हिचकिचाया किन्तु अन्त में उसने हकलाते हुए कहा—"श्रीमतीजी इस जिले का पुलिस कप्तान नीचे सीढ़ियों के पास खड़ा है।'

मैंने पूछा—"क्यों उसे क्या काम है?"

"वह मकान की तलाशी लेना चाहता है।"

'अवश्य ही पुलिस एक आवश्यक वस्तु है किन्तु मैं उसे पसन्द नहीं करती। मैं भी इसे भद्र व्यवसाय नहीं मान सकती। और मैंने उत्तेजित एवं साथ ही साथ आहत होते हुए कहा :

"यहाँ तलाशी क्यों? किसलिये? अभी तो कोई लूट मार हुई नहीं है।"

उसने उत्तर दिया :

"उसका विचार है कि यहाँ कहीं एक अपराधी छिपा हुआ है।"

"मैं थोड़ी सी भयभीत होने लगी और मैंने पुलिस कप्तान को ऊपर बुलाने की इसलिये आज्ञा दी कि मैं उससे उसका अर्थ पूछूँ। वह अच्छे कुलीन घर का था और उसकी पोशाक पर लीजन आफ ऑनर का तमगा लग रहा था। उसने स्वयं क्षमा माँगी और मुझसे अपनी बात दोहराने को कहा और तब उसने मुझे निश्चय दिलाया कि मेरे नौकर में से एक नौकर अपराधी था।

"मुझे तो बिजली मार गई, मैंने उत्तर दिया कि मैं उनमें से प्रत्येक की जिम्मेदारी ले सकती थी किन्तु उसे सन्तोष दिलाने के लिये मैं उन सबको उसके सम्मुख उपस्थित भी कर सकती थी।"

"मेरे यहाँ एक पुराना सैनिक पीटर कोर्टिन है।"

यह वह नहीं था।

"कोचवान फ्रान्सिस पिन्गाऊ, मेरे पिता के खेतों पर काम करने वाले किसान का लड़का।"

वह भी नहीं था।

घुड़साल में काम करने वाला लड़का, लेम्बेगने का है, और मेरे जाने हुए किसानों का लड़का है—इसके अतिरिक्त वह चौकीदार है जिसे आपने अभी देखा था।

"उन सबमें से भी कोई नहीं था।"

"तब साहब, आपको धोखा हुआ है।"

"क्षमा कीजियेगा श्रीमती जी, मुझे विश्वास है कि मुझे धोखा नहीं हुआ है। आपकी आकृति अपराधियों की सी कतई नहीं है। अतः क्या आप अपने सब नौकरों को मेरे और अपने सामने बुलाने की कृपा करेंगी, सबको ?"

"पहिले तो मैं हिचकिचाई, तब मैं चिल्ला २ कर अपने जनाने मरदाने सब नौकरों को आवाज देने लगी।"

उसने उन सबकी ओर एक क्षण में ही देखकर उत्तर दिया—

"इनमें कोई भी नहीं है।"

"क्षमा कीजिये", मैंने उत्तर दिया—"बस, मेरी सेविका के अतिरिक्त जो कि किसी भी भाँति अपराधिनी नहीं हो सकती, यहाँ और कोई नहीं है।'

उसने पूछा—"क्या मैं उसे भी देख सकता हूँ ?"

"निश्चय।"

"मैंने घण्टी बजाई और तुरन्त ही गुलाब उपस्थित हुई। वह अन्दर आ भी नहीं पाई थी कि उसने इङ्गित किया और दो आदमी, जो द्वार के पीछे छिपे हुए थे और जिन्हें मैं देख भी नहीं पाई थी, उसके ऊपर झपटे और उसके हाथों को पकड़ कर उसे रस्सी से बाँध लिया।

"मैं बहुत क्रोध में उन्मत्त हो चिल्ला पड़ी और उसकी रक्षा करने को उठने ही वाली थी कि कप्तान ने मुझे रोक दिया—

"श्रीमतीजी, यह लड़की पुरुष है जो अपना नाम जॉन निकोलस खेसापेट बतलाता है और जिसको सन् १८३६ में हिंसा से हत्या करने के अपराध में मृत्युदण्ड दिया गया था। इसकी सजा आजीवन कारावास में बदल दी गई। यह चार महीने पहिले भाग निकला था और हम लोग तब ही से तलाश कर रहे हैं।"

मैं प्रसन्न हो चुप हो गई। मैं उस पर विश्वास नहीं कर सकी। पुलिसमैन ने हँसते हुए कहने का क्रम जारी रखा—

"मैं आपको केवल एक ही सबूत दे सकता हूँ और वह है कि इसकी बाईं बांह गुदी हुई है।"

उसकी बाहें उघारी गईं। यह बात सही थी। पुलिसमैन ने कहा—उसका स्वर निश्चय ही दुर्विनीत था।

"निस्सन्देह,अब आपके सन्तोष के लिए अन्य प्रमाणों की आवश्यकता नहीं रही होगी।"

और वह मेरी नौकरानी को अपने साथ ले गया।

यदि तुम विश्वास करो, मेरे अन्दर उस समय जो सबसे अधिक प्रचण्ड भावना थी वह थी क्रोध की कि मेरे साथ इस भाँति खिलवाड़ किया गया और मुझे हास्यास्पद बनाया गया; उसके द्वारा कपड़े पहिनाये जाने पर, अङ्ग स्पर्श होने पर, या अन्य कार्य करवाने पर लज्जा की बात नहीं थी, किन्तु यह थी ठेस—आत्म-सम्मान को ठेस—स्त्री के आत्म-सम्मान को ठेस। समझीं ?'

"नहीं पूरी तरह से नहीं।"

"देखो एक मिनट विचार करो—हिंसात्मक कार्यों के कारण उसको फाँसी दी गई, यह नवयुवक और इससे—बस आगे वहाँ मेरा गर्व खण्डित हो गया अब तुम समझीं ?"

और मैडम सिमोने ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह अपने सामने दो चमकते हुए बटनों पर दृष्टि जमाये हुए, दैवी मुस्कान से जो कभी २ स्त्रियों के मुख पर स्वभावतः आ जाती है, कोसती रहीं।

एक राज काज

सीडन के विस्फोट की बात पेरिस में अभी-अभी मालूम हुई थी। स्वतन्त्रता घोषित कर दी गई थी। सारा फ्रांस एक पागलपन से उन्मत्त हो रहा था और वह पागलपन तब तक चलता रहा जब तक कि उसे कौमनवेल्थ घोषित न किया गया।

सारे देश में एक सिरे से दूसरे सिरे तक सब सैनिक ही बने दिखाई देते थे।

टोपी बनाने वाले कर्नल बन गये और जनरलों की ड्यूटियाँ सम्भाले हुए थे; पिस्तौलें और छुरे लाल २ जालियों से लपेट कर प्रदर्शित किये गये थे। साधारण नागरिक योद्धा बन गये, उन्होंने शोर मचाने वाले स्वयं-सेवकों की कमांडिंग बटालियनें बना लीं और सैनिकों की भाँति अपनी महत्ता प्रदर्शित करने के लिये वे लोग शपथें खाने लगे।

क्रम-बद्ध हो हथियार पकड़ने और बन्दूकें चलाने की ही भावना ने मनुष्यों को, जिन्होंने इधर हमेशा से ही फुटों और नपने के गजों का ही प्रयोग किया था, उत्तेजित कर दिया और जो भी आया उससे वे अकारण ही डर गये। उन्होंने यह दिखलाने के लिए कि वे मार डालना भी जानते थे कुछ निर्दोष व्यक्तियों को मृत्यु के घाट भी उतार दिया था। प्रशियनों के खेतों में घूमते-घूमते कुत्तों को या गायों को जो शान्ति से भूसा खा रही होतीं, या घोड़ों को जो चरागाहों में छोड़ दिये गये थे, वे लोग अपनी गोली का शिकार बना देते—हर एक को अपने ऊपर विश्वास था कि वह सेना में किसी बहुत ही महान् पार्ट को अदा करने में समर्थ है। छोटे से छोटे गाँवों के यूनीफार्म पहिने हुए व्यापारियों से भरे हुए जलपान-गृह ऐसे लगते मानो वह मिलिटरी-बैरक या अस्पताल हों।

केनेविले नगर में राजधानी तथा सेनाओं के उत्तेजनात्मक समाचार

अभी तक नहीं पहुँचे थे। एक ठिगने पतले आदमी मेयर विस्काउन्ट डी वारनेटोट ने, जो अब वृद्ध हो गया था, खासतौर से जब से अपने विरुद्ध जिले की रिपब्लिकन पार्टी के नेता मैसोनिक लोज के मुखिया, कृषि एवं अग्नि सभा के सभापति, और देश की रक्षा करने के विचार से एकत्रित की गई सेना के संस्थापक डाक्टर मसरेल के बड़े और गम्भीर स्वरूप में अपने महान दुर्भाग्य को पैर फैलाते हुए देखा तब से वह राज्य के प्रति और भी अधिक वफादार हो गया।

दो सप्ताहों में उसने अपने देश की रक्षा करने के लिये श्रेसठ स्वयं-सेवक, विवाहित पुरुष, परिवारों के कर्त्ता, नगर के बुद्धिमान किसान एवं व्यापारी, भरती किये। इन्हें वह मेयर की खिड़की के सम्मुख नित्य प्रति कवायद कराता।

जब कभी भी मेयर दिखलाई पड़ जाता तब ही पिस्तौलों से सुसज्जित कमान्डर मसरेल अपनी सेना के सम्मुख गर्व से इधर से उधर जाता हुआ उनसे नारे लगवाता "हमारा देश—अमर रहे।" और वे देखते कि इससे उस अमीर को, जो उसे निस्सन्देह धमकी और धींगाधींगी समझता, परेशानी पैदा हो जाती थी और शायद उसे महान क्रान्ति की कोई घृणित स्मृति हो आती थी।

पांच सितम्बर की सुबह अपनी ड्रेस में डाक्टर एक वृद्ध किसान दम्पति को देख रहा था, उसका रिवोल्वर उसकी मेज पर रखा हुआ था। पति को वह बीमारी सात वर्षों से थी किन्तु वह अपनी पत्नी के भी उस बीमारी से बीमार हो जाने की प्रतीक्षा करता रहा जिससे कि वे डाकिये के सङ्ग, जब वह समाचार-पत्र लेकर आवे तब दोनों ही डाक्टर के यहाँ साथ २ इलाज कराने जांय।

डा० मसरेल ने द्वार खोला, वह पीला पड़ गया तथा सीधे खड़े होते हुए स्वर्ग की ओर हाथ उठा कर उन आश्चर्य चकित ग्रामीणों के मुख की ओर प्रशंसात्मक दृष्टि से देखते हुए चिल्लाकर कहा :

"हमारी स्वतन्त्रता अमर रहे! हमारी स्वतन्त्रता अमर रहे! हमारी स्वतन्त्रता अमर रहे!"

तब वह आवेश में आकर अपनी आराम कुर्सी पर लेट गया।

जब किसान ने बतलाया कि उसकी बीमारी का आरम्भ पावों के सुन्न पड़ जाने से हुआ अर्थात् पावों में ऐसा लगता कि चींटियाँ उतर चढ़ रही हैं, तब डाक्टर ने चिल्लाकर कहा : "खामोश रहो। मैंने तुम मूर्खों के लिये पहिले ही बहुत समय देदिया है। स्वतन्त्रता की घोषणा हो चुकी है। सम्राट बन्दी बना लिया गया है। फ्रांस की रक्षा हो गई। हमारी स्वतन्त्रता अमर रहे!" और, द्वार के पास दौड़कर उसने पुकारा "सेलेस्टे! जल्दी! सेलेस्टे!"

नौकरानी घबड़ाकर शीघ्र अन्दर आ गई। वह इतनी जल्दी २ बोल रहा था कि तुतला जाता "मेरे जूते—मेरी तलवार—गोलियों का मेरा बक्स और—स्पेनिश कटार—वह मेरी नाइटटेबिल पर रखी है। जल्दी!"

जिद्दी किसान एक क्षण की चुप्पी के पश्चात समय से लाभ उठाते हुए बोला "यह मुझे जब मैं चलता था तब पानी भरे गुब्बारे की भाँति चोट पहुँचाता था।"

क्रोध में भरा हुआ डाक्टर चिल्लाया : "खामोश रहो। भगवान के वास्ते। अगर तुम अपने पैरों को यदाकदा धोते रहते तो ऐसा नहीं होता।" तब उसकी गर्दन पकड़, उसके मुंह पर फुसकारते हुए वह बोला : "मूर्ख, क्या तुम यह नहीं समझ पाते कि हम लोग स्वतन्त्रत देश में रह रहे हैं?"

किन्तु उसकी व्यवसायिक भावना ने उसे एकाएक शान्त कर दिया और उसने आश्चर्य में पड़े हुए वृद्ध दम्पति को मकान से बाहर निकालते हुए बार २ दोहराया :—

"कल आना कल—कल—कल-मेरे दोनों आज मेरे पास और समय नहीं है।"

अपने आपको सिर से पांव तक सजाते समय उसने अपनी नौकरानी को दूसरी अन्य आवश्यक आज्ञाओं की लड़ी बाँध दी :—

"लेफ्टीनेन्ट पिकार्ड और सब-लेफ्टीनेन्ट पोनेल के घरों पर दौड़कर जाओ और उनसे कहो कि मुझे उनसे यहाँ बहुत जरूरी काम है.वे यहाँ आकर मिल लें। हाँ, टोर्चेब्यूफ को भी ड्रम (ढोल) लेकर भेज दो। जल्दी

अब ! जल्दी !" और जब सेलेस्टे चली गई उसने परिस्थिति की कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करने के लिये अपने विचारों को संगठित एवं तैयार किया।

तीनों आदमी एक साथ आये। वे अपने दैनिक कपड़े पहिने हुए थे। कमान्डर को यह देखकर आश्चर्य हुआ क्योंकि उसे आशा थी कि वे लोग अपनी वर्दियों को पहिनकर आयेंगे।

"तब तुम्हें कुछ नहीं मालूम ? साम्राट बन्दी बना लिया गया है। स्वतन्त्रता की घोषणा हो गई है। मेरी स्थिति नाजुक है कहना न होगा कि खतरनाक है।"

वह अपने आधीनस्थ कर्मचारियों के चकित चेहरों की ओर देखकर कुछ मिन्टो तक विचार करता रहा और तब बोला :—

"हिचकिचाने की आवश्यकता नहीं कार्य करने की आवश्यकता है। इस समय एक २ मिनट घन्टों के बराबर है। हर वस्तु—निर्णय की शीघ्रता पर निर्भर है। पिकार्ड, तुम जाओ और पादरी से मिलो और लोगों को एकत्रित करने के लिये घन्टी बजवाओ तब तक मैं आगे जाता हूँ। टोर्कब्यूफ जाओ और सेना को शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित कर एकत्रित होने के लिये घन्टी बजाओ। पामेल तुम अपनी ड्रेस शीघ्र ही पहिनो यह रही जाकेट और टोपी। हम दोनों मेरी पर अधिकार करने जा रहे हैं और मोन्स्यूर डी वारनेटोट से सत्ता मैं अपने हाथों हस्तांतरित करने जा रहा हूँ। समझे ?"

"जी।"

"तो फिर शीघ्रता से करो। पामेल, मैं तुम्हारे साथ तुम्हारे घर तक चलूंगा क्योंकि हम दोनों को साथ ही साथ काम करना है।"

पांच मिनट पश्चात, कमान्डर और उसका अधीनस्थ दोनों ही शस्त्रों से सुसज्जित हो मैदान में आ उपस्थित हुए। ठीक उसी समय दूसरी सड़क से विस्काउन्टडी वारनेटोट शिकार खेलने के जूते तथा हरी जाकेट पहिने हुए और अपने कंधे पर अपनी बन्दूक रखे हुए, तीन चौकीदारों के साथ, जिनके बगल में एक २ चाकू लटका हुआ था तथा कंधों पर एक २ बन्दूकें रखी हुई थी, बड़ी तेज चाल से चला जा रहा था।

डाक्टर रुका, और अर्द्ध मूर्च्छित से हो चारों व्यक्ति मेयर के घर में घुस गये। उनके घुसते ही दरवाजा बन्द हो गया।

डाक्टर बड़बड़ाया—"हम लोगों को पहिले से घेर लिया गया है, अब नई सेना के आने तक रुकना आवश्यक होगा; पन्द्रह मिनट तक तो अभी कुछ भी नहीं हो सकता।"

यहाँ लेफ्टीनेन्ट पिकार्ड आया—"पादरी आज्ञा का पालन करने से इन्कार करता है।" वह बोला—"यहाँ तक कि वह गिरजाघर में ही वहाँ के अफ़सर तथा दरवान को बन्द करके बैठ गया है।"

मैदान के दूसरी ओर मेरी के पास ही सामने काले और शान्त गिरजाघर का शाहबलूत की लकड़ी का बना हुआ बड़ा दरवाजा, जिसके ऊपर लोहे की नक्काशी, जो अब गल चुकी थी, हो रही थी, दिखलाई दिया।

तब, ज्योंही परेशान नगर-निवासी खिड़कियों में से झाँकने लगे, या अपने मकानों की सीढ़ियों पर आये त्योंही ढोल बजता हुआ सुनाई दिया। और टोर्चेब्यूक क्रोध में भरा हुआ सैनिकों को बुलाने के लिये ढोल बजाता हुआ एकाएक आया। उसने मैदान को अनुशासनात्मक ढङ्ग से कदम रखते हुए पार किया फिर एक गाँव को जाने वाली सड़क पर चल दिया।

कमान्डर ने अपनी तलवार बाहर निकाली और दोनों इमारतों के बीच में, जहाँ शस्त्र एकत्रित कर लिये गये थे, अकेला पहुँचा और अपने अस्त्र को अपने सिर के ऊपर से घुमाता हुआ अपनी पूरी शक्ति से चिल्लाया—"हमारी स्वतन्त्रता अमर रहे! गद्दारों को फाँसी मिले!!" तब वह पीछे, जहाँ उसके अन्य अफसर थे, लौट आया। गोश्त, रोटी और दवाई बेचने वालों ने सशंकित हो अपने २ किवाड़ लगाये और अपनी दूकानें बन्द करदीं। केवल वस्तु भंडार ही खुला रहा।

इसी बीच में थोड़े २ कर, भिन्न-भिन्न कपड़े पहने हुए सैनिक आते रहे। वे सब टोपी पहिने हुए थे—टोपी ही सेना की सारी यूनीफार्म बन गई। वे लोग पुरानी जङ्ग खाई हुई बन्दूकों से सुसज्जित थे। उनको वे

बन्दूकें रसोई घरों की धुँएदानी में तीस २ वर्षों से लटकी रहती थीं। उनकी सेना देहाती सेना की तरह लग रही थी।

जब कमान्डर के चारों ओर लगभग तीस लोग इकट्ठे हो गये, तब उसने उन लोगों को राज्य के बारे में संक्षेप में बतला दिया। और अपने मेजर की तरफ मुड़ते हुए वह बोला—"अब हम लोगों को अपना काम करना चाहिये।"

उधर नगर-निवासी एकत्रित होते रहे तथा उस विषय में बातचीत या बहस करते रहे, इधर डाक्टर ने शीघ्र ही आक्रमण करने की अपनी योजना बना डाली :

"लेफ्टीनेन्ट पिकार्ड, तुम मेयर के मकान की खिड़की के पास जाओ और मि० डी० वारनेटोट को स्वतन्त्रता के नाम पर नगर भवन मुझे सौंप देने की आज्ञा दो।"

किन्तु लेफ्टीनेन्ट मेसन * शिक्षक था। उसने वहाँ जाना अस्वीकार कर दिया। वह बोला :

"आप......आप बेकार आदमी हैं। और पहिला शिकार मेरा ही बनाना चाहते हैं। जानते हैं, वे लोग जो वहाँ पर अन्दर हैं बहुत अच्छे निशाने रहेंगे। नहीं, धन्यवाद अपना काम आप स्वयं ही कीजिये।"

कमान्डर क्रोध से लाल होकर बोला—"मैं तुमको अनुशासन के नाम पर वहाँ जाने की आज्ञा देता हूँ।"

"अकारण ही मैं अपने पङ्ख नहीं कटवाता।" लेफ्टीनेन्ट ने उत्तर दिया।

प्रभावशाली व्यक्तियों की, जो वहीं पास में एक दल बना कर खड़े

---

* मेसन—फ्रीमेसन योरोप में एक धार्मिक संस्था है। उस संस्था के सदस्य मेसन कहलाते हैं। ये लोग विश्व-बन्धुत्व की भावना का प्रचार करते हैं।

हुए थे, हँसी की आवाज सुनाई दी। उनमें से एक ने कहा—"पिकार्ड, तुम ठीक कह रहे हो, अभी उचित समय नहीं आया।" डाक्टर मन ही मन बड़बड़ाया "कायर!" और अपनी तलवार तथा पिस्तौल को एक सिपाही के हाथ में देता हुआ वह नपे तुले कदमों से आगे बढ़ा। उसके नेत्र खिड़कियों की ओर जमे हुए थे मानो उसे कोई बन्दूक या तोप अपनी ही ओर सधी दिखलाई देने की सम्भावना थी।

वह उस इमारत से कुछ कदम ही दूर था कि दो छोरों का दरवाजा जिसके अन्दर से दो स्कूलों का रास्ता था खुला और छोटे २ बच्चों की बाढ़ सी आई—एक ओर लड़के दूसरी ओर लड़कियाँ खुले स्थान में आकर डाक्टर को चिड़ियों के झुण्डों की भाँति घेर कर बातचीतें करते हुए खेलने लगे। उसकी समझ में नहीं आया कि करना क्या चाहिये।

जब अन्तिम बच्चा बाहर निकल आया तब दरवाजा बन्द हो गया। अन्त में छोटे २ बन्दरों का बड़ा समुदाय इधर उधर फैल गया और कमान्डर ने उच्च स्वर से पुकार कर कहा:

"मि० डी वारनेटोट?" पहिली मन्जिल की एक खिड़की खुली और मि० डी वारनेटोट उसमें से झाँके।

कमान्डर ने कहना प्रारम्भ किया—"मिस्टर, आपको उन सब महान् घटनाओं की जानकारी तो होगी ही जिनके कारण सरकार बदल गई है। जिस संस्था के आप प्रतिनिधि हैं वह संस्था ही समाप्त हो गई है। जिस पक्ष का मैं प्रतिनिधि हूँ शक्ति अब उसके हाथों में आ चुकी है। ऐसी दुखद, किन्तु निश्चित परिस्थिति में मैं आपके पास स्वतन्त्रता के नाम पर पिछली सरकार द्वारा आपको दिये गये अधिकारों को अपने हाथ में लेने की माँग करने आया हूँ।"

मि० डी वारनेटोट ने उत्तर दिया—"डा० मसरेल, मैं कैनेविले का मेयर हूँ और अधिकृत व्यक्तियों द्वारा बनाया गया था। मैं कैनेविले का मेयर तब तक रहूँगा जब तक कि यह पदवी मेरे उच्च अधिकारियों द्वारा मुझसे छीन ली या बदली नहीं जाती। और मेयर की हैसियत से मैं मेरी में एक घर में रह रहा हूँ और रहूँगा भी यहीं। इसके बाद भी तुम चाहो

तो मुझे बाहर निकालने का प्रयत्न करो।" और उसने खिड़की बन्द कर दी।

कमान्डर अपनी सेनाओं में लौट आया। किन्तु कुछ भी समझाने से पहिले लेफ्टीनेन्ट पिकार्ड को सिर से पावों तक निहारते हुए बोला :

"तुम मूर्ख हो, तुम मुर्गे हो, सेना के लिये अपमान हो। मैं तुम्हें पदच्युत कर दूँगा।"

लेफ्टीनेन्ट ने उत्तर दिया : "मैं उसकी चिन्ता स्वयं कर लूँगा।" और वह धीरे-धीरे बात करते हुए नागरिकों के एक दल में चला गया।

तब डाक्टर हिचकिचाया। उसे क्या करना चाहिये? चढ़ाई करनी चाहिये? क्या उसके लोग उसकी आज्ञा मानेंगे? और क्या उसका विचार बिल्कुल ठीक था? उसके ध्यान में एक बात आई। वह दौड़ कर तार घर गया, जो कि उस मैदान के दूसरी ओर था, और शीघ्रता से तीन तार दे डाले।

"मेम्बर, रिपब्लिकन गवर्नमेन्ट, पेरिस को।" "न्यू रिपब्लिकन प्रीफेक्ट ऑफ दी लोअर सीन, रोन को।" "न्यू रिपब्लिकन सब-प्रीफेक्ट ऑफ डीपे को।"

उसने सम्पूर्ण परिस्थिति व्यक्त कर दी थी; उसने लिख दिया था कि सामन्तशाही मेयर के हाथ में जनता का धन रहने से खतरा है, अपनी पवित्र सेवा की इच्छा व्यक्त कर दी थी, आज्ञाएं माँगी थीं और हस्ताक्षर कर अपने सब खिताबों को भी लिख दिया था। तब वह अपनी सेना में वापिस आया और अपनी जेब से दस फ्रेन्क निकाल कर बोला—

"अब मेरे मित्रो! जाओ और थोड़ा बहुत खा पी लो। यहाँ केवल दस व्यक्तियों का एक जत्था छोड़ जाओ ताकि मेयर के घर से कोई निकल कर भाग न जाये।"

पदच्युत लेफ्टीनेन्ट पिकार्ड ने घड़ीसाज से बातें करते-करते यह सुन लिया था। उसने कटाक्ष किया : क्षमा करना, अगर वे बाहर निकल कर भाग जाते हैं तो आपको अन्दर जाने का एक सुअवसर मिल जायेगा, अन्यथा मुझे तो दिखलाई नहीं देता कि आप अन्दर प्रवेश कर भी सकेंगे।"

डाक्टर ने कोई उत्तर नहीं दिया किन्तु भोजन करने वाले अपने घर में चला गया। दोपहर में उसने उपस्थित आश्चर्यमयी घटना के ज्ञान के कारण नगर के सब कार्यालयों की छुट्टी करवा दी। कितनी ही बार उसने मेरी के तथा गिरजाघर के किसी सन्देहात्मक वस्तु के देखे बिना ही चक्कर लगाये। किसी को भी यह विश्वास हो सकता था कि दोनों इमारतें खाली हैं।

गोश्त बेचने वाले ने, रोटी बेचने वाले ने तथा दवाई बेचने वाले ने अपनी २ दूकानें फिर खोल ली थीं और सीढ़ियों पर खड़े गप्पें लड़ा रहे थे। यदि सम्राट बन्दी बना लिये गये तो अवश्य वहाँ कोई गद्दार होगा। वे नये प्रजातंत्र के लगान पर विश्वास नहीं कर सके।

रात हुई। नौ बजे के लगभग डाक्टर चुपचाप अकेला मेयर के घर गया, उसने सोचा था कि उसका शत्रु वहाँ से चला गया था। और जैसे ही उसने कुदाली के थोड़े से प्रहारों से एक द्वार को बलात् खोलने का प्रयत्न किया वैसे ही एक चौकीदार की कड़क आवाज ने एकाएक पूछा—"वहाँ कौन है ?" मि० मसरेल दुम दबाकर वहाँ से भाग दिये।

दूसरे दिन पौ फटी। किन्तु स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। शस्त्रों से सुसज्जित सेना मैदान को घेरे रही। नगर निवासी चारों ओर समस्या के हल की प्रतीक्षा में खड़े रहे। आस-पास के गाँवों से भी लोग वास देखने आये। अन्त में डाक्टर ने यह अनुभव कर कि उसकी प्रतिष्ठा पर आँच आ रही थी, मामले को इस पार या उस पार करने का निश्चय कर लिया। उसने अभी निश्चय ही किया था कि कुछ शानदार चीज होनी चाहिये कि सार-घर का द्वार खुला और लेडी डाइरेक्टर की छोटी नौकरानी अपने हाथ में दो कागज लिये हुये आई।

वह सीधी कमान्डर के पास गई और एक पत्र उसके हाथ में दिया। मैदान को पार करती हुई अपने ऊपर जमी हुई सैकड़ों दृष्टियाँ सहमी हुई, सिर झुकाये तेज कदमों से उसने सेना से भरे हुए उस मकान के द्वार पर थपकी दी मानो वह इस बात से अनजान हो कि वहाँ भी सेना के कुछ लोग छिपे हुए थे।

द्वार थोड़ा सा खुला; एक मनुष्य के हाथ ने वह पत्र ले लिया, और लड़की, सैकड़ों दृष्टियों के जमे होने के कारण लज्जित, रुआँसी सी हो वहाँ से लौट दी।

डाक्टर ने काँपते हुए स्वर में कहा—"कृपा कर शान्त हो जाइये।" और जब जनता शान्त हो गई तब उसने गर्व से कहा :

"देखिये यह रहा सन्देश जो मुझे अभी-अभी सरकार से प्राप्त हुआ है।" और उस पत्र को, जो उसे मिला था, ऊँचा उठा कर वह पढ़ने लगा —

पुराना मेयर पदच्युत कर दिया गया। और क्या अति आवश्यक है सूचित कीजिये।

आज्ञाएं बाद में—

सेपिन

वास्ते मन्त्री

सब प्रीफेक्ट।

उसकी विजय हो गई। उसका हृदय प्रसन्नता से भर उठा, हाथ काँपने लगा जब उसके पुराने लेफ्टीनेन्ट पिकार्ड ने एक पास वाले दल में से चिल्ला कर कहा—"यह तो ठीक है; किन्तु यदि वे लोग नहीं निकले तो आपके पत्र की कोई कीमत नहीं।" तब डाक्टर कुछ अप्रतिभ हो गया। यदि वे खाली नहीं करते—वास्तव में उसे आगे जाना चाहिये। यह उसका केवल अधिकार ही नहीं कर्तव्य भी था। और उसने मेयर के मकान की ओर उत्सुकता से इसलिये देखा कि शायद कोई द्वार खुला हो और उसमें से उसे उसका शत्रु दिखलाई दे जाय। किन्तु द्वार बन्द रहा। अब क्या

करना चाहिये ? सैनिकों को घेर कर भीड़ बढ़ती जा रही थी। कुछ लोग हँस रहे थे।

डाक्टर को एक विचार से बड़ी परेशानी हुई। यदि वह आक्रमण करता है तो उसे अपने आदमियों का नेतृत्व करना पड़ेगा; और उस अकेले के ऊपर मि. डी वारनेटोट और उसके तीनों चौकीदार गोली चलायेंगे और यदि कहीं वही मर जावेगा तो झगड़ा ही समाप्त हो जावेगा। और उन लोगों का निशाना अच्छा—बहुत अच्छा था! इसका पिकार्ड ने उसे ध्यान दिला दिया था।

किन्तु एक विचार उसके मस्तिष्क में घूम गया। और वह पामेल की ओर मुड़ कर बोला—"जल्दी से जाकर दवाई बेचने वाले से एक पोल और एक झण्डा लेकर मेरे पास भेजने को कहो।"

लेफ्टीनेन्ट जल्दी से गया। डाक्टर एक राजनीतिक ध्वज (सफेद) बनाने जा रहा था, शायद वह उस बुड्ढे असली मेयर के हृदय को प्रसन्न कर दे।

पामेल कपड़ा और पोल लेकर आ गया। थोड़े से धागों से उन्होंने उसे ठीक ठाक कर लिया। मसरेल ने उसे अपने दोनों हाथों से पकड़ लिया। फिर वह मेयर के मकान की तरफ हाथ में झंडा लिये बढ़ा। द्वार के सामने खड़े होकर उसने आवाज दी—"मि. डी वारनेटोट।"

द्वार एकाएक खुला और मि. डी वारनेटोट तथा उसके तीनों चौकीदार दिखलाई पड़े। स्वभावगत डाक्टर झिझका। फिर उसने अपने शत्रु को विनय से अभिवादन किया और भावनाओं से विभोर होता हुआ बोल—महोदय, मैं आपको उन आज्ञाओं की जो मुझे अभी प्राप्त हुई हैं सूचना देने आया हूँ।"

भद्र पुरुष ने बिना किसी भी प्रकार के अभिवादन किये हुये ही कहा—"महोदय, मैं स्वयं अलग हुआ जाता हूँ, किन्तु आपको यह जान लेना चाहिये कि मैं किसी भय से या घृणित सरकार जिसने अन्याय से शक्ति हथियाली है, की आज्ञाकारिता से प्रभावित होकर ऐसा नहीं कर रहा।" और एक २ शब्द को खींच कर उसने घोषित किया—"मुझे एक दिन

भी रिपब्लिक की सेवा करने की इच्छा नहीं है। बस यही मुझे कहना है।"

मसरेल आश्चर्यचकित हो गया उसने कोई उत्तर नहीं दिया; और मि. डी वारनेटोट अपने अनुरक्षकों के साथ तेजी से कदम रखता हुआ कोने के पास ही अदृश्य हो गया। तब डाक्टर कुछ अप्रसन्न सा हो भीड़ में लौट आया। जब वह उस भीड़ से केवल इतनी ही दूर रह गया जहाँ से कि उसकी आवाज वहाँ तक पहुँच सकती थी। वह चिल्लाया—"हुर्रा! हुर्रा!! प्रजातन्त्र सब पर एक सिरे से विजय प्राप्त कर रहा है।"

किन्तु कोई उत्तेजना नहीं दिखलाई दी। डाक्टर ने फिर से प्रयत्न किया--"मनुष्य स्वतन्त्र हैं! आप आजाद और स्वतंत्र हैं!! समझे आप!!! इस पर गर्व कीजिये।"

असावधान ग्रामीणों ने निष्प्रभ नेत्रों से उसकी ओर देखा। अपनी पारी पर, उसने उनकी उदासीनता पर, उनकी ओर क्रोध से देखा और ऐसे शब्दों को खोजने लगा जो बहुत प्रभावोत्पादक हों और इस शान्त गाँव में बिजली सी दौड़ा दें जिससे वह अपने सत्कार्य में सफल हो सके। उसे प्रेरणा हुई और पामेल की ओर मुड़ते हुये वह बोला—"लेफ्टीनेन्ट, जाओ पहिले सम्राट की मूर्ति (धड़) और एक कुर्सी, जो काउन्सिल हाल में रखी हुई है, मेरे पास लेकर आओ।"

और जल्दी ही वह आदमी अपने दायें कन्धे पर प्लास्टर की नैपोलियन तृतीय की मूर्ति को, और बाँये हाथ में कुर्सी को लेकर आ गया।

मसरेल उससे मिला, कुर्सी दी, उसे जमीन पर रखा और उस पर श्वेत मूर्ति को रखा, थोड़े कदम पीछे हटा और उच्च स्वर में बोला:

"निर्दयी! निर्दयी!! यहाँ तुम्हारा पतन होता है। धूल और मिट्टी में मिल जाओ। एक निष्प्राण देश तुम्हारे पैरों के नीचे कराहता है। भाग्य

तुमको बदला लेने वाला कहता है। पराजय और लज्जा तुम्हारा दामन पकड़ती है। प्रशियनों के एक बन्दी, तुम पराजित होकर गिर पड़े और गिरे हुए साम्राज्य के खंडहरों पर तुम्हारी टूटी हुई तलवार को लेकर प्रभायुक्त एवं प्रजातंत्र उठकर खड़ा हो रहा है।"

उसने सराहना की आशा की। किन्तु कोई आवाज नहीं आई, किसी ने कुछ न कहा। भ्रम में पड़े हुए किसान चुपचाप खड़े रहे। और मूर्ति (धड़) दोनों गालों तक पहुँचने वाली नुकीली मूँछों से, मि० मसरेल को और प्लास्टर मुस्कान, मुस्कान परिहास पूर्ण एवं अपरिवर्तनीय, से देखती हुई सी लगती थी। मूर्ति इतनी क्रियाहीन थी एवं उसके बाल इतने अच्छे कढ़े हुए थे कि वह नाइयों की दूकान के योग्य थी।

वे इसी तरह आमने सामने खड़े रहे, नैपोलियन कुर्सी पर और डाक्टर उसके सामने लगभग तीन कदम दूर। एकाएक कमान्डर क्रुद्ध हो गया। क्या करना चाहिये था? ऐसी कौन-सी बात थी जिससे लोग विचलित हो उठते, और जिससे उन लोगों की राय में विजय निश्चित हो जाती? उसका हाथ उसके नितम्ब पर रखा था और अकस्मात वह उसकी पिस्तौल के एक सिरे से छू गया। कोई प्रेरणा या शब्द नहीं आया। किन्तु उसने अपनी पिस्तौल निकाली, दो कदम आगे बढ़ा, और मृतक सम्राट पर गोली छोड़ दी। गोली उसके माथे पर एक धब्बे की तरह काला छोटा सूराख कर घुस गई। इससे अधिक कुछ नहीं हुआ। तब उसने दुबारा गोली चलाई उससे दूसरा सूराख हो गया, तब तीसरा, चौथा—यहाँ तक कि उसने अपनी पिस्तौल को खाली कर दिया। नैपोलियन की भौंहें सफेद पाउडर में छिप गईं, किन्तु आँख, नाक, मूँछों की बढ़िया नोंके पहिले की ही भाँति बनी रहीं। तब क्रोध में उन्मत्त हो डाक्टर ने एक घूँसे में कुर्सी को उलट दिया और उस मूर्ति (धड़) पर विजयी की भाँति अपना एक पैर रखते हुए चिल्लायाः—"इसी भाँति समस्त अत्याचारियों का नाश हो जाने दो।"

फिर भी कोई उत्साह नहीं दिखलाई दिया और दर्शक ऐसे लग रहे थे मानो आश्चर्य से दंग रह गये थे। कमान्डर ने अपने सैनिकों को बुलाया

"आप लोग अपने २ घर जा सकते हैं।" और वह लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ अपने घर को चल दिया मानो कोई उसको मार डालने के लिये उसका पीछा कर रहा हो।

जब वह घर पहुँचा तब उसकी नौकरानी ने उससे कहा कि कुछ मरीज उसके कार्यालय में तीन घण्टों से उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। वह कमरे में जल्दी से चल दिया। वहाँ दो बीमार थे, जो कि सुबह से ही लौट कर आये हुए थे। वे हठी थे किन्तु थे धैर्यवान।

वृद्ध ने शीघ्र ही कहना आरम्भ कर दियाः—"जब यह आरम्भ हुआ तो ऐसा लगता था कि पाँव में चींटियाँ ऊपर नीचे आ जा रही हैं।"

Diamond Ne[illegible]

हीरे का हार

वह उन सुन्दर, आकर्षक नवयुवतियों में से एक थी जिसे मानो कि विधि की गलती के कारण क्लर्कों के एक परिवार में जन्म लेना पड़ा। उसके पास कोई दहेज नहीं था, कोई आशायें नहीं थीं, विख्यात होने, प्रशंसा प्राप्त करने और धनी अथवा प्रसिद्ध व्यक्ति से विवाह करने का कोई साधन नही था। शिक्षा विभाग के एक छोटे से क्लर्क से उसने विवाह करना स्वीकार कर लिया।

वह शृङ्गार करने में असमर्थ थी। अतः सीधी और साधारण ढङ्ग से रहती थी; किन्तु वह एक ऐसी स्त्री जो अपने ऐसे परिवार से जिन स्त्रियों की कोई जाति नहीं होती; कोई नस्ल नहीं होती और उनकी सुन्दरता उनकी मनमोहकता उनके जन्म स्थान तथा परिवार की जगह काम करती है, दूर जा पड़ी की भाँति दुःखी थी।

उनकी प्रकृति प्रदत्त कला, उनकी स्वाभाविक शोभा, उनकी बुद्धि तत्परता ही उनकी कुलीनता होती है जो व्यक्तियों की कुछ लड़कियों को महान् स्त्रियों के समान बना देती है।

वह हमेशा दुःखी रहती थी वह सोचती कि उसका जीवन भोग-विलासों और ऐश इशरतों के लिये है। अपने कमरे गन्दी दीवालों, टूटी कुर्सी और मलिन वस्तुओं की गरीबी हालत से उसे दुःख होता था। उसकी जगह कोई अन्य स्त्री होती तो उन सब वस्तुओं की ओर न तो उसका ध्यान ही जाता और न वे वस्तुऐं उसे दुःखी अथवा क्रोधित ही करतीं। उस छोटे ब्रेटन, जिसने यह घर बनाया था, के ऊपर दृष्टि पड़ते ही उसके अन्दर दुःख भरे पश्चाताप और निराशा भरे स्वप्न जागृत हो उठते। उसने बिल्कुल विपरीत ही शानदार लटकनों में झाड़ फन्नूस, जिनमें बड़ी २ लेम्पें रोशनी के लिये लगीं हों, से युक्त कमरों के बारे में तथा नेकर पहिने दो चौकीदारों

के बारे में जो, बड़ी-बड़ी आराम कुर्सियों पर हीटरों (अँगीठियों) से निकलने वाली गरम २ हवा के कारण उनींदे हो उठे हों, की कल्पना की थी। उसने बड़े २ ड्राइङ्ग रूमों की जिनमें सिल्क की बन्धनवारें लटक रही हों, अमूल्य फर्नीचर लगा हो, और छोटे २ फैशनेबुल सुगन्धित कमरों की कल्पना की थी, जो सायंकाल ५ बजे अपने घनिष्ठ मित्रों से बातचीत करने के लिये हों, और मित्र भी कैसे ढूँढे और बनाये जांये जिनके लिये सारी स्त्रियाँ चाहती हों और ईर्ष्या करती हों।

जब वह भोजन करने के लिये गोलमेज के सम्मुख, जिस पर तीन दिन का स्तैमाल किया हुआ मेजपोश बिछा हुआ होता, अपने पति के सामने जोटरीन (शोरबे के लिये ढकी हुँई तश्तरी को उघाड़ता और प्रसन्न मुद्रा में कहता—"ओह ! कितनी सुन्दर है ! मैंने तो इससे अच्छी कहीं नहीं देखी—"तब वह चाँदी से चमकते हुए शानदार सहयोगों की, प्राचीन महान् व्यक्तियों के चित्रों, कल्पित जङ्गलों के मध्य थोड़ी सी चिड़ियों से चित्रित दीवालों की कल्पना करने लगती; वह शानदार तश्तरियों में बढ़िया भोजन सामिग्री परोसे जाने की सोचती और स्फिन्क्स की भाँति मुस्कुराती हुई मछलियों का गुलाबी-गुलाबी गोश्त या मुर्गी के बच्चे का पंख खाती हुई उसकी बातें सुनती।

उसके पास कुछ भी नहीं था न तो फ्राकें थीं और न हीरे मोती। और वह केवल उन्हीं से प्रेम करती थी। उसे ऐसा लगता कि वह उन्हीं के लिये बनी है। प्रसन्न करने, स्मरण किये जाने, बुद्धिमान होने और पीछा किये जाने की उसकी बहुत अभिलाषा थी। उसकी एक धनी सहेली थी जो उसकी धार्मिक सम्प्रदाय की पाठिनी थी, जब से वह लौट आई थी तब से उसे इतना अधिक दुःख महसूस हो रहा था कि वह उससे मिलना भी नहीं चाहती थी। और वह दुःख, निराशा एवं पश्चाताप से दिन भर रोती रहती।

× × × ×

एक दिन सायंकाल उसका पति अपने हाथ में एक बड़ा सा लिफाफा लेकर प्रसन्नता से फूला हुआ घर लौटा।

वह बोला : "यह देखो यह तुम्हारे लिये है।"

श्रीमान् एवं श्रीमती लॉसेल से प्रार्थना है कि १८ जनवरी को सायंकाल मन्त्री-निवास पर पधारें। उनकी उपस्थिति से हमें बहुत प्रसन्नता होगी।

—मन्त्री शिक्षा विभाग और श्रीमती जार्ज रेम्पोन्यू।

पति की आशा के विपरीत वह प्रसन्न नहीं हुई और उसने निमंत्रण पत्र को बड़बड़ाते हुए घृणा से फेंक दिया :

"आप क्या सोचते हैं, मुझे इससे क्या मिल जायगा ?"

"किन्तु मेरी प्रिये, मेरा विचार था कि तुम इसे पाकर प्रसन्न हो उठोगी। तुम कभी कहीं नहीं जाती हो, और यह अवसर है और एक बहुत ही सुन्दर अवसर! मुझे यह बड़ी कठिनाइयों से मिला है। उसे चाहता तो हर कोई है किन्तु यह मिलता किसी किसी को ही है; और दफ्तर में काम करने वालों को ऐसे अवसर अधिक नहीं मिलते हैं। वहाँ तुम्हें सारी अफसरी दुनियाँ मिलेगी।"

उसने उसकी ओर चिढ़कर देखा और अधीर हो बोली :

"आपका क्या विचार है, वहाँ जाने के लिये मुझे यही पहिनना पड़ेगा ?" उसने यह नहीं सोचा था; वह हकला गया :

"क्यों, वह ड्रेस जो तुम पहिनती हो, जब हम थियेटर जाते हैं। मुझे वह बहुत अच्छी लगती है।"

अपनी पत्नी को रोती देखकर वह अप्रसन्न हो क्रोध में चुप हो गया। दो बड़े २ अश्रु उसकी आँखों से निकल कर उसके अधरों के दोनों ओर जा गिरे। वह हकला कर बोला :

"क्या बात है ? क्या बात है ?"

बहुत कोशिश करने के बाद वह अपने अश्रुओं को रोक पाई और अपने भीगे गालों को पोंछती हुई शान्त स्वर में बोली :

"कुछ भी नहीं, मेरे पास कोई ड्रेस नहीं है। अतः मैं इस आयोजन में नहीं जा सकती। निमन्त्रण पत्र क। आप किसी अन्य साथी को, जिसकी पत्नी के पास मुझसे अधिक शृङ्गार हों, दे दीजिये।

उसके दिल को बहुत ठेस पहुंची, किन्तु उसने उत्तर दिया :

"मटीएडा जरा हम विचारें। एक बढ़िया पोशाक, जो साधारण ही हो और जो अन्य अवसरों पर भी काम आ जाय, कितने पैसों में तैयार हो जायगी।"

वह गणना करती हुई कुछ क्षणों तक सोचती थी कि उसे उस कम खर्च क्लर्क से कितने रुपये मांगने चाहिये जिससे न तो वह अस्वीकार ही कर बैठे और नहीं आश्चर्य से मुँह फाड़ दे।

अन्त में, उसने हिचकते २ कहा :

"ठीक २ तो नहीं कह सकती, हाँ मेरा अन्दाज है कि चार सौ फ्रैंक तो लग ही जायेंगे।"

वह कुछ पीला पड़ गया क्योंकि इतना ही धन तो वह आने वाली गर्मियों में नानटेरे के मैदानों में अपने मित्रों के साथ लार्क का शिकार खेलने के लिये एक शिकारी दल के साथ सम्मिलित होने को एक बन्दूक खरीदने के वास्ते एकत्रित कर सका था। फिर भी उसने कहा :

"खैर, मैं उन्हें चार सौ फ्रैन्क दे दूँगा। किन्तु पोशाक अच्छी बनवाने का प्रयत्न करना।"

❀ ❀ ❀

नृत्योत्सव का दिन पास आ गया और मेडम लोसेल उदास, परेशान और उत्सुक सी दिखाई दी। उसकी पोशाक लगभग तैयार सी ही हो गई थी।

एक दिन सायंकाल उसके पति ने कहा :

"तुम्हें क्या हो गया है ? तुम्हारा दो तीन दिन से व्यवहार विचित्र विचित्र सा दिखाई दे रहा है।"

और उसने उत्तर दिया : "मुझे दुख है कि मेरे पास एक भी नग, पत्थर या पहिनने को आभूषण नहीं है। मैं वहाँ बहुत ही निर्धन सी लगूँगी उससे तो मैं चाहूँगी कि वहाँ जाऊँ ही नहीं।"

उसने उत्तर दिया : "तुम प्राकृतिक पुष्पों का श्रृंगार कर सकती हो।

इस मौसम में तो वह बहुत ही अच्छे लगते हैं। दस फ्रेन्कों में तुम्हें दो-तीन शानदार पुष्प मिल सकते हैं।"

वह इससे प्रभावित नहीं हुई। उसने उत्तर दिया—"नहीं, धनी स्त्रियों के मध्य इतने कुत्सित ढङ्ग से जाने से अधिक अपमानजनक और कुछ नहीं हो सकता।"

तब उसका पति चिल्लाया : "कितने मूर्ख हैं हम लोग! जाओ और अपनी सहेली मेडम फोरेस्टियर से मिलो और उससे अपने लिये आभूषण उधार देने को कहो। उस काम को करने लायक तुम्हारी काफी जान पहिचान है।"

वह प्रसन्न हो चिल्लाई—"यह सही है!" वह बोली—"मैंने तो यह सोचा ही नहीं था।"

दूसरे दिन वह अपनी सहेली के घर गई और उसे अपनी परेशानी बतलाई। मेडम फोरेस्टियर अपने शीशे के किवाड़ों वाले कमरे में गई और एक बड़ा आभूषण पट्ट निकाला, लाई, उसे खोला और बोली—"चुन लो सखी।"

पहिले उसने कुछ बाजूबन्द देखे, तब मोतियों का एक हार, फिर सोने और नगीनों का बहुत बढ़िया जड़ाऊदार कामों का एक क्रास। उसने दर्पण के सामने उन्हें पहिन कर देखा, हिचकिचाई, किन्तु न तो उन्हें छोड़ने और न ले जाने का ही निश्चय न कर सकी। फिर वह बोली :

"तुम्हारे पास और कुछ नहीं है?"

"क्यों, है आओ स्वयं देख लो। मुझे नहीं मालूम तुम्हें कौन सा पसन्द आयेगा।"

एकाएक उसे एक काले मखमली बक्से में, हीरों का बहुत सुन्दर हार मिल गया और अत्यधिक चाहना से उसका हृदय धड़कने लगा। उन्हें उठाते ही उसके हाथ काँपे। उसने अपनी ड्रेस पर ही उन्हें अपनी गर्दन में पहना और उन्हें पहिन कर आश्चर्य चकित हो गई। तब उसने उत्सुकता से हिचकिचाते हुए पूछा :

"क्या तुम मुझे यह, केवल यह, उधार दे सकोगी ?"

"क्यों नहीं, हाँ अवश्य।"

वह अपनी सहेली की गर्दन में झूल गई और उसने भावावेश में उसका आलिङ्गन किया फिर अपने ख़जाने को लेकर चली गई।

× × ×

नृत्योत्सव का दिन आया। मेडम लौसेल को आश्चर्य जनक सफलता मिली। वह सर्वाधिक सुन्दर, शोभनीय, दयालु, प्रफुल्ल तथा आनन्द से भरी हुई थी। हर एक व्यक्ति ने उसे देखा, उसका नाम पूछा और उससे मिलना चाहा। मन्त्रि-मण्डल के सब सदस्यों ने उसके साथ साथ वाल्ज नृत्य करना चाहा। शिक्षा मन्त्री ने उसकी ओर थोड़ा सा ध्यान दिया था।

आनन्द से परिपूर्ण हो, भाव विभोर हो, उत्साह से अपने सौन्दर्य के विजयोन्माद में सुधबुध खो, एक प्रकार के सुख के बादलों में, जो उसके इस अतीव स्वागत इन प्रशंसाओं, इन सब जाग्रत इच्छाओं और स्त्री के हृदय को सर्वाधिक प्रिय लगने वाली पूर्ण विजय से उमड़े थे, नाची।

सुबह चार बजे वह घर की ओर चली। उसका पति अन्य तीन व्यक्तियों के साथ, जिनकी पत्नियाँ नृत्य में बहुत अधिक आनन्द ले रही थीं, अर्द्ध रात्रि से ही एक छोटी सी बैठक में उनींदा सा सोया हुआ था।

उसने उसके नित्य प्रति के ओढ़ने वाले कम्बलों को, जिनकी दीनता नृत्य की शोभनीय पोशाक से टकरा गई थी, उसके कन्धों पर डाल दिया। उन कम्बलों को वे लोग लौट कर आते समय ओढ़ कर आने के लिये लाये थे। उसे यह बुरा लगा और वह अन्य स्त्रियों की दृष्टि बचाने के लिये, जो कि, फार के बढ़िया कपड़े ओढ़ रहीं थीं; जल्दी करने लगी।

लौसेल ने उसे देखा—"ठहरो।" वह बोला—"तुम्हें बाहर निकलते ही ठण्ड लग जायगी। मैं एक रिक्शा पकड़ लाऊँ।" किन्तु वह न मानी

और जल्दी से सीढ़ियों में से उतर दी। गली में आने पर उन्हें कोई गाड़ी नहीं मिली; और वे गाड़ी ढूँढने लगे—एक गाड़ीवान उन्हें काफी दूर दिखलाई दिया वे उसे आवाज देने लगे।

निराश हो ठण्ड से काँपते हुए वे सेन की तरफ चले। अन्त में उन्हें घाट पर एक पुरानी खड़खड़िया, जो कि रात के समय पेरिस में हर कोई देख सकता है मानो कि वे अपने दुर्भाग्य पर लज्जित हो दिन में मुँह छिपाये पड़ी रहती हों, दिखलाई दी।

उसमें बैठ कर वे मारटायर स्ट्रीट में अपने घर तक गये और थके मांदे अपने कमरे में आ पहुँचे। उसको तो अब कोई काम नहीं था। और पति को सुबह दस बजे अपने दफ्तर में हाजिर होना था।

उसने दर्पण के सामने जाकर अपने कंधों पर से अपनी महत्ता का अंतिम दर्शन करने के लिए कम्बल हटाये। एकाएक वह चीख पड़ी। उसकी गर्दन में उसका हार नहीं था।

उसका पति, जो अपने कपड़े उतार नहीं पाया था, बोला—"क्या बात है?"

"मे... मैड... म... मैडम फोरेस्टियर का हार कहीं गिर गया।"

वह दुखी हो उठा: "क्या? यह कैसे हो गया? यह नहीं हो सकता।"

और उन्होंने कपड़ों की तह में ढूँढा, दुपट्टे की तह में देखा, जेबों को टटोला, सब जगह खोज डाला हार नहीं मिला।

उसने पूछा—"तुम्हें यह निश्चित मालूम है कि जब हम लोग घर से निकले तब हार तुम्हारे गले में ही था?"

"हाँ, जब हम बाहर आये तो बरोठे पर मुझे लगा कि वह मेरे गले में था।"

"किन्तु यदि सड़क पर गिरा होता तो हमें उसके गिरने की आवाज सुनाई देती। यह गाड़ी में होना चाहिये।"

"हाँ ! यह सम्भव है। क्या आपने उसका नम्बर नोट किया था ?"

"नहीं ! और तुमने, क्या तुमने देखा था कितना था ?"

"नहीं।"

उन्होंने एक दूसरे की ओर बहुत ही लज्जित एवं दुखी हो देखा। अंत में लॉसेल ने फिर से कपड़े पहिने।

वह बोला—"जहाँ हम लोग पैदल चले थे वहाँ देखने जा रहा हूँ शायद मुझे मिल जाय।"

और वह चला गया। वह अपना शाम का पहिनने वाला गाउन ही पहिने हुए बिना किसी इच्छा और विचारों के एक कुर्सी पर टाँग फैलाये बैठी रही। उसमें इतनी शक्ति ही नहीं थी कि वह सो सके। लगभग ७ बजे उसका पति लौटा। उसे कुछ भी नहीं मिला।

वह पुलिस थाने गया, गाड़ियों के दफ्तरों में गया, और उसने समाचार पत्रों में इनाम का विज्ञापन दिया, उसने जो-जो आशाएँ दिलाने वाले काम थे सब किये।

दिन भर वह इस भयङ्कर विस्फोट के सम्मुख भयभीत अवस्था में प्रतीक्षा करती रही। शाम को लौसेल पीले और मुर्झाये चेहरे से घर लौटा; उसको कुछ भी नहीं मिला था।

"यह आवश्यक है।" वह बोला—"कि तुम्हारी सहेली को पत्र लिखना पड़ेगा कि हार तुमसे नृत्य में टूट गया है और तुम्हें उसकी मरम्मत करवानी है। इस बीच में हमें कुछ करने का समय मिल जायगा।"

जैसे २ वह लिखाता गया वह लिखती गई।

❀ ❀ ❀

सप्ताह के अंत तक उनकी सारी आशाओं पर पानी फिर गया। और लौसेल जिसकी उम्र पाँच वर्ष अधिक थी, बोला :

"हमें यह हार दूसरा बनवाने का प्रयत्न करना चाहिये।"

दूसरे दिन उन्होंने वह बक्स, जिसमें हार रखा रहता था, लिया और

एक जौहरी के पास, जिसका नाम उसके अन्दर खुदा हुआ था, लेकर गये। उसने अपनी किताबें देखीं और बोला :

"श्रीमतीजी यह हार मैंने नहीं बेचा था, मैंने तो केवल इसका शृङ्गार बक्स ही दिया था।"

फिर वे एक जौहरी से दूसरे जौहरी के पास उसी के समान हार खोजते हुए गये। वे अपने दुर्भाग्य को कोसते और दुखी तथा परेशान हो उस हार को ध्यान करते हुए कि वह कैसा बना हुआ था, जा रहे थे। पेलाइस रोयल की एक दूकान में उन्हें हीरों का एक हार बिल्कुल उसकी शक्ल से मिलता जुलता दिखलाई दिया। उसका मूल्य ४०००० फ्रेन्क था। उनको वह छत्तीस हजार में मिल जाता।

उन्होंने जौहरी से उसे तीन दिन तक किसी अन्य को न बेचने की प्रार्थना की और उन्होंने उससे यह समझौता कर लिया कि यदि खोया हुआ हार पुनः मिल जायेगा तो वह उसे ३४००० में फरवरी के अन्त तक लौटा जायेंगे।

लौसेल के पास उसके पिता के छोड़े हुए १८००० फ्रेन्क थे। बाकी उसने दूसरे लोगों से उधार ले लिये।

उसने उधार इस तरह से लिया कि एक से तो एक हजार लिये, दूसरे से पाँच सौ, पाँच लुइस इससे और तीन लुइस उससे। उसने प्रोमिजरी नोट लिखे, सत्यानाशी वायदे किये, उसने ब्याजखियों से रुपये लिये, उधार देने वालों की सब जातियों से उधार लिया। अपनी सारी आमदनी का निपटारा किया, वास्तव में, सो उसने यह बिना जाने हुए भी कि वह उनको चुका पायेगा भी कि नहीं अपने आपको संकट में डाल दिया। भविष्य की चिन्ताओं से लदा हुआ, दुर्भाग्य, जिससे वह घिरा हुआ था, और अपनी शारीरिक मानसिक व्यथाओं से व्यथित, दूकानदार के पट्टे पर छत्तीस हजार फ्रेन्क धर वह नया हार खरीदने गया।

जब मैडम लौसेल मैडम फोरेस्टियर के यहाँ हार वापिस देने गईं तब दूसरी ने कुछ रुखाई से कहा :

"तुम्हें जल्दी लौटा देना चाहिये था, हो सकता था मुझे इसकी आवश्यकता पड़ जाती।"

उसने हार के बक्स को, जैसा कि उसकी सहेली के मन में डर था कि वह खोलेगी, नहीं खोला। यदि वह पहिचान लेगी कि हार बदला हुआ है तो वह क्या सोचेगी? वह क्या उत्तर देगी? क्या वह उसे लुटेरा समझेगी?"

❀ ❀ ❀

मैडम लोसेल अब आवश्यकताओं की भयानक जिन्दगी को समझ गई। उसने अपना पार्ट, किसी भी तरह पूरी बहादुरी से अदा किया। इस भयानक ऋण को चुकाना आवश्यक था। वह उसे चुका देगी। उन्होंने नौकरानी निकाल दी; मकान बदल दिया, एक ढालू छत के नीचे के कुछ कमरे कम किराये पर ले लिये।

उसने घर गृहस्थी का सब काम सीख लिया; उसने रसोई घर का काम सीख लिया। वह तश्तरियाँ धोती और बर्तनों के पेंदों को अपनी गुलाबी उङ्गलियों से खुरच २ कर साफ करती। वह सन के बने हुए मैले कपड़ों को धोती, चोली और तश्तरी के ऊपर ढकने वाले कपड़ों को धोती और वह एक डोरी पर सुखाने के लिये उन्हें लटकाती। नित्य सुबह वह बर्तन लेकर गली में जाती और कितनी ही जगह साँस लेने को रुकती हुई पानी भर कर लाती। और साग, गोश्त, रोटी और फल वालों के यहाँ हाथ में टोकरी लटकाये हुए जाती और मोल-तोल, भाव-ताव करके अपने धन का जो भी हिस्सा बच सके बचाती।

यह आवश्यक था कि हर माह कुछ हुण्डियाँ फिर से लिखें और इस भाँति दूसरों को चुकाने का अवकाश प्राप्त किया जाय।

पति शाम को थोड़े से दूकानदारों की किताबों को क्रम से सजाने का कार्य किया करता, और रातों में वह पाँच सोस प्रति पृष्ठ के हिसाब से नकल उतारा करता।

और इस भाँति दस वर्षों तक चलता रहा।

दस वर्षों के बाद उन्हें सब प्राप्त हो गया, सारा मूल मय

ब्याजड़ियों के ब्याज के और इसके अतिरिक्त कुछ ब्याज और मिल गया।

मैडम लौसेल अब वृद्धा लगने लगी। वह अब तगड़ी, मेहनती और गरीब गृहस्थ की बेडौल स्त्री हो गई थी। उसके बाल ठीक नहीं कढ़े होते, उसके कपड़े गन्दे रहते, हाथ लाल रहते, वह जोर से ऊँचे स्वर में बोलती, और फर्शों को बड़े २ घड़ों से पानी भर कर धोती। किन्तु कभी-कभी, जब उसका पति दफ्तर में होता, वह खिड़की के सामने बैठती और उन दिनों की, उस शाम की दावत के बारे में सोचती, और उस नृत्योत्सव के बारे में जहाँ वह इतनी अधिक सुन्दर लग रही थी और उसकी इतनी प्रशंसा की जा रही थी, सोचती।

यदि उसका हार नहीं खोता तो आज न जाने क्या होता? कौन जाने? कौन जाने? जीवन कितना एकाकी और परिवर्तन शील है। किस तरह से एक छोटी-सी वस्तु जीवन की रक्षा या विनाश कर सकती है।

× × × ×

एक इतवार को; जब वह चेम्पस् एलीसिस में सप्ताह भर की चिन्ताओं से मुक्ति पाने के लिये घूम रही थी कि एकाएक उसे एक स्त्री एक बच्चे के साथ जाती हुई दिखलाई दी। यह मैडम फोरेस्टियर थी। वह अभी युवा, सुन्दर एवं आकर्षक थी। मैडम लौसेल विचार में पड़ गई। क्या उसे उससे कह देना चाहिये? हाँ, अवश्य। और अब उसने सबका ऋण चुका दिया है, अब वह उससे कह देगी। क्यों नहीं कहेगी? अवश्य कहेगी।

वह उसके पास पहुँची—"गुडमार्निङ्ग जेनी।"

उसकी सहेली ने उसे नहीं पहिचाना और एक साधारण स्त्री से इतने प्रेम से अपना नाम लिया जाते सुन कर वह आश्चर्य चकित हो गई। वह हकलाते हुए बोली:

"किन्तु, मैडम—मैं आपको नहीं जानती—आप गलती पर हैं।"

"नहीं, मैं मटील्डा लौसेल हूँ।"

उसकी सहेली आश्चर्य से चीख पड़ी—"ओह मेरी बेचारी मटील्डा ! तुम कितनी बदल गई हो।"

"हाँ तुमसे मिलने के बाद मेरे कुछ खराब और कुछ दुर्भाग्यपूर्ण दिन आ गये थे और यह सब तुम्हारे कारण।"

"मेरे कारण ? कैसे ?"

"तुम्हें याद है—वह हीरे का हार जो तुमने कमिश्नर के नृत्योत्सव में पहिनने को मुझे उधार दिया था ?"

"हाँ, हाँ, बहुत अच्छी तरह से।"

"हाँ वह मुझसे खो गया था।"

"यह कैसे, तुमने तो वह मुझे तब ही वापिस कर दिया था ?"

"मैंने तुम्हें बिल्कुल उसी की भाँति दूसरा लौटाया था। और हम उस रुपये को दस वर्षों में चुका पाये हैं। तुम इसे भली भाँति समझ सकती हो कि हम लोगों के लिये कि जिनके पास कुछ नहीं था, कोई आसान बात नहीं थी। किन्तु अब सब हो गया और मैं पूर्ण सन्तुष्ट हूँ।"

मैडम फोरेस्टियर कुछ रुकी। वह बोली :

"तुम कहती हो कि तुमने मेरे हार की जगह हीरों का हार खरीद कर दिया था ?"

"हाँ ! तुम उसे तब नहीं पहिचान सकीं ? वे दोनों बिल्कुल एक से थे।"

और वह आनन्द से गर्व भरी मुस्कान से हँसी। मैडम फोरेस्टियर का हृदय काँप उठा और उत्तर देते समय उसने उसके दोनों हाथों को पकड़ लिया :

"ओह मेरी गरीब मटील्डा ! मेरे हीरे नकली थे। उनका मूल्य २०० फ्रान्कों से अधिक नहीं था।"

क्रोचेटे

वे पुरानी स्मृतियाँ जो हमारे मस्तिष्क में बनी रहती हैं, जिनसे हम अपना पीछा नहीं छुड़ा सकते हैं, कितनी विचित्र होती हैं।

यह स्मृति इतनी पुरानी है कि मेरी समझ में नहीं आता कि न जाने यह मेरे मस्तिष्क में इतनी ठीक २ और स्पष्ट रूप से कैसे अटकी हुई रह गई है। तब से मैंने इतनी निर्दय भयानक और प्रभावी वस्तुयें देखी, हैं कि मुझे आश्चर्य होता है कि माँ क्रोचेटे के चेहरे को, बिल्कुल वैसे ही चेहरे को जैसा कि बहुत वर्ष हुए अपने बचपन में दस या बारह वर्ष की अवस्था में देखा था, अपने मस्तिष्क की आँखों के सामने से एक दिन को भी नहीं हटा पाया।

यह एक वृद्धा दर्जिन थी जो मेरे माता-पिता के घर कपड़ों की मरम्मत करने के लिये सप्ताह में एक दिन, हर वृहस्पतिवार को आया करती। मेरे पिता गाँव के उन घरों में से एक में रहते थे, जो झोंपड़ी कहलाते, जो पुरमे नुकीली छत्तों के होते हैं और जो तीन या चार खेतों से घने हुए होते हैं।

वह गाँव, बड़ा गाँव था। लगभग नगर के बाजार की तरह और लाल ईंटों की बनी चर्च से, जो वर्षों पुरानी होने के कारण अब काली पड़ चुकी थी, कोई लगभग १०० गज दूर था और उस चर्च के चारों ओर तक बसा हुआ था।

खैर, हर वृहस्पतिवार को माँ क्रोचेटे सुबह ६॥ से ७ बजे तक के बीच में आती, शीघ्र ही कपड़ों वाले कमरे में चली जाती और काम आरम्भ कर देती। वह एक लम्बी,पतली,दाढ़ी वाली या यह कहना चाहिये बालों वाली स्त्री थी, क्योंकि उसके सारे चेहरे पर गुच्छों में उगी हुई एक आश्चर्य जनक एवं अप्रत्याशित दाढ़ी थी। घुँघराले गुच्छों में वह दाढ़ी ऐसी लगती मानो

किसी पागल ने उस चेहरे पर – पेटीकोटों में सिपाही के चेहरे पर उगा दी हो। बाल सब जगह थे, उसकी नाक पर, नाक के नीचे, नाक के चारों ओर, उसकी ठोड़ी पर, गालों पर, और उसकी भौंहों पर जो कि बहुत ही मोटी घनी, लम्बी, भूरी थीं और लगता था कि गल्ती से मूछों का एक जोड़ा वहाँ लगा दिया गया हो।

वह लँगड़ाती थी, किन्तु अकसर जैसे लँगड़े आदमी चलते हैं वैसे नहीं वरन् जैसे भेड़ें चलती हैं। जब वह अपना भारी भरकम शरीर अपनी मजबूत टाँग पर रखती तो ऐसा मालूम पड़ता कि वह किसी बहुत बड़ी लहर को पार करने की चेष्टा कर रही है और तब वह एकाएक पैर रखती तो ऐसा लगता कि मानों वह जमीन के किसी गड्ढे में छिप जाना चाहती थी; और वह अपने आपको जमीन में धँसा देती। उसकी चाल तूफान में पड़े हुए एक जहाज की याद दिलाती, और उसका सिर, जो हमेशा एक बड़ी सफेद टोपी से ढका रहता, जिसके फीते उसकी पीठ पर पड़े रहते, ऐसा लगता मानों वह हर लंगड़े कदम पर क्षितिज को उत्तर से दक्षिण और दक्षिण से उत्तर की ओर ले जाती।

मैं मां क्रांचेटे का बहुत आदर किया करता था। जैसे ही मैं उठता कपड़ों वाले कमरे में जाता, जहाँ वह अपने पैरों के नीचे आसन रखे काम करती रहती थी। मेरे पहुँचते ही वह आसन निकालती और उस पर बिठलाती ताकि छत के नीचे वाले उस ठण्डे कमरे में मुझे ठण्ड न लग जाय।

"वह ठण्डी भूमि तुम्हारे सिर से खून खींचती है।" वह मुझसे कहती।

अपनी लम्बी टेढ़ी-मेढ़ी उङ्गलियों से कपड़ों की मरम्मत करते-करते वह मुझे कहानियाँ सुनाती; उसके चश्मे के पीछे उसकी आँखें, क्योंकि उम्र ने उसकी आँखें कमजोर कर दी थीं, मुझे बहुत बड़ी लगती करीब-करीब दूनी।

जो २ बातें उसने मुझसे कहीं और जिन बातों से मेरा हृदय भर आता था उन बातों से मैं जहाँ तक ध्यान कर सकता हूँ, मेरा विचार है कि

उस गरीब स्त्री का हृदय बहुत बड़ा था। उसने मुझसे कहा कि गाँव में क्या हुआ था, किस तरह एक गाय अपने बाड़े में से भाग निकली और दूसरे दिन प्रोसरेर मेलेट की मिल के सामने उसके घूमते हुए पंखों की ओर देखती हुई मिली। या वह एक मुर्गी के अण्डों के बारे में कहती जो चर्च के घन्टाघर में मिले और कोई यह न समझ पाया कि उस जीव ने उन्हें वहाँ ले जाकर क्यों रखा, या जीन पिला के कुत्ते की कहानी कहती, जो कि अपने मालिक की ब्रीचों को लाने के लिये गया था, जो कि मेह में भीग जाने के कारण बाहर सुखाने को लटका दिये गये थे और जिन्हें कोई आवारा चुराकर ले गया था। यह सीधी-साधी घटनाएं वह मुझसे इस भाँति कहती कि वे मेरे मस्तिष्क में महान् एवं रहस्यमयी कविताओं व नाटकों की भाँति जाकर बैठ गईं; और कवियों द्वारा बहुत सुन्दर ढङ्ग से लिखी हुई कहानियों में, जो मेरी माँ मुझे शाम को सुनाया करती इस किसान स्त्री की कहानियों के मुकाबले में न तो कोई रुचि ही होती, न पूर्ण ही और न उनमें दम ही होता।

खैर, एक बृहस्पति को जब मैंने सारी सुबह माँ क्रोदेटे के पास कहानियाँ सुनते २ ही व्यतीत कर दी तब दोपहर में अपने नौकर के सङ्ग खेत के पीछे वाले जङ्गल से कुछ फल बीन कर लाने के बाद मैंने उसके पास फिर ऊपर जाना चाहा। मुझे वह सब आज भी ऐसा याद है जैसे यह कल की ही घटना हो।

कपड़ों वाले कमरे का द्वार खोलते ही मैंने देखा कि बूढ़ी दर्जिन अपनी कुर्सी की बगल में हाथ फैलाये औंधे मुँह फर्श पर लेटी हुई थी। किन्तु अभी भी उसके एक हाथ में सुई थी और दूसरे में मेरी कमीज। उसकी एक टाँग, निस्सन्देह लम्बी वाली, जिस पर उसने नीला मोजा चढ़ाया हुआ था, उसकी कुर्सी के नीचे पड़ी हुई थी; और उसका चश्मा दीवाल के पास पड़ा था, जहाँ वह उसके पास में लुढ़क गया था।

मैं चिल्लाता चीखता वहाँ से भाग खड़ा हुआ। सब लोग दौड़ते

हुए आये, और कुछ ही मिनटों में मुझे मालूम हो गया कि माँ क्लोचेटे मर चुकी थी।

मैं उस गहरी, दुखमयी एवं भयानक संवेदना का, जिसने मेरे बाल्य हृदय को हिला दिया था, वर्णन नहीं कर सकता। मैं धीरे २ नीचे ड्राइंग रूम में चला गया और एक अन्धेरे कोने में एक पुरानी कुर्सी पर जाकर घुटने टेक कर बैठ गया और रोने लगा। इसमें सन्देह नहीं कि मैं वहाँ बहुत देर तक रहा क्योंकि रात्रि हो गई थी। एकाएक कोई वहाँ मुझे देखे बिना ही लेम्प लेकर अन्दर आया, किसी तरह से मैंने अपने माता-पिता को एक डाक्टर से, जिसकी आवाज मैंने पहिचान ली थी, बातें करते हुए सुना।

वह उसी समय बुलाया गया था, वह दुर्घटना का कारण समझा रहा था, जिसमें से मेरी समझ में कुछ भी नहीं आया। तब वह बैठ गया और उसे एक गिलास शराब तथा बिस्कुटें दी गई।

वह बातें करता रहा, और उसने जो उस समय कहा वह मेरे मस्तिष्क में जब तक मैं मरूँगा नहीं सदा ही अङ्कित रहेगा! मेरा विचार है कि मैं उसके कहे हुये एक-एक शब्द को दोहरा सकता हूँ।

"आह!" वह बोला—"बेचारी औरत! जिस दिन मैं यहाँ आया उस दिन उसने अपनी टाँग तोड़ ली थी। मैं उस दुरुह कार्य को करने के पश्चात हाथ भी नहीं धो पाया कि मुझे एक जगह का बुलावा आया, क्योंकि वह बहुत बड़ा केस था बहुत बुरा।

"वह १७ वर्ष की थी और सुन्दर! बहुत सुन्दर लड़की थी। क्या कोई उस पर रंचक भी विश्वास करेगा? मैंने उसकी कहानी पहले कभी नहीं कही, दर असल में तो मेरे और एक अन्य व्यक्ति के अतिरिक्त, जो इस गाँव में अब रहता भी नहीं है, कोई कभी जानता भी नहीं था। अब वह मर गई है मैं रहस्य खोल सकता हूँ।

"एक नवयुवक असिस्टेन्ट मास्टर गाँव में रहने को आया ही था; वह चेहरे मोहरे में अच्छा था और एक सैनिक की भाँति लगता था। सारी

लड़कियाँ उसके पीछे भागती थीं; किन्तु वह उनसे घृणा करता था। इसके अतिरिक्त वह अपने अफसर स्कूल मास्टर वृद्ध अबू से, जो कि स्वयं ही पहिले कभी-कभी गलत मार्ग पर चला करता था, बहुत डरता था।

"वृद्ध अबू ने सुन्दरी होर्टेन्स को जो यहाँ अभी २ मर कर चुकी है और जिसका नाम बाद में क्रोचेटे रख दिया गया था, पहिले ही से नियुक्त कर रखा था। असिस्टेन्ट मास्टर ने उस सुन्दरी नवयुवती को पसन्द किया, जो इस घृणा करने वाले विजयी के छांटने पर निस्सन्देह प्रभावित हुई; किसी भी तरह वह उसके प्रेम में पड़ गई। और वह उसे अपनी मुलाकात के लिये रात को, जब वह अपनी दिन भर की सिलाई समाप्त कर चुकी, तब स्कूल के पीछे भुस की कोठरी में फुसला कर ले जाने में सफल हो गया।

"उसने घर जाने का बहाना किया, किन्तु अबू के कमरे से निकल कर नीचे उतरने के बजाय वह ऊपर चढ़ गई और भुस में छिप गई और अपने प्रेमी की प्रतीक्षा करने लगी। वह शीघ्र उसके पास पहुँच गया और प्रेम भरी बातें करने ही वाला था कि भुस की कोठरी का द्वार खुला और वह स्कूल मास्टर दिखलाई पड़ा। और बोला—सिजिसबर्ट, तुम यहाँ क्या कर रहे हो? यह सोचते ही कि अब वह पकड़ा जायेगा युवक स्कूल मास्टर की बुद्धि भ्रमी गई और उसने मूर्खता पूर्ण उत्तर दिया—"मि० अबू! मैं यहाँ घास के गट्ठरों पर थोड़ी सी देर आराम करने के लिये आया हूँ।"

"भुस की कोठरी बहुत बड़ी थी, और बिल्कुल अँधेरी थी। सिजिसबर्ट ने डरी हुई लड़की को दूसरी ओर ढकेल दिया और बोला—"वहाँ जाकर छिप जाओ। मैं अपनी नौकरी खो बैठूँगा, अतः तुम जाकर छिप जाओ।"

"जब स्कूल मास्टर ने फुसफुसाहट सुनी, वह कहने लगा—"क्यों तुम वहाँ अकेले नहीं हो।"

"हाँ मि० अबू, मैं ही हूँ!"

"किन्तु नहीं, तुम ही नहीं हो, क्योंकि तुम बातें कर रहे हो।"

"मि० ब्रबू, मैं सौगन्ध खाता हूँ कि मैं ही हूँ।"

"अभी मालूम किये लेता हूँ!" वृद्ध ने उत्तर दिया और द्वार पर ताला लगाकर वह रोशनी लाने चला गया।

तब वह नवयुवक, जो ऐसा कायर था जैसे कभी २ अब भी मिल जाते हैं, अपनी बुद्धि खो बैठा और दुबारा एकाएक क्रोध से बोल उठा, "इस तरह से छिप जाओ कि वह तुम्हें खोज न सके। तुम मुझे मेरी सारी जिन्दगी के लिये दाने २ से मोहताज कर दोगी; तुम मेरा सारा भविष्य राख में मिलाकर रख दोगी! जाओ छिप लो जाओ।"

"उन्हें ताले में ताली घुमाने की आवाज सुनाई दी और होर्टेन्स सड़क की ओर खुलने वाली खिड़की की ओर दौड़ी और जल्दी से खोल निश्चयात्मक धीमे स्वर में बोली—"जब वह चला जाय तब तुम मुझे आकर यहाँ से उठा लेना", और वह कूद पड़ी।

"वृद्ध ब्रबू को यहाँ कोई न मिला, और बहुत आश्चर्य से वह नीचे उतर गया। पन्द्रह मिनट बाद मि० सिविसबर्ट मेरे पास आये और उन्होंने इस घटना को सुनाया। लड़की दीवाल के पाँयतों की ओर पड़ी हुई थी और उठ नहीं सकती थी क्योंकि वह दूसरी मंजिल से गिरी थी, और मैं उसके साथ उसे लाने गया। उस समय मेह बहुत जोर से पड़ रहा था और मैं उस अभागी को अपने साथ घर लाया, उसका दाँया पैर तीन जगह से टूट गया था और हड्डी मांस से बाहर निकल आई थी। उसने कोई शिकायत नहीं की, उसने बहुत प्रशंसात्मक आत्म-सन्तोष से केवल यह कहा—"मुझे दण्ड मिल गया है, काफी दण्ड मिल गया है।"

"मैंने उसकी सहायता की और उसकी सहेलियों से एक बनी बनाई कहानी सुनाई कि मेरे दरवाजे के सामने एक गाड़ी भागी चली जा रही थी उससे वह टकरा कर उसे लङ्गड़ी कर चली गई। उन्होंने इस बात पर विश्वास कर लिया और पूरे एक महीने तक पुलिस व्यर्थ ही इस दुर्घटना के लिये दोषी व्यक्ति को ढूँढती रही।

"बस यह ही बात है ! मैं अब कहता हूँ यह स्त्री बड़ी बहादुर थी और इसके अन्दर जो ऐतिहासिक महान् पुरुषों का सा माद्दा था ।"

"उसका बस यही प्रेम सम्बन्ध था और वह क्वारी ही मर गई। वह धर्म पर प्राण न्यौछावर करने वाली, महान् आत्मा तथा उत्कृष्टता से लवलीन रहने वाली स्त्री थी। और यदि मैं उसकी प्रशंसा नहीं करता होता तो मैं यह कहानी जो मैंने आपसे कही और जो उसके जीते जी मैंने किसी से नहीं कही थी, कभी नहीं कहता; आप समझे, क्यों ।"

डाक्टर रुका; माँ चीख पड़ी और पिताजी ने कुछ शब्द कहे जिन्हें मैं समझ न सका था; तब वे लोग कमरे से बाहर निकले, और जब मुझे बाहर किसी चीज के सीढ़ियों पर ठोकने का सा पैरों के चलने का एक विचित्र ही शोर सुनाई दिया, तब मैं कुर्सी पर घुटनों के ही बल बैठा हुआ रोता रहा ।

वे लोग क्रोचेटे के शव को ले जा रहे थे ।

ALARM BELL.

खतरे की घन्टी

छोटी मरगोइनेस डी रेनेडोन अभी तक अपने सुगन्धित एवं अँधेरे कमरे में सो रही थी।

अपने मुलायम नीचे बिस्तर पर मुलायम केम्बिक की चद्दरों में जो फीते की तरह बढ़िया और आलिंगन की भांति मुलायम थीं, वह अकेली और प्रसन्न हो रही थी। उसकी नींद तलाक दी गई स्त्रियों की नींद की भाँति मस्त और गहरी थी।

छोटे नीले ड्राइंग रूम के शोर-गुल की आवाज से वह जाग गई और उसने अपनी सहेली बेरोनेस डी आनोरिये की आवाज पहिचान ली, बेरोनेस उसकी नोकरानी से झगड़ रही थी, क्योंकि नोकरानी उसे मारगोइनेस के कमरे में नहीं जाने दे रही थी। इसलिये मारगोइनेस उठी, द्वार खोला, और पर्दे को हटाकर सिर बाहर निकाला, और कुछ नहीं केवल अपना सुन्दर मुख जो बालों के बादलों में छिपा हुआ था।

"तुम्हें क्या हो गया है जो तुम इतनी जल्दी आ गई ?" उसने पूछा। "अभी तो नौ भी नहीं बजे थे।"

छोटी बेरोनेस, जो बहुत पीली, घबड़ाई सी और बीमार सी थी बोली "मुझे तुमसे कह देना चाहिये। मेरे साथ कुछ बहुत भयानक घटना हो गई है।"

"अन्दर आओ, मेरी प्रिये।"

वह अन्दर आई, उन्होंने एक दूसरे का आलिंगन किया, और छोटी मारगोइनेस अपने बिस्तर में उठ कर बैठ गई, और उसकी नोकरानी ने खिड़कियाँ खोल दी जिससे हवा और प्रकाश अन्दर आ सके। जब वह कमरे से बाहर चली गई तब मैडम डी रेनेडोन ने कहना आरम्भ किया, "अब बताओ क्या बात है ?"

मैडम डी ग्रान्जेरी, उन सुन्दर चमकीले आसूओं को बहाती हुई, जो कि स्त्रियों को और भी अधिक आकर्षक बना देते हैं; रोने लगी। उसके आँसू निकलते रहे, उसने उन्हें पोंछा नहीं जिससे कि उसकी आँखें लाल न हो जाये वह रोती २ बोलीः "मेरी प्रिये जो भी मेरे ऊपर बीती है वह विद्रोहात्मक है, विद्रोहात्मक है। मैं सारी रात एक मिनट को भी नहीं सोई, सुना तुमने एक मिनट भी नहीं। यहाँ, देखो मेरे हृदय पर हाथ रख कर देखो, कि यह कैसा धड़क रहा है।"

और अपनी सहेली का हाथ लेकर अपनी उस छाती पर रख लिया जो स्त्री के हृदय के ऊपर का कठोर एवं गोल २ आवरण होता है, पुरुष जिसे देख कर सन्तुष्ट हो जाता है और जो पुरुष को उसके अन्दर झांकने से रोकता है। किन्तु उसका हृदय वास्तव में बड़ी तेजी से धड़क रहा था।

वह कहने लगी।

"यह घटना मेरे साथ कल, मैं ठीक नहीं कह सकती, चार या साढ़े चार बजे दिन में घटी थी।

तुमने मेरे कमरों को तो देखा ही है और तुम्हें यह मालूम है कि मेरे छोटे ड्राइङ्ग रूम की खिड़की, जहाँ मैं अक्सर बैठी रहती हूँ, रयू सेन्ट लजारे की ओर खुलती है, और तुम यह भी जानती हो कि मुझे खिड़की पर बैठ कर आने जाने वाले लोगों की ओर देखने का पागलपन सवार रहता है। रेलवे स्टेशन का सामीप्य बिल्कुल ठीक वैसा ही जैसा मैं चाहती हूँ, बहुत सुन्दर आकर्षक एवं हलचल युक्त है। सो कल मैं, एक नीची कुर्सी पर, जिसे मैंने खिड़की के पास रख रखा है, बैठी हुई थी; खिड़की खुली हुई थी और मैं केवल ताजी हवा में साँस ले रही थी सोच कुछ नहीं रही थी। तुम्हें याद होगा कल कितना सुन्दर दिन था।

"एकाएक, मैंने एक स्त्री लाल कपड़े पहिने हुए—सामने ही एक खिड़की में बैठी देखी। मैं नारंगी रङ्ग की ड्रेस पहिने हुए थी—जानती हो न मुझे वह बहुत प्रिय है। मैं उस नवागन्तुका स्त्री को, जो वहाँ एक महीने से ही आई थी नहीं जानती थी क्योंकि एक महीने से ही बरसात हो रही है, मैंने

उसे अभी देखा भी नहीं था, किन्तु उसे देखते ही मैं शीघ्र पहिचान गई कि वह लड़की अच्छी नहीं थी। पहिले तो मुझे इस बात से दुख हुआ तथा धक्का पहुँचा कि वह भी ऐसी खिड़की पर बैठे जैसी खिड़की पर मैं थी, और तब धीरे २ मुझे इसकी निगरानी करने में आनन्द आने लगा। उसने अपनी कुहनियाँ खिड़की की चौखट पर टेक रखी थीं, और आदमियों की ओर देखती रही थी तथा सब ही या लगभग सब ही आदमी उसकी ओर देख रहे थे। कोई भी कह सकता था कि वे लोग उसके घर के पास आते ही किसी तरीके से उसकी उपस्थिति को समझ लेते कि वे उसको सूंघ लेते। जैसे कुत्ते खेलों में सूंघते हैं, क्योंकि वे एकाएक ही सिर उठाते और उससे बड़ी तेजी से दृष्टि विनिमय करते एक भांति का विश्व बन्धुओं का सा दृष्टि विनिमय। उसकी दृष्टि कहती। क्या तुम आवोगे ? उनकी दृष्टि उत्तर देती, 'मेरे पास समय नहीं है', या फिर 'और किसी दिन'; या फिरः 'मेरे पास एक भी पाई नहीं है'' या फिर 'छिप जा डाइन !'

''तुम कल्पना नहीं कर सकतीं कि उसे ऐसा काम करते देखना, यद्यपि यह उसका नित्यप्रति का कार्य है' कितना हास्यास्पद था !

''कभी २ वह खिड़की को एकाएक बन्द कर देती। और मैं देखती कि कोई पुरुष अन्दर गया। उसने उसे एक मछुए की तरह जो कांटे से मछली को पकड़ लेता है, पकड़ा था। तब मैं अपनी घड़ी की ओर देखती तो मालुम पड़ता कि कोई भी बारह या बीस मिनट से अधिक नहीं रुकता। अन्त में उसने मेरे अन्दर भी पाप प्रवृत्ति जाग्रत कर दी। मकड़ी ! और तब जानवर भी बहुत बद सूरत है।

मैंने मन ही मन पूछाः 'वह अपने आपको इतनी शीघ्र इतनी भली भांति और इतनी पूर्णता से कैसे समझा देती है ? क्या वह अपने सिर के इंगति को। या अपने हाथों के हावभावों को अपनी दृष्टियों में शामिल कर देती है ? और मैंने उसकी गतिविधियों को देखने के लिये अपनी दूरबीन ली। ओह ! वे बहुत सरल थेः सबसे पहिले एक नजर, तब मुस्कुराहट, तब सिर से एक बेमालूम संकेत जिसका अर्थ होताः 'क्या तुम ऊपर आ रहे हो ?'

किन्तु वह इतना बेमालूम, इतना हलका, इतना गुप्त होता है कि उसकी भांति दक्षता प्राप्त करने में बहुत ट्रिकों की आवश्यकता है। और मैंने मन ही मन कहा : मुझे आश्चर्य होगा यदि मैं वह तनिक सा हाव, नीचे से ऊपर, जो कि साथ ही साथ दृढ़ एवं सुन्दर भी था, उसी की भांति जैसे वह करती है कर सकती।' क्योंकि उसका हाव-भाव बहुत ही सुन्दर था।

"मैं अन्दर गई और दर्पण के सम्मुख जाकर वैसे ही करके देखा, मैंने उससे भी बहुत अच्छे ढङ्ग से किया, बहुत ही सुन्दर! मैं मुग्ध हो गई, और खिड़की पर अपनी जगह वापिस लौट आई।

"वह बेचारी गरीब लड़की, फिर किसी को नहीं फांस सकी। वास्तव में वह अभागिन थी। वास्तव में किसी का ऐसे रोटी कमाना कितना भयङ्कर है, भयङ्कर और कभी २ आनन्दप्रद भी है, क्योंकि इन लोगों में से जो सड़कों पर मिल जाते हैं कोई २ बहुत अच्छा निकल आता है।

"इसके बाद वे सब सड़क पर मेरी ही ओर आने लगे, और उसकी ओर कोई नहीं गया; सूर्य लौट चुका था। वे एक के बाद एक करके युवक, वृद्ध, गोरे, भूरे, सुन्दर लोग आये। मैं किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश में थी जो बहुत सुन्दर हो, मेरे या तुम्हारे पति से कहीं सुन्दर—मेरा अर्थ तुम्हारे पहिले पति से है क्योंकि अब तो तुम्हें तलाक मिल चुका है। अब तुम चुन सकती हो।

"मैंने मन ही मन कहा : यदि मैं उन्हें संकेत करती हूँ, तो क्या वे मुझ सम्मान प्राप्त स्त्री की बात समझ सकेंगे? और मेरे अन्दर उन्हें संकेत करने की एक प्रबल अभिलाषा जागृत हो उठी। मेरी इच्छा एक भयङ्कर इच्छा थी; तुम जानती हो, ऐसी इच्छा थी जिसे कि कोई रोक नहीं पाता है! मुझे कभी २ वैसी ही इच्छा हो जाती थी। क्या तुम्हारे विचार में यह बातें मूर्खतापूर्ण नहीं हैं? मेरा विश्वास है कि हम स्त्रियों में बन्दर की आत्मा होती है। जब हम अपने पतियों से प्रेम करती हैं तब हम शादी के बाद पहिले महीनों में तो उनकी नकल किया करती हैं और तब अपने प्रेमियों की, अपनी सहेलियों की और यदि वे अच्छे होते हैं तो अपने धार्मिक पुरो-

हितों की। हम उनकी विचार प्रणाली, भाषण के ढङ्ग, उनके शब्दों, उनके हाव-भावों हर एक वस्तु को ग्रहण करती हैं। यह बहुत मूर्खता है।

"कैसे भी, जहाँ तक मेरा प्रश्न है, जब मुझे किसी काम के करने का लालच होता है तो मैं तो उसे हमेशा ही कर डालती हूँ, और इसलिये मैंने अपने मन में सोचा : 'मैं केवल देखने भर के लिये एक व्यक्ति के साथ करूँगी। मेरे साथ क्या हो सकता है ? कुछ भी नहीं। हम एक मुस्कान का आदान प्रदान करेंगे, और बस, और मैं निश्चय ही उसके लिये अस्वीकार कर दूँगी।'

"अतः मैं अपना चुनाव करने लगी, मेरी इच्छा थी कोई सुन्दर, बहुत सुन्दर व्यक्ति हो ! और एकाएक एक लम्बा, गौर वर्ण और बहुत ही सुन्दर पुरुष अकेला आता हुआ दिखलाई दिया। मैंने उसकी ओर देखा, उसने मेरी ओर; मैं मुस्कुराई, वह मुस्कुराया, ओह ! मैंने बहुत ही बेमालूम संकेत किया; उसने सिर हिलाकर स्वीकृति जताई, और मेरी प्यारी वह आ भी गया। वह मकान के अन्दर बड़े द्वार पर आ गया।

"तुम कल्पना नहीं कर सकतीं कि मेरे मस्तिष्क में तब क्या २ बातें आई ! मैंने सोचा कि मैं पागल हो जाऊँगी। ओह ! मैं कितनी भयभीत हो गई थी ! जरा सोचो, वह नौकरों से कह देगा ! जोसेफ से, जो मेरे पति का कार्य करता है कह देगा ! जोसेफ निश्चित ही यह समझेगा कि मैं उस व्यक्ति को बहुत दिनों से जानती हूँ।

"बतलाओ, मैं क्या करती ? और वह क्षण भर में ही घन्टी बजा देगा, बतलाओ मैं क्या करती ? मैंने सोचा मैं जाकर उससे मिलूँ और कह दूँ कि उसने गलती की है उससे चले जाने को कह दूँ। उसे एक स्त्री, बेचारी अबला स्त्री पर दया आ जायेगी। अतः मैं द्वार की तरफ भागी गई और किवाड़ खोले। तब ही देखा कि वह घन्टी बजाने जा ही रहा था, और मैं हक-लाते हुए, बिल्कुल मूर्खता से, उससे बोली: "मिस्टर चले जाइये, चले जाइये, आपने गलती की है, भयानक गलती की है; मैंने आपको अपना एक मित्र

समझा था जिससे आप बिल्कुल हूबहू मिलते हैं। मिस्टर मुझ पर दया कीजिये।"

"किन्तु प्रिये, वह केवल हँसता रहा, और बोला: 'गुड मार्निङ्ग प्रिये, तुम्हें विश्वास होना चाहिये कि मैं तुम्हारी इस छोटी सी कहानी की बाबत भली भांति जानता हूँ। तुम विवाहित हो इसलिये बीस की जगह चालीस फ्रैंक चाहती हो, और वह तुम्हें मिल जायेंगे। अतः रास्ता दिखलाओ।'

"और मुझे धक्का देकर वह अन्दर आ गया और उसने किवाड़ बन्द कर दिये; और जैसे मैं भयभीत सी उसके सामने खड़ी रही उसने मेरा चुम्बन लिया, मेरी कमर में हाथ डालकर मुझे मेरे ड्राइंगरूम की ओर, जिसका द्वार अभी तक खुला पड़ा था, वापिस जाने को बाध्य कर दिया। और तब वह हर एक वस्तु को ऐसे देखने लगा जैसे नीलाम करने वाले देखा करते हैं। उसने कहा: 'जोव की सौगन्ध! तुम्हारे कमरे में यह बहुत ही अच्छा है, बहुत ही अच्छा। मालुम होता है तुम्हारा भाग्य बहुत खोटा हो गया है जो तुम्हें यह खिड़की का व्यापार करना पड़ा है!"

"तब मैं उससे फिर प्रार्थना करने लगी। 'ओह! मिस्टर चले जाइये, कृपाकर चले जाइये! मेरे पति के आने का समय हो गया है वह आते ही होंगे। मैं सौगन्ध खाती हूँ कि आपने गलती की है।' किन्तु उसने बिल्कुल शान्ति से उत्तर दिया: आओ, मेरी रानी, मैं इन सब बत्तमीजियों को बहुत कर चुका हूँ, अगर तुम्हारा पति आ जायगा तो मैं उसे पाँच फ्रैन्क दे दूंगा जिससे वह सामने एक रेस्टोरेन्ट में जाकर शराब पी आये।' और तब राउल के फोटो को चिमनी पर लगा देखकर मुझसे बोला:—क्या यह तुम्हारे-तुम्हारे पति हैं?"

"हाँ यही हैं।"

"वह एक अच्छे स्वाभाव का व्यक्ति मालुम पड़ता है और यह कौन है? तुम्हारी सहेली?"

"मेरी प्यारी, वह मेरा नृत्य की पोशाक पहिने हुए वाला फोटो था। मुझे होश नहीं था कि मैं क्या कह रही थी।" मैंने हकलाते हुए कहा: "हाँ, यह मेरी एक सहेली का है।"

"वह बहुत अच्छी है; तुम्हें उससे मुझे परिचित कराना पड़ेगा।"

"तब ही घड़ी ने पाँच बजाये। राउल नित्य प्रति साढ़े पाँच बजे घर आते हैं। सोचो यदि वह उसके जाने से पहिले आ जाते, कल्पना करो तब क्या होता! तब—तब मेरा मस्तिष्क बिल्कुल बेकार हो गया-बिल्कुल-मैंने सोचा-कि-कि-इस-आ-आदमी-से-छुटकारा पाने के लिये-सबसे अच्छी बात यह होगी-जितनी जल्दी हो सके-जितनी जल्दी खतम हो जाय-तुम समझती हो!"

× × × ×

छोटी मारगोइनेस डोरेनेडोल हँसने लगी थी, अपना सिर तकिये में छिपाकर पागलों की तरह हँसने लगी थी जिससे उसका सारा बिस्तर हिल उठा, और जब वह थोड़ी सी शान्त हुई तब उसने पूछाः

"और-और-क्या वह सुन्दर था?"

"हाँ।"

"और फिर भी तुम्हें शिकायत है?"

"किन्तु-किन्तु तुमने यह नहीं सोचा, मेरी प्रिये, कि वह कल फिर आयेगा—उसी समय—और मैं—मैं बुरी तरह से भयभीत हूँ-तुम नहीं जानतीं वह कितना हठी और जिद्दी है। मैं क्या करूँ-बतलाओ-मैं क्या करूँ?"

छोटी मारगोइनेस बिस्तर पर उठ कर बैठी हो गई और सोचने लगी, फिर एकाएक वह बोलीः "उसको गिरफ्तार करवा दो!"

बेरोनेस उसकी ओर शान्ति से देखती रही फिर हकलाती हुई बोली "तुम क्या कहती हो? तुम क्या सोच रही हो? उसको गिरफ्तार करवा दूँ? किस चक्कर में?"

"यह तो बहुत सरल है। पुलिस थाने जाओ और कहो कि एक पुरुष तीन महीने से तुम्हारा पीछा कर रहा है, कि कल वह तुम्हारे कमरे में आने की धृष्टता कर चुका है; कि कल उसने तुमसे दोबारा मिलने की तुम्हें धमकी दी है, और तुम कानून की सुरक्षा माँगो, और वे तुमको दो पुलिस अफसर देंगे जो उसे गिरफ्तार कर लेंगे।"

"किन्तु मेरी सखी, मानलो वह कहता है......"

"यदि तुम उनसे अपनी कहानी बुद्धिमत्ता से कहोगी तो, वे उसकी बात पर विश्वास नहीं करेंगे। किन्तु वे तुम्हारा, जो कि अप्राप्य एवं सामाजिक भी हो, विश्वास करेंगे।"

"ओह ! यह करने की मैं कभी हिम्मत नहीं करूँगी।"

"मेरी सखी, तुम्हें हिम्मत करनी चाहिये नहीं तो तुम पतित हो जाओगी।"

"किन्तु यह तो सोचो कि वह गिरफ्तार होते ही मेरा अपमान कर देगा।"

"बहुत अच्छा, तुम्हारे गवाह होंगे और उसको सजा हो जायगी।"

"सजा क्या ?"

"हानि पूरा करने की, ऐसे मामलों में इन्सान को बिलकुल बेरहम होना चाहिये।"

"आह ! हानियों की कहती हो-एक चीज है जो मुझे बहुत परेशान करती है-सचमुच बहुत ज्यादा। वह मेरे लिये बीस २ फ्रैन्क के दो सिक्के मेरे मेजपोश पर रख गया है।"

"बीस २ फ्रैन्क के दो सिक्के ?"

"हाँ।"

"ज्यादा नहीं ?"

"नहीं।"

"यह बहुत थोड़ा है। मेरे आत्म सम्मान को यह बहुत ठेस पहुँचाती। खैर ?"

"खैर, मुझे इस रुपये का क्या करना चाहिये ?"

छोटी मारगोइनेस कुछ क्षणों तक तो हिचकिचाई और फिर बड़े गम्भीर स्वर में बोली:

"मेरी सखी ! तुम्हें-तुम्हें अपने पति को इस धन की कोई छोटी सी सौगात भेंट कर देनी चाहिये। बस यही एक अच्छी बात रहेगी !"

जिस सौन्दर्य से कोई लाभ नहीं
(बेकार सौन्दर्य)

१

दो काले सुन्दर घोड़ों से युक्त एक मनोहर बग्घी विशाल प्रासाद के सम्मुख आकर रुकी। जून के दूसरे पक्ष का दिन था, समय था सांयकाल साढ़े पाँच बजे का और इस समय उस विशाल प्रासाद के विशाल सहन में चमकती हुई, उष्ण सूर्य किरणें फैल रही थीं। काउन्टेस डीमास्केरेट का पति घर आ रहा था, उसे बग्घी के द्वार पर देखते ही वह नीचे उतर आई। पति अपनी पत्नी के चेहरे को देख कुछ क्षण रुका और पीला पड़ गया। अपने अण्डाकार चेहरे, चमकदार हाथी दांत के से अपने रङ्ग, अपनी बड़ी २ भूरी आखों, और अपने काले २ केशों के कारण बहुत सुन्दर, दयावान एवं प्रतिष्ठित महिला सी दिखलाई देती थी, और ऐसा भाव प्रदर्शित करते हुए कि मानो उसने उसे देखा भी नहीं हो, उसकी ओर देखे बिना ही, एक विशेष उच्च कुलीनता की भावना से वह अपनी गाड़ी में जा बैठी, जिससे कि वह भयानक ईर्षा जिसे वह इतने लम्बे काल से भुला चुका था फिर से उसके हृदय में उदय हो गई। वह उसके पास जाकर बोला: ' तुम सैर करने जा रही हो ?"

घृणा से उसने केवल यही उत्तर दिया: "आप देख रहे हैं, मैं जा रही हूँ !"

"बोइस डी बोलोन में ?"

"शायद।"

"क्या तुम्हारे साथ मैं चल सकता हूँ ?"

"गाड़ी आप ही की है।"

उसके स्वर के ढंग से जिसमें उसे उत्तर दिये गये थे वह प्रभावित हुए बिना ही अन्दर आकर अपनी पत्नी की बगल में बैठते हुए बोला: "बोइस-

डी बोलोन ।" नौकर उछलकर कोचवान की बगल में बैठ गया और घोड़े जब तक सड़क पर रहे अपने सिरों को हिलाते रहे और जमीन को टापों से खरोंचते रहे । पति पत्नी आपस में बातचीतें किये बिना ही पास २ बैठे रहे । वह सोच रहा था कि वार्तालाप कैसे प्रारम्भ किया जाय किन्तु उसकी कठोर एवं जिद्दी आकृति के कारण उसे आरम्भ करने की हिम्मत नहीं पड़ती । अन्त में, उसने चालाकी से, संयोग से जैसा कि था, किसी भी तरह से काउन्टेस के दस्ताने में पड़े हुए हाथ को अपने हाथ से छू लिया, किन्तु उसने इतनी घृणा के हाव भाव से अपनी बांह को अलग हटा लिया कि वह, अपने स्वच्छन्द एवं अधिकृत स्वभाव के विपरीत, विचारों में ही निमग्न रहा । अन्त में बोलाः "गैवरीले !"

"क्या काम है ?"

"मेरा विचार है कि तुम देवी की भाँति लग रही हो ।"

उसने उत्तर नहीं दिया, किन्तु गाड़ी में एक उत्तेजित रानी की भाँति लेटी रही । उस समय वे लोग अकिडी ट्रिओम्फे की ओर चेम्पस-एलीसेज के ऊपर थे । लम्बे प्रासाद के अन्त में उस विशाल समाधि की गुम्बदें गगन को चूम रही थीं, और सूर्य उस पर आकाश से अग्निकणों को फेंकता हुआ अस्त होता सा दिखलाई पड़ता था ।

सूर्य रश्मियों से चमकती हुई, चमकते हुए लेम्पों से युक्त गाड़ियों की पंक्तियाँ, एक नगर की ओर दूसरी जंगल की ओर जा रही थीं और काउन्ट डी मस्करेट ने कहना आरम्भ कियाः "मेरी प्रिय गैवरीले !"

तब अधिक सहन न कर सकने के कारण वह क्रोधयुक्त वाणी में बोलीः "ओह ! कृपया मुझे शान्ति से मत रहने दीजिये ! अब मैं अपनी गाड़ी में बैठने को भी स्वतन्त्र नहीं हूँ ।" उसने उसकी बात को जैसे सुना ही न हो ऐसा दर्शाते हुए कहाः "जितनी सुन्दर तुम आज लग रही हो उतनी सुन्दर तो कभी नहीं लगीं ।"

निश्चय ही उसका धैर्य टूट चुका था, और वह क्रोध को न दबा पाती हुई बोलीः "आप उसे देख कर गलत अनुमान लगा रहे हैं, क्योंकि मैं सौगन्ध

खाकर कहती हूँ कि मैं अब आपके साथ उस भाँति का कोई भी कार्य कभी भी नहीं करूँगी।" वह अपनी बुद्धि खो बैठा, भड़क गया और उसकी पाशविक प्रवृत्तियों ने उस पर विजय प्राप्त कर ली, वह चिल्लायाः "उससे तुम्हारा क्या मतलब है ?" वह इस भाँति चिल्लाया जिससे कि वह एक सहृदय व्यक्ति के बजाय निर्दयी स्वामी सा प्रतीत हुआ। किन्तु उसने धीमे स्वर से, जिससे कि गाड़ी के पहियों के कर्णभेदी स्वर में उसके नौकर उसकी आवाज को न सुन सके, उत्तर दियाः

"आह ! मेरा उससे क्या मतलब ? मेरा उससे क्या मतलब था ? अब मैं आपको फिर से पहिचान गई ! क्या आप मुझसे सब बातें कहलाना चाहते हैं ?"

"हाँ।"

"सब बातें, वे सब बातें जो कि मेरे हृदय में हैं-और तब से जब से कि मैं आपकी स्वार्थपरता का शिकार बनी हूँ ?"

वह क्रोध, एवं आश्चर्य से लाल हो गया और अपने बन्द दांतों के बीच से घुड़काः "हाँ, मुझसे सब बातें कह दो।" वह एक लम्बा, लम्बी लाल दाढ़ी युक्त, सुन्दर, उच्चकुलीन, वृषभस्कन्धीय एवं सांसारिक पुरुष था जिसने कि संसार में रहकर एक पति तथा बच्चों के पिता की भाँति अपना कार्य पूर्ण सफलता पूर्वक किया था और उसकी पत्नी ने चलने के बाद अब पहिली बार उसकी ओर मुड़कर उसके मुँह की ओर पूरी दृष्टि से देखाः "आह ! आप कुछ अरुचिकर बातें सुनेंगे किन्तु आपको यह जान लेना चाहिये कि मुझे आज किसी का डर नहीं और आपका तो और भी नहीं और मैं सब बातों के लिये तैयार हूँ।"

वह उसकी आखों को भी देख रहा था और गुस्से से तो काँप ही रहा थाः तब वह धीमे स्वर में बोलाः "तुम पागल हो।"

"नहीं, किन्तु मैं मातृत्व के घृणित दण्ड को, जिससे तुम मुझे ग्यारह वर्षों से दण्डित करते चले आये हो, अब और अधिक नहीं सहन करूँगी। मैं दुनियाँ में सांसारिक स्त्री की तरह रहना चाहती हूँ, क्योंकि मुझे भी अन्य स्त्रियों की भाँति ऐसे रहने का अधिकार है।"

वह एकाएक पीला पड़ गया और अटककर बोला: "मेरी समझ में तुम्हारी बात नहीं आई।"

"ओह ! हाँ; आप खूब अच्छी तरह समझते हैं। अभी तीन महीने पहिले मेरे बच्चा हुआ है, और जैसा आपने अभी मुझे सीढ़ियों से उतरते देखकर सोचा कि अब समय आ गया है जब मैं फिर से गर्भवती हो जाऊँ, आपके सारे प्रयत्नों के होते हुए भी मैं अभी भी बहुत सुन्दर हूँ और आप मेरी सुन्दरता को नष्ट नहीं कर सकते।"

"किन्तु तुम मूर्खता की बातें कर रही हो!"

"नहीं, मैं नहीं कर रही, मैं ३० वर्ष की हूँ और सात बच्चों की माँ हूँ और हमारे विवाह को ग्यारह वर्ष हो गये और आप चाहते हैं कि यह अभी दस वर्षों तक और इसी भाँति चलता रहे जिसके पश्चात ईर्षित होकर आप छोड़ देंगे।"

उसने उसकी बाँह पकड़ी और दबाते हुए कहा: "मैं तुम्हें इस तरह की बातें अधिक नहीं करने दूँगा।"

"और मैं यह बातें तब तक करती रहूँगी, जब तक कि जो कुछ भी मुझे कहना है वह सब नहीं कह लेती, और यदि आप मुझे रोकने की चेष्टा करेंगे तो मैं अपना स्वर ऊँचाकर दूँगी जिससे कि ये दोनों नौकर जो बाक्स पर बैठे हुए हैं सुन लें। मैंने आपको अपने साथ ले चलना इस ही लिये स्वीकार किया, क्योंकि मेरे पास ये गवाह हैं, जो आपको बाध्य कर देंगे कि आप मेरी बात सुनें। मेरे हृदय में आपके प्रति घृणा सदा से ही है और वह मैंने आपसे कभी छिपाई भी नहीं क्योंकि, श्रीमानजी, मैं कभी झूठ नहीं बोली। आपने मेरी इच्छा के विरुद्ध मुझसे विवाह किया; आपने मेरे अभिभावकों को, जो मजबूर हालत में थे, आपको सौंपने को दबाव डाला क्योंकि आप धनी थे और उन्होंने मेरे अश्रुओं की भी परवाह न कर आपसे मेरा विवाह कर दिया।"

"इस तरह आपने मुझे खरीद लिया, और जैसे ही मैं आपके वश में आ गई, जैसे ही मैं आपकी साथिन बन गई और आपसे अपने आपको

समयबद्ध करने को, आपकी घृणित एवं धमकी भरी गतिविधियाँ भूलने को मैं इसलिये तैयार हुई कि जिससे मैं केवल इतना ही ध्यान रखूँ कि मुझे आपकी सेवाकारिणी पत्नी बनना है और आपसे इतना प्रेम करना है जितना कि अधिकाधिक मैं आपसे कर सकती हूँ, आप ईर्ष्यित हो गए और एक गुप्तचर जैसी—नीच और कुत्सित ईर्ष्या से आप ईर्ष्यित हुए जैसी कि किसी व्यक्ति ने पहिले कभी नहीं देखी और जो आपके लिये भी उतनी हीन एवं अपमानजनक थी जितनी कि मेरे लिये। मेरे विवाह को आठ महीने भी नहीं हुए आपने मेरे ऊपर विश्वासघात का सन्देह किया, यह आपने और मुझसे कहा भी था। कितना अपमान है! और क्योंकि आप मुझे सुन्दर होने से, व्यक्तियों को प्रसन्न करने से, ड्राइंगरूमों में बुलाए जाने से, और समाचार पत्रों में भी, पेरिस की सर्वाधिक सुन्दरियों में एक कहलाने से नहीं रोक सके, आपने मेरे प्रशंसकों को मुझसे दूर रखने के वे सब प्रयत्न, जो आपके मस्तिष्क में आ सकते थे, किये फिर आपके हृदय में मुझे मातृत्व की स्थायी हालत में, जब तक कि मैं हर एक पुरुष से घृणा न करने लगूँ, डाले रखने की घृणित अभिलाषा जाग्रत हुई। ओह! अस्वीकार मत करो! पहिले तो मैं कुछ दिनों तक समझ ही नहीं पाई किन्तु फिर मैं उसे पहिचान गई। आपने अपनी बहिन के सामने भी इसकी बड़ाई मारी थी। उसने मुझसे कह दिया था क्योंकि वह मुझे बहुत चाहती है और आपके जंगली और असभ्य व्यवहार से वह बहुत घृणा करती है।

"आह! अपने झगड़े स्मरण कीजिये, किवाड़ बन्द हो गये, ताले ठोंक दिये गये! ग्यारह वर्षों तक आपने मुझे एक बैठी हुई घोड़ी की तरह जिन्दगी बिताने को लाचार किया। तब जब मैं गर्भवती हुई आपको मुझसे घृणा हो गई और मैंने महीनों आपकी कोई बात नहीं देखी। आपने मुझे खेतों और दलदलों से घिरे पारिवारिक भवन में गाँव में जापे के लिये भेज दिया। और उसके पश्चात जब मैं फिर से स्वस्थ, सुन्दर, अनश्वर और प्रेरक लगने लगी और प्रशंसकों से सदा घिरी रहने तथा आशा करने लगी कि मैं भी एक धनी नवयुवती, जो समाज से सम्बन्ध रखती है, की भाँति थोड़ी बहुत रह सकूँगी आपके अन्दर फिर से ईर्ष्या जाग्रत हुई, और आपने

इसी कुख्यात एवं घृणित इच्छा से जो इस समय मेरे पास बैठे हुए आपके अन्दर जाग्रत हो रही है, मेरे साथ दुर्व्यवहार करना प्रारम्भ कर दिया। और आपकी यह इच्छा मुझे अपनी ही बनाकर रखने के लिये नहीं है वरन् मुझे असुन्दर बनाने के लिये है, नहीं तो मैं कभी आपकी ही होकर रहना अस्वीकार नहीं करती।

"इसके अतिरिक्त वह घृणित एवं गुप्त परिस्थिति, जिसे मैं बहुत दिनों से मनन कर रही थी। किन्तु आपके विचारों और कार्यों की गतिविधियों पर दृष्टि रखने के कारण बहुत उत्सुक हो गई थी। आप अपने बच्चों के उन सब विश्वासों को प्राप्त कर जो उन्होंने आपको दिलाये थे, के प्रेम में लीन हो गये जब कि गर्भ में मैंने उनको रखा था। और अपने अनट्रोजित भयों के होते हुए भी जो कि मुझे माँ देखने के आपके आनन्द में क्षणभर के लिये दब जाते थे, आपके हृदय में मेरे प्रति प्रेम उत्पन्न हुआ।

"ओह! कितनी बार मैंने आपके अन्दर वह दर्प देखा था। मैंने उसे आपके नेत्रों में देखा था और पहिचान गई थी। आप अपने बच्चों से प्रेम इसलिये करते थे कि वे आपकी जीतें थीं न कि इसलिये कि वे आपके ही रक्त के थे वे मेरी धरोहर मुझे न थी और वे बच्चे मेरे ऊपर, मेरे यौवन प', मेरे सौन्दर्य पर, मेरे आकर्षणों पर सद्भावनाओं पर जो मेरे प्रति प्रदर्शित की गई थी, और जो लोग मुझे चारों ओर से घेरे रहते थे उनपर विजय स्वरूप प्राप्त किये गये थे। और आपको उन पर गर्व है, आप उनसे परेड कराते हैं, आप उनको अपनी बग्घी में सैर कराने बोइस डी बोलोन में ले जाते हैं, और आप उनको मोन्टमोरेन्सी में गधे की सवारी देते हैं। आप उनको मेटिनी शो में ले जाते हैं ताकि आपको उनके मध्य में देखकर लोग कहें: 'कितना दयालु पिता है।' और यह दोहराया जा सके।"

उसने उसकी कलाई को जंगली असभ्यता से पकड़ लिया, और इतनी जोर से दाबा कि यद्यपि दर्द के मारे उसके मुंह से चीख सी निकल गई किन्तु वह चुप हो गई। तब वह उससे फुसफुसाते हुए बोला—

"सुनती हो, मैं अपने बच्चों का प्रेम करता हूँ? तुम्हारी अभी कही गई बातें एक माँ के लिये कलङ्क हैं। किन्तु तुम मेरी हो, मैं स्वामी हूँ—

तुम्हारा स्वामी। मैं-तुमसे जब और जो चाहूँ वसूल कर सकता हूँ और कानून मेरे साथ है।"

वह अपने मजबूत पंजे से उसकी उँगलियों को मसोस डालना चाहता था और वह दर्द से व्याकुल हो उन्हें उससे, जो उन्हें कुचले डाल रहा था, बचाने का व्यर्थ प्रयत्न कर रही थी; कष्ट के कारण वह रो उठी और उसके नेत्रों में अश्रु आ गए। "देखा, मैं तुम्हारा स्वामी हूँ और तुमसे कहीं अधिक शक्तिशाली भी।" वह बोला! और जब उसने अपनी पकड़ कुछ ढीली की तब यह उससे पूछने लगी : "क्या आप मुझे एक धार्मिक स्त्री मानते हैं?"

वह आश्चर्य चकित हो गया और अटक कर बोला : "हाँ!"

"आपके विचार से यदि मैं भगवान ईसामसीह के सामने जाकर किसी वस्तु की सचाई के लिये कसम खाऊँ तो क्या वह झूठ हो सकती है?"

"नहीं।"

"क्या आप मेरे साथ किसी गिरिजाघर तक चलेंगे?"

"किसलिये?"

"वहीं मालूम हो जायगा, चलेंगे?"

"यदि तुम्हारी बिल्कुल यही इच्छा हो तो, हाँ।"

उसने अपना स्वर उच्च करके कहा "फिलिप!" और कोचवान अपने घोड़ों से नेत्र हटाए बिना ही थोड़ा सा झुकते ही ऐसा लगा मानों कि उसने केवल अपने कान ही अपने स्वामिनी की ओर कर दिये हों, जिसने कहा : फिलिप। दू रोल की ओर चलो।" वह बग्घी जो अब तक बोइस-डी-बोलोन के द्वार तक पहुँच ही गई थी, पेरिस को लौट दी।

रास्ते में पति और पत्नि में एक भी बात नहीं हुई। गाड़ी के गिरिजाघर पर रुकते ही मैडम डीमास्करेट उतरी और और उसके अन्दर चली। काउन्ट उसके कुछ कदम पीछे चल दिया। कोरस के पर्दे तक वह कहीं रुके बिना बराबर चलती रही और एक कुर्सी पर घुटने के बल बैठते हुए उसने अपना मुँह अपने हाथों में छिपा लिया। वह बहुत देर तक प्रार्थना करती रही और वह उसके पीछे खड़ा हुआ था—उसे दिखलाई दे रहा था कि वह रो रही थी। वह मन ही मन रो रही थी, जैसे कि बहुधा स्त्रियाँ जब बहुत

असह्य कष्ट में होती हैं रोया करती हैं। उसके तन में एक प्रकार की सिहरन थी जो उसके थोड़े से अश्रुओं में, जो कि उसके हाथों से छिपे हुए थे, परिवर्तित हो गई।

किन्तु काउन्ट डी मारस्करेट ने सोचा कि देर बहुत हो गई थी अतः उसने उसके कन्धों को अपनी उंगलियों से छुआ। स्पर्श ने उसे फिर से वास्तविकता में ला पटका और मानों वह जल गई हो, उसने उठते हुए सीधे उसके नेत्रों में देखा।

"मुझे आपसे यही कहना है। मुझे यह डर नहीं कि आप मेरा क्या करेंगे? आप यदि चाहें तो मुझे मार डालें। मैं भगवान के सामने जो मेरी बात सुन रहा है कसम खाती हूँ कि इन बच्चों में से एक आपका नहीं है। आपके पुरुषोचित दुष्ट अत्याचारों, आपके द्वारा बार-बार बच्चे जनने के दण्ड की अवस्था में पटके जाने का प्रतिशोध लेने का यही एक मात्र उपाय मेरे पास था। यह आप कभी नहीं जान पायेंगे कि मेरा प्रेमी कौन था? आप हर एक पर सन्देह कर सकते हैं किन्तु आप उसे खोज नहीं सकते। मैंने उसे अपने आपको बिना प्रेम, बिना आनन्द के केवल आपको धोखा देने के लिये उसको समर्पण कर दिया और उसने मुझे माँ बना दिया। उसका पुत्र कौन सा है? यह भी आपको कभी नहीं मालूम हो सकेगा। मेरे सात पुत्र हैं, कोशिश कर खोज निकालिये! मैं उसे बाद में कहना चाहती थी क्योंकि कोई भी किसी पुरुष को धोखा देकर तब तक पूरा बदला नहीं निकाल सकती जब तक कि वह मनुष्य स्वयं जान ले कि उसके साथ विश्वासघात हुआ है। आप मुझे यह कहलाने के लिये यहाँ घसीट लाए और मैंने कह दिया।"

वह गिरजा घर से शीघ्रता से निकल कर खुले द्वार की ओर चल दी। उसे आशा थी कि उसका पति जिसे उसने चुनौती दी थी अपनी तेज चाल से उसके पीछे २ आ रहा होगा और आते ही अपने शक्तिशाली घूंसे को उसके सिर पर मार उसे धराशायी कर देगा किन्तु उसे कुछ सुनाई नहीं दिया और वह अपनी गाड़ी तक पहुँच गई। एक ही उछाल में क्रोध से भरी हुई और भय से निराश वह उछल कर गाड़ी में बैठ गई। उसने अपने कोचवान से कहा; "घर।" और घोड़ों ने गति भरनी आरम्भ कर दी।

२

एक मृत्यु दण्ड का अपराधी जिस भाँति अपनी अन्तिम घड़ी की प्रतीक्षा करता है उसी भाँति काउन्टेस डी मास्करेट अपने कमरे में बैठी हुई डिनर के समय की प्रतीक्षा कर रही थी। अब वह क्या करेगा? क्या वह घर आ गया? स्वच्छन्द अत्याचारी, क्रोधी और हर भाँति की हिंसा के लिये सनद्ध रहने वाला वह क्या सोच रहा है और उसने क्या करने का अपने मन में निर्णय किया है? घर में किसी प्रकार की आवाज नहीं थी और वह हर क्षण घड़ी की ओर देखती रहती। उसकी नौकरानी आयी और उसको सांय-काल की पोशाक पहिना कर कमरे से बाहर चली गई। आठ बज गये। लगभग एक ही क्षण में द्वार पर दो थपकी पड़ीं और नौकर आकर कह गया कि भोजन तैयार था।

"क्या काउन्ट अन्दर आ गए?"

"जी, मैडम ला कमरे से; वह डाइनिंग रूम (भोजन के कमरे) में हैं।"

एक क्षण को उसे लगा कि उसे अपना रिवोल्वर जो वह कुछ सप्ताह पहिले अपने हृदय की दुखान्तक घटनाओं को जिनका आभास उसे पहिले से हो रहा था, देख कर बाजार से खरीद लाई थी साथ ले चलना चाहिये। किन्तु यह ध्यान आते ही कि वहाँ सब ही बच्चे होंगे वह अपने साथ सूंघने की शीशी के अतिरिक्त और कुछ न ले गई। वह अपनी कुर्सी से कुछ नाटकीय ढङ्ग से उठा। उन्होंने एक दूसरे को किंचित मात्र ही झुक कर अभिवादन किया और बैठ गये। उसके दाईं ओर उसके तीन लड़के अपने मास्टर पादरी मार्टिन के साथ बैठे हुए थे, और तीनों लड़कियाँ उनकी अंग्रेज गवर्नेस मिस स्मिथ के साथ उसकी बाँईं ओर थी। सबसे छोटा बच्चा जो अभी तीन महीने ही का था अपनी धाय के पास ऊपर वाले कमरे में ही था।

जैसा कि अतिथियों के न होने पर सदा ही होता था पादरी ने धन्यवाद दिया। यदि अतिथि उपस्थित होते तो बच्चे डिनर में नहीं आते। उसके पश्चात् भोजन प्रारम्भ हो गया। काउन्टेस जो अभी तक अपनी भावनाओं को ओक

नहीं सकी थी, सिर झुकाये बैठी थी। काउन्ट ने अपनी अप्रसन्न एवं अस्थिर दृष्टि से जो एक से दूसरे की ओर और दूसरे से तीसरे की ओर जा रही थी, अपने तीनों लड़कियों की जांच की। एकाएक उसने अपना शराब का गिलास फेंक दिया-गिलास टूट गया और शराब मेज पोश कर फैल गई। उससे हुए जरा से शोर पर काउन्टेस अपनी कुर्सी से उठ खड़ी हुई और पहिली बार उन दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा। तब विचित्र कारण एवं हर दृष्टि में उत्तेजना होते हुए भी उन्होंने पिस्तौल की गोलियों के समान तेज चलने वाली अपनी दृष्टियों का आदान प्रदान एक क्षण के भी लिये बन्द नहीं किया।

पादरी यह तो समझ गया कि दाल में कुछ काला अवश्य था। किन्तु यह न समझ पाया कि वह क्या था। उसने बातचीत आरम्भ करने के लिये कितने ही विषय उठाये, किन्तु उसके व्यर्थ प्रयत्न न तो किसी विचार को ही उत्पन्न कर सके और न एक शब्द भी किसी के मुँह से निकलवासके। काउन्टेस ने सांसारिक स्त्रियोचित प्रवृत्ति से उसको दो तीन बार उत्तर देना चाहा किन्तु व्यर्थ। अपने मस्तिष्क की परेशानी में उसे शब्द ही न मिल पाये और उसकी अपनी ही आवाज ने, इतने बड़े कमरे में जहाँ कि केवल चाकू काँटे और तश्तरियों की आवाजों के अतिरिक्त और कोई आवाज नहीं आ रही थी, उसे भयभीत कर दिया!

एकाएक, उसके पति ने आगे झुक कर उससे कहा: "यहाँ अपने बच्चों के मध्य क्या तुम कसम खा कर कह सकती हो कि जो कुछ भी तुमने अभी मुझे कहा था वह सत्य था?

घृणा ने जो उसकी नस २ में भर हुई थी, एकाएक उसे उत्तेजित कर दिया और उस प्रश्न का उसी दृढ़ता से जिससे उसने उसकी दृष्टियों का उत्तर दिया था उत्तर देते हुए उसने दोनों हाथ उठाये, दांये से अपने लड़कों को और बांये से अपनी लड़कियों को इंगित करते हुए बिना किसी हिचकिचाहट के दृढ़ एवं संयत स्वर में बोली: "मैं अपने बच्चों की कसम खाकर कहती हूँ कि मैंने जो आपसे कहा था वह सब सत्य था।"

अपनी तौलिया को क्रोध से मेज पर पटक कर वह मुड़ा और अपनी कुर्सी को दीवाल की ओर फेंक एक शब्द भी कहे बिना वह चला गया। और

काउन्टेन्टस ने मानो पहिली विजय के पश्चात् एक दीर्घ निश्वास छोड़ते हुए शान्त स्वर में कहाः "मेरे बच्चो तुम्हें उन शब्दों पर जो तुम्हारे पिता ने अभी कहे थे ध्यान नहीं देना चाहिये; थोड़ी देर पहिले वह बहुत अधिक चिंतित थे, किन्तु थोड़े ही दिनों वे फिर ठीक हो जायंगे।"

तब वह पादरी और मिस स्मिथ से बातें करने लगी। उसने अपने सब बच्चों से वैसे ही मीठे और प्रिय ढङ्ग से बातें की जैसी बातों से बच्चे बिगड़ जाते हैं और अपना हृदय खोलकर रख देते हैं।

डिनर समाप्त होने पर वह अपने सब छोटे २ बच्चों के साथ ड्राइंगरूम में चली गई। उसने बड़े २ बच्चों को बातों में लगा लिया और उनके सोने के समय उसने उन्हें बड़ी देर तक प्यार किया और तब उनको छोड़ अपने कमरे में अकेली चली गई।

उसने उसकी प्रतीक्षा की, क्योंकि उसे अपने इस विचार में कोई संदेह नहीं था कि वह अवश्य आयेगा। तब क्योंकि उसके बच्चे उसके साथ नहीं थे उसने अपने मन ही मन जैसे कि उसने सांसारिक स्त्री होने के नाते अपने जीवन की रक्षा की थी वैसे ही अपने तन की रक्षा करने का निश्चय किया। उसने अपनी जेब में भरी हुई एक छोटी सी पिस्तोल, जो वह थोड़े ही दिनों पहिले खरीदकर लाई थी, रख ली। घन्टे बीतते गये, उनके बजने की आवाज घर में आकर शान्त हो जाती। केवल सड़कों पर से गाड़ियाँ आ जा रहीं थीं, किन्तु उनकी आवाज बंद और पर्देदार खिड़कियों में से बहुत ही कम पहुँच पाती। वह उत्सुक और किंकर्तव्यविमूढ़ प्रतीक्षा करती रही। उसे कोई भय नहीं था, हर बात के लिये तैयार थी, और लगभग विजयिनी भी हो चुकी थी क्योंकि उसे उसको जीवन भर परेशान करते रहने का मार्ग मिल गया था।

किन्तु उसकीखिड़की के सूराख में से पर्दों की तह पर प्रभात की किरण आई किन्तु उसका पति न आया तब उसे इस पर विश्वास हुआ कि वह नहीं आयेगा और साथ ही साथ आश्चर्य भी हुआ। फिर अपनी और भी अधिक सुरक्षा के लिये उसने द्वार पर ताला लगा दिया और अर्गली खिसकाई फिर वह अपने बिस्तरे पर जाकर विचारों में निमग्न नेत्र खोले सब बात को पूरी

तरह समझते हुए लेटी रही। वह यह न अन्दाज लगा सकी कि वह क्या करने जा रहा था।

उसकी नौकरानी उसके लिये चाय लेकर आई और तभी उसने उसके पति का एक पत्र दिया। पति ने लिखा था कि वह एक लम्बी यात्रा करने जा रहा था, साथ ही साथ पत्र के छोर पर यह भी लिखा था कि उसका वकील उसे जितना भी धन वह अपने खर्चे के लिये चाहेगी दे देगा।

२

रोबर्ट दी डेविल के दो अंकों के मध्य ओपरा में यह हो रहा था। दूकानों में मनुष्य अपने हैट लगाये खड़े हुए थे। उनके वेस्टकोटों का गला काफी नीचा खुला हुआ था जिनमें से उनकी सफेद कमीजें काफी दिखलाई दे रही थीं, जिनमें से उनके सोने और अमूल्य नगों के बटन चमक रहे थे। वे लोग नीची ड्रेसें पहिने हुए, हीरे और मोती से लदी हुई स्त्रियों की ओर देख रहे थे। स्त्रियाँ उस प्रकाश प्रदीप्त उष्ण प्रकोष्ठ में, जहाँ निरीक्षित होने के लिये उनके मुखों का सौन्दर्य और उनके कन्धों का गोरापन संगीत एवं लोगों की आवाज में खिल रहा था, फूलों की भाँति फल-फूल रहा था।

दो मित्र उस संगीत वाद्य की ओर पीठ किये हुए इस सौन्दर्य में भाग लेने वालों की ओर देख रहे थे। नगों, ऐश इशरतों, आडम्बरों असली या नकली आकर्षणों की एक प्रदर्शिनी सी उस ग्रान्ड थियेटर के चारों ओर लग रही थी। उनमें से एक रोगर डी सलनिस ने अपने मित्र बेर्नार्ड ग्रान्डिन से कहाः "देखो काउन्टेस डी मस्करेट अभी भी कितनी सुन्दर है।"

तब बड़े वाले ने उसके उत्तर में अपने ओपर -काँच से पीछे वाले क्लास में एक लम्बी स्त्री की ओर देखा, जो अभी बिल्कुल नवयुवती सी लगती थी और जिसका आश्चर्यजनक सौन्दर्य ओपरा हाउस के हर कोने में खड़े हुए पुरुष के नेत्रों को अपनी ओर बरबस आकर्षित करता था। उसके रंग के कुछ पीलेपन ने उसके रंग को हाथी दांत के समान कर दिया था। वह एक मूर्ति के समान लग रही थी और उसके काले २ बालों पर एक हीरे का टुकड़ा एक तारे की भांति जगमगा रहा था।

उसकी ओर थोड़ी देर देखते रहने के पश्चात बर्नार्ड ग्रान्डिन ने परिहास के स्वर में दृढ विश्वास से कहाः "तुम भले ही उसे सुन्दर कहो !"

"तुम उसकी अवस्था कितनी समझते हो ?"

"थोड़ी देर रुको, मैं अभी बिल्कुल ठीक २ बतलाये देता हूँ। मैं जब वह बच्ची ही थी तब ही से उसे जानता हूँ। मैंने ही उसको समाज में सबसे पहिले, जब वह बिलकुल लड़की ही थी, लाकर उपस्थित किया था। उसकी उम्र है छत्तीस वर्ष।"

"असम्भव !"

"मैं ठीक कह रहा हूँ।"

"वह पच्चीस वर्ष की सी लगती है।"

"उसके सात बच्चे हैं।"

"यह विश्वास करने योग्य बात नहीं।"

"और सबसे बड़ी बात क्या है, वह सातों जीवित हैं क्योंकि वह बहुत अच्छी जननी है। कभी २ मैं उसके घर जो बहुत ही शान्त एवं आनन्दप्रद है, जाता हूँ और वह परिवार की सत्यता को संसार के बीच उपस्थित करती है।"

"कैसे, बहुत अद्भुत ! और क्या उसके बारे में कोई शिकायत नहीं हुई ?"

"कभी नहीं।"

"किन्तु उसके पति की बाबत तुम्हारा क्या विचार है ? वह बड़ा सनकी है, नहीं है ?"

"हाँ-भी और नहीं-भी। बहुत सम्भव है कि उनके बीच कभी कोई घरेलू नाटक जिसकी हर कोई शंका करता है, हो गया हो। वह नाटक क्या है इसको तो कोई नहीं जान पाया किन्तु उसका अनुमान हर कोई लगा लेता है।"

"वह क्या है ?"

"मुझे उस विषय में कुछ भी नहीं मालूम। एक आदर्श पति बनने के पश्चात अब मस्करेट बहुत ही स्वर जीवन बिताता है। जब तक वह अच्छा

पति रहा तब तक उसका स्वभाव क्रोधी रहा और वह बहुत ही शीघ्र झगड़ा कर डालता था, किन्तु जबसे वह वर्तमान निराश जीवन बिताने लगा है तब से वह बिल्कुल बदल गया है; किन्तु कोई भी उसे देखकर यह अनुमान लगा सकता है कि वह कष्ट में है, कहीं दाल में कोई काला है क्योंकि वह बहुत वृद्ध लगने लगा है।"

फिर वहाँ दोनों मित्र कुछ मिनटों तक गुप्त, अभेद्य कठिनाइयों पर, जो भिन्न स्वभाव या शायद शारीरिक स्वभावगत घृणाओं के कारण, जो पहिले मालूम न की जा सकी थीं, परिवारों में कठिनाइयाँ उत्पन्न कर देती हैं, बातचीतें करते रहे। तब रोगर डी सलनिस जो अपने ओपरा के कांच से मेडम डी मस्करेट की ओर अभी तक देख रहा था बोलाः

"यह अविश्वसनीय है कि यह स्त्री सात बच्चों की माँ है।"

"हाँ, ग्यारह वर्षों में; उसके पश्चात् जब वह तीस वर्ष की थी, तब उसने अपने उन उत्पादनों को, स्वागतों के सुन्दर काल में पदार्पण करने के लिये, जिसका कि कभी अन्त होता नहीं दिखलाई देता, बन्द कर दिया।"

"बेचारी स्त्री!"

"तुम उस पर तरस क्यों दिखला रहे हो?"

"क्यों? आह! मेरे प्रिय मित्र, जरा सोचो तो! एक ऐसी स्त्री के लिये मातृत्व के ग्यारह वर्ष! कैसे नर्क के समान होते हैं! उसका सारा यौवन, उसका सारा सौन्दर्य, सफलता की प्रत्येक आशा, सुखद जीवन की प्रत्येक कवित्वमय कल्पना, उस बार२ उत्पादन के घृणित विचार के लिये, जो एक साधारण स्त्री को तो बच्चे पैदा करने की मशीन ही बना डालता है, स्वाहा कर दिये गये।"

"तुम क्या कर सकते हो? यह तो केवल प्रकृति है!"

"हाँ, मैं कह सकता हूँ कि प्रकृति हमारी शत्रु है, कि हमें प्रकृति से सदा संघर्ष करना चाहिये, क्योंकि वह हमको निरन्तर पशुवत् अवस्था में पहुँचाने में लगी रहती है। तुम्हें विश्वास होना चाहिये कि भगवान ने इस संसार में कोई भी ऐसी वस्तु नहीं रखी जो निर्मल, सुन्दर, शोभायुक्त या हमारे आदर्शों से अधिक हो किन्तु यह तो मनुष्य का मस्तिष्क है जिसने ऐसा

किया है। यह हम लोग हैं, जिन्होंने थोड़ी सी मृदुता, सुन्दरता, अलौकिक आकर्षण, और रहस्य इसके बारे में गा २ कर, अनेकों अर्थ निकाल २ कर कवियों की भाँति इसकी प्रशंसा कर, कलाकारों की भाँति आदर्श मानकर और उन विद्वानों की भाँति जो गलती करते हैं, जो अवास्तविक कारणों, मृदुता और सुन्दरता को-किसी अलौकिक आकर्षण एवं रहस्य को प्रकृति के कितने ही कार्यों में खोजते हैं, इसके अन्दर समावेश किया है।

"भगवान ने बीमारियों के कीटाणुओं से भरे हुए केवल भद्दे जीव उत्पन्न किये हैं जो पशुओं के से आनन्दों का उपभोग करने के कुछ वर्षों पश्चात असुन्दरता और प्राणियों की दुर्बलता व शक्ति की कमी के साथ २ वृद्ध और दुर्बल हो जाते हैं। मालूम पड़ता है कि भगवान ने उन्हें केवल बार २ घृणित तरीके से उनके ही सरीखा नमूना तैयार करने के लिये और उसके बाद कीड़े मकोड़ों की भाँति मर जाने के लिये बनाया है। मैंने कहा था, घृणित तरीके से ही नमूना तैयार करने के लिये—और मैं अपने इन विचारों पर पुनः जोर देता हूँ। वास्तव में, प्राणियों के बार २ पैदा करने से अधिक नीच, घृणित एवं हास्यास्पद कार्य जिसके विरुद्ध हर समझदार व्यक्ति ने विद्रोह किया है और करता रहेगा, और क्या है? इस कंजूस और ईर्षालु विधि ने जितने भी साधन तैयार किये हैं, वे दो काम करते हैं। उसने इस पवित्र सन्देश को, जो सबसे अधिक सज्जनता और मनुष्य के कार्यों में सबसे अधिक प्रशंसा पूर्ण कार्य है, ऐसे योग्य व्यक्तियों को क्यों नहीं सौंपा, जिनपर कोई बट्टा नहीं लगा सकता। मुहँ, जो सांसारिक भोजन करके शरीर का पोषण करता है, भाषण एवं विचारों को भी प्रगट करता है। हमारा माँस जो अपने आप ही को नव-चैतन्यता प्रदान करता है तथा साथ ही साथ हमारे विचारों को भी व्यक्त करता है। नाक, जो हमारे फेफड़ों को प्राणदायक वायु देती है वही सारे संसार भर की सुगन्धियों, पुष्पों, जंगल, वृक्ष, समुद्र की सुगन्धों, को हमारे मस्तिष्क में पहुँचाती है। कान, जो हमारे मित्रों से बातचीत करने की क्षमता प्रदान करते हैं, वही संगीत का आविष्कार करने, स्वप्नों, अनन्त आमोद-प्रमोदों का और शारीरिक आनन्दों का, ध्वनि द्वारा, रस प्रदान करते हैं!

"किन्तु कोई भी यह कह सकता है कि भगवान की इच्छा पुरुष को स्त्री के साथ अपने व्यापार को भद्र एवं आदर्श बनाए रखने की नहीं थी। साथ ही साथ मनुष्य ने भी प्रेम प्राप्त कर लिया है, जो उस चालाक विधि के लिये अशोभनीय प्रत्युत्तर नहीं है। और उसने इसको साहित्यिक कविताओं से इतना अधिक सजा दिया है कि स्त्री बहुधा अपने सम्बन्ध (स्पर्श) को जिसके लिये वह बाध्य होती है भूल जाती है। हम लोगों में से जो लोग अपने आपको धोखा नहीं दे सकते, उन्होंने बहुत सुन्दर और दूसरा ही स्वभाव आविष्कृत किया है, जो कि भगवान का परिहास करने का दूसरा ढंग है और वह है सुन्दरता का स्वागत—मूर्खता पूर्ण स्वागत।

"किन्तु साधारण व्यक्ति एक ऐसे जानवर की भाँति जो दूसरे का जोड़ा है, बच्चे पैदा करते हैं।"

"उस स्त्री की ओर देखो! क्या यह सोचना घृणात्मक नहीं कि ऐसा नगीना, ऐसा मोती, जो सुन्दर रहने, प्रशंसा किये जाने, दावतों में आमंत्रित किये जाने के लिये पैदा हुई है, उसने अपने जीवन के ग्यारह वर्ष काउन्ट डी मस्करेट के उत्तराधिकारी निर्माण करने में व्यतीत कर दिये हैं।"

बेर्नार्ड ग्रान्डिन ने हँस कर उत्तर दिया: "तुम्हारी बातों में बहुत कुछ सत्यता है, किन्तु इन्हें हर कोई नहीं समझ सकता।"

सलनिस और भी अधिक उत्तेजित हो उठा। "क्या तुम जानते हो मैं भगवान का चित्रण कैसे करता हूँ?" उसने कहा "पैदा करने वाले एक बहुत बड़े यन्त्र की भाँति जिसका कि हम लोगों को कोई पता नहीं, जो शून्य में करोड़ों सृष्टियों को ठीक वैसे ही फेंकता है, जैसे एक मछली अपने अण्डों को समुद्र में फेंकती है। वह सृष्टि करता है क्योंकि उसका भगवान के नाते यह कर्तव्य है, किन्तु वह यह नहीं जानता कि वह कर क्या रहा है, वह मूर्खता से पैदा करने के अपने कार्य में लगा रहता है, और अपने फैलाये हुए सब प्रकार के पैदा किये हुए अणुओं की मिलावट से अनजान है। मनुष्य की विचारधारा कुछ भाग्यवान, कुछ स्थानीय, गुजरती हुई घटना मानी जाती है जो कि बिल्कुल नहीं देखी गई थी और जो उस पृथ्वी के साथ ही साथ

निश्चित श्रदृश्य कर दी जायगी और शायद फिर से यहीं या कहीं, ऐसी ही या कुछ नये स्वर्गिक मिलावट से युक्त इससे भिन्न प्रारम्भ होती है। हम लोग इस छोटी सी घटना के कारण जो भगवान की बुद्धि में घट गई थी, इस संसार में जो हमारे लिये नहीं है, हमें रखने, हमें टिकाने, खिलाने या प्राणियों को सन्तुष्ट करने के लिये जिसका निर्माण नहीं हुआ, बहुत कष्ट का अनुभव करते हैं। और यह भी हमें उसी के कारण विधि के विधान कहलाने वाली वस्तु से निरन्तर संघर्ष करते रहना पड़ता है, और तब जबकि हम लोग वास्तव में बहुत सुसभ्य एवं सुसंस्कृत हो चुके हैं।"

ग्रान्डिन, जो उसकी बातों को पूरे ध्यान से सुन रहा था, और उसकी कल्पना की आश्चर्यप्रद उड़ानों को बहुत दिनों से जानता था, बोला "तब क्या तुम्हारा विश्वास है कि मनुष्य की विचार धारा अन्धे, स्वर्गिक बच्चे पैदा होने का स्वभावगत ही उत्पन्न होने वाला उत्पादन है ?"

"बिल्कुल ! यह हमारे मस्तिष्क की रक्त की थैलियों का आकस्मिक कार्य है। यह किसी अदृश्य कैमीकल कार्य, जो कि नई मिलावटों से होता है, जो कि विद्यु त के एक उत्पादन से मिलता है, जो कि किसी तत्व के आकस्मिक सामीप्य या रगड़ से उत्पन्न होता है, की तरह होता है। और, जो, अन्त में, प्राणियों की अनन्त एवं आवश्यक उत्तेजना से उत्पन्न हुए कार्यों से मिलता है ?

"किन्तु, मेरे मित्र, यह सचाई उन सब को मालूम पड़ जानी चाहिये जो अपने चारों ओर देखते हैं। यदि मनुष्य की विचार धारा एक सर्वज्ञान सृष्टि रचयिता के द्वारा, इसी रूप में प्रदान की जानी थी कि जिस रूप में यह अब आ गई है और जो यान्त्रिक विचारों एवं बिना किसी प्रतिवाद, क्रोध, एवं दुख सहन शक्ति से बहुत भिन्न हो चुकी है। यह संसार जो हम प्राणियों के लिये निर्मित किया गया था, यह सलाद जमीन, यह पहाड़ी जंगल और बगीचे, जहाँ पर तुम्हारे भगवान ने हमको नंगा रहने के लिये, गुफाओं में, पेड़ों के नीचे पड़े रह कर जीवन बिताने को भाग्य में लिखा, तब क्या उसने वध किये हुए जानवरों के हमारे भाइयों के गोश्त पर हमारा पोषण किया या इन कच्ची

साग सब्जियों के ऊपर जो कि सूर्य एवं मेह से पुष्ट की गई थीं उनसे पोषण किया ?

"इस पृथ्वी की ओर देखो, भगवान ने यह इसी के बसने वालों को दे दी है। क्या यह बिल्कुल स्पष्ट एवं देखने योग्य बनी हुई है, यह पशुओं के लिये पेड़ पौधों से युक्त एवं ढकी हुई नहीं है ? वहाँ हमारे लिये क्या है ? कुछ भी नहीं। और उनके लिये ? सब चीजें उनकी प्रवृत्तियों के अनुसार उनके पास खाने और शिकार करने, एक दूसरे को खाने के अतिरिक्त और कोई काम नहीं है क्योंकि भगवान अच्छे और शान्तिप्रद ढङ्गों को कभी नहीं देखना चाहता। वह तो उन पशुओं की जो एक दूसरे को मारने खाने में लगे हैं, उनकी मृत्यु चाहता है। क्या कबूतर, गिलगिलिया अन्य छोटे पक्षी बाज का स्वाभाविक शिकार नहीं हैं ? क्या भेड़े, बारहसिंगे और भैंसे बड़े २ माँसाहारी पशुओं के शिकार नहीं हैं ? क्या गोश्त से अधिक लाभ साग सब्जी नहीं पहुँचाती !

"और हम जितने अधिक सुसभ्य,सुसंस्कृत एवं बुद्धिमान हों उतना ही हम को उस पाशविक प्रवृत्ति को जो हमारे अन्दर भगवान की इच्छा का प्रतिनिधित्व करती है, जीतना और दबाना चाहिये। अतः हमने अपने भाग्यों को असभ्यता से हल्का करने के लिये सब वस्तुओं को खोजा और उन्हें बनाया। मकानों से आरम्भ करते हुए, अच्छा खाना, तश्तरियाँ, पेस्टरी,शराब, सामान, कपड़े, गहने, बिस्तरे, गाड़ियाँ, रेलवे और असंख्यों मशीनों के निर्माण के अतिरिक्त हमने कला एवं विज्ञान, लेखन एवं कविता सब ही निर्मित किये। हम लोगों से और साथ ही साथ जीवन के आनन्दों से हर आदर्श हम को हमारे जीवन में केवल पुनरोत्पादक, जिसके लिये भगवान ने हमसे इच्छा की, बनाये रखने के लिये उतना ही सरल और साधारण उत्पन्न होता है।

"थियेटर की ओर देखो। स्वर्गिक विधाताओं की दृष्टि एवं ज्ञान से परे, केवल हमारी बुद्धि से ही ग्राह्य, प्राणियों का संसार नहीं निर्मित किया गया है ? क्या यह शारीरिक एवं बुद्धिवादी कोथी, जो कि केवल हमारे जैसे असन्तुष्ट और अशान्त पशु द्वारा निर्मित नहीं किया गया है ?

"उस स्त्री, मैडम डी मस्करेट की ओर देखो। भगवान ने उसे किसी गुफा में नग्न अथवा जंगली पशुओं की खाल में लिपटा रहने के लिये बनाया था, किन्तु इस समय वह जैसी भी है क्या उससे अच्छी नहीं है? किन्तु उसके विषय में बातें करते समय क्या कोई जानता है कि उसके पति के पशुत्व ने उसको सात बार माँ बना कर जब काफी पशुपन से व्यवहार किया, तब एका-एक अपनी बगल के ऐसे साथी को छोड़ कर कुलटाओं के पीछे भागना क्यों प्रारम्भ कर दिया?"

ग्रान्डिन ने उत्तर दियाः "ओह! मेरे मित्र, मेरे विचार में शायद यही कारण होगा। उसने उसके साथ रहते हुए देखा होगा कि उसका व्यय बहुत है, और घरेलू आर्थिक कारणों से वह उन्हीं विचारों पर, जिन्हें तुम दार्शनिक की हैसियत से कहते हो, आ गया होगा।"

तीसरे अंक के लिये पर्दे के उठते ही-वे मुड़े और अपने २ टोप उतार कर बैठ गए।

४

काउन्ट और काउन्टेस मस्करेट गाड़ी में, जो उन्हें ओपरा से घर ले जा रही थी, पास २ चुपचाप बैठे हुए थे। किंतु पति ने अपनी पत्नी से एका-एक कहा "गैबरीले।"

"क्या कहना है?"

"क्या तुम्हारा विचार है ऐसे काफी बीत लिया?"

"क्या?"

"वह भीषण दण्ड जो तुमने गत ६ वर्षों से दे रखा है।"

"आप क्या चाहते हैं? मैं लाचार हूँ कि आपकी मदद नहीं कर सकती।"

"तब मुझे यह बतला दो कि उनमें से कौन सा है?"

"कभी नहीं।"

"सोचो कि मैं अपने बच्चों के बीच में अपने हृदय से उस बोझ को हलका किये बिना नहीं रह सकता और न यह अनुभव ही कर सकता हूँ कि वे

मेरे बच्चे हैं। मुझे बतला दो मैं तुम्हें क्षमा कर दूँगा और उससे भी अन्य बच्चों की भाँति व्यवहार करूँगा।"

"मुझे यह बतलाने का अधिकार नहीं है।"

"तुम यह नहीं जानती कि मैं इस भांति के जीवन को, इस विचार को जो मुझे परेशान करता रहता है, या इस प्रश्न को जिसे मैं निरंतर मन ही मन पूछता रहता हूँ, इस प्रश्न को जो मुझे प्रत्येक बार, जब भी मैं उनकी ओर देखता हूँ, मुझे सताता रहता है, अब और अधिक सहन नहीं कर सकता हूँ। यह मुझे पागल किये दे रहा है।"

"तब आप बहुत कष्ट उठा चुके ?" वह बोली।

"बहुत। इसके बिना, क्या मैं तुम्हारे पास रहने के भय को स्वीकार कर सकता था और इससे भी बड़े यह जानने या अनुभव करने के भय को, कि इनमें से एक है जिसे मैं नहीं स्वीकार कर सकता और जो मुझे अन्यों को भी प्रेम करने से रोकता है, स्वीकार कर सकता था ?"

उसने दोहराया: "तब आपने वास्तव में बहुत काफी कष्ट उठाया है ?" और उसने दुख भरे सयंमित स्वर में उत्तर दिया।

"हाँ, क्या मैं तुमसे नित्य ही यह नहीं कहता था कि मेरे लिये यह दुख असह्य है ? यदि मैं उनसे प्रेम नहीं करता होता तो तुम्हारे और उनके पास वाले मकान में ही क्यों रहता ? ओह ! तुमने मेरे साथ बड़ा घृणित व्यवहार किया है। मैं ने अपने हृदय का समस्त प्रेम अपने बच्चों पर न्यौछावर कर दिया है, और यह तुम जानती ही हो। मैं उनके लिये पुराने जमाने का पिता हूँ, और क्योंकि मैं अपनी प्रवृत्तियों के कारण सदा एक प्राकृतिक पुरुष रहा हूँ, पुराने जमाने का प्राकृतिक पुरुष, और मैं तुम्हारा भी प्राचीन घरानों की ही भाँति का पति रहा। हाँ, मैं उसका विश्वास दिलाऊँगा कि तुमने मुझे बहुत कष्ट पहुँचाया है क्योंकि तुम एक दूसरी ही जाति की, दूसरी ही आत्मा की, दूसरी ही आवश्यकताओं वाली स्त्री हो। ओह ! मैं तुम्हारी बातों को कभी नहीं भूलूँगा, किन्तु उस दिन से मैं ने तुम्हारे बारे में कोई चिंता नहीं की। मैंने तुम्हें इसलिये नहीं मार डाला कि फिर मेरे पास दुनियाँ के किसी भी

ओर पर यह बतलाने वाला नहीं मिलेगा कि हमारे बच्चों में से तुम्हारा कौन सा बच्चा है, जो मेरा नहीं है। मैंने प्रतीक्षा की है, किंतु तुम विश्वास नहीं कर सकोगी कि मैंने कितना कष्ट उठाया है क्योंकि मैं अब उनमें से दो, शायद सबसे बड़े दो के अतिरिक्त और किसी को प्रेम करने का साहस नहीं करता हूँ; अब मैं उनकी ओर देखने, उन्हें बुलाने, उनका चुम्बन लेने का साहस नहीं करता हूँ; और उन्हें, अपने मन से यह पूछे बिना: 'क्या यही तो नहीं है ?' अपने घुटनों पर नहीं बैठा सकता हूँ। मैं तुम्हारे प्रति अपने व्यवहार में इन छः वर्षों में ठीक रहा हूँ और यहाँ तक कि दयालु भी रहा हूँ; मुझे सच बतलाओ, और मैं सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि मैं तुम्हारे साथ कुछ भी दुर्व्यवहार नहीं करूँगा।"

उसने गाड़ी में अन्धकार होते हुए भी सोचा कि उसने देखा था कि वह विचलित हो उठी थी और यह निश्चय समझकर कि वह कुछ कहने जा रही थी, वह बोला: "मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि तुम मुझे बतला दो।"

"किन्तु शायद आपके सोचने से भी मैं अधिक दोषी हूँ।" उसने उत्तर दिया "किंतु मैं उस गर्भधारण के जीवन को और अधिक सहन नहीं कर सकी थी और मेरे पास आपको अपने बिस्तर से हटाने का एक ही उपाय था। मैंने भगवान के सम्मुख झूठ बोला, और मैंने अपने बच्चों के सिर पर हाथ धरकर झूँठ कहा क्योंकि मैंने आपको कभी धोखा नहीं दिया।"

उसने अन्धकार में उसका हाथ पकड़ लिया और उसी भयानक दिन की भाँति जिस दिन वे बोह्स डी बोलोन को जा रहे थे, उसने उसका हाथ दबाते हुए हकला कर कहा: "क्या यह सच है ?"

"हाँ, यह सच है।"

किन्तु वह विकट वेदना से कराह कर बोला: "अब मुझे नये सन्देह उत्पन्न हो जायेंगे जो कभी भी समाप्त नहीं होंगे। तुम ने झूठ कब बोला पहली बार या अब ? मैं इस समय तुम पर विश्वास कैसे करूँ ? कोई भी ऐसी बात हो जाने के पश्चात स्त्री पर कैसे विश्वास कर सकता है ? मैं फिर कभी यह

नहीं जान पाऊँगा कि मुझे क्या सोचना चाहिये। इससे तो तुमने यह कहा होता तो मैं अधिक पसन्द करता: "वह जैक्य है।" या "वह जैनी है।"

गाड़ी उनको लिये हुये उनके विशाल प्रासाद के आँगन में गई और जब वह सीढ़ियों के पास आकर खड़ी हो गई तब हमेशा की ही भाँति काउन्ट पहिले उतरा और अपनी पत्नी की मदद के लिये अपना हाथ बढ़ाया। और तब जब वे पहली मंजिल पर पहुँचे वह बोला: "क्या मैं तुमसे थोड़ी देर तक और बातें कर सकता हूँ ?"

और उसने उत्तर दिया: "मैं बिल्कुल तैयार हूँ।"

वे एक छोटे से ड्राइंग रूम में गए—एक नौकर ने आश्चर्य से चकित हो उसमें मोमबत्ती जलाई। जब वह कमरे से बाहर निकल आया तब वह बोला: "मैं सत्यता कैसे जान सकता हूँ ?" मैंने तुमसे हजारों बार बोलने को कहा किंतु तुम हमेशा गूँगी, कठोर एवं अनम्र बनी रहीं और अब कहती हो कि तुम झूठ बोलती रहीं। छः वर्षों से तुमने मुझे इस पर पूर्णतया विश्वास करने दिया! नहीं, तुम अब झूठ बोल रही हो, किन्तु क्यों, यह मैं नहीं जानता क्यों शायद मेरे ऊपर तरस खाकर ?

उसने गम्भीर एवं प्रभावोत्पादक ढङ्ग से कहा: "यदि मैंने ऐसा नहीं किया होता तो इन छः वर्षों में मेरे चार और बच्चे हुए होते!"

और वह चिल्लाया: "क्या एक जननी इस भाँति उत्तर दे सकती है ?"

"ओह!" मैं उन बच्चों के लिये जो मुझे कभी नहीं हुए अपने आपको उनकी माँ मानने के लिये तैयार नहीं हूँ, मेरे लिये इतना पर्य्याप्त है कि जो मेरे बच्चे हैं उनको प्रेम करूँ और अपने समस्त हृदय से करूँ। मैं हूँ—हम लोग हैं—वे स्त्रियाँ हैं श्रीमान जी, जो सभ्य संसार से सम्बन्ध रखती हैं और अब हम लोग उनमें से नहीं रहीं, और उनमें से होना अस्वीकार भी करती हैं, जो स्त्रियाँ पृथ्वी पर भार बढ़ाती हैं।"

वह उठ बैठी किंतु उसने उसके हाथों को पकड़ लिया: "गैबरीले एक शब्द, केवल एक शब्द। मुझसे सच सच कह दो।"

उसने उसके चेहरे की ओर, भूरे चेहरे को देखा, और वह अपनी भूरी आखों, जो ठण्डे आकाश की भाँति थीं, से कितनी सुन्दर लग रही थी। उसकी बालों की गहरी ढ़ेर में उन केशों रूपी काली रात्रि पर एक हीरे का टुकड़ा सितारे की भाँति चमक रहा था। तब उसे एकाएक लगा, बिना किसी तर्क के धारणा सी बन गई, कि यह महान जीव केवल अपनी जाति बढ़ाने के लिये नहीं था, किंतु था सब सम्मिलित इच्छाओं का विचित्र एवं रहस्यमय उत्पादन, जो हममें शताब्दियों से अपना घर बनाऐ बैठा है किंतु वह प्रारम्भिक एवं स्वर्गिक वस्तु से परे हटा दिया गया और जो एक रहस्यमयी, अलक्ष्य एवं अलौकिक सौन्दर्य में उलझा दिया गया था। कुछ स्त्रियाँ ऐसी भी होती हैं, जो केवल हमारे स्वप्नों के उद्भव होती हैं, सभ्यता के प्रत्येक कवित्वमय कार्यों से पूजित की जाती हैं, और आदर्श विलास, चापलूसी, और अनिवर्णनीय आकर्षणों को उस जीवित जाग्रत मूर्ति को जो हमारे जीवन को प्रकाशित करती हैं चारों ओर से घेरे रहना चाहिये।

उसका पति उसके सामने इस देर से जाग्रत हुई, छिपी हुई खोजपर मुझसे अपनी पूर्व ईर्ष्या को धिक्कारता हुआ, और इस सबको बहुत ही कम समझता हुआ, मूर्ख सा खड़ा रहा। अन्त में वह बोलाः "मुझे तुम पर विश्वास है क्योंकि मुझे इस क्षण ऐसा लग रहा है कि तुम झूठ नहीं बोल रही हो, और पहिले मैंने सचमुच सोचा था कि तुम झूंठ बोलीं थीं।"

पत्नी ने अपना हाथ आगे बढ़ाकर कहाः "तो हम लोग मित्र हैं न?"

उसने उसका हाथ अपने हाथ में लिया। उसे चूमा और उत्तर दियाः "धन्यवाद गैबरीले, हम लोग अब मित्र हैं।"

तब वह उसकी ओर अभी तक देखता ही हुआ और आश्चर्य में पड़ा हुआ कि वह अभी तक इतनी सुन्दर थी, चला गया। और एक विचित्र ही भावना उसके अन्दर उठी, जो शायद, पहिले और केवल प्रेम मात्र से अधिक अच्छी थी।

एक नोरमेन्डी परिहास

जुलूस उस सूनी सड़क पर, जो खेतों के ढालों पर उगे हुए पेड़ों से आच्छादित थी दिखलाई दिया ! सबसे पहिले नवविवाहिता-दम्पति आये, तब रिश्तेदार, फिर निमन्त्रित अतिथि, और अन्त में पास पड़ोस के गरीब लोग आये। गांव के छोटे २ बच्चे और लड़के, जो कि उस नंगी सड़क के चारों ओर मक्खियों की भाँति इकट्ठे थे, कभी जुलूस में से कहीं से निकल कर जाते, तो कभी कहीं से या फिर उसे अच्छी भाँति देखने के लिये पेड़ों पर चढ़ जाते।

दूल्हा, जेन पाट्र, आस पास में सबसे धनी किसान, तथा बहुत सुन्दर नवयुवक था। सब बातों से ऊपर वह एक उत्सुक शिकारी था, जो अपनी इस उत्कट इच्छा को पूरी करने में अपनी बुद्धि भी खो बैठता था। वह अपने कुत्तों, उनकी रखवाली करने वालों, अपनी बन्दूकों, और जालों पर बहुत रुपया व्यय करता था। दुल्हिन, रोसली रोज़ल, जिले के लगभग समस्त नवयुवकों में सम्मानित हो चुकी थी क्योंकि वह उसे पहिले से ही ग्रहण करने योग्य समझते थे और वह यह जानते थे कि उसको दहेज बहुत अधिक प्राप्त होगा। किन्तु उसने पाट्र को चुना था-कुछ तो इसलिये कि शायद वह उसे अन्य लोगों से अधिक पसन्द करती थी, किन्तु इससे भी अधिक, एक समझदार नोरमेन्डी युवती की भाँति, इसलिये कि उसके पास धन अधिक था।

उनके पति के खेत के श्वेत द्वार में पहुँचते ही चालीस गोलियाँ दागीं गईं। किंतु कोई यह न देख सका कि गोलियाँ दागीं किसने थीं। गोली चलाने वाले खाइयों में छिपे हुए थे और शोर ने उन सब व्यक्तियों को, जो अपने सबसे अच्छे कपड़े पहिने हुए वहाँ घिसट रहे थे, बहुत प्रसन्न कर दिया। पाट्र अपनी पत्नी को छोड़ एक खेतिहर के पास दौड़ा २ गया, जिसे उसने एक वृक्ष के पीछे खड़ा देख लिया था, और उसकी बन्दूक लेकर उसने स्वयं एक फायर किया। तब वे ऊँची २ घास में से, बछड़ों के झुण्डों में से जिन्होंने अपने बड़े २

नेत्रों से उनकी ओर देखा, धीरे २ उठ खड़े हुए और अपना मुँह सीधा बरात की ओर किये हुए, उनकी ओर देखते रहे, होकर फलों से लदे हुए सेवों के पेड़ों के नीचे जा पहुँचे।

बराती जब वरहार के स्थान से थोड़ी ही दूर रह गये तब गम्भीर हो उठे। उनमें कुछ लोग जो धनी थे चमकते हुए लम्बे सिल्क के हैट जो वहाँ बिल्कुल ही बेमेल से लग रहे थे, लगाये हुए थे, दूसरे लोगों के ऊनी हैटों पर पुराने फरदार कवर चढ़े हुए थे, और जो लोग गरीब थे वे केवल टोपियाँ ही पहिने हुए थे। समस्त स्त्रियाँ शाल ओढ़े हुए थीं, जिसे वे ढीले २ लपेटे हुए तथा अपनी बाहों से हलके २ दबाये हुये थीं। वे शाल लाल रंग के, अग्नि की लपटों के सदृश रंगे हुये शाल थे। गोबर के ढेरों पर बैठी हुई काली सिकारी चिड़ियों को तालाब की बतलों को और फूसों के छप्परों पर बैठे हुए कबूतरों को मानो शालें अपनी चमक से आश्चर्य में डाल रही हों।

खेत की बहुत लम्बी चौड़ी इमारत, जो उन मेवों के पेड़ों की घुमावदार पगडण्डी के अन्त पर थी, बारात की प्रतीक्षा कर रही थी। एक भाँति की भाप खुले हुए द्वारों एवं खिड़कियों में से निकल रही थी, और खाद्य पदार्थों की सुगन्धि जो उस विशाल भवन में चारों ओर फैली हुई थी उसकी खिड़कियों, यहाँ तक कि दीवालों से भी आ रही थी। अतिथियों की पंक्तियाँ आंगन में थीं और सबसे आगे का अतिथि द्वार पर पहुँच गया, पंक्तियाँ टूट गई और वे फैल गए—अभी तक पीछे के खुले द्वार से अतिथि आते ही जाते थे। खाइयों में बच्चे और गरीब लोग खड़े हुए थे। गोलियों की अवाज अभी बन्द नहीं हुई; किन्तु धुंऐ का बादल उड़ाती हुई, और वायुमण्डल में पाउडर की सी—सुगन्ध जो अकुलाहट उत्पन्न करती है उड़ाती हुई, चारों ओर से अभी तक आरही थी।

स्त्रियाँ द्वार के बाहर धूल से बचने के लिये अपने कपड़ों को झाड़ रही थीं, अपनी टोपियाँ खोल रही थीं तथा अपने शालों की तह कर कर के अपने कंधों पर रख रही थीं। तब वे कमरे के अन्दर उन्हें उस समय

केलिये बिल्कुल अलग रखने केलिये प्रविष्ट हुईं। मेज जिस पर एक सौ अतिथि एक साथ बैठकर भोजन कर सकते थे बड़े रसोईघर के अन्दर रखी हुई थी! वे लोग भोजन करने दो बजे बैठे और आठ बजे तक भी भोजन करते रहे, लोगों की कमीजों की तह खुली हुई थीं, कोटों के बटन खुले हुए थे और वे लोग लाल-चेहरों से भोजन को और शराब को निगलते ही चले जा रहे थे, मानों वे कभी संतुष्ट नहीं हो सकते थे। सेब का रस बड़े २ गिलासों में उस गहरे रक्तवर्ण की शराब के पास ही रखा हुआ स्वच्छ तथा स्वर्णिम चमक रहा था। और हर तश्तरी के बीच में शराब के एक गिलास के साथ २ ब्राऊ-नोरमेन्डी ब्राऊ रखा हुआ था, जो शरीर को भड़का देता, तथा सिर में मूर्खतापूर्ण हावभाव भर देता था।

बार २ अतिथियों में से कोई न कोई पीपों की तरह भरपेट खाकर ताजा हवा लेने के लिये कुछ क्षणों को बाहर निकलता, और जैसा उन्होंने कहा, और दूनी भूख के साथ वापिस लौट आता। गुलाबी चेहरों, चोलियां, जो लगभग फटी सी जा रही थीं, वाली किसान स्त्रियाँ उनके उदाहरणों को, तब तक नहीं दोहराना चाहती थीं जब तक उनमें से एक दूसरों से अधिक असुविधा का अनुभव कर बाहर न निकला। तब हर एक ने उसका उदाहरण दोहराया, और फिर किसी परिहास के लिये तैयार होकर लौट आईं, और मजाक फिर से ताजा हो गए। जब तक कि किसानों की समस्त योग्यता और बुद्धि उन परिहासों में स्वाहा न हो गई परिहास—उस शादी की रात्रि के बारे में परिहास-मेज से एक दूसरे के ऊपर होते रहे! सौ वर्षों से वे ही परिहास ऐसे अवसरों पर किये जाते, और यद्यपि सबही उनको जानते थे किंतु फिर भी वे उनको बहुत पसंद आते तथा अतिथियों की दोनों पंक्तियाँ बड़ी जोर से अट्टहास करने लगतीं।

मेज के नीचे चार नवयुवक नवविवाहित दम्पति के लिये व्यवहारिक परिहास तैयार करने में लगे थे। वे लोग जिस ढङ्ग से फुस फुसाए और हँसे थे उससे मालूम पड़ता था कि उनको कोई बढ़िया सा परिहास सूझ गया था। एकाएक उनमें से किसी एक ने, क्षणिक शान्ति का लाभ उठाते हुए चिल्लाकर कहा: "शिकार चोरों को आज रात्रि को इस चन्द्रमा से बहुत लाभ

होगा। जीन मैं कहता हूँ, तुम चंद्र की ओर नहीं देखोगे, कि देखोगे?" दूल्हे ने उसकी ओर मुड़कर शीघ्र ही उत्तर दिया: "बस उन्हें आने भर दो!" किंतु दूसरा अन्य नवयुवक मित्र हँसने लगा और बोला: "मेरा तो विचार नहीं है कि तुम उनके कारण अपने कर्तव्य को भूल बैठोगे!"

सारी मेज पर बैठे हुए लोगों के हँसते २ पेट में बल पड़ गए, गिलास हिल गये, किंतु दूल्हे को इस बात पर क्रोध आ गया कि उसकी शादी के अवसर से लाभ उठाकर कोई उसके खेत में आये और चोरी से शिकार खेले। उसने दोहराया।

"मैं तो केवल इतना ही कहता हूँ, कि उन्हें आने भर दो!"

यद्यपि दुलहिन पहिले से ही आशा से काँप रही थी किंतु जब दोहरे मानों की बातों का समुद्र उमड़ पड़ा तब वह लज्जा से लाल हो गई, और जब उन्होंने सारी ब्रांडी पी डाली तब सब लोग सोने चले गए। नवयुवा दम्पति अपने अपने कमरे में, जो पहली ही मन्जिल में था जैसे कि खेतों के मकान में हुआ ही करते हैं, चले गये। वहाँ गर्मी बहुत थी अतः उन्होंने खिड़कियाँ खोल लीं और किवाड़ बंद कर दिये। एक छोटा सा लैम्प, जो दुलहिन के पिता ने भेंट किया था, दराजों पर रखा हुआ मंदा २ जल रहा था, और पलंग दोनों नवयौवन सम्पन्नों का स्वागत करने के लिये तैयार था। पलंग सारे उत्सव भर खड़ा नहीं किया गया। यह खड़े रखने की पद्धति अधिक सुसभ्य व्यक्तियों में प्रचलित है। दुलहिन के फूलों के गुच्छे और उसकी ड्रेस पहिले से ही युवा स्त्रियों ने खोली थी। वह पेटीकोट पहिने हुए अपने जूते उतार रही थी। जीन सिगार फूंकता हुआ अपने नेत्रों के किनारे से उसकी ओर देख रहा था। यह दृष्टि उत्सुक, और कोमलता से अधिक इन्द्रिय प्रिय थी क्योंकि उसे उसके प्रति प्रेम से अधिक वासना का अनुभव हो रहा था। एकाएक एक फुर्तीली गतिविधि से उसने, किसी ऐसे व्यक्ति की भाँति जो किसी काम को करने को तैयार हो रहा हो, अपना कोट उतारा। वह अपने जूते उतार चुकी थी और अब मोजे उतार रही थी; तब वह उससे बोली: "जाइये और पर्दे की आड़ में हो जाइये, जिससे मैं बिस्तर पर लेट जाऊं।"

उसे लगा कि मानों वह मना करने जा रहा था, किंतु एक चालाक दृष्टि से देखता हुआ पर्दे के पीछे सिर बाहर निकाल कर छिप गया। वह हँस पड़ी और उसने उसके नेत्रों को ढकना चाहा और उनमें बिना किसी झिझक और लज्जा के हँसी दिल्लगी में गुत्थमगुत्था होने लगी। अंत में उसने उसकी इच्छानुसार काम किया, और एक ही क्षण में उसने अपने पेटीकोट का नारा खोल दिया, जो उसकी टांगों के नीचे खिसक गया, उसके पांवों पर पड़ा और गोले की तरह फर्श पर जा पड़ा। उसने उसे वहीं छोड़ दिया और बदन से चिपकी हुई बोडी के अतिरिक्त बिल्कुल नंगी अपने बिस्तर पर जा लेटी। पलंग की स्प्रिङ्गें उसके भार से दब गईं। नंगे पांवों बिना मोजों के वह शीघ्र ही उसके पास गया और अपनी स्त्री के ऊपर झुक उसके ओठों को जिन्हें उसने तकिये से ढक लिया था, ढूंढने लगा। तभी उसे दूर से गोली चलने की एक आवाज सुनाई दी, उसके विचारानुसार वह आवाज रापी के जंगलों की ओर से आई थी।

वह उत्सुक हो, सीधा हुआ और अपने धड़कते हुए हृदय से खिड़की के पास दौड़ कर उसने किवाड़ खोले। पूर्णचन्द्र ने आँगन को पीली चाँदनी से भर रखा था और सेब के पेड़ों की काली छाया उसके पावों पर पड़ रही थी, जबकि कुछ दूर पर पके अनाज से आच्छादित खेत चमक रहे थे। किन्तु जैसे वह बाहर झुक कर उस नीरव रात्रि में प्रत्येक आवाज को सुन रहा था, वैसे ही उसके गले में दो नग्न भुजाएँ झूल उठीं और उसकी पत्नी ने उसे वापिस खींचने का प्रयत्न करते हुए धीरे से कहाः "उन्हें छोड़िये; उनसे आपको क्या करना है, आइये बिस्तर पर चलिये।"

वह मुड़ा और उसको अपनी भुजाओं में भर उस पतले से कपड़े में से उसकी त्वचा की उष्णता का अनुभव कर, अपनी शक्तिशाली भुजाओं से ऊँचा उठाकर उसे अपने पलंग पर ले चला, किंतु वह उसे पलंग पर लिटाने जा ही रहा था कि उन्होंने दूसरी आवाज सुनी, जो शायद अब पहिले से अधिक समीप थी। जीन असह्य क्रोध से उत्तेजित हो बोलाः

"वाह मेरे भगवान ! क्या तुम सोचती हो, तुम्हारे कारण मैं बाहर जाकर यह न देखूँ कि यह क्या हो रहा है ? थोड़ी सी देर रुको-अभी !"

उसने अपने जूते पहिने, बन्दूक ली, जो हमेशा दिवाल पर उसके पास ही टंगी रहती थी, और जैसे ही उसकी पत्नी भय से भयभीत हो अपने घुटने पर बैठ कर, उससे न जाने की प्रार्थना करने लगी, वह शीघ्र ही छूटकर खिड़की की ओर दौड़ा और आंगन में कूद पड़ा।

वह एक घन्टे, दो घन्टे यहाँ तक कि सुबह तक प्रतीक्षा करती रही किंतु पति लौटकर नहीं आया। तब दुखी हो उसने घर को जगा डाला और बतलाया कि जीन कितना क्रोधित हो, शिकारी चोरों का पीछा करने चला गया था। तब शीघ्र ही सारे नौकर—यहाँ तक कि बच्चे भी अपने स्वामी की खोज में निकल गये। उन्होंने खेत के मकान से डेढ़ मील दूर देखा कि उसके हाथ और पैर बंधे हुए थे, बन्दूक टूटी हुई पड़ी थी, उसके मोजे ऊपर से भीतर की ओर मुड़े हुए थे, तीन मरे हुए खरगोश उसकी गर्दन में लटक रहे थे और वह क्रोध से अधमरा हो रहा था। उसकी छाती पर एक पोस्टर लगा हुआ था, जिसमें लिखा थाः

"जो करता है पीछा—वह जगह छोड़ता अपनी।"

और बाद में जब भी वह अपनी शादी वाली रात को इस कहानी को सुनाता, तब बहुधा कहा करता "आह! जहाँ तक परिहास का प्रश्न था यह बहुत अच्छा परिहास था। उन्होंने मुझे एक जाल में फाँसा, मानों मैं कोई खरगोश होऊँ और उन गन्दे हबशियों ने मेरा सिर बोरे में बन्द कर दिया। किंतु यदि मैं उनमें से किसी भी दिन किसी को भी पकड़ पाता तो उनके किये का फल तो चुका ही देता!"

इस भाँति वे लोग नोरमेन्डी में विवाह दिवस पर आनन्द मनाते हैं।

भेड़िया

यह वह कहानी है जो मारक्विस डी थारविले ने, सेन्ट-ह्यूबर्ट के सम्मान में बैरन डी रावेल्स के मकान पर दिये गये सहभोज के अवसर पर कही थी। उस दिन उन्होंने एक बारहसिंगे का पीछा किया था। मारक्विस उन अतिथियों में से अकेला ऐसा व्यक्ति था, जिसने उसके पीछा करने में भाग नहीं लिया था, उसने कभी शिकार नहीं खेला था।

अब तक की सारी बातचीतों में उन्होंने जानवरों के अतिरिक्त अन्य किसी बात पर शायद ही एक या दो शब्द कहे होंगे। यहाँ तक कि स्त्रियाँ भी उन हिंसात्मक और असम्भव कहानियों में रुचि ले रही थीं और बोलने वाले बड़े उच्च स्वरों में जोर २ से अपनी बाहें उठाकर बातें करते हुए मनुष्यों और पशुओं के आक्रमणों एवं संघर्षों को सुना-सुना कर अन्य व्यक्तियों को प्रसन्न कर रहे थे।

मि० डी' आरविले कवित्वमय एवं उत्तेजनात्मक किन्तु प्रभावोत्पादक बातें अधिक कर रहा था। उसने यह कहानी पहले भी कितनी ही बार दोहराई होगी, यह कहानी किसी शहर का चुनाव कर, एक मूर्ति को कपड़े पहिनाने के लिये नहीं रोकी गई किन्तु बहुत ही धारा प्रवाह से कही गई थी।

"सज्जनो! मैं कभी शिकार नहीं करता और न मेरे पिता ही, न बाबा ही करते थे। परबाबा, ऐसे पिता के पुत्र थे, जिन्होंने आप सब लोगों से अधिक शिकार खेले। सन् १७६४ में उनकी मृत्यु हो गई थी। मैं आप लोगों को बतलाता हूँ कैसे। उनका नाम था जोन। वह विवाहित थे और वह एक पुत्र के, जो मेरे परबाबा थे, पिता थे। वह अपने छोटे भाई फ्रान्सिस डी' आरविले के साथ लौरेन के जंगलों में हमारे किले में रहते थे।

"फ्रान्सिस डी' आरविले शिकार के अपने प्रेम के कारण हमेशा क्वारे ही रहे। वे दोनों ही साल के आरम्भ से लेकर अन्त तक बिना किसी

छुट्टी और थकावट के शिकार खेलते रहते। वे और किसी चीज को नहीं चाहते थे और न समझते ही थे, केवल इसकी ही बातें करते और शायद जीते भी इसी के लिये थे।

"वे इस भयानक एवं क्रूर लालसा से युक्त थे। यह उन्हें घेरे रहती उनके ऊपर पूरी तरह से अधिकार किये रहती और उनके मस्तिष्क में अन्य किसी वस्तु के लिये कोई स्थान नहीं छोड़ती। उन्होंने आपस में निश्चय कर लिया था कि वे शिकार का किसी भी परिस्थिति में चाहें वह कैसी भी क्यों न हो, पीछा करना नहीं छोड़ेंगे। जब मेरे परबाबा का जन्म हुआ तब उसके पिता लोमड़ी का पीछा कर रहे थे किन्तु जोन डी' आरविल्ले ने अपना खेल नहीं बन्द किया और कसम खाई कि उस छोटे भिक्षुक को मृत्यु की आवाज आने तक प्रतीक्षा करनी चाहिये थी। उसके भाई फ्रान्सिस उनसे भी अधिक गर्म मिजाज के थे। सवेरे उठते ही उनका सबसे पहला काम था कुत्तों को देखना, फिर घोड़ों को और बड़े शिकार खेलने जाते समय भी वह वहीं पास में ही कुछ चिड़ियों का शिकार करते।

वे मिस्टर डी' मारकिस और मिस्टर डी' केंउट कहलाते थे। तब सज्जन लोग आज कल के सज्जनों की भाँति नहीं थे, जो अपनी पदवियों का क्रम नीचे उतरता हुआ रखना पसन्द करते हैं। मारकिस का पुत्र कांउन्ट नहीं रहता, या विस्काउन्ट का बैरन, फिर जनरल का पुत्र जन्म से ही जनरल कहलाता है। किन्तु आज कल का व्यर्थ गर्व इसी पद्धति में लाभ का अनुभव करता है। हाँ, तो!

"ऐसा लगता है कि वे लोग काफी लम्बे तगड़े, क्रोधी और शक्तिशाली थे। छोटे वाले बड़े से लम्बे थे और किम्वदन्तियों के आधार पर मैं कहता हूँ कि उनकी आवाज ऐसी थी कि जिसके ऊपर उन्हें गर्व था और जब वह चिल्लाते थे, तब जंगल की पत्तियाँ तक हिलती जातीं थीं।

"और जब वे शिकार खेलने के लिये घोड़ों पर चढ़ते थे, तब उन दोनों वृहत्काय जीवों को अपने घोड़ों की बगल में खड़े हुए देखते ही बनता था।

"सन् १७६४ के जाड़ों के मध्य में ठण्ड बहुत तेज पड़ी थी। अतः भेड़िये अति क्रूर हो गये थे।

"वे रात को देर से आने वाले किसानों पर आक्रमण करते, रात को घरों के चारों ओर घूमते, सूर्यास्त से सूर्योदय तक रोते रहते, और जहाँ-तहाँ घोड़ों को भी खा जाते।

"एक बार एक अफवाह उड़ी। यह कहा जाता था कि एक बहुत बड़े, भूरे, सफेद रङ्ग के भेड़िये ने दो बच्चे खा लिये, एक स्त्री की बाँह काट खाई, सारे शिकारी कुत्तों की गर्दनें दाब दी थीं, अब घरों के द्वारों पर निर्भय होकर चक्कर लगाता तथा दरवाजों को सूँघता फिरता था। बहुत से निवासियों ने इसकी पुष्टि करते हुए कहा कि उन्होंने उसको सूँघते हुए अनुभव किया—क्यों कि उसके सूँघने से दीपकों की लौ हिलजाती जिससे रोशनी हिल उठती थी। थोड़े ही दिनों में सारे प्रान्त भर के निवासी भय-भीत हो गये। किसी की हिम्मत रात को घर से निकलने की नहीं होती थी। जरा सी भी छाया दिखलाई पड़ी कि उसी भेड़िये का भ्रम हो जाता था।

"'डी' आरविले भ्राताओं ने उसे खोज कर मार डालने का निश्चय किया। अतः उन दोनों ने सारे गाँव के निवासियों को उसका पीछा करने के लिये बुलाया।

"वह व्यर्थ रहा। उन्होंने सारा जंगल छान डाला, सारी झाड़ियाँ खोज डाली। किन्तु उसका कोई चिह्न भी न मिला। उन्होंने बहुत से भेड़िये मार डाले, पर वह नहीं मरा। और हर पीछा किये जाने वाले दिन की रात को उस पशु ने मानो बदला लेने के लिये कभी किसी यात्री पर आक्रमण किया या कभी किसी चौपाये को खा गया, और कहाँ? वहाँ, जिस स्थान पर उसकी खोज होती, उस स्थान से बहुत दूर।

"अन्त में वह एक रात्रि को डी, आरविले के किले के सुअरों को रखे जाने वाले घर में घुस गया और बहुत बढ़िया नस्ल की सुअरियों को खा गया।

" दोनों भाई क्रोधित हो उठे, उस आक्रमण को उन्होंने उस विशाल काय की गीदड़ भबकी, सीधी हानि तथा ललकार समझी। अतः अपने साथ सब अच्छे से अच्छे होशियार कुत्ते लेकर, वे क्रोध से उन्मत्त हो उसका पीछा करने को निकल पड़े।

"सुबह से सूर्यास्त तक वे जङ्गल छानते रहे, किन्तु व्यर्थ।

"अन्त में भग्न हृदय एवं उत्तेजित हो, वे दोनों अपने घोड़ों को मोड़ पगडण्डी में जो दोनों ओर सिवार घास से घिरी हुई थी, ले चले। वे इस भेड़िये की धोखा देने की शक्ति पर आश्चर्य कर ही रहे थे कि वे एक गुप्त भय से भयभीत हो गये।

" बड़े वाले ने कहा:

"वह कोई साधारण पशु नहीं हो सकता। हर कोई कह सकता है कि यह मनुष्यों की भाँति सोच सकता है।"

" छोटे वाले ने उत्तर दिया:

"हमें अपने चचेरे भाई, पादरी से उसके लिये एक गोली का आशीर्वाद देने के लिये मिला जाय या किसी पुरोहित से अपनी सहायता के लिये कुछ शब्द उच्चारण करने को कहा जाय।"

" तब वे दोनों चुप होगये।

" जोन ने कहा: " सूर्य की ओर देखो, कितना लाल है, यह विशाल काय भेड़िया आज रात को बदमाशी करेगा।"

" उन्होंने अपनी बात अभी समाप्त भी न की थी कि उनका घोड़ा हिनहिनाया। उसी समय फ्रान्सिस का घोड़ा भागने लगा। सूखी हुई पत्तियों की एक झाड़ी उनके सामने हिली और एक विशालकाय पशु, भूरे सफेद रङ्ग का उछल कर कूदा और उस जङ्गल में अदृश्य हो गया।

" दोनों के चेहरे पर सन्तोष का भाव झलक उठा और अपने भारी घोड़ों की गर्दनों पर झुकते हुए उन्होंने अपने भारी भार से उन्हें चेताया, उत्तेजित किया, और अपनी आवाज और टिक-टिक से उन्हें और भी तेज कर दिया और तब तक करते रहे जब तक कि उन शक्तिशाली सवारों को ऐसा

लगने लगा कि उनके घोड़े उड़ने लगे हैं और उनका सारा भार उनके घुटनों में दब गया है।"

"इस तरह वे जंगलों को रौंदते हुए, घाटियों को पार करते हुए, पहाड़ों के गहरे सकरे पथ को लांघते हुए और बीच २ में पड़ोस के कुत्तों और लोगों को जगाने के लिये भोंपू बजाते हुए, घोड़ों पर सवार रहे।

"किंतु एकाएक इस गर्दन तोड़ घुड़सवारी के बीच में, मेरे पूर्वज का सिर एक पेड़ की बड़ी शाखा से टकरा गया और उनके सिर की हड्डी टूट गई। वह भूमि पर इस भाँति गिर पड़े, मानों मर गये हों और उनका भयभीत घोड़ा पास की झाड़ियों में अदृश्य हो गया।

"छोटे डी आरविले रुके, पृथ्वी पर कूद, अपने भाई को बाहों में भरा और देखा कि उन्होंने अपनी चैतन्यता लुप्त कर दी थी।

"वह उनकी बगल में बैठ गये, उनका विकृत सिर चेहरा अपने घुटनों पर रखा और उनके मृतक चेहरे को उत्सुकता से देखने लगे। धीरे २ करके एक विचित्र भय, जैसा उन्हें कभी नहीं लगा, छायाओं का भय, एकांत का भय, निर्जन जंगलों का भय और उस बदमाश भेड़िये का भय, जो अब उनके भाई की मृत्यु के लिये आया था, उनके ऊपर सवार होने लगा।

"छायायें गहरी होने लगीं, वृक्षों की शाखायें तेज ठण्ड से कड़क रही थीं। फ्रान्सिस को कपकपी आने लगी, वह वहाँ अपने आपको अशक्त अनुभव करने लगे और वहाँ अधिक ठहरने में अयोग्य हो गए। वहाँ कुछ भी नहीं सुनाई दे रहा था, न तो कुत्ते की आवाज और न भोंपू की ही; यहाँ से चारों ओर जहाँ तक भी दिखलाई पड़ता था, सब शांत एवं निस्तब्ध था। और उस अंधेरी निस्तब्धता, और सांयकाल की ठण्ड में कुछ भयानकता एवं विचित्रता थी।

"अपने सशक्त हाथों से उन्होंने जोन का शव उठाया और जीन पर घर ले जाने के लिये आड़ा रखा; तब धीरे से उसके पीछे सवार हुए, उनका मस्तिष्क भयानक एवं अपार्थिव चित्रों से परेशान हो रहा था, मानों कि उनमें वे चित्र भरे हुए हों।

"एकाएक इन भयों के बीच में एक विशाल आकार वहाँ से निकल कर गया। यह भेड़िया था। भय का बहुत जबरदस्त प्रभाव शिकारी के ऊपर छा गया; उनकी नसों में कुछ ठण्डी सी बर्फ के पानी की धार सी प्रवाहित होने लगी, और उन्होंने क्रास का चिन्ह बनाया। उस वीभत्स आँखों के फिर से दिखलाई दे जाने से वह इतने अप्रसन्न हो उठे जैसे कि एक महात्मा दुष्टों द्वारा पीछा किये जाने से हो जाता है। तब, उस मृतक शव पर दृष्टि पड़ते ही उनका भय शीघ्र ही क्रोध में परिवर्तित हो गया और वह असाधारण क्रोध से कांप उठे।

"उन्होंने घोड़े को एँड़ दी और उसके पीछे छोड़ दिया।

"वह उसका छोटे मोटे पेड़ों, खाइयों; और घने जंगल के पेड़ों और एक दूसरे के अन्दर जाते हुए जंगलों में से होते हुए, जिन्हें वह पहिचानते भी नहीं थे, एक सफेद से धब्बे की ओर जो उनसे दूर बहुत दूर उड़ता चला जा रहा था, क्योंकि रात्रि पृथ्वी को ढके जो लेती थी, (अपनी दृष्टि स्थिर किये हुए) पीछा करते चले जा रहे थे।

"मालूम पड़ता था कि कोई अदृश्य शक्ति ही उनके घोड़े को दौड़ा रही थी। वह अपनी गर्दन लम्बी करके, छोटे मोटे पेड़ों, चट्टानों को कुचलता हुआ, अपनी पीठ पर शव को आड़ा रखे हुए चौकड़ी भरता चला जा रहा था। वृक्षों की शाखें उसकी लगाम से टकरातीं; उसका सिर जहाँ से उनसे टकराता, वहीं रक्त से लाल हो जाता; और उसकी जांघों पर—सवार की एड़ियों के निशान बन गये थे।

"एकाएक घोड़ा अपने सवार के साथ जंगल के बाहर एक घाटी में दौड़ता हुआ निकल आया और चन्द्र पहाड़ी के उपर निकल आया था। यह घाटी पथरीली थी और बड़ी २ चट्टानों से बन्द थी, उन चट्टानों को पारकर निकल जाना असम्भव था। भेड़िये के लिये, अब जिस रास्ते से वह आया था, लौटने के लिये उसके अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं था।

"बदले तथा खुशी की लहर से फ्रांसिस इतनी जोर से चिल्लाये कि उनकी आवाज बिजली के समान कड़कड़ाती हुई गूंज गई! हाथ में चाकू लिये हुए वह अपने घोड़े पर से कूद पड़ा।

" बालों वाला पशु अपनी गर्दन मोड़े हुए, उनकी प्रतीक्षा कर रहा था, उसके नेत्र दो तारों की भाँति चमक रहे थे। किन्तु युद्ध आरम्भ करने से पूर्व शक्तिशाली शिकारी ने अपने भाई पर दृष्टि पड़ते ही उसके शिर को अब जो केवल लोथ ही था, पत्थरों का सहारा देकर टिकाते हुए उसे एक चट्टान पर बिठला दिया और उसकी ओर देखते हुए जोर से बोले:

' जोन देखो ! इधर देखो !'

"तब वह उस विशालकाय जीव पर टूट पड़े। उन्हें उस समय अपने अन्दर एक पर्वत को उठा कर फेंक देने तथा चट्टानों को कुचल डालने के लिये भी शक्ति पर्य्याप्त लग रही थी। पशु चाहता था कि वह प्राण हरने के लिये शिराओं में पंजों को घुसा कर उन्हें मार डाले। किन्तु उन्होंने बिना किसी हथियार उसे गर्दन से पकड़ कर धीरे २ तब तक दाबते रहे जब तक कि उसकी साँस न बन्द हो गई और वह मर न गया। और वह प्रसन्नता की खुशी में अपने भयानक हाथों में उसे और भी अधिक दबाते हुए हँसे और अपनी जर्वक में चिल्लाने लगे:

'जोन देखो ! देखो !' सब गतिविधियाँ बन्द हो गईं। भेड़िये का शरीर निष्प्राण हो गया। वह मर चुका था।

" तब फ्रान्सिस ने उसे हाथों में उठा कर अपने बड़े भाई के चरणों पर पटक दिया और बहुत ही सम्वेदनात्मक स्वर से बोले: ' मेरे जोन ! देखो यह-यह-यह रहा वह !'

"तब उन्होंने जोन पर दोनों शव रक्खे और एक पर एक, तब वह अपने रास्ते से चल दिये।

"जब वह किले लौटे तब वह हँसते भी थे और रोते भी थे। अपनी विजय की प्रसन्नता पर पशु की मृत्यु की घटना सुनाते हुए उन्मादित होते तथा अपने भाई के नाम पर रोते और अपनी दाढ़ी नोंचते।

" बहुधा जब वे इस दिन को स्मरण करते, वह अपनी आँखों से अश्रु भर कर कहते: "मुझे विश्वास है कि यदि बेचारे जोन ने मुझे उस पशु से युद्ध करते देख लिया होता तो वह संतोष की साँस लेकर मरता।"

" मेरे पूर्वज की विधवा पत्नी ने हुँकारा करने के प्रति अपने पुत्र के हृदय में भय उत्पन्न किया जो पिता से पुत्र में और फिर मुझमें भी विद्यमान है।"

मारक्विस डी' आरविले शान्त हो गया। किसी ने पूछा: "यह कहानी शान्त है या नहीं ?" और कहानी कहने वाले ने उत्तर दिया:

" मैं आपसे कसम खाकर कहता हूँ कि यह आरम्भ से अन्त तक सही है।"

बस एक स्त्री अपने मधुर सुरीले स्वर में बोली: " ऐसी लालसाएं होना भी कितना सुन्दर है।"

द्वन्द

समाज में सब लोग उसे "सुन्दर सिगनोलेस" के नाम से पुकारते थे। वह अपना नाम बतलाता विस्काउन्ट गोन्टरोम जोसेफ डी सिगनोलेस।

उसके विषय में लोगों की कुछ ऐसी धारणा थी कि वह एक बहुत बड़ी सम्पत्ति का अनाथ स्वामी था। उसका चेहरा मोहरा आकर्षित था। उसके अन्दर किसी परिहास का उत्तर देने में पर्य्याप्त तत्परता थी, सुन्दर व्यवहार उसकी प्रकृति में ही मिला हुआ था, सज्जनता एवं गर्व उसके चेहरे से टपकते, उसकी मूँछें नयनाभिराम एवं सुन्दर लगती थीं—यह स्त्रियों को खुश भी करती हैं।

ड्राइङ्गरूमों, और वाल्जनृत्यों में उसको बुलाया जाता क्योंकि वह पुरुषों में एक ऐसी भयनिश्चित शत्रुता उत्पन्न कर देता जो किसी पहलवान को देख कर हो जाती है। उस पर संदेह था, कि वह कुछ गुप्त प्रेम सम्बन्ध रखता था जिनके कारण वह बहुत स्वच्छन्द हो गया था। वह प्रसन्न-चित्त शान्त तथा एक पूर्णता प्राप्त किये हुए व्यक्ति की भाँति रहता था। उसके बारे में शोहरत थी कि तलवार चलाना बहुत अच्छा जानता था तथा उससे भी अच्छा पिस्तौल चलाना।

"यदि मेरी किसी से लड़ाई हो जाय" वह कहता, "तो मैं पिस्तौल ही चुनूँ। उस अस्त्र से मैं अपने शत्रु को निश्चय ही मार डालूँगा।"

अब एक दिन सायंकाल अपनी दो मित्र स्त्रियों को, उनके पति भी साथ में थे, थियेटर तक पहुँचाने गया और वहाँ जाकर उसने उन सबको टोरटोनी होटल में बर्फ खिलाने के लिये निमन्त्रित किया। वे लोग वहाँ दस मिनट तक रहे, उसने देखा कि पास की ही मेज पर एक सज्जन बैठे हुए उसकी पार्टी की एक स्त्री को लगातार घूर ही रहे हैं। वह कुछ परेशान सी

श्रोर अशान्त सी दिखलाई दी— उसने अपने नेत्र भी नीचे कर लिये और अंत में वह अपने पति से बोलीः

"वह व्यक्ति मेरी श्रोर घूर रहा है। मैं उसे नहीं जानती कि वह कौन है, क्या आप उसे जानते हैं ?"

" नहीं बिल्कुल नहीं।"

नवयुवती कुछ क्रोधित सी हो और कुछ हंसती सी हो उत्तर दिया, "यह बहुत बुरी बात है, वह मेरी बर्फ का सत्यानाश किये देरहा है।"

पति ने उत्तर देते हुए अपने कन्धे हिलायेः

" शा ! उसकी श्रोर कोई ध्यान मत दो। यदि हम सब दुष्ट प्रकृति के पुरुषों को जो हमें मिलते ही रहते हैं, देखते ही रहेंगे तो इसका कोई छोर ही नहीं मिलेगा।"

किन्तु विस्काउन्ट वैसे ही उठा। वह उस अपरचित व्यक्ति द्वारा अपनी दी हुई बर्फ को बिगड़ने नहीं दे सका। यह हानि तो उसकी थी, क्योंकि उसके ही साथ और उसके ही कारण उसके मित्र होटल में आये थे। तब यह मामला उसी से सम्बन्धित हुआ। वह इस व्यक्ति की तरफ बढ़ा और बोला:

"श्री मान् जी, जिस ढङ्ग से आप इन युवतियों की ओर देख रहे हैं, यह असह्य है। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप इस दृष्टि से देखना बन्द कर दें।"

दूसरे ने उत्तर दिया, "अच्छा तो आप मुझे शान्ति बनाये रखने की आज्ञा देरहे हैं, क्यों ठीक है ना ?"

दाँत भींचकर विस्काउन्ट ने उत्तर दियाः "श्री मान् जरा होश में रहिये नहीं तो आप मुझे अपना आपा खो बैठने पर बाध्य कर देंगे।"

उस सज्जन ने एक शब्द, गन्दे शब्द में उत्तर दिय, जो होटल में एक सिरे से दूसरे सिरे तक गूँज गया और प्रत्येक अथिति एक आकस्मिक मुद्रा से घूम कर देखने लग गया मानो किसी स्प्रिंग पर बैठा हो। जो लोग

सामने थे पीछे मुड़े, और बाकी दूसरों ने सिर उठाये, तीनों चपरासी अपनी एड़ियों पर घूम गये, दो स्त्रियाँ जो काउन्ट पर थीं उछल कर आगे कूद गईं तब सबने उस दृश्य के ऊपर अपनी पीठें घुमाली मानो वे एक ही नियमों को मानने वाले दो मशीन की भाँति काम करने वाले पुरुष हों।

वहाँ बहुत शान्ति थी। तब अकस्मात बड़े जोर का शोर होने लगा; विस्काउन्ट ने अपने विरोधी को ठोक डाला था। हर कोई उनमें बीच बचाव करने को उठ दिया। तारा बाल दिये गये।

घर लौटने पर विस्काउन्ट कुछ मिनटों तक छोटे २ कदमों से कमरे में चहल कदमी करता रहा। वह इतना उत्तेजित था कि किसी विषय पर सोच भी नहीं पा रहा था। उसके मस्तिष्क में केवल एक ही विचार चक्कर लगा रहा था "एक द्वन्द" इस विचार के उठने पर भी उसके अंदर किसी भी प्रकार की कैसी भी भावना का समावेश नहीं हुआ। जो उसके लिये करना उचित था वह उसने किया था, जैसा उसे प्रकट करना चाहिये था वैसा ही उसने अपने आप को सिद्ध कर दिया था। लोग बाग इसकी बातें करेंगे, सराहेंगे, और उसको धन्यवाद देंगे। उसने उच्चस्वर में जोर से कहा जैसा कि बहुधा विचारों में बहुत उलझ जाने पर लोग किया करते हैं:

"यह कैसा जानवर आदमी है।"

तब वह विचार करने के लिये बैठा। उसे सुबह ही से कुछ गवाह (सैकण्ड) खोजने थे वह किसे चुने? उसने बहुत ही प्रतिष्ठित एवं उच्चवर्गीय व्यक्तियों के बारे में जो उससे परिचित थे, सोचा। अंत में इसने मारकिस डी ला टूरनोइयर और कर्नल बोर्डिन को जो एक बहुत बड़ा जमींदार और एक सैनिक जो बहुत तगड़ा था, लिया। उनके नाम समाचार पत्रों में छपेंगे। उसे लगा कि वह प्यासा था और उसने एक के बाद एक करके पानी के तीन गिलास पी डाले तब वह फिर घूमने लगा। उसने अनुभव किया उसके अंदर बहुत शक्ति थी। उसने सोचा कि अपने आपको गर्म मिजाज दिखलाने में हर बात से दृढ़ता और अक्खड़पन दिखलाने में, भयानक शर्तों और एक गम्भीर द्वन्द मांगने से उनका विरोधी अवश्य ही किसी न किसी बहाने उससे क्षमा माँग कर द्वन्द अस्वीकार कर देगा।

उसने उस कार्ड को जो उसने अपनी जेब से निकाल कर और मेज पर पटक दिया था एक दृष्टि से गैस के प्रकाश में वैसे ही पढ़ा जैसे उसने रेस्टोरेन्ट, फिर गाड़ी में, और फिर घर आने पर पढ़ा,जोर्ज लामिल,२१ मोन्सी गली।" बस यही लिखा था।

उसने उन शब्दों की, जो एक साथ इकट्ठे किये गये और जो उसको इतने रहस्यमय लग रहे थे, जाँच की, उसकी बुद्धि भ्रम गई: जार्ज लामिल यह कौन व्यक्ति था? उसने क्या किया था? उसने उस स्त्री की ओर उस ढङ्ग से क्यों देखा था? क्या वह घृणास्पद नहीं था कि एक अजनबी अनजान केवल इसलिये कि वह एक स्त्री की ओर घूर २ देखने में प्रसन्नता का अनुभव करता था। उसके जीवन को एक ही फूँक में इस तरह से परेशान करे और विस्काउन्ट ने फिर जोर से दुहराया:

"कितना जंगली था?"

तब वह कार्ड की ओर अस्थिर दृष्टि से देखता, निश्चल खड़ा हुआ सोचता रहा। उस कागज के टुकड़े के प्रति उसके हृदय में एक विशेष प्रकार का क्रोध, एक घृणा से भरा हुआ क्रोध जिसमें नुकसान पहुँचाने की विचित्र ही भावना भरी हुई थी, उत्पन्न हो आया। यह पूरी कहानी ही मूर्खतापूर्ण थी। उसने चाकू जो उसके हाथ में खुला हुआ रखा निकाला। और उसने कार्ड को नाम लिखी हुई जगह के बीच में से उठाया, मानो कि वह किसी के ऊपर Poignard प्रयोग करने जारहा था।

अतः उसे लड़ना चाहिये! उसे पिस्तौल या तलवार क्या चुननी चाहिये। क्योंकि वह अपने आप को अपमानित समझता था तलवार से उसे खतरा कम था, किन्तु पिस्तौल से यह हो सकता था कि उसका प्रतिद्वन्दी अपना नाम वापिस ले ले। तलवार से द्वन्द में बहुत कम मृत्यु देखी गई हैं,आपसी बुद्धिमानी है जो दोनों प्रतिद्वन्दियों को एक दूसरे को साँघातिक वार करने वाले स्थान से दूर ही बनाये रखती है, पिस्तौल से उसके जीवन का भय था, किन्तु बिना किसी मुठभेड़ के ही मामला तय हो सकता था और उसे विजय का सम्मान भी प्राप्त हो सकता था, वह जोर से बोला:

"दृढ़ रहना आवश्यक है। वह स्वयं ही डर जायगा।"

उसकी आवाज ने उसे ही कंपा दिया और वह अपने चारों ओर देखने लगा। वह नरवस सा हो गया। उसने फिर एक गिलास पानी पिया, तब सोने के लिये कपड़े उतारने आरम्भ किये।

जब वह तैयार हो गया तब उसने रोशनी बुझा दी और अपने नेत्र बन्द कर लिये। तब उसने सोचाः

"कल मेरा सारा दिन इस झगड़े में व्यस्त रहेगा। मुझे शांत होने के लिये पहिले सोना ही चाहिये।"

अपने कपड़ों के अंदर वह काफी आराम में था किंतु उसे नींद न आ सकी। वह बार २ करवटें बदलता रहा, पाँच मिनट तक पीठ के बल लेटा रहा, बाँई ओर मुड़ा फिर दाँई ओर लुड़का।

वह अभी भी प्यासा था। वह उठा और उसने पानी पिया। तब उसमें एक प्रकार की अशान्ति उत्पन्न हो गईः

"क्या मैं डर गया ?" वह बोला।

कमरे में जरा सा शोर होने पर और जब घड़ी घंटा बजाने वाली थी, स्प्रिङ्ग ने घूमने के लिये जरा सी किर-किर की तब उसके हृदय को क्यों इतनी मूर्खता से धड़कना चाहिये ? और उसकी बेचैनी इतनी अधिक थी कि उसे इन चीजों के बाद में सांस लेने के लिये मुँह खोलना आवश्यक पड़ जाता। वह इस बात की सम्भावना पर अपने आप ही तर्क करने लगाः

"भय की बात ही क्या है ?"

नहीं निश्चय ही उसे भय नहीं करना चाहिये, क्योंकि उसने इसे अंत तक पूरा करने का निश्चय कर लिया था और क्योंकि उसने बिना किसी क्षणिक आवेश के लड़ने का निश्चय कर लिया था। किंतु वह अपने आपको इतना अधिक परेशान लगा कि उसने मन ही मन पूछाः

"क्या यह हो सकता है कि मैं अपने अहंत्व के बावजूद भी भयभीत हूँ ?"

और इस भ्रम, इस अशान्ति एवं भय ने उस पर आक्रमण कर दिया। यदि उसकी इच्छा शक्ति से भी अधिक सशक्त, प्रभावशाली, एवं दृढ़ शक्ति

उस पर विजय प्राप्त कर लेगी तो क्या होगा ? निश्चय ही यदि वह पृथ्वी पर जाना चाहे तो वहाँ चल फिर सकता था। किंतु यदि वह कांपा तो ? यदि वह अपनी चैतन्यता खो बैठा तो ? और उसने अपनी स्थिति, अपनी मर्यादा, अपने नाम के सम्मान के ऊपर विचार किया।

और उसके ऊपर केवल एक ही इच्छा ने अधिकार कर लिया कि वह उठे और दर्पण में अपना प्रतिबिम्ब देखे। उसने बत्ती को फिर से जलाया। जब उसने पालिशदार दर्पण में अपना प्रतिबिम्ब देखा तो उसे लगा कि उसने अपना प्रतिबिम्ब अभी तक पहिले कभी नहीं देखा था। उसके नेत्र बहुत बड़े दिखलाई दिये; निश्चय ही वह पीला पड़ा हुआ था; वह पीला था बहुत पीला।

वह दर्पण के सामने खड़ा ही रहा। उसने जीभ बाहर निकाल कर देखी मानों वह अपने स्वास्थ्य की हालत देखना चाहता था, और एकाएक, गोली के फैशन के पीछे, यह विचार मस्तिष्क में घुसा:

"कल के बाद इसी समय पर, शायद मैं मरा हुआ होऊँगा।"

और उसके हृदय की धड़कन बड़ी तीव्र हो गई।

"कल के बाद इसी समय पर शायद मैं मरचुका होऊँगा। यह व्यक्ति जो मेरे सामने है,यह जीव जिसे मैंने कितनी ही बार इस दर्पण में देखा है फिर नहीं रहेगा। यह कैसे हो सकता है ! मैं यहाँ हूँ, मैं अपने आपको देख रहा हूँ, मैं अनुभव कर रहा हूँ कि मैं जीवित हूँ और चौबीस घन्टों के अन्दर मैं उस बिस्तर पर मृत, नेत्र बन्द किये हुए, ठण्डा, निःश्वास, विदा कर लिटा दिया जाऊँगा।"

उसने बिस्तरे पर करवट बदली और अपने आपको, उन्हीं कपड़ों में जिन्हें वह बाहर जाते समय पहिन गया था, अपनी पीठ पर खरोंचा हुआ दिखलाई दिया। उसके चेहरे पर मृत्यु की रेखाएँ थीं और थी उसके हाथों में कठोरता जो कभी भी नहीं हिल सकते थे।

तब अपने बिस्तरे से ही उसे भय लगने लगा और उसे फिर न देखने के कारण वह अपने स्मोकिंग रूम में पहुँच गया। यन्त्रवत् उसने एक सिगार निकाली, जलाई और वहीं चक्कर लगाने लगा। वह ठण्डा था वह अपने

व्यक्तिगत सेवक को जगाने के लिये घण्टी के पास गया, किन्तु रस्सी पर हाथ रखा ही रोक दिया:

"वह आदमी शीघ्र ही पहिचान लेगा कि मैं भयभीत हूँ।"

उसने घण्टी नहीं बजाई, किंतु आग जलाई। किसी वस्तु से स्पर्श होते ही उसके हाथ बेबसी की कपकपी से कांप गये। उसका मन घूम रहा था; कष्ट से उसके विचार भयभीत, चंचल एवं दुखपूर्ण हो गये थे; एक अजीब सी हालत उसके मस्तिष्क की हो गई थी मानो वह खूब शराब पिये हुए हो। और लगातार वह पूछने लगा:

"मैं क्या करने जा रहा हूँ? मेरा क्या होने जा रहा है?"

उसका सारा शरीर कपकपी और सिहरन से संचारित था; वह उठा, पर्दे खोलता हुआ खिड़की पर पहुँचा।

गर्मी का दिन था—दिन निकल आया। गुलाबी रंग के आकाश ने सारे नगर की छतों और दीवारों को गुलाबी बना दिया था। प्रकाश के एक बहुत बड़े पुंज ने, उगते हुए सूर्य के आलिंगन की भाँति, जगते हुए संसार को आवरित कर लिया; और इस प्रकाश से विस्काउन्ट के हृदय में एक प्रसन्न, आतुरी एवं चंचल आशा ने प्रवेश किया! कि बिना किसी बात के तय हुए, अपने गवाहों के जोर्ज लामिल से मिलने से पूर्व ही, यह जानने से पूर्व ही कि वह द्वन्द्व लड़ेगा या नहीं इतना अधिक भयभीत हो जाना मूर्खता थी।

उसने स्नानादि से निवृत्त हो कपड़े पहिने और दृढ़ चाल से बाहर निकला।

एक पंक्ति का स्थान छोड़ना

चलते २ वह निरन्तर दोहराता रहा:

"मुझे चुस्त—बहुत चुस्त रहना आवश्यक है। मुझे सिद्ध करना चाहिये कि मैं भयभीत नहीं हुआ हूँ।"

उसके गवाह मारक्विस और करनल उसकी इच्छानुसार कार्य करने को तैयार हो गये थे और उससे फुर्ती से हाथ मिलाने के पश्चात् उन्होंने नियमों पर बहस की। करनल ने पूछा:

"क्या तुम इस द्वन्द को सांघातिक चाहते हो?"

विस्काउन्ट ने उत्तर दिया: "बिल्कुल।"

मारक्विस ने कहा: "क्या तुम पिस्तौल का प्रयोग करोगे?"

"जी हाँ।"

"बाकी सब शर्तों को नियम-बद्ध करने को हम तुम्हें स्वतन्त्र करते हैं।"

विस्काउन्ट ने शुष्क एवं सिहरते हुए स्वर में कहा:

"आज्ञा पर बीस कदम, और हाथ नीचे करने की जगह हाथ ऊँचे करने पर। गोलियों का आदान प्रदान जब तक कि कोई सांघातिक रूप से घायल न हो जाय।"

करनल ने सन्तुष्ट स्वर में उत्तर दिया:

"यह बहुत ही सुन्दर शर्तें हैं। तुम्हारा निशाना अच्छा है—सब अवसर तुम्हारी ही ओर हैं।"

वे अलग २ हो गये। विस्काउन्ट उनकी प्रतीक्षा करने के लिये घर लौट आया। उसकी परेशानी, जो थोड़ी देर के लिये शान्त हो गई थी अब फिर क्षण प्रति क्षण बढ़ने लगी। उसे अपनी भुजाओं, टांगों, और छाती में एक प्रकार की कपकपी का लगातार संचारण अनुभव हो रहा था; वह न तो बैठ ही और न खड़ा ही शान्त रह सका। उसका गला सूख गया, और हर क्षण वह अपनी जीभ से शोर करता रहा।

उसने नाश्ता करना चाहा किन्तु खा नहीं सका। तब उसे शराब पीने का विचार आया जिससे उसमें साहस उत्पन्न हो जाय अतः वह रम की एक छोटी सी बोतल उठा लाया, जिसे वह छः गिलासों में एक के बाद एक करके पी गया।

उसके अन्दर जलती हुई अग्नि के समान एक गर्मी आई और वह आत्म विस्मृत होने लगा। उसने सोचाः

"मैंने उपचार खोज लिया है और अब सब ठीक है।"

किन्तु एक घन्टे पश्चात् उसने बोतल खाली कर दी थी और उसकी परेशानी की हालत असह्य हो उठी थी। उसे जमीन पर लुढ़कने की, चिल्लाने की और काटने की मूर्खता पूर्ण धुन सवार हुई। तब रात हो गई।

घन्टी की एक आवाज ने उसको ऐसा धक्का पहुँचाया कि उसके अन्दर उठकर अपने गवाहों का स्वागत करने की भी शक्ति न रह गई। उसका 'गुड ईवनिंग' कहने का भी साहस नहीं होता था कि कहीं उसकी आवाज में परिवर्तन देखकर वे लोग यह न पहिचान जाँय कि वह भयभीत हो गया था।

करनल ने कहाः

"जैसी शर्तें तुमने बतलाई थीं वैसा ही सब बन्दोबस्त हो गया है। तुम्हारे प्रतिद्वन्द्वी ने आक्रमण किये जाने वाले के लिये स्वीकार की जाने वाली सुविधाएँ मांगी थीं किन्तु शीघ्र ही उसने अपनी मांग वापिस लेली और सब शर्तें स्वीकार कर लीं। उसके गवाह दो सैनिक हैं।"

विस्काउन्ट ने कहाः

"धन्यवाद।"

मारक्विस ने कहाः

"क्षमा करना यदि हम लोग केवल अन्दर आकर चले जाँय, क्योंकि हमें हजारों बातों पर ध्यान देना है। एक अच्छे डाक्टर की आवश्यकता पड़ेगी, क्योंकि द्वन्द तो सांघातिक चोट के ही पश्चात् बन्द हो सकेगा और तुम जानते हो गोलियां कोई खेल तो हैं ही नहीं। फिर एक ऐसा स्थान, जिसके पासमें ही कोई घर हो जहाँ कि यदि आवश्यकता पड़े तो आहत व्यक्ति को हम लोग

ले जा सकें, आवश्यक है इत्यादि २; अन्त में इसमें बस अब दो तीन घन्टों की ही देर है।"

विस्काउन्ट ने प्रयत्न कर दुबारा कहा:

"धन्यवाद।"

करनल ने पूछा:

"तुम्हें यह क्या हो गया है? तुम शान्त हो?"

"हाँ बहुत शान्त हूँ, धन्यवाद।?

दोनों व्यक्ति चले गये।

... ...

जब वह फिर अकेला रह गया तब उसे लगा कि वह पागल हो गया था। उसकी नौकरानी ने लेम्प जला दिया और वह मेज पर कुछ पत्र लिखने को बैठा। एक कागज के सिरे पर लिखने के पश्चात् "यह मेरी परीक्षा है।" वह काँप कर उठा और उसे उसने दूर रख दिया, इस समय वह दो विचार बनाने में था यह निश्चय करने में कि उसे क्या करना चाहिये असम था।

इस तरह वह द्वन्द लड़ने जा रहा था। उससे बचने का कोई मार्ग था नहीं। इस भांति वह लड़ कैसे सकता था? उसकी इच्छा लड़ने की थी, उसकी कामना थी और दृढ़ निश्चय था कि वह ऐसा करे, और फिर भी लगा कि उसके मन के सब प्रयत्नों और इच्छाओं की शक्ति के होते हुए भी उसके अन्दर उस स्थान तक पहुँचने की क्षमता नहीं थी। उसने द्वन्द की, अपने रवैये और अपने प्रतिद्वन्दी की स्थिति की कल्पना करनी चाही।

बार २ उसके मुँह के अन्दर दाँत जरासा शोर करते हुए किटकिटा जाते। उसने चेय्यूबिलार्ड का द्वन्द युद्ध का कोड उठाकर उसे पढ़ने की चेष्टा की। तब उसने मन ही मन पूछा:

"क्या मेरा प्रतिपक्षी कभी लड़ चुका है? क्या वह प्रसिद्ध है? क्या वह उच्चवर्ग का है? मुझे कैसे मालूम हो? उसे बेरन डी वौक्स की पिस्तौल से लड़ने वाले दस व्यक्तियों के ऊपर लिखी गई किताब का स्मरण हुआ और

वह दौड़ कर उसे उठा लाया तथा एक सिरे से दूसरे सिरे तक पन्ने पलट डाले। उसमें जार्ज लामिल का नाम नहीं लिखा था। फिर भी यदि यह व्यक्ति दक्ष नहीं होता तो इस भयानक अस्त्र एवं भीषण शस्त्रों को स्वीकार नहीं करता।

जाते हुए गास्टिने रेनेट्स का एक छोटा बक्स, जो एक छोटी सी टिकटी पर रखा हुआ था, उसने खोला और उसमें से एक पिस्तौल निकाल कर उसे चलाने की स्थिति में पकड़ ली! और अपनी बाँह ऊँची उठाई। किन्तु वह सिर से लगाकर पैर तक काँप गया और बन्दूक ने अपना प्रभाव उसकी नस २ पर छोड़ दिया।

तब वह बोला: "यह असम्भव है, मैं इस हालत में नहीं लड़ सकता हूँ।"

उसने नली के सिरे की ओर देखा, उस छोटे काले सूराख की ओर जो मृत्यु थूकता रहता है, उसने अपमान के विषय में सोचा, अपने परिकर में फुसफुसाहटों के विषय में सोचा। ड्राइङ्ग रूमों की हँसी दिल्लगी, स्त्रियों की फटकारों, समाचार पत्रों की टिप्पणियां और इन सब अपमानों के विषय में सोचा जो कायर लोग उसका करते।

उसने अस्त्र की परीक्षा जारी ही रखी और काक को उठाते ही उसने एकाएक चिनगारी सी निकलती देखी। यह पिस्तौल भूल से अचानक भरी हुई थी उसको इस खोज पर अनिवर्णनीय आनन्द प्राप्त हुआ।

दूसरे व्यक्ति की उपस्थिति में उसे वह शान्ति, वह सहनशीलता, जो उसे होनी चाहिये थी, नहीं मिल सकती थी और वह हमेशा २ के लिये समाप्त हो सकता था। उस पर दाग लगाया जायगा, बदनामी के साथ उसका नाम लिखा जायगा और दुनियाँ से भुला दिया जायगा। और वह जानता था कि वह शांति, एवं वीरता-पूर्ण कार्य वह नहीं कर पायेगा, उसे यह अनुभव भी हो रहा था। फिर भी वह बहादुर था क्योंकि वह लड़ने की इच्छा तो करता था। यह बहादुर था, क्योंकि ······। विचार जो उसके अन्दर उत्पन्न हुआ उसके मस्तिष्क में भी कार्यान्वित हुआ क्योंकि अपना मुँह फाड़

कर उसने धीरे २ पिस्तौल की नली को अपने गले में घुसेड़ लिया और उसका घोड़ा दबा दिया···

आवाज सुन कर उसका व्यक्तिगत सेवक दौड़ा २ उसके पास आया तो वह देखता क्या है कि उसका स्वामी अपनी पीठ के बल औंधा मरा हुआ पड़ा था। खून की एक धार मेज पर रखे हुए सफेद कागज पर जा गिरी थी और उसने कुछ लिखे हुए पर एक लाल धब्बा बना दिया था। वे चार शब्द थे:

“[illegible] है।”

मैडम टेलियर की दावत

पुरुष वर्ग वहाँ रात को ग्यारह बजे इसी भाँति जाता जैसे वह किसी होटल में जा रहा हो। यहाँ उनमें से छः या आठ व्यक्ति मिलते, वे लोग व्रत या उपवास करने वाले नहीं होते थे वरन् होते थे सम्माननीय व्यापारी, और सरकार में नौकरी करने वाले नवयुवक। वे अपनी चारट्रेज पीते, लड़कियों को छेड़ते या फिर मैडम से गम्भीरता से बातें करते तब रात्रि के बारह बजे वे लोग अपने २ घर जाते। मैडम का सम्मान हर कोई करता था। नव-युवक कभी २ रात्रि वहीं व्यतीत करते थे।

वह छोटा सा सुविधाजनक मकान सेन्ट एटेने की चर्च के पीछे एक गली के कोने में था। खिड़कियों से जहाजों से भरे डेक दिखलाई देते थे, जहाँ उनमें से सामान उतारा जाता था। और पहाड़ी पर पुरानी भूरे रङ्ग की वर्जिन की चर्च भी वहाँ से दिखलाई पड़ती थी।

मैडम, योर प्रान्त के किसानों के मालिकों के सम्माननीय परिवार में से थी और उसने इस व्यापार को दर्जी या टोप बनाने के व्यापार की भाँति प्रारम्भ किया था वेश्या वृत्ति के विरुद्ध नोरमॅन्डी के गावों में बड़े नगरों की भाँति पहले से ही निश्चित धारणा इतनी भयंकर एवं हृदयों में गहरी बैठी हुई नहीं होती। किसान केवल कहा करते हैं:

"धन्धा अच्छा है।" और वह अपनी पुत्रियों को जैसे लड़कियों का स्कूल रखने के लिये भेजते हैं वैसे ही भूखी लड़कियों का हरम रखने के लिये भेजते हैं।

यह मकान उसके वृद्ध चाचा का था जिससे अब उसे प्राप्त होगया था। मिस्टर और मैडम ने, जो पहले येवेरोट के पास सराय का धन्धा कर चुके थे, यह सोच कर कि फेकेम्प में इस व्यापार में अधिक लाभ होगा, अपने उस मकान को बेच डाला। वे उस व्यापार के निर्देशन के लिये, जो एक कर्ता के अभाव में गिरता जारहा था एक दिन मनोहर सुप्रभात में आ

पहुँचे। वे लोग अपने व्यवहार में काफी अच्छे व्यक्ति थे और शीघ्र ही अपने नौकरों तथा पास पड़ोसियों में घुल मिल गये।

मिस्टर की दो वर्ष हुए उस नये धन्धे में आलस्य और अपरिश्रम के कारण लकवे से मृत्यु हो गई थी। वह काफी मोटा हो गया था और उसका स्वास्थ्य गिर चुका था। मैडम अब विधवा हो गई थी। अतः सब आने जाने वालों को उसकी आवश्यकता थी, किन्तु लोग कहते थे कि व्यक्तिगत रूप में वह सर्व गुण सम्पन्न थी। यहाँ तक कि उसके मकान की लड़कियों को भी उसके विरुद्ध कहने को कुछ नहीं मिल पाता। वह लम्बी, तगड़ी और मृदुल स्वभाव की थी और उसका रङ्ग जो उस मकान के अन्धकार में जिसकी खिड़कियाँ बहुत कम खुला करती थीं, पीला हो चुका था और इस भाँति चमकता था मानो उसके चेहरे पर वार्निश कर दी गई हो। उसके नकली बालों के घुंघराले गुच्छे उसके चेहरे को यौवन-सम्पन्न बना देते थे और उसके अधेड़पन के चेहरे से बिल्कुल स्पष्ट विरोधाभास प्रगट करते। वह सदैव प्रसन्न एवं मुस्कराती रहती तथा उसे परिहास प्रिय थे किन्तु वह अपने नये धन्धे में पूरी तरह से खुल न सकी थी अतः उसके चेहरे पर लज्जा छाई रहती थी। भद्दे शब्दों से उनके हृदय को ठेस पहुँचती, जब कोई गन्दे वातावरण में पला हुआ नवयुवक उसके स्थान को असली नाम से सम्बोधित करता तब वह क्रोधित एवं दुखी हो जाती थी।

एक शब्द में, उसका मन शुद्ध था और यद्यपि वह अपनी स्त्रियों से मित्रों की भाँति व्यवहार करती तब भी वह कभी २ कह ही देती कि वे और वह दोनों ही एक मिट्टी के बने हुए नहीं हैं।

सप्ताह में एक या दो बार वह गाड़ी किराये पर लेती और अपनी स्त्रियों में से कुछेकों को गाँव में ले जाती, जहाँ वे सब छोटी सी नदी के किनारे घास पर अपना मन बहलाया करतीं। वे स्कूल से छूटी हुई लड़कियों का सा व्यवहार करतीं और दौड़ लगातीं या बच्चों के से खेल खेला करतीं। वहाँ घास पर वे ठण्डा भोजन करतीं, साइडर शराब पीतीं और हल्की सी थकावट अनुभव कर रात को घर लौटतीं। गाड़ी में मैडम का,

माँ की दृष्टि से, आलिङ्गन लेतीं क्योंकि वह बहुत दयालु तथा अच्छी थीं। घर में दो द्वार थे। कोने में यहाँ एक तरह का नीचा पटावदार होटल था जिसमें नाविक एवं नीची जातियों के लोग रात को आते जाते थे और व्यापार के उस भाग को चलाने के लिये उसी काम के लिये विशेषतया उसके पास दो लड़कियाँ थीं जो चौकीदार की सहायता से जिसका नाम था। फ्रेडरिक और जो ठिगना, गन्जी चाँद का, निमुच्छा, तथा घोड़े की तरह शक्तिशाली था, हिलने वाली सफेद पत्थरों की मेजों पर बीयर और शराब की आधी भरी बोतलों को रख, उनके घुटनों पर दूर बैठ कर, उन्हें पिलातीं।

अन्य तीन लड़कियाँ (वे सब मिला कर पाँच थीं) एक प्रकार का शासकीय मण्डल थीं, और पहिली मन्जिल पर आने जाने वालों के लिये नियुक्त थीं। वे नीचे तब ही जाती जब कि पहली मन्जिल पर कोई नहीं होता और नीचे उनको आवश्यकता होती। जूपीटर का अथिति-गृह, जहाँ व्यापारी वर्ग इकट्ठा होता था, नीले कागजों से सजाया हुआ था तथा लेडा की हंस के साथ बनी हुई बड़ी छवि से सुसज्जित था। कमरे में एक घुमाव-दार सीढ़ी से, जिसका गली में छोटा सा दरवाजा था, जाया जाता था। ऊपर तारों की छड़ों के पीछे, बहुत से शहरों में किसी सन्त के चरणों में रखे हुये दीपकों की भाँति, एक दीपक सारी रात जलता रहता था।

मकान जो पुराना और सीला हुआ था, सीलन की दुर्गन्ध देता था, कभी कभी उसके मार्ग में यू-डी कोलन की सुगन्धि आती, या सीढ़ियों के खुले अधखुले दरवाजों से नीचे बैठे हुये लोगों का शोर पहली मन्जिल में सुनाई दे जाता, जिससे वहाँ बैठे हुये लोगों को दुख ही होता था। मैडम जो अपने ग्राहकों से काफी परिचित थी या मित्रता की भावना रखती थी, अथिति गृह से नहीं जाती थी। वह नगर की गतिविधियों में रुचि रखती थी और वे लोग उसे उनसे परिचय कराते रहते थे। उसका गम्भीर वार्तालाप उन तीनों स्त्रियों की बातचीतों से भिन्न था, यह प्रतिदिन सायंकाल नागरिक स्थानों पर शराब का गिलास पीकर बिगड़ी हुई लड़कियों के साथ उन मौज करने वाले लम्बे तगड़े व्यक्तियों के मजाकों से भिन्न था।

पहिली मंजिल पर रहने वाली लड़कियों के नाम थे फरनेन्डे, रास्फेले, और रोजा उर्फ जेड। क्योंकि उसका गिरोह बहुत छोटा था अतः उसने हर किस्म की, हर जाति की लड़कियों को इकट्ठा करने का प्रयत्न किया था जिससे हर ग्राहक को अपने २ आदर्श की, जहाँ तक हो सके वहाँ तक, प्राप्ति कर सके। फरनेन्डे सुन्दर ड्रैस का प्रतिनिधित्व करती, वह बहुत लम्बी बल्कि मोटी, और सुस्त थी। वह एक गाँव की लड़की थी जिसके मुँह पर चित्तियाँ पड़ी हुई थीं और जिसके सिर में छोटे, हल्के, बेरङ्ग के सन की भाँति कंघे से कढ़े हुए बाल थे।

रास्फेले जो कि मार्शेलीज से आई थी एक सुन्दरी यहूदिन की होड़ करती थी। वह पतली थी, उसके गालों की हड्डियाँ उठी हुई थीं जिन पर गालों की लाली लगी रहती थी तथा उसके काले २ घुघंराले बालों के छल्ले जिनपर पोमेड लगी रहती थी, उसके माथे पर झूमते रहते थे। उसके दाएं नेत्र में यदि एक फुली नहीं होती तो उसके नेत्र अवश्य सुन्दर लगते। उसके जबड़े चौड़े थे जिनमें कि ऊपर दो नकली दाँत अन्य सब दाँतों के गन्दे रंग से बिल्कुल भिन्न चमकते थे और उसकी नाक रोमनों की सी थी।

रोजा उर्फ जेड् के पांव छोटे तथा पेट के समान ही वह बिल्कुल गोल गुट्टी थी। वह सुबह से लेकर शाम तक कर्कश स्वर में भद्दे और वासना पूर्ण गाने गाती रहती, मूर्खतापूर्ण तथा कभी अन्त न होने वाली कहानियाँ कहती रहती और बातें करना तभी बन्द करती जब खाना खाना होता या बातें करने के लिये खाना भी छोड़ कर उठ बैठती। वह कभी चुप नहीं रहती, और अपने मुटापे तथा छोटे पावों के बावजूद भी गिलहरी की तरह चंचल थी। और उसकी हँसी कभी यहाँ, कभी वहाँ, कभी बिस्तरे पर, कभी कोने में हर जगह बिना ही किसी बात के, ही ही और ठी ठी में निरन्तर ही गूंजती रहती।

नीचे की मंजिल की दोनों स्त्रियों के नाम थे लुइस उर्फ 'ला कोकोटे' और फ्लोरा जिसको कि इसके जरा से लँगड़ाने के कारण 'बालनशियेर' के नाम से पुकारा जाता था। पहली तो एक तिरंगे पटके के सङ्ग सदा 'लिबर्टी' की भाँति कपड़े पहिनती और दूसरी ताँबे के सिक्कों की एक माला के साथ,

जो उसके गाजर के से बालों में हर कदम पर हिलती और बजती एक स्पेनिश स्त्री की भाँति कपड़े पहिनती। दोनों ही ऐसी लगतीं मानो किसी कारनीवाल के रसोइये हों और ऐसी लगतीं जैसे नीची श्रेणियों की औरतें साधारणतया होती हैं। वे उनसे न तो सुन्दर ही और न असुन्दर ही लगतीं। दर असल, वह किसी सराय की नौकरानियों की भांति लगती थीं। अतः दोनों ही 'पम्पो' कहलाती थीं।

मैडम की सन्तोष दिलाने वाली बुद्धि को तथा उसके हर समय अच्छे बने रहने वाले स्वाभाव को धन्यवाद कि उन पांचों स्त्रियों पर एक शान्त ईर्षा, जो बहुत कम अशान्ति से परिवर्तित होती, छाई रहती। और वह स्थान, जो कि उस छोटे से कस्बे में अन्यत्र नहीं था, दर्शकों से घिरा रहता था। मैडम को इसे सम्मान प्राप्त करवाने में बहुत सफलता मिली थी; वह इतनी विनीत एवं हर एक के प्रति कृतज्ञ रहती, उसके निष्कपट हृदय को इतनी ख्याति थी कि उससे बहुत सोच समझकर व्यवहार किया जाता था। उसके स्थायी ग्राहक उसके ऊपर अपना धन व्यय करते तथा जब वह उनके साथ विशेष मित्रता बर्तती तब प्रमुदित होते। दिन में वे जब उससे मिलते तब कहते:

"आज शाम को तुम जानती हो कहाँ," ठीक जैसे लोग कहते हैं: "भोजन के बाद होटल में।" एक शब्द में, मैडम टेलियर का मकान कहीं जाने को था, और उसके ग्राहक वहाँ रोज मिलने से बहुत कम चूकते।

मई के महीने में एक दिन सांयकाल मिस्टर पोलिन को, जो एक टिम्बर मर्चेन्ट था तथा पहले मेयर रह चुका था, पहले पहल पहुँचने पर किवाड़ बन्द मिले। खिड़की के पीछे रखी रहने वाली छोटी लालटेन नहीं जल रही थी; मकान के अन्दर से कोई आवाज भी नहीं आ रही थी; हर चीज मृतक सी लग रही थी। उसने पहले तो दरवाजा धीरे से खटखटाया फिर जोर से किन्तु कोई उत्तर न आया। तब वह चुपके से सड़क पर आ गया, बाजार में पहुँचते ही उसे मि० डुवंट, बन्दूकसाज मिला। वह भी वहीं जा रहा था, अतः वे दोनों एक साथ ही चल दिये किन्तु फिर भी उन्हें कोई सफ-लता न हुई। किंतु एकाएक उन्हें पास में शोर की एक जोरदार आवाज आई

और उन्होंने मकान के कोने पर जाकर कुछ फ्रांसीसी तथा अंग्रेज नाविक देखे, जो अपने घूसों से बंद किवाड़ों पर प्रहार कर रहे थे।

दोनों व्यापारी वहाँ से जल्दी ही बच निकले कि कहीं उन्हें भी उसमें शामिल न होना पड़े। किंतु एक धीमी सी शिः ने उन्हें रोक दिया; यह मि० टूरनेवो, मछली का इलाज करने वाला था जिसने उन्हें पहिचान लिया था और जो उनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना चाह रहा था। उन्होंने उसे सब बातें बतला दीं, और वह उन दोनों से अधिक परेशान हो उठा क्योंकि वह विवाहित पुरुष तथा एक परिवार का पिता अपने मित्र डाक्टर बोरडे की राय से, सफाई की पोलिसी के लिये, सप्ताह में एक दिन केवल शनिवार को ही वहाँ जाया करता था। यह उसकी क्रमानुगत संध्या थी, और अब वह पूरे सप्ताह तक उससे वंचित रहेगा।

तीनों व्यक्ति घाट तक साथ ही साथ गये और मार्ग में उन्हें बैंकर का लड़का नवयुवक फिलिप्स जो वहां अक्सर आया जाया करता था तथा कलक्टर मि० फिनिप्पीज मिला। वे सब आखरी प्रयत्न करने को रयू आक्स जूइफ्स लौटे। किंतु उन्मत्त नाविक उस मकान को घेरे हुए, उसके दरवाजों पर पत्थर फेंक रहे तथा चिल्ला रहे थे और पहली मंजिल के पांचों ग्राहकों से जितनी जल्दी हो सका उतनी ही जल्दी वह वहाँ से लौट दिये और सड़कों पर निरुद्देश्य घूमने लगे।

अब उन्हें मि० डूपइस इंस्योरेंसएजेन्ट और तब व्यापारिक मण्डल के जज मि० वासी मिले और वे सब लम्बी सैर करने सबसे पहले घाट की ओर चल दिये। वे एक पत्थर की चट्टानों की बनी हुई दीवाल पर बैठ गये और ज्वार भाटों को देखने लगे। जब वे लोग थोड़ी देर तक बैठे रहे तब मि० टूरनेवो ने कहाः "यहाँ कुछ मजा नहीं आया!"

"वास्तव में बात सही है।" मि० फिनिप्पिज ने उत्तर दिया और वे फिर आगे चल दिये।

सड़क से चलते २ पहाड़ी की चोटी तक पहुँच जाने के बाद वे लकड़ी के पुल के जो रेटेन्यू के ऊपर बना हुआ था, ऊपर गये। वे रेलवे के पास आये

और फिर बाजार में पहुँचे ही थे कि एकाएक मि० फिनिप्पीज और मि० टूरनेव्रो में एक खाने योग्य खुम्भी के ऊपर झगड़ा हो गया। उनमें से एक कहता था कि वह उसे पड़ोस में ही पड़ी मिली थी।

पहले से ही परेशान होने के कारण वे दोनों क्रोध में थे और यदि इस समय अन्य लोगों ने बीच बिचाव नहीं किया होता तो उनमें घूंसेबाजी हो जाती। मि० फिनिप्पीज क्रोध में उन्मत्त एक ओर चला गया। फिर शीघ्र ही एक्स मेयर मि० पोलीन, और इन्स्योरेन्स एजेंट मि० डुपूइस में कलक्टर की तनख्वाह पर और उसकी कमाई पर कि वह कितना कमाता था विवाद छिड़ गया। वे एक दूसरे से आपस में अपमानजनक वचन कहने लगे कि एकाएक बड़ी तेज चिल्लाहट सुनाई दी और नाविकों का झुण्ड जो अब प्रतीक्षा करते २ आकुल हो उठा था। मैदान में आया। वे दो दो कर के हाथ में हाथ डाले कतारों में चल रहे थे। उन्होंने एक लम्बा जुलूस बना लिया था और क्रोध में उन्मत्त चिल्ला रहे थे। ये सब लोग जाकर एक बड़े से फाटक के अन्दर छिप गये और वह आवाज गिरिजाघर की ओर जाकर धीरे २ विलीन हो गई। यह आवाज फिर भी बहुत देर तक सुनाई देती रही और बाद में कहीं जाकर पुनः शान्ति हुई। मि० पोलीन और मि० डुपूइस एक दूसरे से अभिवादन किये बिना ही भिन्न २ दिशाओं में चल दिये।

बाकी चारों फिर चले और स्वाभावतः ही मैडम टेलियर के मकान की दिशा में गये। वह अभी भी बन्द और शान्त था। एक शांत किंतु जिद्दी और पियक्कड़ आदमी उस होटल के द्वार को खटखटा रहा था। वह रुका और उसने फ्रेडरिक चौकीदार को धीमे स्वर में आवाज दी, किंतु कोई उत्तर न पाकर वह दरवाजे की सीढ़ियों पर ही बैठकर आगे घटने वाली घटनाओं की प्रतीक्षा करने लगा।

अन्य लौटने जा ही रहे थे कि सड़क के दूसरे सिरे पर से शोर मचाता हुआ नाविकों का गिरोह फिर से दिखलाई दिया। फ्रांसीसी नाविक चिल्ला रहे थे "मार्शेलीज़" और अंगरेज नाविक, "ब्रिटेन पर शासन करो।"

कोई जहाज दीवाल से टकरा गया था और ये पियक्कड़ दानव, घाट की ओर भागे, जहाँ दोनों राष्ट्रों में युद्ध छिड़ गया। इसमें एक अंग्रेज की बाँह टूट गई और एक फ्रांसीसी की नाक फट गई।

पियक्कड़ जो द्वार के बाहर ही रुक गया था, पियक्कड़ों और बच्चों की तरह जब वे परेशान हो जाते हैं, बैठा २ अब रो रहा था; और अन्य सब लोग जा चुके थे। धीरे २ कर उस नगर में शोर शांत हो गया और कभी २ उठने वाले छोटे मोटे शोर दूर जाकर शांत होते चले गये।

एक व्यक्ति मि० दूरनेवो मछली का इलाज करने वाला, इस बात पर परेशान होकर कि उसे फिर एक सप्ताह तक रुकना पड़ेगा अभी तक घूम रहा था। उसे उम्मीद थी कि कुछ न कुछ हो जायगा, किंतु क्या होगा यह वह नहीं जानता था; किंतु उसे पुलिस पर क्रोध आ रहा था कि एक सार्वजनिक कार्य एवं लाभ के लिये उत्साहित किया हुआ व्यवसाय, जो उसकी शक्ति के अंदर की बात थी, उसे इस तरह बंद किये जाने की क्यों इजाजत दी गई।

वह फिर वहाँ गया, उसने दीवालों को जांचा और कारण मालूम करना चाहा। द्वार पर उसने एक बोर्ड लगा हुआ देखा अतः उसने एक मोमबत्ती जलाई और उसे पढ़ा। उस पर टेढ़े मेढ़े अक्षरों में लिखा था: "धर्म-दीक्षा केकारण बंद।"

तब वह वहाँ ठहरना व्यर्थ समझ उस पियक्कड़ को उसी द्वार के बाहर प्रगाढ़ निद्रा में लीन फर्श पर लेटा छोड़ कर चला गया।

दूसरे दिन सब स्थायी ग्राहक बगल में कागजों का बण्डल दबाये कोई किसी, कोई किसी बहाने रयू आक्स जुइफ्स गये और सबने सरसरी दृष्टि से उस रहस्यमय बोर्ड को पढ़ा:

"धर्म-दीक्षा के कारण बंद।"

२

मैडम का एक भाई उसकी मातृभूमि विरविले, जो कि योर प्रांत में थी, में बढ़ई था। येटोट में जब मैडम सराय का काम करती थी तब वह अपने भाई की एक लड़की कान्स्टेन्स रिवेट की धर्म-माता बनी थी; वह स्वयं भी

अपने पितृपक्ष से रिवेट थी। उसका भाई, जो यह जानता था कि उसकी बहिन की आर्थिक अवस्था अच्छी थी: उसे अपनी आंखों से ओझल नहीं करता था। उन दोनों के रहने वाले स्थानों में काफी अन्तर था और वे अपने २ व्यवसाय के कारण अलग २ रहते थे और आपस में मिलते भी बहुत कम थे। किंतु जब लड़की की अवस्था १२ वर्ष की हो गई और उसको दीक्षित किये जाने का समय आ गया तब उसने अपनी बहिन को लिखने का अवसर नहीं खोया और उसको उस धर्मदीक्षा समारोह में उपस्थित होने के लिये लिखा। वृद्ध माँ बाप की मृत्यु हो चुकी थी अतः मैडम अस्वीकार न कर सकी और उसने उस निमन्त्रण को स्वीकार कर लिया। उसके भाई, जिसका नाम जोसेफ था, को आशा थी कि अपनी बहिन की ओर तनिक ध्यान देने और अपनापन जतलाने से वह अपनी सम्पत्ति को उस लड़की के नाम कर देगी, क्योंकि उसके कोई अपना बच्चा तो था ही नहीं।

अपनी बहिन के व्यवसाय से उसे तनिक भी चिन्ता नहीं थी, अलावा उसके विरविले में कोई भी इस बात के बारे में जानता भी नहीं था। जब कभी वे लोग मैडम के बारे में बातें करते, वे केवल इतना ही कहा करते: "मैडम टेलियर फेकेम्प में रह रही है। जिसका यह अर्थ हो सकता था कि वह वहाँ अपनी ही आमदनी पर रह रही थी। विरविले व फेकेम्प के अन्दर बीस मील का अन्तर था, और एक ग्रामीण किसान के लिये जमीन के बीस मील एक शिक्षित व्यक्ति के समुद्र यात्रा से भी अधिक थे। विरविले के निवासी रोम से आगे कभी नहीं गये थे, और फेकेम्प के व्यक्तियों को पाँच सौ मकानों के गाँव में जो मैदान के बीच में और दूसरे किले में अवस्थित था, कोई आकर्षण दिखलाई नहीं देता था। किसी भी तरह, उसके व्यापार के विषय में कुछ भी नहीं जाना जा सकता था।

किन्तु दीक्षा समारोह पास आता जा रहा था और मैडम बहुत परेशान थी उसके पास कोई सह-अध्यक्षा नहीं थी और वह घर को एक दिन के लिये भी नहीं छोड़ना चाहती थी। किंतु उसको भय था कि नीचे की

मन्जिल वाली लड़कियों और ऊपर की मन्जिल वाली लड़कियों में विद्रोह अवश्य हो जायगा, कि फ्रेडरिक शराब अधिक पी लेगा और उस हालत में किसी को भी एक शब्द पर ही ठोक-पीट डालेगा ! अन्त में, किसी भी तरह उसने उस आदमी को छोड़ कर बाकी सबको अपने साथ ले जाने और उसे एक दिन की छुट्टी देने का निश्चय किया।

जब उसने अपने भाई से पूछा तब उसने कोई आपत्ति न की किन्तु एक रात उन सबको रखने की जिम्मेवारी ले ली। अतः आठ बजे की एक्स-प्रेस से मैडम तथा उनकी अन्य साथियाँ सैकन्ड क्लास में बैठकर चल दीं। क्यूजेले तक वे लोग अकेले ही थे और चकर-चकर बातें करते ही रहे, किन्तु उस स्टेशन पर डिब्बे में एक दम्पति ने प्रवेश किया। पुरुष, एक प्रौढ़ किसान लोट कालर का नीला ब्लाउज पहने हुये था, जिसकी बाँहें कलाई पर तङ्ग थीं और उस पर सफेद रेशम से कढ़ाव हो रहा था, और उसने एक पुराना हैट पहिन रखा था। उसके एक हाथ में एक बड़ा सा हरा छाता था और दूसरे में एक बड़ी टोकरी, जिसमें से तीन भयभीत बतखों के सिर दिखलाई दे रहे थे। स्त्री जो ग्रामीण ढङ्ग के अच्छे कपड़ों में लदी पड़ी थी, चिड़िया की सी शकल की थी और उसकी नाक हुक की तरह नुकीली थी। वह अपने पति के सामने ही बैठी हुई थी और हिलती तक नहीं थी क्योंकि इतनी तेज तर्रार संगति में पाकर वह आश्चर्यचकित हो गई थी।

गाड़ी के अन्दर भिन्न २ चमकीले रङ्गों के वस्त्र थे। मैडम एड़ी से चोटी तक नीली शिफ्फ से लदी हुई थी और उसकी ड्रेस पर नकली फ्रेन्च कश्मीरे की चमकीली शाल थी फरनन्डे स्कोटिस ड्रेस पहिने हुए थी जिसकी चोली, जिसे उसके साथियों ने इतनी अधिक कसदी थी जितनी अधिक उनसे कसी जा सकती थी, ने उसकी छातियों को दो गुम्मजों की भाँति कर दिया था जो लगातार नीचे ऊपर हिल रही थीं, मानो किसी ठोस वस्तु के नीचे कोई तरल पदार्थ हो। एरफेले, एक परदार स्कोच टोपी पहिने हुये थी, जो चिड़ियों से भरे घोंसले की भाँति लग रहा था, और एक सिल्क ड्रेस, जिस पर सुनहरी बूँदें बनी हुई थीं, पहिने हुए थी, उसके

अन्दर कुछ ऐसा पुरयियापन था कि वह (ड्रैस) उसकी यहूदियोंकी शकल को फब जाती थी। रोजा उर्फ जेड गुलाबी झालरदार पेटीकोट पहिने हुए थी और एक मोटी बतख की तरह बौनी सी लग रही थी, जबकि दोनों पम्पो ऐसी लग रही थीं मानो उन्होंने अपनी ड्रैस बाबा आदम के जमाने के पुराने फूलदार पर्दों में से काटकर बनाई हों।

स्त्रियों ने,यह देखते ही कि वे अब उस डिब्बे में अकेली नहीं रह गई, गम्भीर भाव धारण कर लिये और उन विषयों पर वार्तालाप करने लगीं, जिससे दूसरों के मन में उनके विषय में अच्छी धारणा बन सके। किन्तु बॉल्बेक पर हल्की मूछों वाला एक व्यक्ति, जिसके गले में सोने की एक जंजीर तथा उंगलियों में अँगूठियाँ पड़ी हुई थीं, अपने सिर पर एक टोकरी में आइल क्लाथ में लिपटे हुये कुछ बन्डल लेकर प्रविष्ट हुआ। मालूम पड़ता था कि वह एक अच्छे स्वभाव का आदमी था और मज़ाक करना चाहता था।

"क्या आप लोग अपना २ मकान बदल रही हैं?" उसने पूछा।

इस प्रश्न से सबको काफी परेशानी हुई।

मैडम जल्दी ही सँभल गई और अपनी पार्टी की लज्जा बचाने को बोली:

"मेरा विचार है कि आपको विनम्र बनने की चेष्टा करनी चाहिये।"

उसने क्षमा माँगी और बोला: "मैं आपसे क्षमा माँगता हूँ, मुझे आप लोगों को योगिन कहना चाहिये था।"

मैडम या तो इसका उत्तर न दे सकी, या उसने अपने आपको काफी ठीक मान लिया। उसने उसे झुक कर अभिवादन किया और अपने ओंठ काट लिये।

तब रोजा उर्फ जेड और वृद्ध किसान के बीच में बैठा हुआ व्यक्ति जान बूझ कर बतखों की ओर, जिनके सिर टोकरी से बाहर निकले हुये थे आँख मारने लगा। जब उसे निश्चय हो गया कि उसके पास बैठे हुए लोगों की दृष्टि उस पर जम गई है तब वह उनके हुकों के नीचे से उन्हें छेड़ने

लगा और अपने सब साथियों को हंसाने के लिये हँसी करते हुए बोलाः

"हमने अपना छोटा तालाब छोड़ दिया है, क्वेक! क्वेक! अब हम समुद्र की रेती में जाएंगे, क्वेक! क्वेक!"

अभागे पक्षियों ने उसके प्रेम से बचने के लिये अपनी २ गर्दनें मोड़ लीं, और अपनी इस कैद से छुटकारा पाने का बहुत प्रयत्न किया। फिर एकाएक दुख से व्यथित हो क्वेक क्वेक कर दर्द-भरे शब्द में चिल्लाये। स्त्रियाँ बड़ी जोर से हँस दीं। उसे अच्छी तरह से देखने को वे एक दूसरे के ऊपर झुकीं और धक्का देने लगीं, वे सब बतखों में बहुत रुचि ले रही थीं और वह व्यक्ति दूनी शान और अकड़ से उन बतखों को दूना परेशान करने लगा।

रोजा उसमें सम्मिलित हुई और अपने पड़ोसी की टाँग पर झुक कर उसने तीनों पक्षियों के सिर पर आलिङ्गन किया। शीघ्र ही सब लड़कियाँ भी आलिंगन करने को झुकीं। उस व्यक्ति ने उस टोकरी को अपने घुटनों पर रख लिया और उन बतखों में कुछ लगा २ कर उन्हें ऊपर नीचे उछालने लगा। दोनों ग्रामीण, जो अपनी बतखों से भी अधिक परेशान लगते थे, बुत बने से देखते रहे मानो वे अपनी आँखें चला ही न पाते हों, और उनके झुर्रीदार वृद्ध चेहरों पर कोई भी हँसी या मुस्कराहट का भाव नहीं था।

तब उस व्यक्ति ने, जोकि एक व्यापारी यात्री था, हँसी मजाक के रूप में उन स्त्रियों को गेटिस दी, और एक बन्डल उठाकर उसने खोल डाला। यह एक चाल थी; क्योंकि पारसल के अन्दर गेटिसें ही भरी थीं। उसमें नीली, गुलाबी, लाल तथा जामुनी रङ्ग की सिल्क की गेटिसें थीं और बकसुए गिलट के थे, जिनमें रति और काम दोनों का एक दूसरे को आलिङ्गन करते हुये चित्र बना था। लड़कियाँ उसे देख प्रसन्नता से चीख पड़ीं और उसकी ओर गम्भीरता से देखने लगीं। जब कभी स्त्रियाँ सौदेबाजी करती हैं तब इसी भाँति हर वस्तु को देखती हैं। वे एक दूसरे की ओर मूक दृष्टि से देखने लगीं और फुसफुसाहट और दृष्टियों में एक दूसरे के प्रश्न का उत्तर देने लगीं। स्वयं मैडम के हाथ में एक नारङ्गी रङ्ग की एक गेटिस थी जो

दूसरों से चौड़ी तथा अच्छी थी और ऐसी संस्था की स्वामिनी के ही योग्य थी।

"आओ बच्चियो" वह बोला, "तुम इन्हें पहिन कर देखो।"

आश्चर्य से चीखों की लहर दौड़ गई, और उन्होंने अपने २ पेटीकोट अपनी २ टाँगों में दबा लिये, मानो वह उन्हें फंदे में फँसा रहा हो, किंतु वह अपनी बात के लिये चुपचाप इन्तजार करता रहा और बोला: "खैर, यदि आपको नहीं चाहिये तो मैं इन्हें बंद करके रख सकता हूँ।"

उसने धूर्त्तता से कहा: "जो जिस भी जोड़े को पहिन लेगी मैं उसे वह गेटिस ही मुफ्त दे दूँगा।"

किंतु उनमें से किसी ने नहीं पहनी, वे सीधी तनी बैठी रहीं और बड़ी अजीब धज से।

किंतु वे दोनों पम्पो इतनी परेशान दिखलाई पड़ने लगीं कि उसे अपना आफर फिर से देना पड़ा। फ्लोरा विशेषतया हिचकिचाई और उसने उसे दबाया:

"आओ मेरी प्यारी आओ, थोड़ी सी हिम्मत करो! देखो तो सही इस बैंजनी रङ्ग की गेटिस को, यह तुम्हारी पोशाक में गजब की फबेगी।"

अब उसने अपना निश्चय कर लिया और अपनी घूँस उठाते हुये उसने ढीलाढाला भद्दा मोजा पहिना हुआ दूध-वालियों का सा मोटा पैर निकाल कर दिखलाया। व्यापारी यात्रिक ने नीचे झुक कर पहिले तो गेटिस घुटनों से नीचे बाँधी फिर ऊपर की ओर, और उसने लड़की के आहिस्ते से सुहरा दिया जिससे वह चिल्ला कर कूद पड़ी। जब उसने यह काम कर दिया तब उसने उसे बैंगनी रङ्ग का जोड़ा दे दिया और बोला: "अब कौन?"

"मैं! मैं!" सब एक साथ ही चिल्ला पड़ीं और उसने रोजा उर्फ जेड को पहिनाना शुरू किया, जिसने बिना किसी शकल की, बिना ऐड़ी की कोई गोल २ चीज उघाड़ी।

व्यापारी यात्रिक ने फरनन्डे को धन्यवाद दिया और उसके शक्तिशाली खम्भों की ओर झुका।

सुन्दरी यहूदिन की पतली टाँग की हड्डी के साथ चापलूसी कम हुई और लुईस कोकोट ने बतौर मज़ाक उसका पेटीकोट उस आदमी के सिर पर रख दिया, अतः मैडम को उस धृष्ट व्यवहार में दखलन्दाज़ी करने को बाध्य होना पड़ा।

अन्त में मैडम ने स्वयं अपनी सुंदर, पुष्ट, दृढ़ माँस पेशियों वाली नोरमन टाँग बाहर निकाली और व्यापारी यात्रिक ने आनंद एवं आश्चर्य से फ्राँसीसी सैनिक की भाँति फुर्ती से अपना टोप उतार कर उसको अभिवादन किया।

दोनों किसान, जो विस्मय के कारण मूक हो रहे थे, अपनी आँखों के किनारों से, कनखियों से देखते रहे। वे ठीक फाउलों की भांति देख रहे थे अतः जब हलकी मूछों वाला वह व्यक्ति बैठा हुआ और उनके मुँह के पास मुँह ले जाकर बोलाः "कुकडूँ कूँ" तब हँसी का फिर से तूफान आ गया।

दोनों वृद्ध मोटविले पर अपनी टोकरी, बतखों और छाते को लेकर उतर गये और उन्होंने स्त्री को अपने पति से चलते २ कहते सुनाः

"ये फूहड़ स्त्रियाँ हैं और उस बदनाम जगह-पेरिस को जा रही हैं।"

मज़ाकिया व्यापारी यात्रिक इतना बुरा व्यवहार करने के बाद जिसके कारण मैडम को शीघ्र ही उसका मिज़ाज ठिकाने लगाने के लिये कुछ कहना पड़ा, रोने पर उतर गया। वह बोलाः " अब हमको ज्ञान हो जाएंगे कि हमें नवागन्तुकों से बातें नहीं करनी चाहिये।"

ओइज़ल में उन्होंने गाड़ी बदली, और आगे एक छोटे से स्टेशन पर मि० जोसेफ़ रिवेट एक बड़ी सी गाड़ी लिये हुये, जिसमें कितनी ही कुर्सियाँ लगी हुई थीं तथा एक सफ़ेद घोड़ा जुता हुआ था, उनकी प्रतीक्षा कर रहा था।

बढ़ई ने उन सब स्त्रियों का विनम्रता से आलिंगन किया और उनको अपनी गाड़ी में चढ़ने में सहायता की।

उनमें से तीन पीछे वाली तीन कुर्सियों पर बैठीं और रास्फेले, मैडम तथा उसका भाई आगे की तीन कुर्सियों पर, और रोजा, जिसके लिये कोई सीट नहीं थी, फरनन्डे के घुटनों पर जितने आराम से बैठ सकती थी, बैठी। गाड़ी चल दी।

किन्तु घोड़े के चलने पर गाड़ी इतने भयङ्कर ढङ्ग से हिली कि कुर्सियाँ यात्रियों को हवा में कभी बाँये कभी दांये उछालती हुई मानो कि वे नाचने वाली कठपुतली हों, नाचने लगीं। इसके कारण वे सब चीखने चिल्लाने लगीं। उनकी चीखें चिल्लाहटें कुछ २ गाड़ी के झटकों में दब जाती थीं।

वे गाड़ी के किनारों की ओर झुक जातीं, उनके हैट उनकी पीठों पर गिर जाते, उनकी नाकें उनके कन्धों से जा टकरातीं, और घोड़ा अपनी गर्दन लम्बी किये हुए, पूँछ, जोकि छोटे से बिना बालों वाले चूहे की तरह थी, सीधी ताने हुए, जिससे वह कभी २ अपने नितम्बों को बुहार देता था, चल रहा था।

जोसेफ रिवेट, एक पैर पर बैठा हुआ, दूसरे को डन्डे पर रखे हुए, लगामों को पकड़े हुए, कुहनी ऊँची किये हुये टिक टिक कर रहा था, जिससे घोड़ा कान ऊँचे उठा कर और भी तेजी से चलने लगता।

वह हरा-भरा प्रदेश दोनों ओर फैला हुआ था, पुष्पों की पीली २ पराग एक तेज, मीठी, मादक सुगन्ध दे रही थी, जिसे हवा उड़ा कर थोड़ी दूर ले जाती थी।

राई के बीच में गट्टे के नीले फूल अपना सिर ऊँचा उठाये हुये थे। स्त्रियों ने उन्हें तोड़ने की इच्छा व्यक्त की किन्तु मि० रिवेट ने रुकना अस्वीकार कर दिया।

कहीं कहीं पोस्ते के पेड़ इतने गहन-दिखलाई दे जाते कि सारे के सारे खेत रक्त से सने हुए से लगते और गाड़ी जो और भी अधिक आकर्षक रङ्ग के फूलों से लदी हुई मालूम पड़ती थी, खेतों के पेड़ों की ओट में छिप जाने को और फिर से प्रगट होजाने को और फिर से पीली या हरी खदी

फसलों, जिनमें नीले या लाल रङ्ग के फूल लगे हुये थे, में से जाने को, जङ्गली फूलों से लदे हुये खेतों में से होती हुई जाने लगी।

बढ़ई के घर के द्वार तक पहुँचते २ उनको एक बज गया। वे थक गये थे और क्योंकि घर से चलने के बाद से उन्होंने कुछ खाया पिया नहीं था अतः भूखे भी थे। मैडम रिवेट दौड़कर बाहर आई और एक के बाद एक करके चुम्बनों से, घर में अन्दर आने पर, उनकी थकावट दूर की। मालूम पड़ता था कि वह अपनी ननद को, जिस पर वह अपना स्पष्ट ही इजारा कर लेना चाहती थी, आलिंगन करते कभी नहीं थकेगी। उन्हें कारखाने के अन्दर, जिसे दूसरे दिन के सहभोज के लिये साफ किया गया था, भोजन कराया गया।

आमलेटों, सुअर की छोटी आंतों और साइडर ने उनकी थकावट दूर कर दी।

रिवेट ने एक गिलास ले लिया जिससे उन्हें वह मदिरा पीने का निमन्त्रण दे सके। और उसकी स्त्री जिसने सामान तैयार किया था, उनको परोसने को खड़ी थी और तश्तरियों में सामान ला ला कर उनसे धीरे २ पूछती कि उन्हें किसी वस्तु की आवश्यकता तो नहीं थी। दीवालों के सहारे कितने ही तख्ते खड़े थे, और छीजन छालन कोनों में पड़ी थी। उनमें से लकड़ी के छिल जाने के कारण लकड़ी की गन्ध, जोकि फेफड़ों में प्रवेश करती चली जाती है, आरही थी।

वह उस छोटी लड़की को देखना चाहती थी किन्तु वह चर्च गई हुई थी और शाम से पहले लौटने वाली नहीं थी अतः वे सब गाँव में घूमने घामने चल दीं।

वह एक छोटा सा गाँव था, जो प्रधान सड़क के किनारे था। सड़क के दोनों ओर दस या बारह घर थे जो रोटी वाले, गोश्त वाले, बढ़ई, सराय वाले, मोचियों आदि को किराये पर उठा दिये गये थे।

चर्च सड़क के अन्त में था। उसके चारों ओर आंगन था और वे चार बड़े २ नीबू के पेड़, जो द्वार के ठीक बाहर ही खड़े थे और उस पर

छाया किये हुये थे। यह चर्च पथरी का बना हुआ था। बनावट में कोई विशेषता नहीं थी और मीनार सिलेटी रङ्ग की थी। अब तुम इससे आगे निकल जाओगे तो खुले गाँव में आ जाओगे, जो कि इधर उधर से हटे हुये थे।

रिवेट यद्यपि अपने काम करने वाले कपड़े पहने हुए था और बड़ी अकड़ से चल रहा था फिर भी उसने शिष्टाचार के नाते अपनी बहिन के हाथ में हाथ दिया। उसकी पत्नी, जो रास्फेले की सुनहरी धारीदार पोशाक से लदी हुई थी उसके और फरनन्डे के बीच में चल रही थी और गोलाकार रोजा लुइस कोकोट और फ्लोरा, जो थक कर लँगड़ाती चली आ रहीथीं, के साथ पीछे २ आ रही थी।

ग्रामीण अपने द्वारों पर आये, बच्चों ने खेलना छोड़ दिया, खिड़कियों के परदे उठे, जिनमें से मलमल की टोपी दिखलाई दे जाती, और एक वृद्धा ने, जो लगभग अन्धी ही थी एक क्रौस बनाया मानो कि यह कोई धार्मिक जलूस हो। वे सब उन सुन्दरी स्त्रियों को, जो इतनी दूर से जोसिफ रिवेट की छोटी लड़की के धर्म दीक्षा समारोह में सम्मिलित होने के लिये नगर से आई थीं, देख रहे थे। उन लोगों की दृष्टि में बढ़ई का सम्मान बहुत बढ़ गया।

जब वे लोग चर्च के पास से निकलीं तब उन्हें कुछ बच्चों के गाने की ध्वनि सुनाई दी। छोटे बच्चों की पतली आवाज में गाना हो रहा था, किन्तु मैडम ने उन छोटे बच्चों के कार्य में भङ्ग पड़ जाने के भय से उन्हें वहाँ अन्दर नहीं जाने दिया।

सैर के पश्चात्, जिसमें जोसेफ ने खास २ बनी हुई इमारतों की गणना की, पृथ्वी के उत्पादन, और गायों भेड़ों की उपादेयता के विषय में बतलाया, स्त्रियों के उस झुण्ड को घर ले गया और क्योंकि उसका घर बहुत छोटा था अतः उसने अपने घर के एक २ कमरे में दो २ करके उन्हें टिकाया।

केवल एक बार के लिये, रिवेट लकड़ी के टुकड़ों पर अपने कारखाने में और उसकी पत्नी अपनी ननद के बिस्तर पर सोने वाली थी तथा

फरनन्डे और रासफेले दूसरे कमरे में एक साथ टिकी थीं। लुइस और फ्लोरा को रसोई घर मिला, जहाँ उनके लिये फर्श पर एक चटाई बिछा दी गई थी; और रोजा को अपने लिये एक छोटा सा लकड़ी का पट्टा ऊपर झीने में मचान के पास मिला जहाँ धर्म दीक्षा दी जाने वाली लड़की सोने वाली थी।

लड़की जब अन्दर आई तब उस पर चुम्बनों की बौछार लग गई। हर स्त्री उस कोमल अभिव्यक्ति की उस व्यवसायक फुसलाने की आदत से प्रेरित होकर, जिसने उन्हें रेलवे में उन बतखों का आलिंगन करने को प्रेरित किया था, उसका चुम्बन लेना चाहती थी।

उन्होंने उसे गोदी में लिये उसके छोटे हलके मुलायम बालों को थपथपाया, और प्रेम तथा स्नेह के प्रबल तथा स्वेच्छापूर्ण वेग से उसे अपनी भुजाओं में दबा लिया और बच्ची ने, जो बहुत शील तथा मिलनसार स्वभाव की थी इस सबको धैर्य पूर्वक सहन किया।

क्योंकि दिन भर में सब लोग बुरी तरह से थक गई थीं अतः भोजन करने के पश्चात् शीघ्र ही वे अपने २ बिस्तरों पर चली गईं। सारा गाँव बिल्कुल निस्तब्ध एवं नीरव हो गया, नीरवता जो कि धार्मिक शान्ति के समान थी, और लड़कियाँ जो अपने मकान के शोरगुल के वातावरण की आदी थीं उस सोये हुये गाँव की निस्तब्धता से प्रभावित सी प्रतीत हुईं। वे काँपी, ठण्ड से नहीं वरन् एकान्त की उन कम्पकंपियों से जो कि दुखी और परेशान हृदयों में उठा करती हैं।

बिस्तरों पर दो दो कर लेटते ही उन्होंने एक दूसरे को, मानो कि उस शान्ति एवं पृथ्वी की प्रगाढ़ निद्रा को अपनी रक्षा करने की भावना से, अपनी २ भुजाओं में भर लिया। किन्तु रोजा उर्फ जेड जो अपने पट्टे पर अकेली थी, को एक अस्पष्ट एवं दुखी भावना ने आच्छादित कर दिया।

वह सो न सकने के कारण अपने बिस्तर पर इधर से उधर करवटें बदल रही थी कि उसे एक छोटे बच्चे की दूसरे कमरे से धीमे २ रोने की और सिसकियों की आवाज सुनाई दी। वह डर गई, उसने उसे

आवाज दी। उसे सिसकियों से भरे दुर्बल स्वर में उत्तर मिला। यह वह छोटी लड़की थी, जो अपनी माँ के कमरे में सोया करती थी और अपनी छोटी सी मचान पर भयभीत हो गई थी।

रोजा खुश हो गई, उठी, और धीरे २ ताकि कोई जाग न जाय, उसके पास पहुँची और उसे अपने कमरे में लिवा लाई। उसने उसे अपने गर्म बिस्तरे पर लिटा दिया; प्यार किया और अपनी छाती से चिपकाया, दुलारा, कोमलता के कितने ही उपचार काम में लाई, और अन्त में स्वयं भी शान्त होकर सो गई। और सुबह तक धर्म दीक्षा प्राप्त करने वाली लड़की, रोजा के उघड़े स्तनों पर अपना सिर धरे सोती रही।

पाँच बजे की चर्च की घन्टी ने इन सब स्त्रियों को, जोकि नियमानुसार सारी सुबह सोती रहती थीं, उठा दिया। किसान पहले ही उठ चुके थे और स्त्रियाँ एक मकान से दूसरे मकान में व्यस्त हो, कलफ लगी हुई, छोटी मलमल की ड्रैसों को कपड़ों की पोटलियों में, या बहुत लम्बे मोमिया कागजों के रैपरों में रख कर सावधानी से लेकर आ-जा रही थीं।

सूर्य नीलाकाश में जो अभी तक आकाश के घेरे में अरुणच्छटा दिखला रहा था, काफी ऊँचा चढ़ चुका था। मानो प्रभात निकलने की धूमिल रेखायें रह गई हों। फाउलों के परिवार मुर्गियों के दरबों के पास घूम रहे थे और एक काला चमकदार वक्षस्थल तथा रङ्गीन टोपी वाला मुर्गा इधर उधर घूमता हुआ अपना सिर ऊँचा उठाता, पंखों को फड़फड़ाता और अपनी तेज आवाज से चिल्लाता, जिसे दूसरे मुर्गे दुहरा देते।

पास पड़ौस के मुहल्लों और टोलों से सब तरह की गाड़ियाँ आईं और गहरे रङ्ग की ड्रैसों में नोरमन स्त्रियों को, जो अपने गले में रूमाल डाले हुए थीं, जोकि उन्होंने अपने वक्षस्थलों पर चाँदी-की सौ साल पुरानी फूलदार पिनों से बांध रखे थे, ला लाकर उतार रही थीं।

पुरुषों ने अपने नये फ्राक कोटों के ऊपर या हरे रङ्ग के कपड़ों के अपने पुराने ड्रैस कोटों के ऊपर वास्कट पहिन रखे थे। घोड़े घुड़सालों में बाँध

दिये गये और ग्रामीण आवागमन के साधनों की पंक्तियाँ सड़क पर लगी हुई थीं। हर ज़माने के हर शक्ल के गाड़ियाँ, रथ, मझोली, तांगे या तो अपने बम्बों के सहारे पड़े हुये थे या फिर उनके बम्ब आकाश की ओर उठे हुये थे।

बढ़ई के मकान में शहद की मक्खियों के छत्ते की भाँति व्यस्तता थी। ड्रेसिंग जाकेट और पेटीकोट पहिने हुये स्त्रियाँ अपने लम्बे, पतले, हलके बालों से, जो ऐसे लगते थे कि मानो रंगने से हल्के पड़ गये थे तथा टूटते गये थे, बच्ची को, जो मेज के पास स्थिर एवं चुपचाप खड़ी थी, कपड़े पहिनाने में लग रही थीं और मैडम टेलियर अपनी बटालियन को काम करने के आदेश दे रही थी। उन्होंने उसे नहलाया, उसके बाल काढ़े और बहुत सी पिनों से उसकी ड्रेस में पट्टे डाले तथा उस ड्रेस को जो बहुत बड़ी थी उसकी कमर में पहिनाया।

जब वह तैयार हो गई तब उसे वहीं चुपचाप बैठने को कहा गया और स्त्रियाँ जल्दी जल्दी तैयार होने को चल दीं।

चर्च की घन्टी फिर से बजने लगी और उसकी गूँज एक दुर्बल आवाज की भाँति जो शीघ्र ही सुनाई देना बन्द हो जाती है आकाश में जाकर विलीन हो गई। वे लोग घरों से निकल आये और उस चर्च की सी इमारत की ओर, जिसमें स्कूल और विशाल गृह दोनों ही थे, चल दिये। वह गाँव के इस छोर पर थी जब कि चर्च बिलकुल दूसरे छोर पर।

माता पिता अपने भिन्न सूरत शक्लों वाले पुत्र पुत्रियों के साथ अपने सुन्दर से सुन्दर कपड़े पहिन कर अपने तन की, जो सदा काम में लगे रहते हैं, ढीली ढाली गतियों से चल दिये।

छोटी लड़कियाँ मलमल के बादलों में, जो मथी हुई क्रीम की भाँति लग रही थीं, छिप गईं और लड़के होटल के बॉय की भाँति, जिनके सिर पोमेड से चमक रहे थे, वे अपने पांवों को अधर उठाकर चल रहे थे ताकि उनके काले पाजामों पर कहीं धूल धक्कड़ न जम जाय।

परिवार के लिये यह कुछ गर्व का विषय था, दूर २ के मुहल्लों से

आये हुये रिश्तेदारों में से बहुत सों ने बच्ची को घेर रखा था, और इस तरह से बढ़ई की पूर्ण विजय हो गई थी।

मैडम टेलियर की रेजीमेन्ट अपनी स्वामिनी के नेतृत्व में कोन्सटेन्स के पीछे २ चल दी। उसके पिता ने अपनी बहिन के हाथ में हाथ डाल रखा था, उसकी मां रास्फेले की बगल में चल रही थी, फरनन्डे रोजा के साथ और दोनों पम्पो एक साथ चल रही थीं। इस तरह वे शान से पूरी वर्दी में एक जनरल के स्टाफ की भाँति गाँव में चल रही थीं और गाँव पर आश्चर्य जनक प्रभाव पड़ा।

स्कूल में लड़कियां मास्टरनी के पास और लड़के मास्टर के पास गये और जाते ही उन्होंने एक प्रार्थना बोली। लड़के दो २ की पंक्ति में, जो कि गाड़ियों, जिनमें घोड़े खोल दिये गये थे, की पंक्तियों के बीच में थी, चल रहे थे और लड़कियाँ भी उसी क्रम से उनके पीछे २ आ रही थीं। गाँव के सब पुरुषों ने अपनी विनम्रता के कारण स्त्रियों को आगे चलने की सुविधा दे दी थी, लड़कियों के बाद ही स्त्रियाँ, तीन दांईं ओर, तीन बांईं ओर जलूस को और बड़ा बनाती जा रही थीं। उनकी पोशाकें आतिशबाजी के फूलों की भाँति मनोहर लग रही थीं।

चर्च में पहुँचते ही भक्त समुदाय उत्तेजित हो उठा। वे देखने के लिये एक दूसरे को धक्का देते, मुड़ते और झटका देते। प्रार्थना करने वालों में से कुछ जोर २ से बोल पड़े। वे लोग इन स्त्रियों, जिनकी पोशाकें पुरोहित के चोगे से भी अधिक चमकदार थीं, को देख कर बहुत आश्चर्यचकित हो गये थे।

मेयर ने कोयर के पास ही दाहिनी ओर की पहली कुर्सी उनके बैठने के लिये दी और उस पर अपनी भाभी के साथ मैडम टेलियर जा विराजी। फरनन्डे रास्फेले, रोजा उर्फ जेड और दोनों पम्पो बढ़ई के साथ दूसरी सीट पर बैठ गईं। गाने वालों के झुण्ड में बच्चे-एक ओर लड़के, दूसरी ओर लड़कियाँ घुटनों के बल बैठीं। और लम्बी मोमबत्तियाँ जो वे पकड़े हुए थे, चारों दिशाओं में उठाये हुए कोड़ों की भांति लग रही थीं। तीन आदमी सामने

खड़े, जितने अधिक ऊँचे स्वर से वे गा सकते थे, गा रहे थे।

लेकिन भाषा के उच्चरणों को वे दीर्घ करते और अ ऽ ऽ का उच्चारण करते।

एक बच्चे की तेज आवाज उत्तर ले रही थी। बार २ गाने वालों के पास ही दीवाल के सहारे लगी हुई एक कुर्सी पर एक चोगा पहिने हुए पुरोहित उठता और कुछ गुनगुना देता और फिर बैठ जाता। तीनों गायक उस धुरी पर लगे हुए चील के पंखों पर रखी हुई गानों की सादा किताब की ओर दृष्टि जमाते गाते ही रहे।

तब शान्ति हो गई। प्रार्थना चलती रही। और उसके अन्त में रोज़ा को एकाएक अपनी मां और ऐसे ही मौके पर अपने गांव की चर्च का ध्यान आ गया और वह अपने हाथों में अपना सिर रख कर बैठ गई। उसे लगा कि वही दिन जब वह इतनी ही छोटी थी और श्वेत ड्रैस में ही लिपटी हुई थी, लौट आता था, और वह रोने लगी।

पहले तो वह चुपचाप रोती रही, आंसू धीरे २ गिरते रहे किन्तु उसकी स्मृतियों के साथ २ उसकी भावनाएं बढ़ गईं और वह सिसकियाँ लेने लगी। उसने अपना जेबी रूमाल निकाल लिया, आँखें पोंछीं और मुँह में ठूँस लिया ताकि वह चिल्ला न पड़े, किन्तु वह सब व्यर्थ रहा।

उसे एक हिचकी आई फिर दो तीन हृदय विदारक सिसकियाँ। लुइस और फ्लोरा जो उसके पास ही झुक कर घुटनों के बल बैठ रही थीं वे भी उसी भाँति की स्मृतियों से भर उठी थीं और उसकी बगल में आंसू बहाती रही थीं। आँसुओं की बाढ़ आ गई थी और क्योंकि रोना तो छूत का रोग है अतः मैडम ने शीघ्र ही अनुभव किया कि उसके नेत्र भी गीले हो रहे थे और मामी की ओर उसने मुड़ कर देखा कि उस कुर्सी पर सभी बैठे हुए लोग रो रहे थे।

बहुत ही शीघ्र जिधर देखो उधर ही, पत्नियां, मां, बहिनें उस करुण भावना से ओत-प्रोत हो और इन घुटनों के बल बैठी हुई सुन्दरी स्त्रियों के दुःख से द्रवित हो अपने रूमालों को भिगोने लगीं और उन्होंने धड़कते

हुए हृदयों को अपने बाँये हाथ से दाब लिया।

जिस भाँति इन्जन में से निकलने वाली चिनगारी सूखी घास को जला डालती है उसी भाँति रोजा तथा उसकी सहेलियों के आंसुओं ने क्षण भर में सारी उपस्थिति को प्रभावित कर दिया। नये २ ब्लाउजों को पहने हुए पुरुष, स्त्रियाँ, वृद्ध और तरुण शीघ्र ही अश्रुपूर्ण हो गये मानो कोई मनुष्य शक्ति से ऊपरी शक्ति—एक भावना, अदृश्य एवं सर्वशक्तिमान की शक्तिशाली श्वांस ने उन सबके ऊपर प्रभाव डाल दिया।

एकाएक चर्च में ऐसा लगा मानो एक प्रकार का पागलपन, पागलपन की अवस्था में भीड़ का शोर, अश्रुओं एवं सिसकियों का तूफान आ गया हो। लोगों के ऊपर से यह एक ऐसे हवा के झोंके की तरह होकर निकल गया जो कि पेड़ों की डालियों को जंगल में झुका देता है और पुरोहित भावाभिभूत होकर, बेमेल प्रार्थनाऐं, आत्मा की वे अस्पष्ट प्रार्थनाऐं जब वह स्वर्ग की ओर उड़ान भरती है, हिचक २ कर बोल रहा था।

उसके पीछे खड़े हुए व्यक्ति धीरे २ शान्त होने लगे। कोयर के अग्रसर, अपने सफेद जामों की शान में, कुछ अस्थिर सी आवाजों में बोलते रहे, और वाद्य भी कुछ रूखा सा लग रहा था, मानो वह स्वयं रो रहा हो। खैर, किसी भी भाँति पादरी ने उन लोगों को शान्त हो जाने के लिये, सङ्केत स्वरूप अपना हाथ उठाया, और वह गिरजाघर की सीढ़ियों पर चला गया। शीघ्र ही सब लोग शान्त हो गये।

अभी २ की घटना, जिसे उसने एक आश्चर्य समझा था, पर दो चार शब्द कह कर उसने बढ़ई के अथितियों की ओर मुँह कर के बोलना प्रारम्भ किया।

"मेरी प्रिय बहिनों को, मैं विशेषतया आप लोगों को, जो इतनी दूर से आई हैं, जिनकी हम लोगों के मध्य उपस्थिति ने, जिनके स्पष्ट विश्वास एवं प्रचण्ड ईश्वर भक्ति ने हम सब लोगों के सम्मुख एक आदर्श उदाहरण उपस्थित किया है, धन्यवाद देता हूँ। आप लोगों ने मेरी बस्ती को सुधार दिया है, आपकी भावनाओं ने सब के हृदय में उत्साह पैदा कर दिया है,

आप लोगों के बिना शायद आज यह स्वर्गिक अनुभूति नहीं प्राप्त होती। कभी २ एक पुण्यात्मा ही नाव को पार लगा देता है।"

भावावेश में उसके मुँह से फिर आवाज न निकल सकी और कुछ न कह कर उसने प्रार्थना समाप्त की।

वे लोग जितनी जल्दी निकल सकते थे चर्च से बाहर निकल आये। बच्चे स्वयं इतनी अधिक देर तक के मस्तिष्क के खिंचाव से चञ्चल हो उठे थे। इसके अतिरिक्त बड़े बूढ़े लोगों को भूख लग रही थी, और वे सब एक-एक करके सहभोज के लिये चर्च से निकल आये।

अन्दर एक भीड़ और मिली हुई आवाजों की गड़बड़ी थी जिसमें नोरनन स्वर पहिचाना जा सकता था। ग्रामीणों ने दो दल बना लिये और बच्चों के आते ही हर परिवार ने अपने २ बच्चों को अपने पास बुला लिया।

घर की सारी स्त्रियों ने कोन्स्टेन्स को पकड़ लिया और उसे घेर कर आलिंगनों की बौछारें लगा दीं—रोजा अपने हृदय के भावावेश को सबसे अधिक प्रदर्शित कर रही थी।। अन्त में उसका एक हाथ उसने तथा दूसरा हाथ मैडम टेलियर ने पकड़ लिया और राफेले तथा फरनन्डे ने उसका मलमल का पेटीकोट पकड़ लिया जिससे कि वह धूल में घिसटने न पाए। लुइस और फ्लोरा मैडम रिवेट के साथ उसका पिछवाड़ा पकड़े चल रही थीं और बच्ची इस सलामी के बीच बहुत शान्त तथा विचार-मुद्रा में घर चल दी।

सहभोज कारखाने में मेज के ढांचों पर लम्बे २ तख्तों पर रख दिया गया और खुले हुए द्वार से आनन्द एवं सहभोज जो अन्दर हो रहा था, दिखलाई देता था। हर खिड़की से लोग रविवार को अपनी ड्रैसों में मेजों के चारों ओर बैठे दिखलाई देते थे हर जगह लोग भोजन कर रहे थे। हर मकान में मनोरञ्जन हो रहा था और लोग अपनी चौहदार कमीजें पहिने हुए गिलास पर गिलास साइडर पी रहे थे।

बढ़ई के मकान में इस प्रसन्नता में लड़कियों की सुबह की भावनाओं के परिणाम स्वरूप कुछ लज्जा का सा समिश्रण था। रिवेट ही एक ऐसा

व्यक्ति था जो बहुत प्रसन्न था और आवश्यकता से अधिक पिये जा रहा था। अपने दो दिन नष्ट न होने देने के लिये मैडम टेलियर हर क्षण घड़ी की ओर देख लेती थी। वह ३.५५ की गाड़ी से, जो कि रात्रि तक उनको फेकेम्प पहुँचा देती, घर चली जाना चाहती थी। बढ़ई ने उसका ध्यान बटाने की, जिससे कि वह अपने अथितियों को एक दिन के लिये और रोक सके, बहुत चेष्टा की। किन्तु क्योंकि जब काम का समय होता तब वह बिलकुल भी मजाक नहीं करती थी अतः वह सफल न हो सका, काफी पीने के तुरन्त ही बाद उसने अपनी लड़कियों को जल्दी से तैयार हो जाने की आज्ञा दी। उसके बाद वह अपने भाई की ओर मुड़ कर बोलीः

"तुम्हें घोड़े शीघ्र ही तैयार कर लेने चाहिये।" और वह स्वयं अपनी पूरी तैयारी करने के लिये चल दी।

जब वह फिर नीचे आई तब उसकी भाभी उससे बच्ची के बारे में बातें करने को खड़ी हुई उसकी प्रतीक्षा कर रही थी, और उनमें एक बहुत लम्बा वार्तालाप हुआ जिसमें कुछ भी तय न हुआ। बढ़ई की स्त्री ने बहुत ही द्रवित हो जाने का उत्कृष्ट अभिनय किया, और मैडम टेलियर ने, जो बच्ची को अपने घुटनों से चिपकाये हुई थी, कोई भी निश्चित वचन नहीं दिया। किन्तु वह हलके पतले वायदे करती रहीः वह फिर मिलेगी और अभी तो बहुत समय था और इसलिये वे फिर भी अवश्य मिलेंगे।

किन्तु गाड़ी द्वार पर नहीं आई और स्त्रियाँ नीचे उतर कर नहीं आईं ऊपर से उन्हें अट्टहासों, पटका पटकी, हलकी चीखें और तालियों की आवाजें आती सुनाई दे रहीं थीं और इसलिये जब बढ़ई की स्त्री अस्तबल में यह देखने के लिये गई कि गाड़ी तैयार हुई कि नहीं तब मैडम ऊपर चली गईं।

रिवेट, जो खूब पिये हुए था तथा आधा नशा था, रोजा का, जो हँसी के मारे बेदम हो रही थी, चुम्बन लेने का व्यर्थ प्रयत्न कर रहा था। और दोनों पम्पो, चूँकि वे सुबह के उत्सव के पश्चात ऐसे दृश्य को देखकर दुखी ही हुई थीं, उसकी बाँहों को पकड़कर उसे शान्त करने का प्रयत्न कर रही

थीं, किंतु रास्फेले और फरनेन्डे अपनी २ तरफ से उसके हाथ पकड़ कर तथा उमेठ कर हँसते हँसते उसे उकसा रही थीं तथा उसके हर व्यर्थ प्रयत्न पर जो कि वह पियक्कड़ कर रहा था, बड़ो जोर २ से चीख रही थीं।

वह क्रोध में भरा हुआ था, उसका चेहरा लाल हो रहा था, उसके कपड़े बेतरतीब थे और जब वह रोजा की चोली को अपनी पूरी शक्ति से खींच रहा था और कह रहा था "तुम मूर्ख क्या तुम नहीं आओगी।" तब वह उन दोनों स्त्रियों से, जो उससे लटक रही थीं, छूटने का प्रयास कर रहा था।

किन्तु मैडम, जो बहुत क्रोधिनी थी, अपने भाई के पास गई, उसके कन्धे पकड़े और इतने जोर से उसे धक्का दिया कि वह रास्ते की दीवाल पर जा गिरा। एक मिनट बाद ही आंगन में से उसके सिर धोने की आवाज आई। जब वह गाड़ी लेकर लौटा तब तक वह शान्त भी हो गया था।

वे सब परसों की ही भाँति गाड़ी में बैठ गये, और छोटा सफेद घोड़ा अपनी तेज तथा तालमय गति से चलने लगा। सूर्य की उष्णता में उनका परिहास, जो सहभोज में रोक दिया गया था, फिर से आरम्भ हो गया।

लड़कियाँ अब गाड़ी के धक्कों से प्रसन्न होतीं, अपने पड़ोसियों की कुर्सियों को धकेलतीं और प्रत्येक क्षण हँसती रहतीं क्योंकि रिवेट के व्यर्थ प्रयासों के पश्चात् से वह उस क्रम को प्रारम्भ ही रखना चाहती थीं।

गाँव में कोहरा पड़ रहा था, सड़कें चमक रही थीं और उनके नेत्रोंमें चकाचौंध कर रही थीं। पहियों से धूल की दो कतारें उड़ रही थीं, जो प्रधान सड़क पर बहुत दूर तक उड़ती रहीं, और उस समय फरनेन्डे, जो संगीत में रुचि रखती थी, रोजा से कोई गाना गाने को बोली: उसने शीघ्र ही एक गाना बतलाया किन्तु मैडम ने उस गाने को उस दिन के अनुपयुक्त समझा और बोली:

"बेरान्जर का कुछ याद हो तो सुनाओ।"

क्षण भर की हिचकिचाहट के पश्चात् रोजा ने बेरान्जर का गाना प्रारम्भ कर दिया, अपनी फटी आवाज में "ग्रान्डमदर ने और सब लड़कियों

ने यहाँ तक कि मैडम ने भी उस सम्मिलित गान को गाना प्रारम्भ कर दिया।

"बहुत सुन्दर" रिवेट उस गायन की लय में खोकर बोला। वे हर पंक्ति को राग से दुहरा २ कर जोर २ से गा रही थीं। रिवेट गाड़ी के बम्ब पर अपने पैरों से तथा घोड़े की पीठ पर रास से ताल दे रहा था। पशु स्वयं भी उस गायन से प्रभावित हो बहुत तेजी से दौड़ने लगा और एक स्थान पर तो उसकी गति के कारण एक के ऊपर एक करके सब उसमें गिर पड़ीं।

वे हँसती हुई उठीं मानो कि पागल हों और गायन चलता रहा। वे जलते हुए आकाश के नीचे और पके धानों के बीच में उस घोड़े की तेज गति के साथ, जो कि हर पंक्ति के दुहराव पर और भी तेज दौड़ने लगता और जिसे देखकर उन्हें बहुत प्रसन्नता होती कि वह सौ गज आगे निकल जाता, अपने उच्च स्वर से गाती रहीं। कभी २ सड़क के किनारे बैठा हुआ कोई पत्थरकूटा इस अनियोचित जंगली आवाज पर आश्चर्यचकित हो अपने तार के चश्मे में से उनकी ओर देखने लगता।

जब वे स्टेशन पर उतर गईं तब बढ़ई बोलाः

"मुझे दुःख है कि तुम लोग जा रही हो, हम लोगों में एक साथ कुछ परिहास होते।"

किन्तु मैडम ने बहुत समझदारी से उत्तर दियाः "हर एक वस्तु अपने २ समय पर ठीक हुआ करती है, और हम हर समय दिल्लगी नहीं कर सकते हैं।"

तब उसे एकाएक प्रेरणा उत्पन्न हुईः "देखो, मैं अगले महीने फेकेम्प में आकर तुमसे मिलूँगा।" और वह अपनी चमकीली तथा शरारत भरी आँखों से देखने लगा।

"आओ," मैडम बोली, "तुम्हें अक्लमन्द होना चाहिये, तुम चाहो तो आ सकते हो किन्तु तुम्हें चालाकी छोड़ देनी चाहिये।

उसने कोई उत्तर नहीं दिया और गाड़ी की सीटी सुनते ही वे सब एक दूसरे का जल्दी २ चुम्बन लेने लगे।

जब रोजा की पारी आई, वह उसके मुँह के पास अपने ओंठ ले जाना चाहता था, जिसे वह ओंठ बन्द कर मुस्कराते हुए बहुत जल्दी २ हर बार इधर से उधर घुमा लेती थी। उसने उसे अपनी भुजाओं में भर लिया, किंतु वह अपने उद्देश्य में सफल न हो सका क्योंकि उसका बड़ा कोड़ा जो वह अपने हाथ में पकड़े हुए निराशा के कारण लड़की की पीठ के पीछे घुमा रहा था उसके प्रयत्नों में बाधा उपस्थित कर रहा था।

"रोन जाने वाले यात्री कृपाकर अपनी २ सीटों पर जा बैठें!" एक गार्ड ने चिल्लाकर कहा और वे लोग गाड़ी में चढ़ गये। इन्जिन की, जिसने अपनी पहली भाप जोर की आवाज के साथ निकाली, तेज सीटी के साथ ही साथ एक हलकी सी सीटी की आवाज सुनाई दी और गाड़ी के पहिये जरा से हिले, मानो बड़ी शक्ति लगानी पड़ी हो। रिवेट स्टेशन से बाहर आकर लाइन के बगल के दरवाजे पर रोजा को एक बार फिर से देखने के लिये आ खड़ा हुआ, और ज्यों ही भिन्न २ भाँति के मनुष्यों को लिये हुए गाड़ी आगे बढ़ी रिवेट अपना कोड़ा लेकर उछल २ कर जोर २ से गीत की वही पंक्तियाँ, जो गाड़ी में रोजा ने गाई थीं, गाने लगा।

और तब उसने एक सफेद वस्त्र का जेबी रूमाल, जिसे कोई हिला रहा था, सुदूर में अदृश्य होते हुए देखा।

३

रोन पहुँचने तक वे शान्ति से सोते रहे। जब वे घर पहुँच गईं आराम कर चुकीं और स्वस्थ हो गईं तब मैडम से यह कहे बिना न रहा गयाः

"यह सब बिलकुल ठीक था, किन्तु मैं घर आजाने के लिये बहुत उत्सुक थी।"

उन्होंने शीघ्रता से भोजन किया और जब उन्होंने सायंकाल की हलकी ड्रेसें पहिन लीं तब वे अपने स्थायी ग्राहकों की प्रतीक्षा करने लगीं। द्वार के बाहर रखे हुए छोटे रङ्गीन लैम्प ने आने जाने वालों को बतला

दिया कि पक्षी नीड़ में आ गये और पता नहीं किसने और कैसे यह समाचार चारों ओर फैला दिया।

बैंकर के लड़के, मि० फिलिप ने तो यहाँ तक ढिठाई की कि मि० टूरनेवो के परिवार के अंतरंग में अपने एक विशेष दूत को भेज दिया।

मछलियों का इलाज करने वाला हर रविवार को अपने भतीजों और चचाजात भाइयों को डिनर में दावत देता था, और जब एक आदमी अपने हाथ में एक पत्र लेकर पहुँचा तब वे लोग काफी पी रहे थे। मि० टूरनेवो अत्यन्त उत्तेजित हो उठा, पत्र खोलते ही वह पीला पड़ गया, उसमें पेन्सिल से लिखे हुए ये शब्द थेः

"मछलियों का जहाज़ मिल गया है, जहाज अपने बन्दर पर आ गया है, तुम्हारे लिये व्यापार अच्छा है। शीघ्र ही आजाओ।"

उसने अपनी जेब टटोली और पत्र-वाहक को दो सौस दीं तथा एकाएक कानों तक लज्जा से लाल हो बोलाः " मुझे जाना चाहिये।" उसने अपनी पत्नी को वह संक्षिप्त एवं रहस्यमय पत्र दिया, घन्टी बजाई और जब नौकर अन्दर आया तो उसे अपना हैट तथा ओवरकोट शीघ्र लाने की आज्ञा दी। गली में पहुँचते ही वह दौड़ने लगा और अपने अधैर्य के कारण उसे रास्ता पहले से भी दूना लगने लगा।

मैडम टेलियर का घर ऐसा लग रहा था जैसे कि उस दिन छुट्टी हो। नीचे वाली मन्जिल पर बहुत से नाविक बड़ा शोर मचा रहे थे, और लुइस और फ्लोरा कभी किसी के साथ तो कभी किसी के साथ शराब पी रही थीं मानो आज वे अपने नाम 'पम्पो' को बिलकुल ही सार्थक कर देना चाहती हों। वे हर जगह शीघ्र बुलाई जारहीं थीं, वे पहले से ही अपने व्यवसाय के अनुरूप गम्भीर नहीं थीं और रात्रि तो उनके लिये बहुत ही आनन्ददायक सिद्ध हुई।

नौ बजे तक ऊपर की मन्जिल के कमरे भर गये थे। व्यापार मण्डल का जज मि० वासी, जो मैडम के प्लेटोनिक विवाह का प्रार्थी था, एक कोने में उससे धीमे स्वर में बातें कर रहा था, और वे दोनों ही हँस रहे थे मानो

किसी समझौते पर रजामन्द होने वाले थे।

एक्स–मेयर मि० पोलिन, रोजा को अपने घुटनों पर बैठाये हुए था, और वह अपनी नाक को उसकी नाक के पास रखे हुए उस वृद्ध सज्जन की सफेद मूछों पर अपना हाथ फेर रही थी।

लम्बी फरनन्डे सोफा पर लेटी हुई अपने दोनो पैरों को टैक्स कलक्टर मि० फिलिप्पीज के पेट पर तथा अपनी पीठ को नवयुवक मि० फिलिप्स के वेस्टकोट पर रखे हुए लेट रही थी, उसका दाहिना हाथ उसकी गर्दन में पड़ा हुआ था तथा बाँयें हाथ में एक सिगरेट थी।

राफेले इन्स्योरेंन्स एजेन्ट मि० डुपनीस के साथ तर्क में व्यस्त थी। उसने उसे समाप्त करने के लिये कहाः

"हाँ मेरे प्रिय मैं करूँगी।"

ठीक तब ही द्वार खुला और एकाएक मि० टूरनेवो अन्दर आया। उसका उत्साह भरे स्वर "टूरनेवो ! तुम्हारी उम्र बड़ी हो !" से स्वागत किया गया और राफेले, जो इधर उधर घूम रही थी, गई और उसके बाहुपाशों में आबद्ध हो गई। उसने उसे प्रगाढ़ालिंगन में आबद्ध कर एक भी शब्द कहे बिना ऊँचा उठाया जैसे कि वह कोई चिड़िया हो और उस कमरे में से ले गया।

रोजा एक्स मेयर से बातें करती रही थी और हर क्षण उसका चुम्बन लेती और साथ ही साथ उसका सिर सीधा रखने के लिये उसकी मूछों को खींच देती।

फरनन्डे और मैडम चार आदमियों के साथ थीं और मि० फिलिप्स ने चिल्लाकर कहा; "मैडम टेलियर, मैं दाम दे दूँगा, तीन बोतल शैम्पेन मँगवा दीजिये।" और फरनन्डे ने उसे अपने वक्ष से चिपकाते हुए कहाः "क्या आप हमारे साथ वाल्जनृत्य करेंगे ?" वह उठा और एक कोने में रखे हुए पुराने पियानो पर जा बैठा और उसने वाद्य की रीडों में से एक बेसुरा वाल्ज निकाला।

लम्बी लड़की ने टैक्स कलक्टर को अपने बाहुपाश में आबद्ध कर

लिया और मैडम ने मि० वासी से कहा कि वह उसे अपनी बाँहों में आवद्ध करले और दोनों युग्म एक दूसरे का चुम्बन लेते हुए नाचने लगे। मि० वासी जो पहले सभ्य समाज में नृत्य कर चुका था, इतने सुन्दर ढङ्ग से नाचा कि मैडम आश्चर्यचकित हो गई।

फ्रैडरिक शैम्पेन ले आया, पहली कार्क चटपट बाहर निकली, और मि० फिलिप ने काड्रिल आरम्भ किया, जिसमें चार नृत्यकारों ने सामाजिक फैशन में आचार विचार, रीति रिवाजों के अनुसार नृत्य किया और तब वे शराब पीने लगे।

मि० फिलिप ने पोलका नृत्य किया और मि० टूरनेवो उस सुन्दरी यहूदिन, जिसे उसने ऊँचा ही उठाये रखा और जिसके पैर जमीन पर छूने नहीं दिये, के साथ नृत्य करने लगा। मि० फिलिप्पीज और मि० वासी ने नये उत्साह में नृत्य आरम्भ कर दिया और समय-समय पर एक या दूसरा युग्म शराब से भरे हुए चमकते गिलास को उछालने के लिये रुकता।

नृत्य ऐसा होता जारहा था कि मानो वह समाप्त ही नहीं होगा कि रोजा ने द्वार खोला।

"मैं नृत्य करना चाहती हूँ," वह बोली। और उसने मि० डुपनीस को, जो कि कोच पर सुस्त बैठा हुआ था, पकड़ लिया और नृत्य फिर से आरम्भ हो गया।

किन्तु बोतलें खाली हो चुकी थीं। "मैं एक की कीमत दूँगा।" मि० टूरनेवो ने कहा।

"मैं दूँगा।" मि० वासी ने कहा।

"और मैं भी।" मि० डुपनीस ने कहा।

शीघ्र ही वे तालियाँ बजाने लगे और शीघ्र ही नृत्य आरम्भ हो गया। कभी २ लुइस और फ्लोरा जल्दी से ऊपर दौड़तीं जब उनके ग्राहक अधीर हो रहे होते। दो चार परिवृत्त बनातीं और दुखी हो होटल में वापिस लौट जातीं। अर्द्ध रात्रि के समय भी वे नाच रहे थे।

मैडम ने जो कुछ भी हो रहा था उससे आँखें बन्द कर रखी थीं

और वह मि० वाली से कोने में बड़ी लम्बी बातचीत करती रही, मानो जो कुछ तय हो चुका था उस पर अन्तिम निश्चय हो रहा था।

अन्त में एक बजे दो विवाहित पुरुष मि० टूरनेवो और मि० फिलिप्पीज ने कहा कि वे घर जाना चाहते थे और उन्होंने रुपये देने की इच्छा व्यक्त की। शैम्पेन की कीमत के अतिरिक्त और कुछ नहीं लिया गया वह भी दस फ्रान्क की जगह जो नियत मूल्य था, छः फ्रान्क ही लीं, और जब उस विशाल हृदयता पर उन्होंने आश्चर्य प्रगट किया तब मैडम जो प्रसन्न हो रही थी बोली:

"हम लोग नित्यप्रति ही छुट्टी नहीं मनाते।"
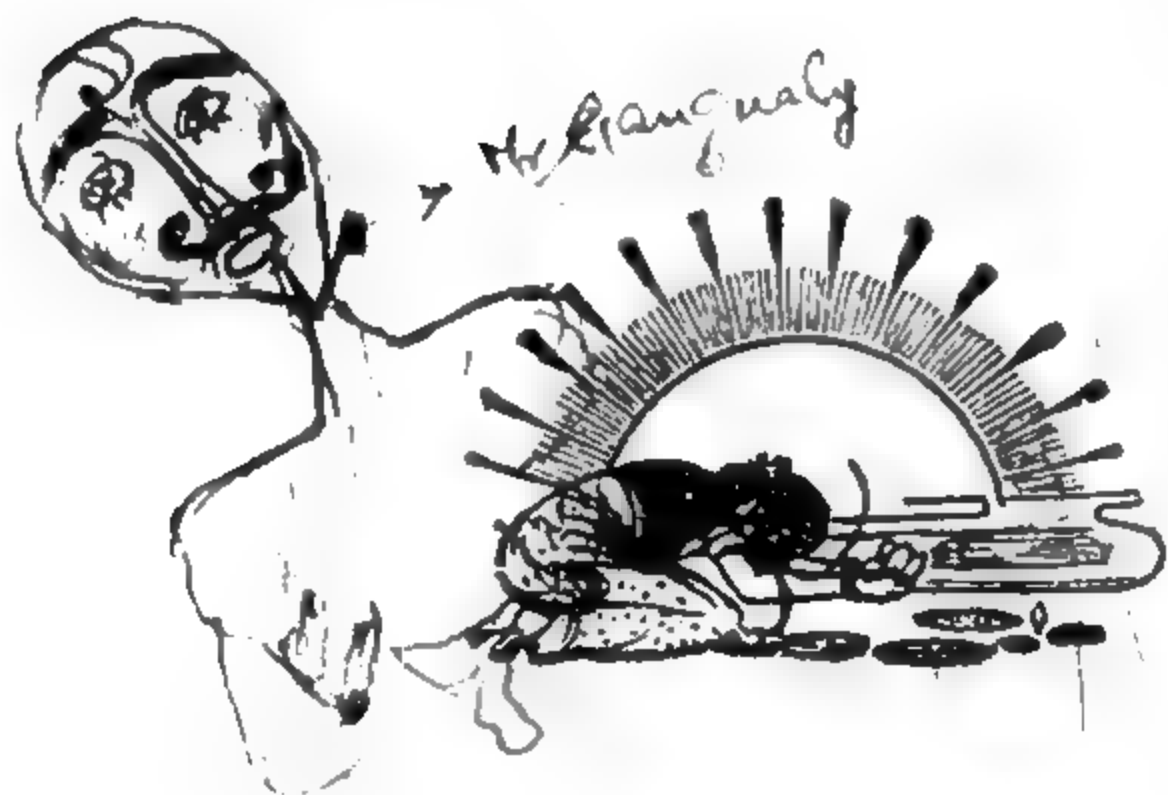
एक मोरिन का सूअर

"तुमने मेरे मित्र, अभी २ जो पाँच शब्द दुहराये हैं 'एक मोरिन का वह सूअर' यह कारण क्या है कि पृथ्वी पर मैंने मोरिन का नाम बिना सूअर प्रत्यय के सुना ही नहीं है ?" मैंने लवार्ये से कहा ।

लवार्ये, जो कि एक डिप्टी है, मेरी ओर उल्लू के से नेत्रों से देखते हुए बोला: "आप ला रोचेले से आ रहे हैं और तब यह फरमाते हैं—आपके फरमाने का मतलब यह होता है कि आप मोरिन की कहानी नहीं जानते ?" मुझे स्वीकार करना पड़ा कि मैं मोरिन की कहानी नहीं जानता था, और तब लवार्ये ने अपने हाथ मले और गाथा प्रारम्भ की :

"तुम मोरिन को जानते थे कि नहीं, और तुम्हें डी ला रोचेले पर अवस्थित उसकी कपड़े की बड़ी दूकान के बारे में तो याद ही होगा ?"

"हाँ ! हाँ ! बिल्कुल ।"

"तब ठीक है । तुम्हें यह मालूम होना चाहिये कि सन् १८६२ या ६३ में मोरिन अपनी दुकान के लिये माल खरीदने के बहाने आनन्द या अपने आनन्दों का उपभोग करने को एक पक्ष के लिये पेरिस गया था, और तुम इतना तो जानते ही हो कि एक गाँव के दूकानदार का पेरिस में एक पक्ष बिताना क्या अर्थ रखता है, यह उसके रक्त में उत्तेजना फूँक देता है । हर सायंकाल थियेटर, स्त्रियों की तुमसे भिड़ती हुई ड्रैसें, और निरंतर उत्तेजना, कोई भी इस अवस्था में पागल हो सकता है । वहाँ, नृत्यकार चुस्त पोशाकों में, एकट्रेसें नीची ड्रैसों में, गोल टाँगें, मोटे कन्धे, हर एक वस्तु बिल्कुल समीप ही किन्तु जिन्हें छूनेकी हिम्मत ही न होती हो, इन सब के अतिरिक्त है ही क्या, और घटिया तश्तरी पर तो कोई हाथ मारता ही नहीं । और धड़कते हुए हृदय तथा किसी के अधरों के स्पर्श की एक प्रकार की इच्छा से प्रसन्न मन लेकर व्यक्ति वहाँ से लौटता है ।

'मोरिन ने जब ८.४० की रात्रि की एक्सप्रेस से ला रोचेले के लिये टिकट लिया तब वह इसी अवस्था में था। वह स्टेशन पर वेटिंग रूम में इधर से उधर घूम रहा था, कि उसने एक नवयुवती को किसी वृद्धा का आलिंगन करते देखा, वह रुक गया। उस युवती ने अपना घूँघट उठाया, और मोरिन प्रसन्नता में बड़बड़ाया, "जोव की कसम, कितनी सुन्दर युवती है।"

"वह वृद्धा से गुडईवनिंग कह वेटिंग-रूम में चली गई, और मोरिन उसके पीछे २ चल दिया। फिर वह प्लेटफार्म पर गई, फिर भी मोरिन उसके पीछे ही पीछे था, तब वह एक खाली डिब्बे में चढ़ गई और उसने फिर उसका अनुसरण किया। एक्सप्रेस में बहुत कम यात्री थे, इन्जिन ने सीटी दी और गाड़ी चल दी। वे अकेले ही थे। मोरिन उसे अपनी आंखों में समेट लेना चाहता था। उसकी अवस्था उन्नीस या बीस की सी लगती, वह गोरी लम्बी और शान्त दिखलाई देती थी। उसने अपने पैरों पर रेलवे का एक कम्बल ढक लिया और सीट पर सोने के लिये लेट गई।

"मोरिन ने मन ही मन कहा: "मुझे आश्चर्य है कि यह कौन है?" और हजारों ही योजनायें, सहस्रों ही घटनाऐं उसके मस्तिष्क में घूम गईं। वह मन ही मन सोचने लगा, "लोग रेलवे यात्राओं में घटने वाली इतनी घटनाऐं कहते रहते हैं,और हो सकता है कि यह मेरे ही लिये हो। कौन जाने? जरा सा सौभाग्य, जो बहुत ही जल्दी आ जाता है, हो और मुझे तनिक सी हानि झेलने के लिये तैयार रहना चाहिये। क्या डेन्टन ने नहीं कहा था, 'बुद्धि अधिक बुद्धि, और सदैव बुद्धि।' यदि डेन्टन ने नहीं कहा तो मिरेब्यू ने कहा होगा, किन्तु उससे कोई असर नहीं पड़ता। पर मुझ में बुद्धि नहीं है; और यह मेरे साथ परेशानी है। आह! यदि मैं केवल जानता, यदि व्यक्ति केवल दूसरों के मन को पढ़ना लेना जानता होता। मैं शर्त बदता हूं कि हर एक के जीवन में नित्यप्रति सुअवसर आते हैं किन्तु मनुष्य उनको पहचान नहीं पाता, यद्यपि एक ही मुद्रा मुझे यह जानने के लिये पर्याप्त होगी कि वह इससे अधिक अच्छा और कुछ नहीं चाहती।'

"तब वह उन बातों को सोचने लगा जो उसकी विजय करा देतीं।

उसने किसी बहादुरी की घटना की या उसके लिये की गई किसी छोटी सी सेवा की या एक सुन्दर, रुचिपूर्ण वार्तालाप जो उस घोषणा में समाप्त हो, जिसे तुम सोचते हो—की कल्पना की।

"किन्तु वह यह ही तय न कर पाया कि कैसे आरम्भ करे, उसे कोई बहाना ही नहीं मिल रहा था। उसने अपने धड़कते हृदय, तथा भ्रमपूर्ण मन से भाग्य से ही उत्पन्न हुई किसी परिस्थिति की प्रतीक्षा की। रात्रि व्यतीत हो गई, और लड़की अभी तक सो रही थी जब कि मोरिन अपने पतन की सोच रहा था। दिन निकला और सूर्य की पहली किरण आकाश में दृष्टिगोचर हुई। उन लम्बी, साफ किरणों ने उस सोती हुई लड़की के मुख को चमका दिया और उसे जगा दिया, अतः वह उठकर बैठ गई। उसने गाँव की ओर देखा, फिर मोरिन की ओर देख वह मुस्करा दी। वह एक प्रसन्न स्त्री की भाँति मुस्काई और मोरिन काँप गया। निश्चय ही वह मुस्कान उसके ही लिये थी, यह उसके लिये वह बुद्धिमत्ता-पूर्ण निमन्त्रण था, संकेत था जिसकी वह प्रतीक्षा कर रहा था मानो उस मुस्कराहट का अर्थ था: तुम कितने मूर्ख, तुच्छ, निर्बुद्धि, और गधे हो कि सारी रात अपनी जगह पर एक खम्भे से पड़े रहे।

"तनिक मेरी ओर देखो; क्या मैं सुन्दर नहीं हूँ? और तुम इस भाँति रात्रि भर बैठे रहे और तब जबकि तुम एक सुन्दर स्त्री के साथ अकेले थे, बहुत ही मूर्ख हो तुम!"

"वह उसकी ओर देखकर अभी भी मुस्करा रही थी, वह हँसने भी लगी, और वह इस प्रयत्न में, कि कुछ कहने योग्य शब्द या जाने-चिन्ता नहीं कुछ भी हो, अपनी रही सही बुद्धि को भी खो बैठा। वह कुछ भी नहीं सोच पाया और तब गंवारों की भाँति मन ही मन कहने लगा: 'यह बहुत बुरा हुआ, मैं हर चीज को बाजी लगा दूँगा।' एकाएक बिना किसी चेतावनी दिये, वह अपनी भुजा पसारे और ओठों को आगे बढ़ाते हुए उसके पास गया और अपने बाहुओं में उसे भर उसका चुम्बन ले लिया।

"वह कूद कर दूर जा उछली और चिल्लाने लगी: "सहायता! सहायता!" भय से चिल्लाते हुए उसने डिब्बे का दरवाजा खोल दिया,

और बाँहें बाहर निकाल कर हिलाईं। फिर भय से पागल हो वह कूदने का प्रयत्न करने लगी। मोरिन ने, जो बेहद परेशान हो गया था, सोचा कि वह निश्चय ही कूद पड़ेगी। वह उसकी स्कर्ट पकड़कर हकलाता हुआ बोला: "ओह मैडम! ओह मैडम!"

"गाड़ी की चाल धीमी हो गई और फिर वह रुक गई। दो गार्ड उस स्त्री के पागलों की भाँति के संकेत की ओर दौड़े। और वह उनकी भुजाओं में हकलाती हुई जा पड़ी। उसने कहा "यह व्यक्ति मुझ से······मुझ से ······से······" और वह अचेतन्य हो गई।

"वे लोग उस समय मौंजे स्टेशन पर थे और पुलिसमैन ने, जिसकी उस समय ड्यूटी थी, मोरिन को बन्दी बना लिया। जब उसकी असभ्यता से पीड़ित स्त्री की चेतना वापिस लौटी, तब उसने उस पर भीषण दोषारोपण किया, और पुलिस ने उसको नोट किया। बेचारा कपड़े वाला, आम जगह पर चरित्र-भ्रष्ट करने के दोष के भार से लदा हुआ, रात्रि तक घर नहीं लौटा

२

"उन दिनों मैं 'फेनेल डेस चारेंटेन्स' का सम्पादक था। और मोरिन से केफ डू कोमर्स (होटल) में नित्यप्रति मिलता रहता था। इस घटना के दूसरे दिन वह मुझसे मिलने आया क्योंकि वह नहीं जानता था कि उसे क्या करना चाहिये। मैंने उससे अपनी राय नहीं छिपाई, किन्तु कहा: 'तुम से तो सूअर अच्छा होता है। कोई भी सभ्य पुरुष इस भाँति व्यवहार नहीं करता है।'

"वह रो पड़ा। उसकी स्त्री ने उसे पीटा था। उसे दिखलाई दिया कि उसका व्योपार चौपट हो जायेगा, उसके नाम पर कीचड़ उछाली जायगी और तिरस्कार होगा, उसके मित्र उससे क्रोधित हो गये थे और उसकी एक भी बात सुनने को तैयार नहीं थे। अन्त में उसने मुझे पिघला ही लिया। मैंने, अपने मजाकिया किन्तु बहुत ही बुद्धिमान मित्र, रिवेट को इसमें राय देने के लिये लिखा।

"उसने मुझे न्यायाधीश से, जो मेरा मित्र था, मिलने की राय दी अतः मैंने मोरिन को तो उसके घर रवाना किया और मैं मजिस्ट्रैट से मिलने

चल दिया। उसने मुझे बतलाया कि जिस स्त्री का अपमान हुआ था वह नवयुवती थी मैडम हेनरीट बोलन, जो अभी २ पेरिस की गवर्नेस बनी थी, और उसने अपनी छुट्टियाँ अपने चाचा-चाची के साथ जो सौजे में बहुत सम्मानीय व्यापारी थे, व्यतीत की थीं और उसके चाचा ने भी शिकायत की थी इससे मोरिन का मुकद्दमा भी गम्भीर बन गया था। किन्तु न्यायाधीश इस बात पर राजी हो गया कि यदि शिकायत वापिस लेली जायगी तो वह मामले को समाप्त कर देगा, अतः हम लोगों को चेष्टा करके उससे ऐसा करवाना चाहिये।

"मैं मोरिन के पास फिर गया। वह मुझे उत्तेजना और दुःख से बिस्तर में बीमार पड़ा हुआ मिला। उसकी स्त्री ने जो पतली लम्बी थी, उसे लगातार गाली देते हुए कमरे में दिखलाया: 'तो तुम एक मोरिन के सूअर को देखने आये हो। लो वह रहा मेरा प्यारा!' और अपने नितम्बों पर हाथ रखकर वह उसके बिस्तर के सामने जा खड़ी हुई। मैंने उसे सारा मामला समझाया। उसने मुझसे उसके चाचा, चाची के पास जाने को कहा। यह कार्य नाजुक था किन्तु मैंने उसे स्वीकार कर लिया और वह 'बेचारा दुष्ट' दोहराता रहा: 'मैं विश्वास दिलाता हूँ कि मैंने उसका चुम्बन तक नहीं लिया और मैं इसकी कसम भी खा सकता हूँ।'

"मैंने उत्तर दिया: 'इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता और तुम तो सूअर से भी गये बीते हो,' और मैं एक हजार फ्रान्क, जो उसने मुझे जिस भाँति भी मैं उचित समझूँ व्यय करने को दी थीं, लेकर चल दिया। किन्तु मैं उसके चाचा के घर अकेले जाने की हिम्मत न कर सका। मैंने रिवेट से अपने साथ चलने की प्रार्थना की, जिसे उसने इस शर्त पर स्वीकार किया कि हम लोग वहाँ से जल्दी ही लौट आयेंगे क्योंकि उसी दिन दोपहर को उसे ला रोचेले में एक आवश्यक कार्य था। अतः दो घन्टों के बाद हमने गाँव के एक बहुत सुन्दर मकान के द्वार खटखटाये। एक सुन्दर लड़की ने, जोकि शायद वही नवयुवती थी, आकर द्वार खोले। मैंने रिवेट से धीरे से कहा: 'यही अभियुक्त है। अब मैं मोरिन की बात समझने लगा हूँ।

"चाचा नि० टोनेलेट 'फेोल' का सदस्य था, और वह हम लोगों का उत्सुक राजनीतिक सहधर्मी था। उसने अपनी भुजा पसार कर हमारा स्वागत किया, हमको धन्यवाद दिया तथा हमारे लिये प्रसन्नता की शुभकामना व्यक्त की। वह दो सम्पादकों को अपने घर आया देखकर बहुत प्रसन्न हुआ, और रिवेट ने मुझसे चुपके से कहाः 'मेरा विचार है कि हम उस मोरिन के सूअर के काम में सफल हो जायंगे।'

"भतीजी कमरे में से बाहर चली गई और मैंने उस नाजुक विषय को छेड़ दिया। मैंने उसके सम्मुख उस दुष्ट द्वारा किये गये कार्य के सम्भावित भय का चित्र उपस्थित किया। मैंने उस आवश्यक हास पर दबाव डाला, जिसे उस महिला को, यदि यह मामला लोगों में फैलने दिया जाता है तो सहन करना पड़ेगा क्योंकि कोई भी व्यक्ति एक साधारण से चुम्बन पर ही विश्वास नहीं करेगा। वह भला आदमी अनिश्चित सा होने लगा किन्तु अपनी पत्नी के बिना, जोकि रात से पहले नहीं आने वाली थी, कुछ तय नहीं कर पाया। किन्तु वह एकाएक विजयी की भाँति प्रसन्न हो चिल्लायाः 'देखिये, मेरा एक बहुत अच्छा विचार है। मैं आप लोगों को यहीं रखूँगा, भोजन कराऊँगा और सुलाऊँगा और मेरी पत्नी के घर आजाने पर मुझे आशा है कि मैं मामले को निपटा लूँगा।'

"रिवेट ने पहले तो जिद की, किन्तु मोरिन के सूअर को बचाने की भावना ने उसे रोक लिया और हम लोगों ने उस निमन्त्रण को स्वीकार कर लिया। चाचा खुश हो गया और उसने अपनी भतीजी को बुलाया और उसने हमको राय दी कि हम लोगों को उसकी जमीन पर टहल आना चाहिये। वह बोलाः 'हम लोग गम्भीर प्रश्नों को सुबह तक के लिये छोड़ देंगे।' रिवेट और वह राजनीति पर बातें करने लगे और मैं शीघ्र ही कुछ कदम पिछड़कर उस लड़की के साथ, जो वास्तव में बहुत सुन्दर थी, हो गया और बहुत सावधानी से उसे अपनी सहेली बनाते हुए उसकी दुर्घटना पर बातचीतें करने लगा। वह बहुत ही कम भ्रमित सी लगी और मेरी बातों को एक ऐसे व्यक्ति की भाँति सुनने लगी, जोकि सारी बात को बहुत ही रुचि से सुन रहा हो।

"मैंने उससे कहाः 'ज़रा सोचिये, मैडम, आपके लिये यह कितना विस्मयजनक होगा। आपको न्यायाधिकरण में जाना होगा, दुष्ट जातियों से लड़ना होगा, सब लोगों के सामने बोलना होगा और उस दुर्भाग्यपूर्ण घटना को जो रेल में घटी थी जनता के बीच दोहराना होगा। हम आपस में विचार करते हैं, क्या आप यह नहीं सोचतीं कि उस मूर्ख आवारे को उसकी ही जगह पर धक्का देकर, सहायता के लिये न चिल्लाकर, अपना डिब्बा बदल लेना आपके लिये अच्छा होता।' वह हँसने लगी और बोलीः 'आप जो भी कहते हैं बिल्कुल सत्य है! किंतु मैं कर क्या सकती थी? मैं डर गई थी, और जब कोई भयभीत हो जाता है तब वह अपने आप से तर्क करना बन्द कर देता है जैसे ही मैंने परिस्थिति समझी मुझे उन लोगों को बुलाने पर खेद हुआ किन्तु तब तक बहुत देर हो गई थी। आपको यह भी याद रखना चाहिये कि वह गधा मुझ से एक शब्द भी कहे बिना पागलों की भाँति देखता हुआ मेरे ऊपर पागलों की ही भाँति लद गया। मुझे यह भी नहीं मालूम पड़ा कि वह मुझसे क्या चाहता है?

"उसने मेरी ओर पूर्ण दृष्टि भर बिना किसी हिचकिचाहट या लजाये देखा और मैंने मन ही मन सोचाः 'यह भी एक अजीब ही लड़की है और इसी कारण मोरिन गलती कर बैठा' और मैं मजाक में कहता रहा 'आइये मैडम, अपनी धारणा बना लीजिये कि वह क्षम्य है, क्योंकि सब बातें होते हुए भी कोई भी पुरुष आपकी जैसी सुन्दर युवती के सम्मुख रहकर उसको आलिङ्गन करने की बलवती स्पृहा के बिना रह ही नहीं सकता।'

"वह पहले से भी अधिक हँसी और दाँत दिखाते हुए बोलीः 'मिस्टर, इच्छा और कार्य के अन्तर में आदर का स्थान है।' यह भाव प्रयोग करना मूर्खता थी, यह स्पष्ट भी नहीं था और मैंने पूछाः 'कल्पना कीजिये यदि मैं अब आपका चुम्बन लेता हूँ तब आप क्या करोगी?' वह रुकी, मेरी ओर उसने सिर से पांव तक निहारा और तब शान्त स्वर में कहाः 'ओह आ! यह बिलकुल ही भिन्न बात है।'

"मैं जीव की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि मैं भी यह जानता था कि

यह बात भिन्न थी, क्योंकि मुझे मेरे पड़ोस के हर कोई 'सुन्दर लबार्वे' कह कर सम्बोधित करता था। उन दिनों मेरी अवस्था तीस वर्ष की थी, किन्तु मैंने उससे पूछा: 'और कृपाकर यह बतलाइये कि "क्यों ?"

"उसने अपने कन्धे हिलाये और बोली: 'क्योंकि आप इतने मूर्ख नहीं हैं जितना कि वह है। और वह मेरी ओर धूर्तता से देखती हुई बोली: 'और न ही आप इतने असुन्दर हैं।'

"इससे पहिले कि वह हट कर मुझे अलग करे मैंने उसके कपोलों पर एक प्रगाढ़ालिंगन अङ्कित कर दिया। वह एक ओर उछल कर जा कूदी, किन्तु अब देर हो चुकी थी। वह बोली: 'खैर, आप इतने लजालु भी नहीं हैं। लेकिन अब ऐसा काम दोबारा मत करियेगा।'

'मैंने भोली सूरत बनाली और धीमे स्वर में कहा: 'आह! मैडम, जहाँ तक मेरा प्रश्न है, यदि मैं किसी वस्तु की दूसरी वस्तु से अधिक इच्छा करता हूँ, वह मैजिस्ट्रेट के सामने मोरिन वाले दोष पर ही बुलाई जावेगी।'

"'क्यों ?' उसने पूछा।"

"उसकी ओर देखते ही रह कर मैंने उत्तर दिया: 'क्योंकि आप संसार के सर्वाधिक सुन्दर जीवित प्राणियों में से एक हो, क्योंकि आपके साथ अपराध करना मेरे लिये आदर एवं गौरव की बात होगी, और क्योंकि आपको देखने के बाद लोग भी यही कहेंगे।

"खैर लबार्वे को वही मिला जिसके वह योग्य था, किन्तु साथ ही साथ वह भाग्यवान भी बहुत है।"

"वह फिर से दिल खोल कर हँसने लगी और बोली: 'आप भी कितने मजाकिया हैं।' और वह शब्द मजाकिया कह भी नहीं पाई कि मैंने उसे भुजाओं में भर जहाँ भी जगह मिलती उसके माथे पर, आँखों पर, सिर पर, जिस भी स्थान को वह दूसरे को बचाने के लिये छोड़ देती, वहीं चुम्बन लेना प्रारम्भ कर दिया। अन्त में लजाती एवं क्रोधित होती हुई वह छूट गई। 'मिस्टर आप बिलकुल बेहूदे हैं' वह बोली: 'और मुझे दुःख है कि मैंने आप से बातें कीं।'

"मैंने अब में उसका हाथ पकड़कर हकला कर कहा: 'मैडम, मैं क्षमा माँगता हूँ। मैंने आप के साथ अपराध किया है, मैंने असभ्यों को भाँति व्यवहार किया है। मुझसे मेरे किये हुए पर क्रुद्ध मत होइये। यदि आप जानतीं---'

"मैं व्यर्थ ही बहाना खोजता रहा। कुछ क्षणों में वह बोली: 'मिस्टर, मुझे कुछ नहीं जानना है।' किन्तु मुझे कहने के लिये बात मिल गई, और मैं बोला: 'मैडम मैं आप से प्रेम करता हूँ।'

"वास्तव में वह आश्चर्यचकित हो गई। उसने मुझे देखने को नेत्र उठाये, और मैं कहता ही रहा मैडम, कृपा कर मेरी बात सुनिये। मैं मोरिन को नहीं जानता और मैं उसकी रत्ती भर भी चिन्ता नहीं करता। मेरे लिये उसके ऊपर मुकदमा चलाने तथा उसके जेल में बन्द हो जाने से कोई अन्तर नहीं पड़ता। मैंने विगत वर्ष आपको यहाँ देखा था और मैं आप पर इतना मुग्ध हो गया कि आपका ख्याल मेरे हृदय से कभी दूर नहीं हुआ। आप मेरी बात पर विश्वास करें अथवा नहीं इससे मुझे कोई मतलब नहीं। मैंने आपको पूज्य समझा। आपको स्मृति मेरे हृदय में इतनी बढ़ गई कि मैं आपसे फिर मिलने की इच्छा करने लगा और इसलिये उस मूर्ख मोरिन का अपना बहाना बनाकर मैं यहाँ आया। परिस्थितियों ने मुझसे आदर की दीवाल लँघवाकर अतिक्रमण करवा दिया। और मैं तो आपसे क्षमा-याचना कर सकता हूँ।

"उसने मेरी दृष्टियों से सत्यता पढ़ ली। वह मुस्कराने को फिर सन्नद्ध हुई, तब वह बड़बड़ाई: 'तुम व्यर्थ!' किन्तु मैंने अपने नेत्र उठाकर गम्भीर स्वर में कहा और मुझे विश्वास है कि मैं सचमुच गम्भीर ही था: 'मैं सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि मैं सच कह रहा हूँ।' उसने बिलकुल ही साधारण ढंग से कहा: 'सचमुच?'

"हम लोग अकेले, बिल्कुल अकेले थे, क्योंकि रिवेट और उसका चाचा घूमते २ अदृश्य हो गये थे, जब मैं उसे पकड़ कर उसके हाथों का चुम्बन ले रहा था, और वह मेरी बातों को प्रिय एवं नवीन जानकर, यह

बिना समझे ही कि उसमें से उसे कितनी बात पर विश्वास करना चाहिये था, अन्त में जब मैं यह विश्वास करके कि मैंने क्या कहडाला था अपने ऊपर ही क्रुद्ध हो रहा था और जब मैंने उसके सम्मुख प्रेम की सच्ची घोषणा की तब मैं पीला पड़ रहा था, उत्सुक हो रहा था तथा काँप रहा था और मैं उसकी कमर में हाथ लपेटकर उसके कानों के पास लटकती हुई घुँघराली अलकों में धीरे २ कुछ कह रहा था तब वह विचारों में इतनी तल्लीन थी कि निष्प्राण सी लग रही थी।

"तब उसके हाथ ने मेरे हाथ का स्पर्श किया और उसे दबाया, और मैंने काँपते २ उसकी कमर में धीरे से हाथ डालकर उसे दृढ़ता से पकड़ लिया अब वह अलग नहीं हटी, और मैंने उसके कपोलों का अपने अधरों से स्पर्श किया एकाएक बिना उन्हें ढूँढते हुये मेरे होट उसके होटों से मिल गये। यह तो बहुत प्रगाढ़ालिंगन था और यदि मैंने हम ! हम ! की अपने ठीक पीछे आवाज न सुनी होती तो यह और भी अधिक देर तक चलता। वह झाड़ियों में जाकर छिप गई, और मैंने मुड़ कर देखा कि रिवेट मेरी ओर रास्ते के बीच से चलता हुआ आरहा था। वह हँसा भी नहीं। वह बोलाः 'तो इस प्रकार से तुम उस मोरिन के सूअर का मामला तय करते हो।'

"मैंने धोका देते हुए कहाः 'जिससे जो हो सकता है, मेरे मित्र, वही वह करता है। किन्तु चाचा क्या कहते हैं ? तुम्हारी उनसे क्या २ बातें हुईं? भतीजी के विषय में मैं बतलाऊँगा।'

"मैं उसके पास इतना भाग्यशाली नहीं रहा' उसने उत्तर दिया। और मैंने उसकी बाँह पकड़ी और हम लोग अन्दर चले गये।

३

डिनर ने तो मेरी सारी बुद्धि हर ली। मैं उसकी बगल में बैठा; मेरा हाथ उसके हाथ से और मेरा पैर उसके पैर से लगातार लगते रहे। और हम एक दूसरे को स्थिर दृष्टि से देखते रहे।

"डिनर के पश्चात् चन्द्र की चाँदनी में हम साथ २ टहलने गये।

श्रौर मैं उससे जो भी प्रेमपूर्ण बातें सोच सकता था सब कहता रहा। मैंने उसे अपने पास रखा, हर क्षण अपने अधरों को उसके अधरों से गीले करते हुए आलिंगन किया और उसका चाचा और रिवेट हमसे आगे आपस में तर्क करते चल रहे थे। हम लोग अन्दर गये, शीघ्र ही एक सन्देशवाहक ने आकर उसकी चाची का एक तार यह कहते हुए दिया कि वह अगले दिन की ७ बजे वाली पहली गाड़ी से आवेगी।

"बहुत अच्छा, हेनरीटे' उसके चाचा ने कहा, 'जाओ और दोनों सज्जनों को इनके कमरे दिखलादो।' उसने रिवेट का कमरा पहले दिखलाया, और वह मुझसे मेरे कान में बोलाः 'यदि वह हमको तुम्हारे कमरे में पहले ले चलती तो भी कोई भय नहीं था।' तब वह मुझे मेरे कमरे में ले गई, और जैसे ही हम दोनों अकेले रह गये, मैंने उसे फिर भुजाओं में भर लिया और उसकी भावनाओं को उत्तेजित कर उसके विरोध पर विजय प्राप्त कर लेनी चाही, किन्तु उसे जब यह अनुभव हुआ कि वह वशीभूत हो जायगी, वह कमरे से भाग निकली और मैं बहुत उत्तेजित हो एवं खिसिया कर चादर में जा लेटा, क्योंकि मैं जानता था कि मुझे अधिक नहीं सोना था। मुझे आश्चर्य हो रहा था कि मैं ऐसी गलती कैसे कर गया। तब ही मुझे द्वार पर एक हलकी सी थपथपाहट सुनाई दी और मेरे यह पूछने पर कि कौन था एक धीमे से स्वर में उत्तर आया—"मैं"

"मैंने जल्दी से कपड़े पहने और द्वार खोल दिया और वह अन्दर आ गई:'मैं आप से यह पूछना भूलगई थी कि आप सुबह क्या ग्रहण करेंगे?' वह बोली 'चोकलेट, चाय अथवा कहवा' मैंने उसकी कमर में मूर्खता से बाहें डालते हुए और उस पर चुम्बनों की बौछार लगाते हुए कहा:'मैं लूँगा—मैं लूँगा—'किन्तु वह मेरी बाहों से छूटकर, मेरी बत्ती को बुझाकर और मुझे उस अन्धकार में उन्मत्त एवं दियासलाई ढूँढते हुए और ऐसा कर सकने में भी असमर्थ अकेला छोड़कर अदृश्य हो गई। अन्त में मुझे दियासलाई मिल गई और मैं बत्ती जलाकर हाथ में लिये आधे रास्ते तक पागलों की भाँति चला गया।

" मैं क्या करने जारहा था ? मैं यह सोचने को नहीं रुका, मैं उसे केवल खोजना चाहता था और मैं खोजता। मैं बिना सोचे समझे कुछ कदम और बढ़ा कि मेरे हृदय में एकाएक विचार उठाः 'मान लो मैं उसके चाचा के कमरे में पहुंच जाऊँ तब मैं क्या कहूँगा ?' और मैं परेशान दिमाग और धड़कते हुए हृदय को लेकर चुपचाप खड़ा रह गया।

"किन्तु कुछ क्षणों में ही मुझे एक उत्तर सूझा: निश्चय ही मैं यह कहूँगा कि रिवेट से एक बहुत आवश्यक बात पूछने के लिये मैं उसके कमरे में जा रहा था।' और मैं हर द्वार को देखने लगा जिससे कि मुझे उसका द्वार मिल जाय। अन्त में मैंने एक साथ ही एक हेन्डल घुमा दिया और अन्दर चला गया। वहाँ हेनरीटे अपने बिस्तर पर बैठी हुई थी और मेरी ओर अश्रुपूर्ण नेत्रों से देख रही थी। अतः मैंने द्वार धीरे से बन्द किया और उसके पास चुपचाप गया तथा बोला: 'मैडम, मैं आपसे कुछ पढ़ने को कहना भूल गया था। मैं तुमको किताब का नाम नहीं बतलाऊँगा जो मैंने पढ़ी थी, किन्तु वह रोमान्सों में सबसे अधिक अद्भुत और कविताओं में सबसे अधिक प्रेरक है। और जब मैंने पहिला पृष्ठ पलटा तब उसने मुझे, जितने भी मैं पलटना चाहता था, पन्ने पलटने दिये और मैंने उसके इतने पाठ पढ़े कि हमारी मोमबत्तियाँ जलते २ समाप्त हो गईं।'

" उसे धन्यवाद देने के पश्चात् जब मैं दबे पाँव चुपचाप लौट रहा था मुझे एक कठोर हाथ ने पकड़ लिया। और एक स्वर—यह रिवेट का था—मेरे कानों में फुसफुसाया: 'तो अभी तुमने मोरिन के मामले को तय नहीं किया।'

"सुबह सात बजे वह मेरे लिये एक प्याला कहवा खुद ब खुद ही लाई। मैंने उसके समान मीठी मादक सुगन्धित एवं स्वाददार कभी कोई वस्तु नहीं पी थी। मैं अपने होठों को उसके पास से हटा नहीं पाता था। कमरे में से वह निकल कर ही गई थी कि रिवेट आ गया। वह एक ऐसे व्यक्ति की भाँति जो रात्रि भर सो न सका हो नरवस और उत्तेजित सा लग रहा था और उसने मुझसे प्रश्न करते हुए पूछा: 'यदि तुम इसी भाँति करते

रहोगे तो उस मोरिन के सूअर का मामला बिगाड़ दोगे।'

"आठ बजे चाची आ गई। हमारी बातचीत बहुत ही कम हुई क्योंकि उन लोगों ने शिकायत वापस लेली और मैंने २०० फ्रान्क नगर के गरीबों के लिये वहाँ छोड़ दिये। वे लोग हमें एक दिन के लिये और रोकना चाहते थे और उन्होंने कुछ खण्डहरों को देखने के लिये एक यात्रा का आयोजन तैयार कर लिया। हैनरीटे ने अपने चाचा के पीठ पीछे से मुझे रुकने के लिये इङ्गित किया, और मैंने स्वीकार कर लिया किन्तु रिवेट ने जाने का निश्चय कर लिया था और यद्यपि मैंने उसे अलग ले जाकर उससे बहुत प्रार्थना की किन्तु वह बहुत क्रोधित सा दिखलाई दिया और मुझसे कहता रहाः 'अब इस मोरिन के सूअर का बहुत काम हो गया, सुनते हो ?'

"मुझे भी लाचार वहाँ से आना पड़ा, और वह मेरे जीवन का सबसे क्रूर क्षण था। मैं उस कार्य को जब तक वहाँ रहता तब तक चलाता रहता। उससे चुपचाप हाथ मिलाने के पश्चात् जब हम लोग रेल में बैठे तब मैंने रिवेट से कहाः 'तुम बड़े निर्दयी हो!' और उसने उत्तर दियाः 'मेरे प्यारे मित्र, तुम दोनों मिलकर मुझे उत्तेजित करने लगे थे।'

'फेनल' कार्यालय जाने पर मैंने देखा कि हम लोगों की एक बहुत बड़ी भीड़ प्रतीक्षा कर रही थी, और हम लोगों को देखते ही वे सब चिल्लाये 'क्या आप उस मोरिन के सूअर का मामला तय कर आये ?" सारा लारोचेले इस विषय में उत्तेजित था और रिवेट, जो रेल यात्रा में अपने क्रोध को निकाल चुका था, बड़ी कठिनाई से हँसी रोक कर बोलाः 'हाँ हम लोग सफल हो गये, लाबार्बे को धन्यवाद दो।' और हम लोग मोरिन के घर पहुँचे।

"वह अपने दुर्भाग्य से लगभग मृतक के समान अपनी टाँगों पर अलसी का प्लास्टर बाँधे और अपने सिर पर ठण्डी पट्टियाँ रखे हुए आराम कुर्सी पर बैठा हुआ था। वह मृत्यु शय्या पर पड़े हुए व्यक्ति की भाँति खाँस रहा था। कोई नहीं जानता था कि उसे ठण्ड कैसे लग गई और उसकी पत्नी शेरनी की भाँति उसे खा जाने को तैयार सी दीख पड़ती थी। वह हमें देखते

ही बुरी तरह से सिहर उठा। जिससे उसके हाथ और पाँव सब ही काँप गये। यह देखते ही मैं बोला: 'वह सब तय हो गया; किन्तु अब आगे ऐसी बात कभी मत कर बैठना।'

"वह आँसू बहाता हुआ उठा, और मेरे हाथों को पकड़ कर उसने उनका चुम्बन लिया, मानो वे हाथ किसी राजकुमार के हों। वह अचेत सा हो चिल्लाया, उसने रिवेट का आलिङ्गन किया, और मैडम मोरिन का भी, जिसने उसे एक ऐसा धक्का दिया कि वह लड़खड़ाता हुआ कुर्सी पर जा पड़ा, चुम्बन लिया किन्तु वह धक्के पर उठ न सका। उसका मस्तिष्क बहुत अधिक असन्तुलित हो गया। सारे गाँव भर में उसको 'एक मोरिन का वह सूअर' के नाम के अतिरिक्त और किसी नाम से सम्बोधित नहीं किया जाता और जब वह यह सुनता तब उसे ऐसा लगता मानो उसके सीने में तलवार घुसेड़ दी गई हो। जब उसके पीछे से कोई चलता फिरता लड़का पुकारता, 'सूअर!' तब वह स्वतः ही अपना सिर उधर ही घुमा देता। उसके मित्र भी उससे बहुत मजाक करते और जब कभी वे सूअर का गोश्त खाते होते तो उससे कहते ' यह तुम्हारा ही अङ्ग है।' दो वर्ष पश्चात वह मर गया।

और रहा मेरा, तो जब मैं १८७२ में चेम्बर आफ डिप्टीज के लिये उम्मीदवार था तब मैं फोनसेरे के नये हाकिम मि० बेलोंकल से, उसका वोट प्राप्त करने के लिये, मिलने गया और एक लम्बी सुन्दरी और धनी महिला ने मुझे रिसीव किया। ' अब आप मुझे नहीं जानते ?' उसने कहा:।

" मैं हिचकचा कर बोला: ' नहीं मैडम।'

"हेनरीटे बोनेल"

" 'आह!' और मुझे, जब कि वह बिलकुल मजे में थी और मेरी ओर मुस्कराकर देख रही थी, लगा कि मैं पीला पड़ता जा रहा हूँ।

"ज्योंही वह मुझे अपने पति के पास अकेला छोड़ गई, उसने मेरे दोनों हाथ पकड़े, और उन्हें दबाते हुए, मानो पीस डालना चाहता था, बोला: 'श्री मान् जी, मैं आपसे मिलने की बहुत दिनों से सोच रहा था, क्योंकि मेरी पत्नी आपके विषय में बहुत बार बातें करती रहती है। मैं जानता हूँ कि

कितनी बुरी परिस्थिति में आपने उससे जान पहिचान की और मैं जानता हूँ कि आपने कितनी विनम्रता, त्याग एवं बुद्धिमानी से उसके साथ व्यवहार किया और उस······' वह हिचकिचाया, और तब धीमे स्वर से, मानो कोई भद्दी और घृणित बात कहने जा रहा हो, बोला: 'उस मोरिन के सूअर के मामले में।' "

पागल स्त्री

"मैं आपको फ्रान्स और प्रशिया के युद्ध की एक दर्दनाक कहानी सुना सकता हूँ।" मिस्टर डी एन्डोलिन ने बैरन डी रेवट के भवन के स्मोकिंग-रूम में एकत्रित कुछ मित्रों से कहा। 'आप लोग मेरे फोबोर्ज डी कोरमेल में जो मकान है उसे तो जानते ही हैं। जब प्रशियन वहाँ आये तब मैं वहीं रह रहा था और मेरे पड़ोस में एक पागल सी ही स्त्री जिसकी लगातार दुर्भाग्यों के आने के कारण चैतन्यता नष्ट हो गई थी, रहती थी। सत्ताइस वर्ष की अवस्था में एक महीने के ही अन्दर उसके पिता, पति, और हाल ही में हुए बच्चे की मृत्यु हो गई थी।

"मृत्यु जब एक बार घर में प्रवेश कर जाती है। तब वह बड़ी जल्दी ही लौट आती है, मानो वह रास्ता जान गई हो, और वह नवयुवती दुख से कातर अपने बिस्तर पर पड़ गई और छः सप्ताह तक वाय में खेलती रही। तब धीरे धीरे वह शान्त होती गई, और स्थिर हो गई, कुछ नहीं खाती पर हाँ खाने का नाम अवश्य करती, और केवल उसके नेत्र ही स्थिर नहीं थे। जब भी लोग उसे उठाने की चेष्टा करते तब ही वह इतनी जोर से चिल्लाती कि मानो लोग उसे मारे डाल रहे हों, अतः उन्होंने उसे बिस्तर पर निरन्तर लेटे रहने दिया, हाँ यदि उसे कभी उठाते तो उसको नहलाने के लिये, इसके कपड़े अथवा चटाई को बदलने के लिये।

"उसके पास उसे कभी २ कुछ पिलाने को, या थोड़ा सा ठण्डा गोश्त खिलाने को उसकी एक वृद्धा नौकरानी रहती रही। उसके दुखी मनकी क्या अवस्था थी ! कोई कभी नहीं जान सका, क्योंकि वह कभी बोलती ही नहीं थी। क्या वह मृतकों के विषय में सोच रही थी ? क्या वह जो कुछ भी हो चुका उससे विस्मृत हो दुखी हो सोच रही थी ? या उसकी स्मृति निश्चल

जल की भाँति शान्त थी ? किन्तु यह कैसे भी हुआ हो, वह पन्द्रह वर्षों से गतिहीन एवं एकान्तिक पड़ी रही थी।

"युद्ध आरम्भ हो गया, और दिसम्बर के प्रारम्भ में जरमन कोरमेल तक आ गये। मुझे यह कल की सी बात याद है। उस दिन की ठण्ड पत्थरों को भी फाड़ देने वाली थी। जब मैंने फौज के सिपाहियों की भारी पदचापें सुनीं तब मैं स्वंय अपनी आराम कुर्सी पर गठिया के कारण हिलडुल न सकने के कारण लेट रहा था। मैंने उन्हें जाते हुए अपनी खिड़की में से देखा।

"उन्होंने डोरों के सहारे चलने वाली कटपुतली की सी अपनी विचित्र गति से, जो उनमें ही पाई जाती है, अतीत को निरन्तर अपवित्र किया। अफसरों ने अपने सैनिकों को नगरनिवासियों के यहाँ जाकर ठहरने की आज्ञाएँ प्रदान कीं और मेरे यहाँ भी सत्तरह सैनिक ठहरे हुए थे। मेरी पड़ोसिन, उस निश्चल स्त्री, के यहाँ बारह सैनिक थे जिनमें से एक असभ्य अक्खड़ तथा निर्दयी कमान्डेन्ट भी था।

"पहिले तो थोड़े से दिन सब ठीक ठाक चलता रहा। दूसरे मकान के अफसरों को बतला दिया गया था कि वह स्त्री रुग्ण थी, और उन्होंने उसकी तनिक भी चिन्ता नहीं की थी, किन्तु शीघ्र ही उस स्त्री ने,जिसे उन्होंने कभी नहीं देखा, उन्हें उत्तेजित कर दिया। उन्होंने पूछा कि वह किस रोग से बीमार थी। उन्हें बतलाया गया कि विगत पन्द्रह वर्षों से निरन्तर उसने भीषण शोक के परिणाम स्वरूप, बिस्तर पकड़ रखा था। यह निश्चय था कि वे उस बात पर विश्वास नहीं कर सके। उन्होंने सोचा कि वह बेचारी अभागिन पगली अपने गर्व के कारण कि कहीं उसे प्रशियनों के सम्मुख जाना देखना, या सुनना न पड़े, बिस्तर से उठना ही नहीं चाहती थी।

"कमान्डेन्ट ने उसे अपना स्वागत करवाने के लिये उस पर दबाव डाला। वह उसके कमरे में पहुँचा दिया गया। वह उससे कठोर स्वर से बोला: 'मैडम, मैं आपसे उठने, और उठ कर सीढ़ियों से नीचे उतर कर आने की प्रार्थना करता हूँ ताकि हम सब लोग आपके दर्शन कर सकें।' किन्तु वह अपने श्री-हीन नेत्र उसकी ओर घुमाकर ही रह गई, अतः वह

कहता रहा 'मैं अपमान सहन करने नहीं आया हूँ, और यदि आप स्वेच्छा से नहीं उठेंगी तो मैं आपको बिना किसी सहारे के चलाने का भी ढङ्ग निकाल सकता हूँ।'

"किन्तु उसने कोई भी ऐसा चिन्ह नहीं प्रदर्शित किया जिससे यह सिद्ध होता कि वह उसकी बात सुन रही थी और वैसी ही स्थिर पड़ी रही। तब वह क्रोधित हो उठा, और उस चुप्पी को अदम्य घृणा का संकेत समझ वह बोला: 'यदि आप कल नीचे नहीं आईं तो…… …' और वह कमरे से निकल कर चला गया।

"दूसरे दिन उस भयभीत वृद्धा सेविका ने उसे कपड़े पहिनाने चाहे, किन्तु वह पगली बड़ी जोर से चिल्लाने लगी, और अपनी पूरी शक्ति लगा कर वैसे ही पड़ी रही। अफसर शीघ्र ही दौड़ा २ ऊपर आया। सेविका उसके चरणों पर गिर कहने लगी: श्रीमानजी, वह नीचे नहीं जावेंगी। उन्हें क्षमा कर दीजिये, क्योंकि वह बहुत दुखी हैं।'

"अफसर क्रोध से उन्मत्त हो उठा। क्रोधित होते हुए भी उसका इतना साहस नहीं हुआ कि वह अपने सैनिकों को उसे खींच कर बाहर निकाल देने की आज्ञा दे सके। किन्तु एकाएक, वह हँसने लगा, और जरमन भाषा में कुछ आज्ञायें देने लगा। शीघ्र ही सैनिकों का एक दस्ता एक चटाई को इस भाँति बाहर लाता हुआ दिखलाई दिया जैसे कि वह किसी आहत व्यक्ति को ले जा रहे हों। बिस्तर पर जो अभी भी बेतरतीब था, वह पगली बिल्कुल शान्त एवं चुप लेटी हुई थी, क्योंकि उसे तो जब तक लेटे रहने दिया जाता तब तक किसी भी बात से कोई मतलब ही नहीं था। उसके पीछे पीछे एक सैनिक स्त्रियोचित कपड़ों की एक पोटली लिये जा रहा था। अफसर ने अपने हाथ मलते हुए कहा: 'हमें भी देखना है कि अब आप अपने आप कपड़े पहिन कर थोड़ी बहुत दूर चल सकती हैं अथवा नहीं।'

और तब वह जुलूस इमोविले के जंगल की तरफ चल दिया। दो घन्टे में सैनिक अकेले लौट आये और उस पगली के बारे में कुछ भी मालूम

नहीं पड़ा। उन्होंने उसका क्या किया ? वह उसे कहाँ ले गये ? कोई नहीं जान सका।

"बर्फ रात दिन पड़ती रही, और उसने जंगलों को जमे हुए झागदार कुहरे की मोटी चादर से ढक लिया। भेड़िये हम लोगों के दरवाजों तक आ जाते थे।

"उस बेचारी अभागिनी स्त्री का विचार मुझे परेशान करता रहा, और मैंने उसके विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिये प्रशियन अधिकारियों को कितने ही पत्र डाले पर उनका कोई परिणाम नहीं निकला। जब बसंत ऋतु आई, सेना लौट गई किन्तु मेरी पड़ोसिन का मकान बन्द ही रहा, और बगीचों में घास काफी उग आई। वृद्धा सेविका जाड़ों में मर चुकी थी और किसी अन्य ने उस घटना को कोई महत्व नहीं दिया था। मैं अकेला ही उस पर निरन्तर विचार करता रहा। उन्होंने उस स्त्री का क्या किया ? क्या वह जंगलों में से भाग गई ? क्या किसी को उसे वहाँ देखकर दया आ गई और उसने उससे कोई समाचार प्राप्त किये बिना ही उसे अस्पताल पहुँचा दिया ? मेरी शङ्काओं का समाधान करने वाली कोई घटना नहीं हुई और मेरा भय बना ही रहा।

"वसन्त में हंस बहुत थे। थोड़े दिनों के लिये जब मेरी गठिया ठीक हो गई मैं जंगलों में घिसटता घिसटता जा पहुँचा। मैं चार पाँच लम्बी चोंच वाली चिड़ियाँ मार चुका था कि मेरी गोली से आहत एक चिड़िया डाल पातों से भरे हुए गड्ढे में जा गिरी। मुझे उसे उठाने के लिये उसमें उतरना पड़ा और मुझे मालूम हुआ कि वह चिड़िया एक मृत मानव देह के समीप जाकर गिरी थी। शीघ्र ही पगली की स्मृति ने मेरे हृदय पर एक आघात किया। शायद उस सत्यानाशी वर्ष में कितने ही अन्य व्यक्ति जंगलों में मर गये होंगे मैं नहीं जानता, क्यों ? किन्तु मैं बताये देता हूँ, मेरा पूर्ण निश्चय था, कि मुझे उस बेचारी पगली का सिर अवश्य दिखलाई देगा।

"और एकाएक मैं समझ गया, हर बात पहचान गया। उन्होंने उसको ठण्ड में उस जङ्गल में उस चटाई पर पड़ा हुआ छोड़ दिया था, और अपने विचारों

के प्रति सच्ची रह कर उसने वर्फ की मोटी और हल्की सतह के अन्दर बिना हाथ पैर हिलाये नष्ट हो जाना स्वीकार कर लिया।

"तब भेड़ियों ने उसे खा डाला, और चिड़ियों ने उसके फटे बिस्तरों के ऊन से अपने घोंसले बना लिये तथा मैं उसकी हड्डियों को उठा लाया। मैं भगवान से केवल यही प्रार्थना करता हूँ कि हमारे पुत्रों को कभी कोई युद्ध न देखना पड़े।"

जूली रोमन

दो वर्ष पहिले शरद ऋतु में मैं भूमध्यसागर के किनारों पर घूम रहा था। किसी निर्जन सड़क पर कल्पना-सागर में गोते लगाने से अधिक सुन्दर और क्या हो सकता है! सागर के किनारे घूमते समय या पहाड़ी पर चढ़ते समय व्यक्ति धूप और चुम्बन लेते हुए पवन का आनन्द लूटता है। जब वह दो घन्टे तक सड़क पर घूमता है तब उस व्यक्ति के मन में उसके दिवा-स्वप्नों में क्या दृश्य, क्या प्रेम कविताएँ आती हैं! हर सम्भावित, भ्रमपूर्ण तथा आनन्ददायक आशायें गर्म एवं ठण्डी वायु के साथ उसकी हर श्वास में, जो वह लेता है, अन्दर जाती हैं, और वह उसके अन्दर एक आनन्द का प्रादुर्भाव करती हैं, जो घूमते २ भूख की भांति बढ़ता जाता है। ज्योंही वह प्रकृति के समीप आ जाता है, मृदु एवं शीघ्रगामी विचार उसकी आत्मा में मधुर गान आरम्भ कर देते हैं।

मैं सेन्ट राफेल से इटली जाने वाली सड़क पर जा रहा था, या यह कहिये, मैंने अपनी राह उस सौन्दर्यमय एवं बदलने वाले दृश्यों की ओर बनाई जिनका शायद पृथ्वी पर प्राप्य सभी प्रेम कविताओं द्वारा यशोगान हुआ है। यह सोचकर मुझे करुणा उत्पन्न हुई कि केन्स से लेकर मोनेको तक किंचित ही भूभाग में कोई व्यक्ति तकलीफ उत्पन्न करने, धन से छल-बल करने, इस सुन्दर आकाश के नीचे और गुलाब एवं नारंगियों के इस बाग में नीच मूर्खताओं से, मूर्खतापूर्ण आडम्बरों और नीचतापूर्ण स्वार्थपरताओं से तमाशा करने और मानव मन, जो कि नीच, अज्ञानी, पाखंडी एवं बुद्धि-गम्य है, को दिखलाने आता है।

एकाएक, अचेत खाड़ियों के घुमावों में समुद्र के सामने पहाड़ी के तले में मुझे चार पांच झोंपड़ियाँ दिखलाई दीं। उनके पीछे सनोवर का एक जंगल था जिसने बिना किसी रास्ते या पगडण्डी को छोड़े हुए दो घाटियों को ढक रखा था। वह इतनी सुन्दर झोंपड़ी थी कि विवश

मैं इनमें से एक के सम्मुख जा रुका। वह एक छोटी सफेद झोंपड़ी थी, जिस पर भूरे रङ्ग की सजावट हो रही थी और जिसकी छत तक पर गुलाब लग रहे थे। बाग सारे रङ्गों, एक से आकारों के फूलों से लदे पड़े थे, और उन पर बेलें अपने ही ढङ्ग से सजाई गई थीं। खुला हुआ घासदार मैदान फूलों के पत्तों से सजा हुआ था; बरामदे की सीढ़ियों पर एक गमला था, जिसमें अंगूर की बेलें लग रही थीं, और खिड़कियों के ऊपर पके हुए पीले २ अंगूरों के गुच्छे लटक रहे थे, और पत्थर की चहारदीवारी, जो उस सुन्दर, मनहर इमारत के चारों ओर थी, लाल २ फूल वाली बेलों से लदी हुई थी, जो रक्त के लाल २ धब्बों सी लगती थी। घर के पीछे फूलों से लदे संतरों के पेड़ों की एक लम्बी पंक्ति चली गई थी, जो पहाड़ों की तलहटी पर जाकर समाप्त हुई।

झोंपड़ी के द्वार पर गिलट के छोटे २ अक्षरों में मैंने यह नाम पढ़ाः "विला डी एन्टन।" मैंने मन ही मन पूछा कि किस कवि या परी ने इस स्थान को बसाया,उसके लिये एकान्त ने क्या प्रेरणा दी कि वह ऐसे स्थान में, जो फूलों से लदा होने के कारण ऐसा लगता था कि मानो बसन्त ऋतु छाई हुई है ,रहने लगा।

थोड़ी ही दूर सड़क पर एक पत्थर-कूटा पत्थर कूट रहा था। मैंने उससे झोंपड़ी के स्वामी का नाम पूछा। उसने उत्तर दिया कि यह झोंपड़ी मैडम जूली रोमन की थी।

जूली रोमन ! मैंने बचपन में उसके बारे में लोगों को कहते हुए सुना था—महान एक्ट्रेस, रेचेल की प्रतिद्वन्दी और कोई भी स्त्री इतनी प्रशंसा, इतना प्रेम नहीं प्राप्त कर सकी थी, सबसे महान ! उसके कारण कितने ही द्वन्द्वयुद्ध हुए, कितनी ही आत्म-हत्यायें की गईं, और उसके लिये कितने लोग अपनी जानपर खेल गये। अब उस झाँसादेने वाली की क्या उम्र थी ? साठ-नहीं, सत्तर-पचहत्तर वर्ष। जूली रोमन। यहाँ, इस मकान में। मुझे एक प्रेमी से झगड़ा हो जाने पर अपने प्रेमी, एक कवि के साथ उसके सिसली भाग जाने पर सारे फ्रांस में उत्पन्न वातावरण का स्मरण हो आया। (मैं उस समय केवल बारह वर्ष का था।)

वह रात के पहिले शो, जिसके अन्दर श्रोताओं एवं दर्शकों ने उसकी आधे घन्टे तक प्रशंसा की और ग्यारह बार 'वन्स मोर' हुआ, के बाद ही अपने नये प्रेमी के साथ भागी थी। वह डाक की गाड़ी में कवि के साथ गई थी, उन दिनों रिवाज ही ऐसा था। उन्होंने निराली भूमि, 'यूनान की पुत्री,' में प्रेम करने लिये समुद्र पार किया। वह भूमि संतरों के वृत्तों की कुञ्जों के नीचे, जो पालेरमो के चारों ओर हैं, "कोक्वे डी ओव" के नाम से प्रसिद्ध है।

ऐटेना की उनकी चढ़ाई, और किस भाँति वे बाँह में बाँह डाले, गाल से गाल भिड़ाये ज्वालामुखी पहाड़ के मुख पर घूमते रहे, मानो वे उस अग्नि के समुद्र में कूद पड़ना चाहते हों।

उन प्रभावोत्पादक कविताओं, जिन्होंने पीढ़ी की पीढ़ी को चकाचौंध कर दिया और जो इतनी गम्भीर एवं रहस्यमयी थी कि जिन्होंने दूसरे कवियों के लिये एक नये ही संसार की सृष्टि कर दी, का लेखक अब काल के कराल गाल में समा चुका था।

वह दूसरा परित्यक्त प्रेमी, जिसने उसके लिये संगीत के ऐसे भावों की सृष्टि की जो सबके हृदय में वर्तमान रहे—भाव-विज्ञान के और दुख के जो कि हृदय में सीधे ही पार चले जाते हैं।

वही यहाँ, पुष्पों से आवरित मकान में रहती है।

मैं अब नहीं हिचकिचाया। मैंने घण्टी बजा दी। एक अठारह वर्षीय नौकर, जो असुन्दर और लजीला लगता था, अपने हाथों को निराले ही ढङ्ग से रखे हुए, किवाड़ खोलने आया। मैंने अपने कार्ड पर उस वृद्धा एक्ट्रेस के लिये एक शानदार धन्यवाद तथा एक उत्सुक प्रार्थना लिखी ताकि वह मेरा स्वागत कर सके। शायद वह मेरा नाम जानती हो और मुझे मिलने की आज्ञा दे दे।

नवयुवक व्यक्तिगत सेवक चला गया, किन्तु शीघ्र ही आकर उसने मुझसे पीछे २ चले आने को कहा। उसने मुझे एक स्वच्छ ड्राइंगरूम में पहुँचा दिया, जो लुइस फिलिप्स के ढङ्ग से हर बात में मिलता था, जिसके सामानों को ढकने के वस्त्र एक सोलह वर्षीया तरुणी द्वारा जो पतली थी किन्तु अधिक सुन्दर नहीं थी, मेरे सम्मान में हटाए जा रहे थे।

तब नौकर वहाँ मुझे अकेला छोड़ कर चला गया। मैं रुचिपूर्वक कमरे में चारों ओर देखने लगा। दीवाल पर तीन चित्र टंग रहे थे एक तो एक्ट्रेस का सम्मानीय पार्ट में, दूसरा एक लम्बा फ्राक-कोट जो कमर पर तंग था और कमीज जो उन दिनों में प्रचलित थी,पहने हुए प्रेमी कवि का था, तीसरा था उस गायक प्रेमी का जो एक क्लेवीकोर्ड के सम्मुख बैठा हुआ था। महिला अपने उस चित्र में सुन्दर एवं आकर्षक लग रही थी किन्तु उसके चित्र में कुछ रङ्गों का आडम्बर था, जैसा कि उन दिनों में सामान्यतः प्रचलित था। उसके अधरों एवं नेत्रों में मधुर मुस्कान थी; और चित्रकारिता उच्च श्रेणी की थी। वे तीनों स्मरणीय चेहरे आने वाली पीढ़ी की ओर देखते प्रतीत होते थे, और उनकी परिस्थितियाँ विगत दिवसों का और दिवंगत व्यक्तियों का स्मरण दिलाती थीं।

एक द्वार खुला और एक ठिंगनी स्त्री ने प्रवेश किया। वह बहुत वृद्ध और ठिंगनी थी तथा उसके बालों की लड़ियाँ और भौंहें श्वेत हो चुकी थीं। उसे देखकर मुझे एक सफेद, तेज और चुस्त चूहे का स्मरण हो आया। उसने मेरे सामने हाथ बढ़ाते हुए, स्वस्थ, सजग, गम्भीर एवं कांपते हुए स्वर में बड़ी मृदुलता से कहा: "श्रीमान् जी, आपको धन्यवाद है। आज के पुरुषों की बड़ी दया है कि वह विगत दिनों की स्त्रियों को स्मरण करते हैं। विराजिये!"

मैंने उसको बताया कि उसके मकान ने मुझे आकर्षित कर लिया, कि मैंने स्वामी का नाम जानने का यत्न किया और नाम जानने के पश्चात् मैं उसके मकान की घण्टी बजाने की अपनी बलवती इच्छा को दबा नहीं सका।

"श्रीमान जी, आपकी भेंट से मुझे बहुत आनन्द हो रहा है।" वह बोली "क्योंकि यह पहली ही बार है जब ऐसा हुआ है। जब आपका मधुर धन्यवादों युक्त कार्ड मुझे दिया गया तब मुझे ठीक वैसे ही आश्चर्य हुआ जैसे कि बीस वर्ष पुराने मित्र से कोई मिलने आया हो। मैं विस्मृत की जा चुकी हूँ, वास्तव में विस्मृत, मुझे कोई भी मेरा स्मरण नहीं करता, मेरी मृत्यु पर्यन्त कोई

स्मरण भी नहीं करेगा, तब तीन दिन तक सारे समाचार पत्र जूली रोमन के विषय में विशदता से चिन्ह, निन्दा और शायद प्रशंसाएँ भी वर्णन करते हुए कहानियाँ लिखते रहेंगे। तब मेरे नाम का अन्त हो जायगा।"

वह क्षण भर चुप रही और फिर बोलीः "और अब अधिक समय नहीं है। शायद कुछ ही महीनों में या दिनों में यह ठिंगनी स्त्री भी जो इस समय जीवित है एक मृत देह मात्र रह जायगी।"

उसने अपने नेत्र उठाये, जो उसके अपने चित्र से जा मिले, जो अपने मुरझाते हुए ढाँचे की ओर देख कर हँसता हुआ सा प्रतीत हो रहा था। तब उसने उस घृणित कवि और उस प्रेरित गायक, दोनों की ओर देखा, जो यह कहते प्रतीत होते थेः "अब वह खण्डहर हमसे क्या चाहता है ?"

एक अनिर्वर्णीय उत्सुक एवं बलवती उदासी, ऐसी उदासी जो उन पर छाती है जिनका जीवन समाप्त हो चुका हो और जो अपनी स्मृतियों से गहन जल में डूबते हुए व्यक्ति की भाँति संघर्ष करते रहते हैं, मेरे ऊपर छा गई।

मैं जिस सीट पर बैठा हुआ था वहाँ से नीस से मोन्टे कारलो जाने वाली सड़क पर खूब गाड़ियाँ आती जाती अच्छी प्रकार से दिखलाई दे रही थीं और उन गाड़ियों के अन्दर सुन्दरी नवयुवतियाँ तथा धनी एवं प्रसन्न पुरुष मुस्कराते हुए एवं सन्तुष्ट बैठे हुए थे। उसने देखा कि मेरी दृष्टि किधर थी, और मेरे विचारों को समझकर व्यथित मुस्कराहट से वह बोलीः " वर्तमान एवं भूत दोनों एक साथ सम्भव नहीं होते।"

"आपका जीवन कितना सुन्दर रहा होगा।" मैंने कहा।

उसने एक दीर्घ निश्वास छोड़ते हुए कहाः "हाँ, सुन्दर एवं मृदुल ! और इसी कारण मुझे इतना पश्चात्ताप होता है।" मैंने देखा कि वह इतनी सजगता एवं सावधानी से अपने विषय में बातचीत करना चाहती थी कि जैसे किसी भीषण घाव का स्पर्श किया जारहा हो। मैंने उससे प्रश्न करने

आरम्भ कर दिये। उसने अपनी सफलताओं, मस्ती भरी खुशियों, अपने मित्रों एवं अपने समस्त विजयी जीवन के विषय में बतलाया।

"श्री मती जी, क्या आपका सबसे बड़ा आनन्द और सबसे महान सुख आपके थियेटर में होने के कारण आपको प्राप्त हुए" मैंने पूछा।

"आह ! नहीं," उसने शीघ्रता से उत्तर दिया।

मैं मुस्कराया और उसने अपनी उदास दृष्टि उन दोनों पुरुषों के चित्रों की ओर उठाते हुए कहाः

"मुझे अपना सबसे महान सुख इनके कारण प्राप्त हुआ।"

मैं यह पूछे बिना न रह सका कि उनमें से किस एक के कारण सुख प्राप्त हुआ।

"श्रीमान जी ! दोनों के कारण, कभी २ मैं भी स्वयं भ्रम में पड़ जाती हूँ। अतिरिक्त इसके, मुझे इनमें से एक के प्रति आज भी घृणा सी है।"

"तब मैडम, आपकी सफलता उन पर नहीं वरन् स्वयं प्रेम के कार्य र निर्भर हुई। वे तो केवल प्रेम के अस्त्र शस्त्र मात्र रहे।"

"यह सम्भव है। किन्तु ओह ! कितने विचित्र शस्त्रास्त्र थे।"

"क्या आपका निश्चय है कि आपको किसी साधारण से व्यक्ति ने जो महान तो नहीं होता वरन् आपके लिये अपना समस्त जीवन, समस्त हृदय, अपना समस्त ममत्व, हर विचार एवं हर क्षण आप पर न्योछावर कर सकता था, प्रेम नहीं किया या आपके अन्य प्रेमियों से बहतर आपको प्रेम नहीं कर सकता था। उन दोनों से आपको भयानक प्रतिवादी-सङ्गीत एवं कविता प्राप्त हुए।

वह शक्ति से, उस यौवन पूर्ण स्वर से जो अभी आत्मा को कँपा सकता था, बोलीः "नहीं ! श्रीमान जी, नहीं ! एक साधारण व्यक्ति शायद मुझ से और भी अधिक प्रेम कर सकता था किन्तु वह वैसे प्रेम नहीं कर सकता था जैसे उन दोनों ने मेरे साथ किया। आह ! किन्तु जैसा वे प्रेम-सङ्गीत गाना जानते थे वैसा संसार में अन्य कोई भी नहीं गा सकता था।

"उन्होंने मुझे कैसे मस्त किया। क्या यह सम्भव है कि जो उन्होंने

शब्दों एवं स्वरों में खोजा वह किसी अन्य को प्राप्त हो सकता था ? यदि कोई समस्त कविता का और पृथ्वी एवं आकाश के सङ्गीत का प्रेम में समावेश नहीं कर सकता तो क्या प्रेम करना पर्याप्त है ? वे दोनों अपने गानों, अपने शब्दों एवं अपने कार्यों से स्त्री को आनन्द से पूर्ण कर देना जानते थे। हाँ, शायद हमारी इच्छा में सत्यता कम थी एवं भ्रम अधिक था, किन्तु वे भ्रम आपको बादलों में उठा देते जब कि केवल सत्यता आपको पृथ्वी पर ही छोड़ देती। यदि अन्य लोग मुझसे प्रेम करते थे तो यह केवल उन्हीं के जरिये हो सका कि मैंने प्रेम को पहिचाना, अनुभव किया एवं प्रेम की पूजा की।"

अकस्मात वह घोर दुख से चुपचाप अश्रु बहाने लगी। मैं खिड़की से सुदूर की ओर निहारता रहा और ऐसा बन गया कि मानो मुझको उसका कोई ज्ञान ही नहीं हुआ था।

"श्रीमान जी, आप देखते हैं कि बहुत से व्यक्तियों का अवस्था के साथ २ हृदय भी वृद्ध होता जाता है। मेरे साथ ऐसा नहीं हुआ। मेरी देह बेचारी उनहत्तर वर्ष की हो गई है किन्तु हृदय बीस का ही है। और यही कारण है कि मैं अपने स्वप्नों को संजोये इन पुष्पों के मध्य अकेली ही रहती हूँ।"

फिर हम दोनों के मध्य एक लम्बी चुप्पी रही। थोड़ी देर में वह आश्वस्त हो मुझ से मुस्करा कर कहने लगी:

"श्रीमान जी यदि आप जानते कि मैं सन्ध्याओं को जब कि मौसम सुहावना होता है किस प्रकार व्यतीत करती हूँ तब आप किस भाँति मेरा परिहास करते। मैं अपनी गलती पर लज्जित होती हूँ और साथ ही मुझे अपने ऊपर करुणा भी उत्पन्न हो जाती है।"

मेरा उससे पूछना भी व्यर्थ था; वह नहीं बतलाती, जब मैं जाने के लिये उठा वह चिल्लाई: "क्या इतनी जल्दी ?" मैंने उसे बतलाया कि मेरा विचार मोन्टे कारलो जाकर भोजन करने का था और शीघ्र ही वह कुछ संकोच से मुझ से बोली:

"क्या आप मेरे साथ भोजन करना पसन्द नहीं करेंगे ? मुझे तो बहुत प्रसन्नता होती।"

मैंने शीघ्र ही उसका निमन्त्रण स्वीकार कर लिया। उसने प्रसन्न हो घण्टी बजाई; जब वह अपनी नौकरानी को कुछ आज्ञायें दे चुकी, उसने कहा कि वह मुझे अपना मकान दिखलाना चाहती थी।

पौधों से भरा हुआ एक शीशे से ढका हुआ एक प्रकार का बरामदा भोजन गृह से बाहर था। वहाँ से सन्तरे के वृक्षों की लम्बी पंक्तियाँ जो पहाड़ों की तराइयों तक चली गई थीं दिखलाई देती थीं। झाड़ियों की एक सघन कुन्ज में बनी हुई एक नीची सी सीट इसका संकेत करती थी कि वृद्धा एक्ट्रेस बहुधा वहाँ आकर बैठा करती थी।

तब हम फूलों को देखने के लिये बगीचे में गये। सन्ध्या, वह शान्त एवं उष्ण सन्ध्या जो समस्त सुगन्धियों को पृथ्वी पर लेकर आती है धीरे २ आ गई। जब तक कि हम लोग भोजन करने मेज पर बैठे तब तक काफी अंधेरा हो गया था। भोजन बहुत सुन्दर बना था और हम लोग काफी देर तक खाते रहे। हम लोग बिल्कुल मित्र बन गये। मेरे हृदय में उसके लिये एक सघन सहानुभूति जाग्रत हो गई। उसने शराब का एक गिलास पिया और वह और भी अधिक मित्रतापूर्ण एवं विश्वासनीय हो गई।

"चलिये चलें, चन्द्र को देखें" उसने अन्त में कहाः "मैं चन्द्र, प्रिय चन्द्र को बहुत मानती हूँ क्योंकि वह मेरे महान से महान आनन्द में गवाह रहा है। मुझे ऐसा लगता है मेरी समस्त मृदु स्मृतियाँ वहीं पर कोष की भाँति रखी हुई हैं, और मैं उसकी ओर केवल इसलिये देखती हूँ कि वह मेरे पास वापिस आ जावे और कभी २ संध्या को मैं अपने लिये एक सुन्दर दृश्य—इतना सुन्दर दृश्य सजाती हूँ कि यदि उसे आप केवल जानते होते। किंतु नहीं आप मेरे ऊपर बहुत हँसेंगे—मैं आपको नहीं बतला सकती—मेरी हिम्मत नहीं है–नहीं–नहीं मैं आपको नहीं बतला सकती।"

'आह ! मैडम, मैं प्रार्थना करता हूँ आप कहिये !" मैंने उससे

प्रार्थना की। "आपका वह कौन सा रहस्य है? मुझे बतला दीजिये! मैं सौगन्ध खाता हूँ कि मैं नहीं हँसूँगा।"

वह हिचकिचाई; मैंने उसके हाथ, उसके पतले, ठण्डे और दयनीय हाथ, पकड़े और उनका एक एक करके न जाने कितनी बार चुम्बन लिया, उसके प्रेमी भी ऐसा पहिले दिनों में भी नहीं करते। वह यद्यपि झिझक रही थी किन्तु द्रवित हो गई!

"आप मुझसे प्रण करते हैं कि आप नहीं हँसेंगे!" उसने हँस कर कहा।

"हाँ, मैडम, मैं इसकी सौगन्ध खाता हूँ!"

"अच्छा, तब आइये!" उसने मुस्करा कर कहा।

हम लोग उठे, और ज्योंही उस हरी ड्रेस पहिने हुए असुन्दर नवयुवक ने उसके पीछे से कुर्सी खींची, वह उसके कानों में धीरे २ धीमे स्वर से कुछ फुसफुसाई।

उसने आदर पूर्वक उत्तर दिया, "जी, मैडम, बहुत शीघ्र।"

उसने मेरी बाँह पकड़ी और मुझे बरामदे में लिवा ले गई। संतरे के वृक्षों में टहलने का दृश्य बहुत ही सुन्दर था। चान्द वृक्षों के मध्य एक पतली रजत ज्योत्स्ना फेंक रहा था, चांदनी की एक लम्बी पंक्ति घनी और झुकी हुई डालों में से होकर पीली रेत पर गिर रही थी। वृक्ष फल रहे थे अतः एक मीठी तथा मादक सुगन्ध से वायुमण्डल भरा हुआ था, और घने कुहरे से आच्छादित अंधकार में हजारों जुगनू तारों के बीजों की भाँति झिलमिल कर रहे थे।

"ओह, प्रेम के दृश्य के लिये कितना आदर्श वातावरण है।" मैं चिल्ला उठा।

वह मुस्कराई: "क्या यह नहीं है? क्या यह नहीं है? अभी आप देख लेंगे।"

उसने मुझे अपने पास बैठा लिया और बड़बड़ाई:

"ऐसे दृश्यों की स्मृति ही मुझे जीवन पर पश्चाताप करने को बाध्य कर देती है। किन्तु आप, आज कल के आप लोग, ऐसी बातों को स्वप्न में

भी नहीं सोचते। आप लोग तो केवल व्यापारी और धन कमाने वाले हो। आप लोग तो हम लोगों से बातें करना भी नहीं जानते। जब मैं 'हम लोग' कहती हूँ तब मेरा अर्थ नवयुवतियों से होता है। प्रेम सम्बन्ध तो अब केवल स्पर्श मात्र ही रह गये हैं और जो कि बहुधा दरजी के अस्वीकार किये हुए बिलों में उत्पन्न हो जाते हैं। यदि आप बिल को स्त्री से अधिक महत्वपूर्ण स्वीकार करते हैं तो आप अदृश्य हो जाते हैं; किन्तु यदि आप स्त्री को अधिक महत्व देते हैं तो आप बिल का रुपया अदा कर देते हैं! कितना सुन्दर ढङ्ग एवं आकर्षक प्रेम है।"

उसने मेरा हाथ पकड़ कर कहा: "देखो।"

मैं उस प्रगट हुए आकर्षक चित्र को देख आनन्द से पूर्ण एवं हतप्रभ हो गया। हमारे सामने वृक्षों की पंक्ति के अन्त से एक युवक और एक युवती, दोनों एक दूसरे की कमरों में हाथ डाले हुए, उस चाँदनी में हमारी ओर आ रहे थे। बाँहों में बाँहें डाले हुए वे दोनों चन्द्र किरणों में, जिनकी मृदुल झलक से वे पूर्णतया स्नान किये हुए थे, धीरे २ आगे बढ़े।

क्षण भर के लिये वे अन्धकार में अदृश्य हो गये और फिर उस भवन के पास की ओर दृष्टिगत हुए।

नवयुवक पिछली शताब्दी की श्वेत मलमल के वस्त्र पहिने हुए था और एक चौड़ा टोप, जिसके ऊपर शुतुरमुर्ग का एक पंख लग रहा था, लगाये हुए था। युवती चौड़े घेरेदार एक स्कर्ट पहिने हुए थी तथा उसके सिर पर रीजेन्सी के काल का ऊँचा टोप लग रहा था।

अन्त में वे हम लोगों से लगभग सौ कदम दूर आकर रुक गये, और पगडण्डी के मध्य खड़े होकर उन्होंने एक दूसरे का, स्नेहपर्ण अभिवादन कर, आलिंगन किया।

अकस्मात मैं उन दोनों नौकरों को पहिचान गया। तब मुझे सारे शरीर को हिला देने वाली हँसी हँसने की बलवती इच्छा हुई। खैर, मैं हँसा नहीं। मैंने अपनी प्रवृत्ति को दबा लिया और इस अदभुत हास्य के दूसरे दृश्य की प्रतीक्षा करने लगा।

प्रेमी अब पुनः पगडण्डी के अन्त में पहुँच गये, और अन्तर ने उन्हें

फिर आकर्षक बना दिया। वे आगे ही आगे बढ़ते रहे और अन्त में स्वप्निल चित्रों की भाँति अदृश्य हो गये। उनके बिना वह पगडण्डी अब सूनी लगने लगी।

मैंने भी विदा ली। मैं वहाँ से शीघ्र ही चल दिया जिससे कि कहीं वे मुझे फिर से न दिखलाई दे जायें; क्योंकि मैंने सोचा शायद यह चश्मा बहुत समय तक के लिये बनाया गया था, जिससे कि समस्त अतीत-वह प्रेम एवं नाट्य प्रभाव का अतीत, स्मरण आ सके; वह झूँठा, धोकेबाज एवं दुखी अतीत जो कि झूँठा होते हुए भी वास्तव में आकर्षक था उस वृद्धा एक्ट्रेस के रोमान्स पूर्ण हृदय में पुनः कोमल वृत्तियों को जागरित कर सके और मुझे अपना अन्तिम साधन बनाए।

सौन्दर्य प्रतिमा

बहुत वर्ष पहले प्रेनिजा में एक विख्यात तालमूडिस्ट* रहा करता था। उसकी प्रसिद्धि का कारण उसकी अपनी बुद्धि, विद्वत्ता एवं भगवान की सत्ता को स्वीकार करना ही नहीं था तो उसकी अपनी सुन्दरी पत्नी भी थी। प्रेनिजा की वीनस पत्नी वास्तव में उस नाम के योग्य थी। वह अपने निराले सौन्दर्य के ही कारण और इससे भी अधिक तालमूड में प्रगाढ़ योग्यता रखने वाले एक व्यक्ति की पत्नी के नाते वास्तव में इस नाम की अधिकारिणी थी क्योंकि साधारणतया यहूदी दार्शनिकों की पत्नियाँ असुन्दर ही होती हैं या उनमें कहीं न कहीं शारीरिक दोष होता ही है।

तालमूड इसका वर्णन इस भाँति करता है: यह मानी हुई बात है कि विवाह स्वर्ग में होते हैं। और लड़के के जन्म पर एक आकाशवाणी उसकी भावी पत्नी का नाम बतलाती है, और इसी भाँति लड़की के विषय में भी किन्तु जैसे एक अच्छा पिता अपने अच्छे माल से बाहर पिन्ड छुड़ाने को कोशिश करता है और अपने घर पर अपने बच्चों के लिये खराब माल को प्रयोग में लाता है इसी तरह भगवान तालमूडिस्टों को ऐसी ही स्त्रियाँ देता है जिन्हें अन्य लोग लेने की इच्छा नहीं करते।

खैर, भगवान ने हमारे तालमूडिस्ट के मामले में एक छूट दी, और शायद इस अपवाद से नियम को प्रचलित रखने और कुछ सरल दिखलाने के लिये उसको सौन्दर्य की एक जीती जागती प्रतिमा प्रदान की थी। इस दार्शनिक की स्त्री किसी भी राजा की गद्दी की या मूर्तिकार की गैलरी के खम्भे को चोकी की शोभा बढ़ा सकती थी। उसका मुखड़ा आश्चर्यजनक सुन्दरता से दीप्त एवं लम्बा था, उसका सिर घने काले घुँघराले बालों से जो उसके गर्वीले कन्धों पर चुन्नटों में पड़े रहते थे, अपूर्व शोभा को प्राप्त था। दो बड़े मद भरे काले नेत्र लम्बे २ डोरों के नीचे से चमकते और उसके सुन्दर हाथ तो ऐसे प्रतीत होते मानो संगमरमर के बने हों।

---

* यहूदियों का धर्म व कानून के ज्ञाता।

यह प्रभामयी नारी, जो प्रकृति ने शायद शासन करने, अपने चरणों पर दास दासियों को पड़े रखने, चित्रकारों की तूलिकाओं को व्यस्त रखने, मूर्तिकारों की छेनियों और कवियों की लेखनी को विश्राम न देने के लिये निर्माण की थी, एक बहुत ही सुन्दर एवं दुष्प्राप्य पुष्प, जो एक गर्म कमरे में बन्द पड़ा हो की भाँति जीवन व्यतीत कर रही थी। वह सारे दिन अपने मूल्यवान फर को ओढ़े स्वप्निल संसार में डूबती उतराती सड़क की ओर देखती रहती।

उसके कोई सन्तान नहीं थी; उसका दार्शनिक पति अध्ययन करता और प्रार्थना करता फिर लगातार सुबह ही तड़के से बड़ी देर रात तक अध्ययन करता रहता; उसकी स्वामिनी थी "आवरित सौन्दर्य" जैसा कि तालमूडिस्ट कबाला के बारे में कहते हैं। वह अपने घर की ओर कोई ध्यान नहीं देती क्योंकि उसके पास अपार धन था। और सारा कार्य एक ऐसी घड़ी की भाँति, जिसमें सप्ताह में एक बार चाबी भरी जाती है, अपने आप चलता रहता था। उससे मिलने कोई भी नहीं आता और न वह ही किसी से मिलने के लिये घर से बाहर निकलती; वह बैठी रहती, स्वप्नों में विचरती रहती, विचार-मग्न रहती और अँगड़ाइयाँ लेती रहती।

※ ※ ※ ※

एक दिन जब विद्युत एवं मेघों के गर्जन की भयङ्कर आँधी नगर पर अपना क्रोध प्रदर्शित कर चुकी और मसीहा को अन्दर प्रवेश करने देने के लिये समस्त खिड़कियाँ खोल दी गईं तब वह यहूदिन, सौन्दर्य की प्रतिमा, नित्यप्रति की भाँति अपनी आराम कुर्सी पर बैठी हुई थी; वह फर ओढ़े रहने पर भी ठिठुर रही थी और विचारों में निमग्न थी। एकाएक उसने अपने चमकते हुए नेत्र अपने पति की ओर जो तालमूड के सम्मुख बैठा हुआ अपने शरीर को आगे पीछे हिला रहा था स्थिर कर दिये और एकाएक बोली:

"मुझे बतलाइये कि दाऊद-पुत्र मसीहा कब आवेंगे?"

दार्शनिक ने उत्तर दिया, "तालमूड कहता है कि जब सब यहूदी लोग या तो पुण्यात्मा हो जावेंगे या पापात्मा तब वह पधारेंगे।"

"क्या आपका विश्वास है कि सारे के सारे यहूदी कभी महात्मा हो जायँगे ?"

"यह विश्वास मैं कैसे कर सकता हूँ !"

"तो जब सारे के सारे यहूदी पापात्मा हो जायेंगे तब मसीहा आयेंगे !"

दार्शनिक ने अपने कन्धे हिलाये और पुनः तालमूड के गोरख धन्धे में तल्लीन हो गया, जिसमें ऐसा कहा गया है कि केवल एक ही व्यक्ति स्थित-प्रज्ञ हुआ था। सुन्दरी नारी पुनः खिड़की में से भारी वर्षा की ओर खोई-खोई सी देख रही थी और उसकी श्वेत उगलियाँ उसकी सुन्दर पोशाक के फर के साथ अनजाने में खेलती रहीं।

❀ * ❀ * ❀

एक दिन यहूदी दार्शनिक पड़ौस के गाँव में, जहाँ एक रीत रिवाज सम्बन्धी प्रश्न तय होना था, गया हुआ था। उसकी विद्वता को धन्यवाद कि वह प्रश्न उसकी आशा के विपरीत शीघ्र ही हल हो गया और जैसा उसका विचार था दूसरे दिन सुबह लौटने की जगह वह अपने एक मित्र के साथ, जो कि उससे कम विद्वान नहीं था, उसी दिन संध्याकाल लौट आया। वह अपने मित्र के घर पर ही गाड़ी से उतर गया और अपने घर तक पैदल आया अपने घर की खिड़कियों को सघन प्रकाश से प्रकाशित और एक अफसर के नौकर को अपने घर के सामने आराम से पड़ा हुआ सिगरेट पीता हुआ देख कर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ।

"कहिये जनाब क्या हो रहा है ?" उसने कुछ विस्मय से किन्तु मित्रतापूर्ण स्वर से पूछा।

"मैं पहरा दे रहा हूँ कि कहीं सुन्दरी यहूदिन का पति यकायक न लौट आवे।"

"सचमुच ? खैर ध्यान से और पूरी तरह से दृष्टि रखना।"

यह कहकर दार्शनिक ने बहाना तो वहाँ से जाने का किया किन्तु वह बगीचे के पिछले द्वार से घर के अन्दर चला गया। जब वह पहिले कमरे में घुसा तब उसे दो व्यक्तियों के लिए बिछाई हुई एक मेज दिखलाई दी जिससे यह स्पष्ट हो रहा था कि अभी २ थोड़ी देर पहिले ही खाली की गई है। उसकी

पत्नी नित्यप्रति की भाँति अपने बेड-रूम की खिड़की पर फर ओढ़े बैठी हुई थी, किन्तु उसके कपोल शंका से लाल थे, और उसके काले नेत्र नित्यप्रति की भाँति मदभरे नहीं दिखलाई देते थे किन्तु अपने पति के ऊपर स्थिर थे और उनमें से संतोष एवं हँसी दोनों साफ २ झलकते थे। उसी क्षण उसका पैर फर्श पर पड़ी हुई किसी वस्तु से टकराया जिसकी एक विचित्र सी आवाज हुई। उसने उसे उठाकर प्रकाश में देखा। वह जूते की एड़ी का काँटा था।

"तुम्हारे पास यहाँ कौन था ? तालमूडिस्ट ने पूछा।

यहूदिन सौन्दर्य प्रतिमा ने घृणा से अपने कन्धे हिलाये किन्तु उत्तर नहीं दिया।

"मैं तुम्हें बतलाऊँ ? हुसारों का कैप्टन यहाँ तुम्हारे पास आया था।"

"और उसे मेरे पास यहाँ आना क्यों नहीं चाहिये था ?" उसने अपने श्वेत हाथ से फर को अपनी जाकट पर खिसकाते हुए कहा।

"ओ ! तुम होश में तो हो ?

"मैं बिल्कुल होश में हूँ।" वह बोली और उसके बिम्ब से आनन्दपूर्ण अधरों पर एक मुस्कान नाच उठी। "किन्तु क्या मुझे अपना पार्ट अदा नहीं करना चाहिये ताकि मसीहा आकर हम गरीब यहूदियों की मुक्ति करें ?"

टोइने

चारों ओर दस मील दूर २ तक हर कोई टोइने, मोटे टोइने, "मेरे-अच्छे-टोइने," टूरनेवान्ट के जमींदार अनटोइने मचेवले, को जानता था।

उसने इस गाँव को, जो कि घाटी की उस तराई में अवस्थित था जो समुद्र की ओर जाती है, प्रसिद्ध बना दिया था। यह गरीब किसानों का एक छोटा सा गांव था और इसमें खाइयों एवं वृक्षों से घिरे नोरमनों के लगभग एक दर्जन मकान थे। मकान पहाड़ी के मोड़ के पीछे इन झाड़ियों से घिरी उपत्यिका में बने हुए थे और इसी कारण यह गाँव टूरनेवांट कहलाता था। आँधी में छिपने के लिये जिस भाँति चिड़ियाँ खाइयों में छिप जाती हैं उसी भाँति उन लोगों ने समुद्र के नमक के भयानक तूफानों से जो अग्नि की भाँति जलाता और काटता है तथा ठण्ड के झोकों की भाँति मुरझा देता और नष्ट कर देता है, बचने के लिए इस घाटी में अपना आश्रय खोज लिया था।

सारा गाँव अनटोइने मचेवले की सम्पति सा लगता था। अनटोइने मचेवले अपने व्यवहार के कारण, जिसे वह निरन्तर एक सा ही बनाये रखता था, टोइने और 'मेरे अच्छे टोइने' के नाम से सम्बोधित किया जाता था। "मेरी अच्छी फ्रांस भर में सब से अच्छी है," वह कहता। उसकी अच्छी थी उसकी शराब, इसको अप्रत्यक्ष ही रहने दो। गत बीस वर्षों से वह अपने गाँव को अपनी शराब से सींचता रहा था, और अपने ग्राहकों से बात करते हुए वह कहता: "यह पेट को गर्म और दिमाग को साफ करती है; मेरे बेटे, तुम्हारे स्वास्थ्य के लिये इससे अधिक सुन्दर और कोई चीज नहीं।" यद्यपि उसके कभी कोई पुत्र नहीं हुआ था, किन्तु वह हर एक से ही कहता "मेरे बेटे"।

आह, हाँ, गाँव भर में तो क्या इर्द गिर्द चारों ओर सबसे अधिक भारी भरकम शरीर के वृद्ध टोइने को प्रत्येक व्यक्ति जानता था। उसका छोटा मकान उसके लिये आश्चर्यजनक छोटा लगता, और जब वह द्वार पर खड़ा होता,

जहाँ कि वह दिन भर में सबसे अधिक समय व्यतीत करता, तब प्रत्येक व्यक्ति को आश्चर्य होता कि वह मकान में घुसता कैसे होगा। किन्तु जब भी कोई ग्राहक आता तब वह हर बार अन्दर प्रवेश करता क्योंकि मेरा टोइने अच्छा एक छोटा गिलास देने के लिये आमन्त्रित किया जाता।

उसकी होटल पर साइन बोर्ड था "मित्रों का अड्डा" और टोइने वास्तव में सब लोगों का मित्र ही था। फेकेम्प से और मोन्टीविलया से लोग उसके पास उसके साथ बैठ कर मद्यपान करने और उसकी कहानियाँ सुनने आते क्योंकि यह भारी भरकम शरीर का अच्छे स्वभाव वाला व्यक्ति पत्थर तक को हँसा देता था। वह गाली बके बगैर ही मजाक कर सकता था, जो वह कहने का साहस नहीं करता उसे आँख मारकर ही समझा देता, और प्रसन्न होकर स्वयं न हँसकर दूसरे को हँसने के लिये किसी की भी जांघ में चुटकी काट लेता। और फिर उसे शराब पीते देखना तो एक विस्मय ही था। जो भी उसे शराब पेश करता वह अपने शरारती नेत्रों में आनन्द का समावेश कर, आनन्द जो उसे दूनी खुशी से प्राप्त होता, पी लेता: पहिला तो निहाल होने का, और दूसरा अपने मित्र के रुपयों से पूँजी एकत्रित करने का। समाज के गुण्डों को आश्चर्य होता कि उसके कोई संतान क्यों नहीं थी और एक दिन तो उन्होंने उससे पूछ भी डाला। वह शरारत से भरी हुई आँख मार कर बोला: "मेरी स्त्री मेरे जैसे अच्छे व्यक्ति के योग्य आकर्षक नहीं है।"

टोइने और उसकी पत्नी के झगड़ों में मद्यप लोग उसी भाँति आनंद लेते जिस भाँति वे अपनी शराब में लेते थे क्योंकि तीस वर्ष के विवाहित जीवन में वे हमेशा ही झगड़ते रहे थे। केवल टोइने ही उसे हँसी में टाल देता जबकि उसकी स्त्री क्रोधित हो उठती। वह एक लम्बी किसान औरत थी जो नटनियों की भाँति, जो बाँस की खपचियों को पैरों में बाँधकर चलती हैं, लम्बे डगों पर अपने पतले चौड़े ढाँचे को जिसका कि सिर घुग्घू की भाँति था लेकर चलती थी। पब्लिक हाउस के पीछे सारा दिन वह छोटे से आंगन में मुर्गी पालने में व्यतीत करती और वह मुर्गों को मोटा करने में सफलता प्राप्त करने के कारण चारों ओर विख्यात थी।

जब कभी फेकेम्प की कोई धनी महिला अपने वर्ग के लोगों को दावत

देती तब दावत की सफलता के लिये माँ टोइने के आँगन के प्रसिद्ध मुर्गों से उस दावत को सजाना अति आवश्यक माना जाता ।

किंतु उसका स्वभाव खोटा था और वह हर बात से सदा ही असंतुष्ट रही आती। वह हर एक से, और अपने पति से तो विशेषतया, क्रोधित रहती। वह उसके हँसमुख पने, उसकी प्रसिद्धि और उसके अच्छे स्वभाव और उसके मोटापे का मजाक बनाती। वह उससे बहुत घृणा से व्यवहार करती क्योंकि उसके अनुसार वह बिना परिश्रम किये धन प्राप्त करता और क्योंकि वह दस साधारण व्यक्तियों के बराबर अकेला ही खा पी जाता । वह कहती कि वह अस्तपत्त में नङ्गे सूअर के साथ जिससे उसकी शकल मिलती थी केवल बाँधे रखने के योग्य था, और वह चर्बी के उस लोथड़े की तरह का था जो उसके पेट में दर्द कर देता था। वह उसके मुँह पर चिल्लाती "थोड़ी देर रुको, थोड़ी देर रुको, हमें अभी मालूम पड़ा जाता है कि क्या होने वाला है। यह हवा का बड़ा थैला अभी अनाज के बोरे की तरह फटा जाता है।"

टोइने हँसता और तब तक हँसता रहता जब तक कि वह उबाल आने पर बर्तन के ऊपर रखी हुई तश्तरी की तरह हिलने न लगता और अपने बृहद पेट को थपथपाकर कहता: "मेरी बुड्ढी मुर्गी, कोशिश करो कि तुम्हारी मुर्गियों के बच्चे भी इसी तरह मोटे हो जाँय।"

और अपनी बाँहें उठाकर अपनी मांसल भुजाएँ दिखलाता।

"क्या तुम नहीं देखतीं कि पंख तो उगने लगे है?" वह चिल्लाता और ग्राहक मेज पर अपनी मुट्ठियाँ मारते, आनन्दित हो हँसते, अपने पैर पीटते और खुशी की अधिकता में फर्श पर थूकते।

बुड्ढा और भी क्रोधित हो उठती और अपनी पूरी शक्ति लगाकर चीखती: "जरा देखना क्या होता है। तुम्हारा 'टोइने-मेरा-अच्छा' अनाज की भाँति फट जायगा।"

और वह मद्यपों की भीड़ के अट्टहास पर क्रोध से उन्मत्त हो बाहर भाग जाती।

वास्तव में टोइने इतना मोटा लाल और कम साँस का हो गया था कि उसे देखकर आश्चर्य होता। वह उन विशाल जीवों में लगता था जिनके

साथ मृत्यु चालों, हँसी दिल्लगियों और साघांतिक स्वांगों से विनाश कार्य की धीमी प्रगति को और भी हास्यास्पद बनाते हुए अपने आपको प्रसन्न करती रहती है। श्वेत वालों, काँपते हुए अङ्गों, झुरियों और दुर्बलता के रूप में अपना स्वरूप प्रकट करने के स्थान पर जिससे कि कोई भी काँप कर यह कह उठता है "हे भगवान ! वह अब कितना बदल गया।" वह टोइने को मोटा करने में, उसको गोल गुट्टा राक्षस बनाने में, उसके चेहरे को लाल बनाकर दैवी स्वास्थ्य का स्वरूप देने में, आनन्दित होती और जो वह दूसरों के लिये कुरूपता देती वह टोइने के सम्बन्ध में दयनीय होने के स्थान पर हास्यास्पद हो गई थी।

"जरा देखना, देखना तो सही !" माँ टोइने मुर्गियों के आँगन में दाने फिराते हुए कहती "हम भी देखेंगे कि क्या होता है ?"

२

एक दिन टोइने को लकवा मार गया। वे लोग उस विशाल दैत्य को होटल के पार्टीशन किये हुए दूसरे कमरे में ले गये ताकि वह दीवाल के दूसरी ओर होने वाली बातचीतों को सुन सके और अपने मित्रों से बातचीत कर सके क्योंकि उसका मस्तिष्क अभी भी साफ था जबकि उसका शरीर लुञ्ज एवं असहाय हो गया था। उन लोगों को आशा थी कि उसके सशक्त अङ्ग फिर से कुछ शक्ति प्राप्त कर लेंगे। किन्तु यह आशा शीघ्रही मिट गई और टोइने-मेरा-अच्छा' को रात दिन अपने बिस्तर में ही जो कि सप्ताह में एक बार चार मित्रों की सहायता से साफ किया जाता, लेटा रहना पड़ता। जब उसके चार मित्र उसे पकड़कर उठाते थे तब उसकी चटाई बदली जाती वह प्रसन्न ही रहा किन्तु अब प्रसन्नता में पहले से कुछ भिन्नता थी। वह अपनी स्त्री की उपस्थिति में पहले से अधिक डरपोक, विनम्र एवं एक बच्चे की भाँति भयभीत रहता। उसकी पत्नी उससे रात दिन बुरा भला कहती रहती। "वह पड़ा हुआ है पेटू, जाहिल किसी काम का नहीं, बेकार चीज !" वह चिल्लाई। टोइने ने कोई उत्तर नहीं दिया, केवल अपनी स्त्री की पीठ होते ही आँख मारी और अपने बिस्तरे पर करवट बदली। वह इतना ही हिलडुल सकता था। यह करवटों को 'दक्षिण की या उत्तर की ओर हिलना' कह कर पुकारता था।

अब उसका दिल बहलाव केवल इतना मा ही रह गया था कि वह दीवाल को दूसरी ओर चलती हुई बातचीतों को सुनता और जब अपने किसी मित्र को आवाज को पहचान लेता तब उच्च स्वर से कहताः "हलो मेरे बेटे! क्या तू है सेलेस्टाइन ?"

और सेलेस्टाइन मालोजल उत्तर देताः "हाँ! मैं हूँ फादर टोइने। और तुम बड़े खरगोश, अब तुम कैसे चौकड़ी भरते हो ?"

"सेलेस्टाइन! मैं अभी चौकड़ी नहीं भर सकता हूँ।" टोइने उत्तर देता "किन्तु पतला भी नहीं हो रहा हूँ। काठी भी मजे में है।" शीघ्र ही वह अपने मित्रों को अपने पास कमरे में निमन्त्रित करता क्योंकि उसे उन लोगों को अपने बिना अकेले शराब पीते देख कर दुख होता था। वह उनसे कहता कि उनके साथ बैठकर शराब पीने में असमर्थ होने के कारण उसे बहुत क्षोभ होता था। वह कहताः "मैं दूसरी बातें तो सहन कर सकता हूँ, मेरे बेटो, किन्तु तुम्हारे साथ शराब न पीने से मैं बहुत क्षुब्ध हो उठता हूँ।"

तब माँ टोइने का घुग्घू का सा सिर खिड़की में दिखलाई देता और वह कहतीः "देखो इसको देखो! महा जाहिल को, जिसे कि सूअर की तरह खिलाया और नहलाया जाय, जिसको सूअर की ही तरह रखवाली की जाय!"

जब वह चली जाती तब कभी २ एक लाल पङ्ख का मुर्गा आकर खिड़की की सिल पर बैठ जाता और अपने गोल एवं विचित्र नेत्रों से सामने देखकर बड़े उच्च स्वर से कुकड़ूँ कूँ करता और कभी २ दो या तीन मुर्गियाँ पङ्खों को फड़फड़ाती हुई, फादर टोइने की प्लेट से गिरे हुए रोटी के टुकड़ों से आकर्षित हो, आ जातीं।

'टोइने-मेरा- अच्छा' के मित्रों ने बहुत ही जल्दी उसकी होटल में से उसके कमरे की ओर रास्ता बना लिया और नित्यप्रति सायंकाल से पूर्व वह उस भारी भरकम आदमी के बिस्तरे के चारों ओर बैठकर गप-शप लड़ाने लगे। इस टोइने की शरारत, बिस्तर पर ही पड़े हुए, उन लोगों को हँसाती रहती। वह दैत्य को भी हँसा सकता था। उसके तीन मित्र थे जो नित्यप्रति आते रहते। सेलेस्टाइन मालोजल एक लम्बा, फालतू आदमी जिसकी देह सेब के पेड़ की डाल की भाँति झुकी हुई थी, प्रोस्पर होर्सलेविले, एक ठिंगना,

जर्जरलन वृद्ध, जिसकी नाक चूहों की सी थी और जो लोमड़ी की भाँति चालाक था; और सोजर पोमेले जो कभी एक भी शब्द मुँह से नहीं निकालता किन्तु दिल बहलाव तो कर ही लेता। वे लोग आंगन में से एक तख्ता उठा लाये थे और उसे बिस्तर के ऊपर रख दिया था और फिर उसके ऊपर दो बजे से लगाकर शाम के ६ बजे तक ताश खेलते रहते। किन्तु थोड़े ही दिनों में माँ टोइने ने बाधा उपस्थित कर दी। वह यह सहन नहीं कर सकती थी कि उसका पति अपने बिस्तर पर ताश खेलकर अपना दिल बहलाये। जब भी वह उन्हें ताश खेलते देखती तभी क्रोध में भरकर वहाँ आ धमकती, तख्ते को उलट देती और ताशों को उठाकर होटल में यह कहती हुई ले जाती कि इस चर्बी के लोथड़े को मेहनत-कशों की भाँति काम न करने पर भी खाना खिलाना ही क्या कम है। सेलेस्टाइन मालांडन तो इस तूफान के आगे सिर झुका देता किन्तु प्रोस्पर हार्नेबिजे उस वृद्धा को, जिसका क्रोध उसके लिये आनन्द का विषय बन जाता, और भी अधिक उत्तेजित करने का प्रयत्न करता। एक दिन जब वह नित्य प्रति से भी अधिक क्रोध में थी तब वह उससे बोला: "हलो माँ टोइने! तुम जानती हो कि यदि तुम्हारे स्थान पर मैं होता तो क्या करता?"

उसका अर्थ समझने को वह उसकी ओर उल्लुओं के से अपने नेत्र गड़ा कर रुक गई। वह कहता रहा: "तुम्हारा पति सदैव बिस्तर पर ही पड़ा रहता है, भट्टी की तरह गर्म रहता है। मैं तो इसको अंडे सेने का काम देता।"

वह, यह सोचती हुई कि वह मजाक नहीं कर रहा, उस किसान का शैतानी और चालाकी से भरा हुआ चेहरा देखती हुई मूर्खों की भाँति खड़ी रही। वह कहता रहा:

"मैं इसकी दोनों बाँहों के नीचे पाँच २ अंडे उसी दिन रख देता जिस दिन पीली मुर्गी अपने अंडे सेना आरम्भ करती। ये सब एक ही काल में हो जाता; और जब वे अंडे में से बाहर निकलते तो फिर मैं तुम्हारे पति के बच्चों को पलवाने के लिये मुर्गी के नीचे रख देता। और इस भाँति तुम्हें लाभ हो जायगा, माँ टोइने।"

वृद्धा आश्चर्यचकित हो गई। "क्या ऐसा हो सकता है?" उसने पूछा।

प्रोस्पर कहने लगा, "क्यों, हो क्यों नहीं सकता! जब लोग अण्डों को सेने के लिये गर्म बक्सों में रखते हैं तब वह गर्म बिस्तर पर क्यों नहीं रखे जा सकते?"

वह इस तर्क से बहुत प्रभावित हो गई और विचारमग्न एवं प्रसन्न हो चली गई।

आठ दिन पश्चात वह टोइने के कमरे में अण्डों से भरी हुई अपनी झोली लेकर आई, और बोलीः "मैंने अभी २ पीली मुर्गी के नीचे दस अण्डे सेने के वास्ते रखे हैं; और यह लो, ये दस तुम्हारे लिये हैं। होशियारी से रखना, कहीं हट न जाँये!"

टोइने आश्चर्यचकित हो गया। वह चिल्लाया "तुम्हारा मतलब?"

"मेरा मतलब है, बेकार आदमी, कि तुम इन्हें सेओगे।"

पहिले तो टोइने हँसा, किन्तु उसके हठ पकड़ने पर वह क्रोधित हो गया उसने भी हठ पकड़ ली और अपनी विशाल भुजाओं के नीचे की उसकी गर्मी से वह सेये जा सकते हैं; अण्डे रखने से दृढ़तापूर्वक इन्कार कर दिया। किन्तु उस जिद्दी औरत ने लाल पीली होकर कहाः

"तुम्हें, जब तक तुम अस्वीकार करते रहोगे, खाने को गस्सा भी नहीं मिलेगा, देखते हैं फिर क्या होता है।"

टोइने बेचैन हो गया, किन्तु जब तक घड़ी ने बारह नहीं बजाये तब तक तो वह चुप रहा; तब उसने अपनी पत्नी को बुलाया जो रसोईघर से ही चिल्ला पड़ीः "तुम्हारे खाने के लिये आज कुछ भी नहीं है, महान आलसी जीव!"

पहिले तो उसने सोचा कि वह मजाक कर रही थी, किन्तु जब उसने देखा कि वह अपनी बात पर दृढ़ थी तब उसने उससे प्रार्थना की और कसमें खाईं। वह उत्तर, दक्षिण की ओर करवटें बदलने लगा, और भूख लगने के कारण तथा रसोई घर से भोजन की सुगन्धि आने के कारण दुखी होकर वह अपनी बड़ी २ मुट्ठियाँ दीवाल पर पटकने लगा और अन्त में बिल्कुल

थक जाने पर उसने अपनी स्त्री को अपने बिस्तर में बाहों के नीचे अण्डे रखने की छूट दे दी। उसके बाद कहीं जाकर उसे छोरवा मिला।

जब नित्यप्रति के ही समय पर उसके मित्र उससे मिलने आये तब उन्हें लगा कि उसका स्वास्थ्य बहुत अधिक खराब था; वह बहुत दुखी और दर्द से पीड़ित सा लग रहा था।

वे पहिले की ही भाँति ताश खेलने लगे, किन्तु उन्हें लगा कि टोइने खेल में कोई रुचि नहीं ले रहा था, और अपने हाथों को इतनी सावधानी से और इतने अधर रखे हुआ था कि उन्हें लगा कि दाल में अवश्य कुछ काला है।

"क्या तैंने अपनी बाँहें बाँध ली हैं?" होर्सविले ने पूछा।

टोइने ने सहम कर उत्तर दियाः "मुझे अपने कंधों में भारीपन सा लग रहा है।"

एकाएक होटल में किसी ने प्रवेश किया और खिलाड़ी बातें सुनने को रुक गये। वह मेयर और उसका असिस्टेन्ट था, जिन्होंने दो गिलास शराब के मंगवाये, और फिर राज्य की चर्चाओं में व्यस्त हो गये। वे धीमे स्वर में बातें कर रहे थे। टोइने ने अपने कान दीवाल से लगाने चाहे, और अण्डों की बात उसे ध्यान नहीं रही,एकाएक उसने उत्तर की ओर करवट बदली, जिससे एक अण्डा कुछ पिचक गया। ज्योंही उसने 'हे भगवान' कहा त्योंही माँ टोइने उसकी भटक से विपत्ति का अनुमान लगा कर क्रोध में भरी हुई अन्दर दौड़ी आई। वह एक क्षण तो उस पीले जल को अपने पति के कंधे पर लगी देख कर क्रोध में भरी हुई और बोल सकने में असमर्थ चुपचाप खड़ी रही। फिर क्रोध से उन्मत्त हो उस लकवे के रोगी के ऊपर टूट पड़ी और अपने पति को धमाधम कूटने लगी, मानो वह अपने गन्दे वस्त्रों को किसी नदी के घाट पर पछाड़ रही हो। वह ढोल बजाने वाले की भाँति उस पर जल्दी २ और पूरी ताक़त से अपने घूंसे बरसाती रही।

टोइने के मित्रों का हँसी, खाँसी, छींक और आश्चर्यजनक उच्चारणों के मारे बेहाल था जब कि वह भयभीत टोइने अपनी पत्नी की चोट्कारों को

इस भाँति झेल रहा था, जिसमें कि वे पाँचों अण्डे जो अभी तक उसकी भुजा के नीचे रखे हुए थे टूट न जाँय।

३

टोइने हार मान गया। उसे अण्डे सेने के लिये मजबूर कर दिया गया। उसे ताशों के आनन्द से और उत्तर या दक्षिण को कोई भी करवट बदलने से वंचित रहना पड़ा क्योंकि जब भी उससे एक भी अण्डा फूट जाता तभी उसकी पत्नी उसका हर प्रकार का भोजन बन्द कर देती। वह अपने नेत्रों को छत की ओर स्थिर किये, भुजाओं को पंखों की भाँति फैलाए, अपनी विशाल देह को सफेद ढक्कनों में पड़े हुये मुर्गी के बच्चों को नष्ट होने से सावधान रहते हुए पीठ के बल लेटा रहता। वह बहुत ही धीमे स्वर में बात करता, मानों वह अपनी आवाज से भी उतना ही भयभीत था जितना कि अपने शरीर की हलचल से, और वह पीली मुर्गी के विषय में, जो उसकी ही भाँति उसी कार्य में व्यस्त थी, पूछता। वृद्धा स्त्री अपने पति से मुर्गी के पास जाती और मुर्गी से अपने पति के पास। उसके मस्तिष्क में उन आने वाले छोटे २ बच्चों का, जो घोंसले में और बिस्तरे में पल रहे थे ध्यान बना ही रहता। गाँव के लोग, जिनको इस किस्से के बारे में बहुत ही जल्दी ज्ञान हो गया था, विस्मित एवं गम्भीर होकर टोइने का समाचार लेने आते। जिस तरह से रोगी के कमरे में प्रवेश किया जाता है वे लोग चुपचाप उसके कमरे में जाते और बड़ी लगन से पूछते:

"टोइने, अब क्या हाल है?"

"यह हाल तो रहता ही है," वह उत्तर देता: "किंतु अब इतना अधिक समय लग रहा है, कि मैं तो प्रतिक्षा करते २ थक गया हूँ। मेरे सारे बदन में उत्तेजना और ठण्ड की कँपकँपी आती है।"

एक दिन सुबह उसकी स्त्री बहुत प्रसन्न होकर आई और चिल्ला कर बोली: "पीली मुर्गी ने सात बच्चे निकाले हैं, तीन अण्डे खराब थे"।

टोइने का कलेजा धकधक करने लगा। वह कितने बच्चे निकालेगा?

"क्या यह जल्दी ही हो जायगा?" उसने एक गर्भवती स्त्री की भाँति उत्सुकता से पूछा।

वृद्धा स्त्री, जो असफल होने के भय से विकल थी, क्रोधित हो बोली: "आशा तो यही की जाती है !"

उन्होंने प्रतीक्षा की।

मित्र वर्ग टोइन्‍ने के समय को पास आते देख कर स्वयं बेचैन हो उठा। वे घरों में इसकी चर्चा करते और कार्य की प्रगति की सूचना पड़ौसियों को देते रहते। तीन बजे के लगभग टोइन्‍ने को नींद आने लगी। वह आधी ही देर तक सोया होगा कि अपनी बाँई भुजा के नीचे वह अजीब सी गुदगुदी से एकाएक जाग उठा। उसने अपना हाथ बड़ी सावधानी से रखा और पीले पर्त से ढके हुये एक छोटे से जीव को उठा लिया, जो उसकी उँगलियों में से निकलने का प्रयास करने लगा। वह इतना अधिक भावुक हो गया कि चीख पड़ा और उस बच्चे को छोड़ दिया, जो उसके वक्ष पर दौड़ पड़ा। होटल लोगों से भरी पड़ी थी। ग्राहक अन्दर कमरे में दौड़ आये और उसके बिस्तर के चारों ओर घिर कर खड़े हो गये। माँ टोइन्‍ने ने, जो कि पहली ही आवाज पर आ गई थी, उस मुर्गी के बच्चे को जो उसके पति की दाढ़ी में घोंसला बना रहा था, सावधानी से पकड़ लिया। कोई एक शब्द भी न बोला। वह अप्रेल मास का एक उष्ण दिन था; पीली मुर्गी को खुली खिड़की में से हर कोई अपने नये बच्चे को आवाज देते देख सकता था। टोइन्‍ने, जो भावाभिभूत तथा दुखी होने के कारण पसीनों से तर था, बड़बड़ाया: "मुझे लगता है कि मेरी बाँई बाँह के नीचे एक और है।"

उसकी पत्नी ने अपना लम्बा, पतला, दुबला हाथ बिस्तरे के नीचे डाला और एक दाई की सी सारी सावधानियों से दूसरे बच्चे को निकाल लिया।

पड़ौसियों ने उसे देखने की इच्छा व्यक्त की और उसे एक आश्चर्य-जनक वस्तु समझ कर भय से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के हाथ में दिया। बीस मिनट तक कुछ न हुआ, फिर एक ही साथ चार बच्चे अपनी २ खोलों से निकल पड़े। इससे दर्शकों के अन्दर बड़ी उत्तेजना फैल गई।

टोइन्‍ने अपनी सफलता पर मुस्कराया और अपने विचित्र पितृत्व पर गर्व का अनुभव करने लगा। ऐसा पहले कभी नहीं देखा गया। वह

सचमुच ही तमाशे का आदमी था। "लो अब उसे मिला कर छः हुये" टोइने चिल्लाया। "लेकेव्रिल्यू धर्म में दीक्षित करने का उत्सव कैसा शानदार रहेगा।" और सारी उपस्थित जनता बड़ी ज़ोर से हँस पड़ी। अन्य व्यक्ति भी अब होटल में आकर एकत्रित हो गये और द्वार में से अपनी गर्दनें निकाल २ कर अपने विस्मित नेत्रों से देखने लगे।

"कितने हुये?" उन्होंने पूछा।

"छः"

माँ टोइने उन नये उद्भूत जीवों को लेकर उस मुर्गी के पास दौड़ी, जो अपने परिवार की बढ़ती संख्या को आश्रय देने के लिये अपने पङ्खों को सीधे फैलाये हुये लगातार शोरगुल मचा रही थी।

"लो यह एक और आया।" टोइने चिल्लाया। वह गलती कर गया वे एक नहीं तीन थे। यह विजय थी। अन्तिम अपने खोल को शाम के सात बजे फोड़ कर निकला। टोइने के सब ही अंडे अच्छे थे। वह आनन्द से फूला न समा रहा था। उसने बच्चे पकड़े और एक की पीठ पर चुम्बन करने लगा, उसने उसे उसके चुम्बन लेते लेते ही उसे मार डाला होता। उसको इस बच्चे को दूसरे दिन सुबह तक रखने की इच्छा थी। वह माँ की कोमल वृत्तियों से भर गया था। किन्तु वह वृद्धा स्त्री अपने पति की प्रार्थनाओं पर कोई भी ध्यान न देती हुई उस बच्चे को भी अन्यों की भाँति ले गई।

टोइने के मित्र आनन्दित हो उस दिन की घटना की बातें मार्ग में करते हुए अपने २ घर लौटे।

होर्सविले दूसरों के चले जाने के बाद तक रुका और टोइने के पास पहुँच कर उसके कानों में फुसफुसाया: "तुम मुझे पहली ही दावत में निमन्त्रण दोगे कि नहीं?"

दावत के विचार से टोइने का चेहरा चमक उठा और उसने उत्तर दिया:

"अवश्य, मेरे बेटे, मैं तुम्हें अवश्य निमन्त्रित करूँगा।"

———

चाँदनी

मैडम जूली रोवरे अपनी बड़ी बहिन, मैडम हैनरीटे लेटोर की प्रतीक्षा कर रही थी, जो अभी २ स्विटजरलैंण्ड की यात्रा से लौट कर आई थी। लेटोर परिवार लगभग पाँच सप्ताह पहले नगर छोड़ चुका था। मैडम हैनरीटे ने अपने पति को अपनी स्टेट काल्वाडोस में जहाँ कि कुछ कार्यों में उसकी उपस्थिति आवश्यक थी, जाने की आज्ञा दे दी और अपनी बहिन के साथ कुछ दिन व्यतीत करने के लिये पेरिस आई। रात होगई। मैडम रोवरे अपनी नीरव बैठक में बेसुध सी बैठी हुई पढ़ रही थी, जब भी कोई आवाज होती वह अपने नेत्र उठा देती।

अन्त में उसे द्वार पर बजती हुई घन्टी की आवाज सुनाई दी और ट्रेवलिंग गाउन पहिने हुये उसकी बहिन आई। और बिना किसी शिष्टाचार के उन्होंने एक दूसरे को उत्सुकता से गले लगा लिया और एक दूसरे का चुम्बन लेने लगीं। तब वे एक दूसरे के स्वास्थ्य, पारिवारिक जीवन और हजारों ही विषयों में जल्दी २ टूटे फूटे वाक्यों में बातें करने लगीं और मैडम हैनरीटे ने अपना पर्दा और टोप उतारा।

अब काफी अँधेरा हो चुका था। मैडम रोवरे ने नौकरानी से एक लेम्प मँगवाया और जैसे ही वह लेम्प आया उसने अपनी बहिन की ओर कनखियों से देखा वह उसका एक बार फिर से चुम्बन लेने वाली थी। किन्तु अपनी बहिन के चेहरे को देखकर आश्चर्यचकित हो एवं चौंककर रुक गई। मैडम लोटरे के मस्तक पर बालों के दो गुच्छे थे। बाकी उसके सारे बाल घुँघराले काले और घने थे। किन्तु उसके सिर के केवल दोनों ही ओर बालों की दो कतारें थीं, जो सिर पर जाकर काले बालों में अदृश्य हो गई थी। उसकी अवस्था केवल चौबीस वर्ष की ही थी। और एकाएक यह परिवर्तन उसमें स्विटजरलैंण्ड जाने के समय से ही हुआ था।

बिना हिले डुले मैडम रोबरे उसकी ओर आँसू भरे हुये नेत्रों से आश्चर्य में देखती रही क्योंकि उसे लगा कि उसकी बहिन किसी रहस्यमय एवं भयानक विपत्ति से ग्रस्त है। उसने उससे पूछाः

"हेनरीटे, तुम्हें क्या हो गया है ?"

एक व्यथित मुस्कान से, मुस्कान जो भग्न हृदय के मुख पर होती है, उसने उत्तर दियाः

"क्यों, मैं विश्वास दिलाती हूँ कि कोई बात नहीं है। क्या तुम मेरे सफेद बालों को देख रही थीं ?"

किन्तु मैडम रोबरे ने तेजी से उसके कन्धे पकड़ लिये और उसकी ओर खोज भरी दृष्टि से देखते हुए दोहरायाः

"तुम्हें क्या हो गया है ? मुझे बतलाओ ना, तुम्हें क्या हो गया है ? और यदि तुम मुझसे झूँठ बोलोगी तो मुझे शीघ्र पता भी लग जायगा।"

वे दोनों एक दूसरे के आमने सामने खड़ी रहीं और मैडम हेनरीटे की जो इतनी पीली पड़ गई कि मानो अचेत हो जायगी अर्द्ध खुली आंखों के दोनों कोनों में दो बूँद अश्रु लुढ़क आये।

उसकी बहिन पूछती रहीः

"तुमको क्या हो गया है ? क्या बात है मुझे बतलाओ।"

तब, उदास स्वर में, दूसरी ने धीमे स्वर में बतलायाः

"मेरा ··· मेरा एक प्रेमी है।"

और, अपनी छोटी बहिन के कन्धे पर अपना मुँह छिपाकर वह रोने लगी।

जब वह कुछ शान्त हो गई और जब उसकी सिसकियाँ बन्द हो गईं तब वह अपना रहस्य अनावरित करने लगी मानो वह अपने इस दुख को एक सहानुभूति पूर्ण हृदय में भरना चाहती थी।

फिर एक दूसरे के हाथों को कस कर पकड़ दोनों स्त्रियां कमरे के अँधेरे भाग में रखे हुए सोफा पर जाकर बैठ गईं। और छोटी बहिन अपनी बांह को बड़ी बहिन की गर्दन पर रखकर उसे अपने वक्ष से चिपटा उसकी बातें सुनने लगी।

"ओह ! मैं समझती हूँ कि किसी को क्षमा नहीं किया जा सकता है; मैं स्वयं ही अपने आपको नहीं पहिचानती, और उस दिन से मुझे ऐसा लगने लगा है कि मानो मैं पागल हूँ। सावधान रहना मेरी बच्ची,अपने प्रति सावधान रहना। यदि तुम केवल इतना जानतीं कि हम कितनी दुर्बल होती हैं, कितनी शीघ्र करुणा के एक क्षण के आधीन हो जाती हैं, क्षण भी कैसा जो तुम्हारी आत्मा में दुख दर्द की अनुभूति एकाएक उत्पन्न कर देता है और तुम्हारे अन्दर बाँहें पसार देने, प्रेम करने, आलिङ्गन करने की भावना जो हम सब लोगों में किसी-किसी क्षण स्वाभाविक रूप से उत्पन्न हो ही जाती है,उत्पन्न कर देता है।

"तुम मेरे पति को जानती हो, और तुम यह जानती ही हो कि मैं उन्हें कितना प्रेम करती हूँ, किन्तु वह पूर्ण एवं बुद्धिमान हैं, और किसी स्त्री के हृदय की कोमल वृत्तियोंको वह समझ भी नहीं सकते। वह हमेशा एक से ही रहते हैं, हमेशा सहृदय, सदा प्रसन्न, सदा दयालु,एवं सदैव पूर्ण।ओह ! मैंने कितनी ही बार इच्छा की कि वह मुझे अपनी भुजाओं में जोर से आबद्ध करें, कि वह उन धीमे एवं मधुर चुम्बनों से, मेरा आलिङ्गन करें, जो दो देहों को एकरस कर देता है। मैंने उनके विषय में सोचा कि वह स्वार्थी थे और दुर्बल भी,उन्हें अब मेरी, मेरे चुम्बनों की,मेरे अश्रुओं की कोई आवश्यकता नहीं रहनी चाहिये।

"यह सब बिल्कुल मूर्खता की सी बात है, किन्तु हम स्त्रियां बनाई ही ऐसी गई हैं। इसमें हम कर भी क्या सकती हैं ?"

"और फिर भी उन्हें धोका देने का विचार मेरे पास तक नहीं फटका, आज यह बिना प्रेम, बिना कारण, बिना किसी बात के ही केवल इसलिये हुआ कि एक रात्रि लूसेन की झील पर चन्द्र के दर्शन हुए थे।

"जिस महीने में हम दोनों साथ यात्रा कर रहे थे, मेरे पति ने अपने शान्त विरोध से मेरे उत्साह को शिथिल तथा मेरी कवित्वमयी उत्सुकता को नष्ट कर दिया। सूर्योदय के समय जब हम दोनों पहाड़ी रास्ते से उतर रहे थे,जब कि चार घोड़े बड़ी शान से दौड़ रहे थे, जब हमें पहाड़ी पारदर्शक कुहरे

में से घाटियाँ, जङ्गल, झरने और गाँव दिखलाई दिये तब मैंने प्रमुदित होकर ताली बजा कर उनसे कहा: 'कितना सुन्दर दृश्य है प्यारे! अब मेरा चुम्बन ले लो!' उन्होंने मुस्कराकर केवल इतना ही कहा: 'तुम्हें दृश्य पसन्द है तो यह तो कोई बात नहीं हुई जिसके लिये हम दोनों एक दूसरे का आलिङ्गन करें।'

"और उनके शब्दों ने मेरे हृदय को कुण्ठित कर दिया। मुझे तो ऐसा लगता है कि जब व्यक्ति आपस में प्रेम करते हैं तब उन्हें सुन्दर दृश्यों की उपस्थित में अधिक प्रेम से भावुक हो जाना चाहिये।

"सचमुच, उन्होंने मेरे हृदय में उठने वाली कविता को, जो निकलने के लिये उबाल ले रही थी, रोक दिया। मैं उसे कैसे वर्णन कर सकती हूँ? मैं उस बर्तन के, जिसमें उफान आ रहे हों, भाप भरी हुई हो और जो दृढ़ता से सील बन्द हो, बहुत कुछ समान थी।

"एक दिन सायंकाल (हम लोग चार दिनों से होटल डी फ्लूलेन में ठहरे हुए थे,) रोबर्ट के सिर में दर्द हुआ और वह भोजन करने के शीघ्र ही पश्चात् सोने चले गये, और मुझे झील के किनारे बिल्कुल अकेले घूमना रहा।

"वह रात्रि परियों की कहानियों में पढ़ी हुई रातों से मिलती थी। पूर्ण चन्द्र आकाश के मध्य में विराज रहा था, लम्बे २ पर्वत अपनी हिमाच्छादित शृङ्गों से रजत मुकुट धारण किये से शोभित हो रहे थे, झील का जल छोटी २ हलचलों में चमक रहा था। पवन ठन्डा था, उसमें वह आनन्ददायक ताजगी थी कि जो हमको इतना कोमल कर देता है कि हम अकारण ही मूर्छित होजायँ किन्तु ऐसे समय में हृदय कितना ग्राह्य एवं भावुक हो जाता है, कितने शीघ्र वह उछाल भरता है और कितनी गहरी इसकी अनुभूतियाँ हो जाती हैं।

"मैं घास पर बैठ गई और उस विशाल झील की ओर कितनी मुग्ध एवं दुखी होकर देखने लगी कि मैंने प्रेम किये जाने की कभी सन्तुष्ट न होने वाली आवश्यकता का अनुभव और अपने जीवन की इस वर्तमान गम्भीर उदासी के विरुद्ध संघर्ष करने का निश्चय किया। क्या? मैं कभी भी

किसी पुरुष के, जिसे मैं प्रेम करती हूँ, इस चाँदनी में ऐसी झील के किनारे, आलिङ्गन पाश में आबद्ध होने का सौभाग्य प्राप्त नहीं कर सकती। क्या मैं अपने अधरों पर उन प्रगाढ़, मृदुल एवं आनन्द-दायक चुम्बनों की अनुभूति नहीं कर सकूँगी जो कि प्रेमी लोग भगवान के द्वारा प्रगाढ़ आलिङ्गनों के ही लिये निर्मित की गई प्रतीत होने वाली रातों में किया करते हैं। क्या मुझे इतने उत्सुक एवं उच्च श्रेणी के प्रेम का ग्रीष्म ऋतु की उजियाली रात्रियों में कोई ज्ञान नहीं हो सकेगा ?

"और मैं रोने लगी, अपने पीछे किसी व्यक्ति के बैठे होने का मुझे आभास हुआ। एक व्यक्ति मेरी ओर घूर २ कर देख रहा था। जब मैंने सिर घुमाया, उसने मुझे पहिचान लिया और वह आगे बढ़कर बोलाः

" 'मैडम आप रो रही हैं ?'

" वह एक नवयुवक बैरिस्टर था जो अपनी माँ के साथ भ्रमण कर रहा था और वह हमें बहुधा मिल भी चुका था। उसके नेत्रों ने कितनी ही बार मेरा पीछा भी किया था।

" मैं बहुत अधिक भ्रम में पड़ चुकी थी। और मुझे इतना भी ज्ञान नहीं था कि क्या तो मेरी परिस्थिति है और क्या मैं उसे उत्तर दूँ ? मैंने उससे कहा कि मैं अस्वस्थ सी हो रही थी

"वह मेरे साथ २ स्वाभाविक एवं आदरपूर्ण ढङ्ग से चला और मुझ से इस यात्रा के किये हुए हमारे अनुभवों पर बातें करने लगा। वह सब बातें जो मैंने अनुभव की थीं उसने शब्दों में अनूदित कर दीं, उन सब वस्तुओं को जिन्होंने मेरे हृदय में कोमल वृत्तियों का संचारण कर दिया था। वह भली भाँति जानता था यहाँ तक कि मुझसे भी सुन्दर। और एकाएक उसने अलफ्रेड डी मुसेट की कुछ कवितायें दोहराईं। मैं अनिवर्णनीय भावनाओं से विभोर हो उठी। और मुझे लगा कि मेरे आँसू निकलने ही वाले हैं। मुझे लगा कि झील, चांदनी, पर्वत सब मेरे लिये अति मधुर वस्तुओं का गान सुना रहे हैं।

"और यह सब मेरे जाने ही बगैर हो गया। यह सब एक माया की भांति हो गया।

"रही उसकी बात, तो मैंने तो उसे उसके जाने वाले दिन के प्रभात काल से पहले फिर दोबारा नहीं देखा।

"उसने मुझे अपना परिचय पत्र दिया।

× × × × ×

और अपनी बहिन की भुजाओं में सिमटते हुए, मैडम लेटोर रोने लगी— लगभग चिल्लाती सी।

तब मैडम रोबर्रे ने बहुत गम्भीर एवं आत्म नियन्त्रित स्वर में बहुत धीरे से कहा:

"बहिन बहुत बार ऐसा होता है कि हम लोग पुरुष से प्रेम नहीं करतीं वरन् स्वयं प्रेम से प्रेम करतीं हैं। और उस रात्रि तुम्हारी वास्तविक प्रेमी चांदनी थी।"

श्री हेमेन्द्र कुमार द्वारा साधन प्रेस, डैम्पियर नगर मथुरा में मुद्रित।